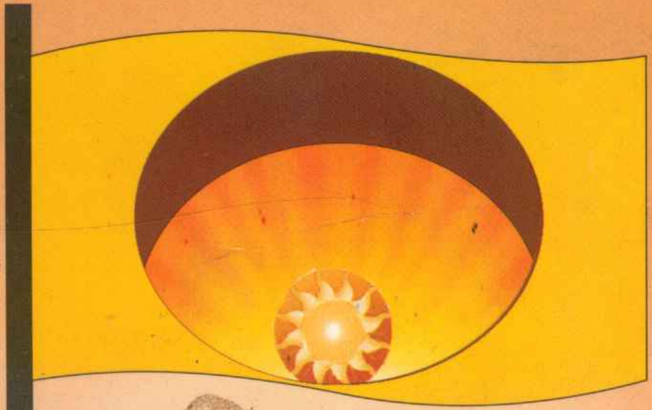

मानव सोच एवं युग परिवर्तन

लेखक : महावीर नाथ

पञ्च परमेश्वर मानव धर्म
(दिव्य सत्ता)

पञ्च परमेश्वर-मानव धर्म

द्विव्य सत्ता

मानव सोच एवं युग परिवर्तन

ईश्वर से प्रकट दिव्य ज्ञान

लेखक-श्री महावीरनाथ

सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रथम संस्करण-2011

सर्वाधिकार सुरक्षित

29/9/2011
नव रात्रेपर्व पर प्रकाशित

पुस्तक प्राप्तांक का स्थान
15, टाइप II दिल्ली जल बोर्ड कालोनी
माडल टाउन III दिल्ली

फोन : 9213465365
011-32044406

निवेदन

ईश्वर की कृपा से मुझे संसार के लिए ज्ञान प्रगट होता है। जब मेरा मन लिखने के लिए करता है। उसी समय मैं लिखना आरम्भ कर देता हूं, जब तक चाहे मैं लिखता रहता हूं। एक भी शब्द अपने मन या किसी भारतीय संस्कृति की किताबों में से नहीं लिया गया है। सब कुछ ईश्वर की कृपा से प्रगट होता है। इस ज्ञान को दुनिया में फैलाने के लिए कहा गया है। गांव-गांव, शहर शहर इसका प्रचार करना जरूरी है। मैं अकेला इस कार्य को नहीं कर सकता। मै निस्वार्थ भाव से इस पुण्य को करना चाहता हूं।

जिस तरह का ज्ञान मुझे ईश्वर ने दिया है इस किताब में लिखा गया है। मैंने इस किताब के अन्दर हर प्रकार का संदेश दिया है। परन्तु किसी संसारिक विषय या किसी व्यक्ति संस्था की कोई आलोचना नहीं की है। यह पैगाम मानव, कल्याण, मानव की सत्य सारिणी में पहचान और ईश्वर से प्रीत, मानव-मानव से प्रीत, जीने का रास्ता बताया गया है। इस पुस्तक में मात्रायें एवं शब्दों में गलती हो तो क्षमा करना।

-लेखक श्री महावीर नाथ

निवेदन : लेखक हस्ताक्षर कृत किताब ही असली है....

(हस्ताक्षर)

जीवन परिचय

जीवन परिचय

मैं महावीर सिंह, जन्म नवम्बर **1958** ग्राम लुहारी जिला बागपत यू०पी० में हुआ। मेरे पिता स्व. बारु सिंह सैनी, एवं माता स्वरुपी देवी। मेरे दादा, पिता एक छोटे से किसान थे। किसान परिवार के साथ रहते हुए दसवीं कक्षा तक पढ़ाई की, मेरी शादी सोलह वर्ष कर आयु में, पन्द्रह वर्षीय मूर्ति देवी, पिता श्री अमर सिंह सैनी, जिला सोनीपत (हरियाणा) से हुई। मेरे यहां तीन पुत्री एवं एक पुत्र है, फिर मुझे फरवरी **1982** को दिल्ली जल बोर्ड में नौकरी मिल गई और अभीतक मैं नौकरी कर रहा हूं। मेरी पत्नी आरम्भ से धार्मिक विचारों वाली रही है।

मेरा जीवन बहुत ही संघर्षपूर्ण रहा और इस संघर्ष के जीवन में मेरी पत्नी ने मुझे सम्भाला और अपने नियम निति से घर चलाती रही और यह शक्ति भी हम दोनों के अन्दर रहस्य बनी रही। बचपन से ही माता पिता सगे संबंधीयों को कुछ भी पता नहीं चला फिर अचानक **1996** में प्रगट हो गई और अचानक लिखना शुरू किया, पहले कई भाषायें प्रगट हुई

जिसे कोई पहचान नहीं सका, मुझे इससे बहुत दुख हुआ कि किसी को कोई लाभ नहीं हो सका। फिर हम दोनों पति पत्नि ने भगवान से प्रार्थना की तभी ईश्वर ने हमारी प्रार्थना बहुत दिनों बाद सुनी, और हिन्दी मेरी मातृ भाषा में प्रगट हुआ, सबसे पहले गद्य आई फिर पद छन्द आने लगे, जो मैंने लिखा, ईश्वर से प्रगट हुआ, वह आपके सामने है। इससे अलग भी बहुत लिखा हुआ है जो आगे आपके सामने आयेगा। यह लेख मैंने किसी धार्मिक किताब एवं किसी मनुष्य से नहीं सीखा न पढ़ा। मैंने कुछ दिन बाद नाथ समप्रदाय गुरु योगी बिलास नाथ जी से गुरु दीक्षा ली है। हरिद्वार में उनका आशिर्वाद भी मिला, महावीर नाथ सैनी नाम भी मिला।

नोट : मेरे हस्ताक्षरयुक्त किताब ही असली है।

विषय सूची

पञ्च परमेश्वर-मानव धर्म	4
संसारिक प्रश्न-उत्तर-2	7
मानव क्यों सत्य को नहीं देखता देखकर हंसता क्यों है।	17
मनुष्य जात की सोच	21
सोच, कर्म, ज्ञान-सात्विक, रजो, तमौ	23
मानव खुद ही सर्वोपरि सत्ता है ओर खुद ही दोषी है	34
बचपन से जवानी तक स्वस्थ सुन्दर शीतल शब्दों से प्रेम से सम्बोधित करना	38
सबसे पहला प्रश्न :-	39
सोच से दुनिया में अनेक बीमारियां पनप रही हैं	47
शिक्षा में बदलाव अध्यात्मिक परिवेष में ढालना ईश्वर से प्रगट हुआ	50
मन के कारण काया के अन्दर जितने भी यन्त्र है सभी प्रभावित होते है मानव इस ज्ञान से अनभिज्ञ	62
पृथ्वी हलचल होना	64
सकारात्मक सोच से धर्म परिभाषित है	67
विष का घुलना एवं जगत में मानव स्त्रोत के द्वारा घटित	70

दर्द मय धरती पर छोटी सोच
अज्ञान से जीने वाले मानव 71
मानव जाति रहस्यमय जीवन धारा 77
गांव शहर सभी में यह अज्ञान
फैला है कि नारी का जन्म दुख मय है 83
मानव सत्य प्रवाह-स्रोच पर नियन्त्रण 87
मानव जीवन के रोजमर्रा
कर्म में बुरी तरह लिप्त 89
सृष्टि में मानव सोच से
फैलता हिंसा का जहर 94
इस मुल्क में निस्वार्थ मानव
का कर्म एवं मुल्क के प्रति प्रेम 98
प्रकृति स्त्रोत एवं मानव सोच 100
मानव खुद ईश्वर बीज है 103
सकारात्मक सोच से सृष्टि चलना
सकारात्मक सोच में ही ईश्वर
विराजमान नकारात्मक सोच से युग में
मानव के अन्दर युद्ध भड़कना 113
आत्मा की बात कभी नहीं मानता 117
ईश्वर का परिचय 121
कल्याणकारी ईश्वर का खुद
प्रगट होकर लिखवाना 122
सृष्टि-समय सारिणी 126
भारत भूमि पर हर
मानव जीव ईश्वर प्रेरणादायक 135
ईश्वर का प्रगटीकरण 167

मानव का अन्दर से अशान्त रहना धरती पर उसी के आधार पर उफान आना।	173
भारत के वासियों के लिए पैगाम	184
सृष्टि के मानव का सुख सागर मन्थन प्रेम	186
ज्ञान सागर प्रेम की वाणी	219
मानव पृथ्वी का आशिक प्राणी स्वास बहे जीव के अन्दर दिव्य आभास	263
जन जन में ज्ञान प्रसार	267
मानव जाति की धर्म कर्म जीवन में धारण करना	275
ईश्वर का धर्म सन्देश ज्ञानी ईश्वर से कहता है	303
ज्ञानी ईश्वर से कहता है	315
ईश्वर मनुष्य को कहते हैं	317
सोच से पाप घटता है सोच से ही पुण्य बढ़ता है।	406
काया में रहकर पृथ्वी से दिव्य धाम दिखना	414

पञ्च परमेश्वर-मानव धर्म

मेरे प्रिय,

नर-नारियों पृथ्वी पर वास करने वाले! ईश्वर की सन्तानों, पांच तत्वों की काया धारण करने वाले, ईश्वर से प्रगट हुआ कुदरती पैगाम सुनो जो आपके लिए आया है। यह पैगाम मेरा नहीं यह आपका ही है, मुझे आपको समर्पित करना है। जो सत्य पर आधारित है। मानव सोच पर ग्रन्थ की रचना हुई है। मेरे मन से एक भी शब्द इस ग्रन्थ में नहीं है न ही किसी धार्मिक ग्रन्थों से लिया गया है यह ग्रन्थ मुझे प्रगट हुआ है। यह सत्य है और साबित भी है।

ईश्वर की आज्ञा के अनुसार इस ज्ञान सागर को मैं आप तक पहुंचाने का प्रयास कर रहा हूं। समय के अनुकूल मानव परिस्थिति के अनुकूल ईश्वर ने लिखवाया है। जो भी इस सन्देश को पढ़ेगा एवं अमल करेगा, वह पूर्ण मानव का दर्जा हासिल करेगा। भक्ति मार्ग, जीवन में जीने का मार्ग, ग्रहस्थी मार्ग, ईश्वर को जानना अपने आप को पहचानना कि मानव इस पृथ्वी पर क्यों आया है क्या करने आया है यह मुख से भी बताया जायेगा। एक ग्रन्थ की रचना की गई जिसका नाम, *'मानव सोच एवं युग परिवर्तन'* से मानव अनभिज्ञ है उसे ज्ञान नहीं कि वह अपने कुटुम्भ को कहां लेकर भागा जा रहा है। जो अन्धेरे की तरफ जाता है, उस रास्ते से हटाने के लिए मानव सोच पर लिखा गया ग्रंथ है।

मानव जात को भ्रम जाल से निकालने और नई दिशा में जाने की प्रेरणा दी गई है। ईश्वरीय शक्ति से उपजा हुआ ग्रन्थ है। साकारात्मक सोच, व नाकारात्मक सोच के ऊपर आधारित है।

साकारात्मक सोच से दुनिया में धर्म का बीज बोया जाता है। साकारात्मक सोच से मानव धर्म एवं संस्कार युक्त धरती पर पैदा होते हैं। धरती पर अचानक घटनाये नहीं घटती अल्प आयु में मानव की मृत्यु नहीं होती, ग्रह भी साकारात्मक सोच के साथ होते हैं। दुनिया में अमन-चैन से मानव जीवन व्यतीत करता है और नाकारात्मक सोच से इस सृष्टि में मानव की सोच के अन्दर युद्ध जैसी स्थिति बनी हुई हैं। सृष्टि पर असुरी शक्तियां अपना प्रभुत्व बना रही है। इसी नाकारात्मक सोच से पृथ्वी पर उफान जैसी स्थिति, मानव-मानव को मार रहा है, भाई-भाई का शत्रु बन रहा है। अत्याचार लूट-खसौट, बेईमानी, भ्रष्टाचार, नारियों से अभद्र व्यवहार जैसी बुराईयां पनप रही है। जो मानव जात के लिए कठिनाइयां आने का डर है। नाकारात्मक सोच से दुनियां भटकने लगती है भ्रमित हो जाती है। झूठ, सत्य दिखने लगता है सृष्टि चरमराने लगती है। मानव जात अपने मन, अपनी काया की पूर्ति करने में व्यस्त हो जाती है। इस सृष्टि में कुछ भी बाहर से नहीं आया सभी यहां के निवासी हैं। जो भी प्रकृति में खिला है वह भी आप ही देखते हो और बनाते भी हो। दुख-सुख भी आप से ही पैदा होता है। स्वर्ग का हिस्सेदार भी मानवजात है और नरक का जिम्मेदार भी मानवजात है। मानव सोच से ही सब कुछ प्राप्त होता है, क्योंकि साकारात्मक सोच से उर्जा शक्ति प्राप्त होती है। जिससे मानव जीवन सुन्दर और सुख में जीता है। नाकारात्मक शक्ति ऊर्जा से असुरों का राज होता है।

जिससे दुनिया में मानव जात अपना रास्ता खुद ही चुन लेती है। हिंसावादी, दया ना करना, ज्यादाद पर झगड़े, बंटवारा जैसे उत्पत्ति होने लगती है। अनैतिक सोच बढ़-चढ़ कर अपना प्रभाव दुनिया पर जमाना आरम्भ कर देती है। जिससे मानवता का स्तर माताओं, बहनों, भाईयों का स्तर गिर जाता है। अपने बुजुर्गों से

मानव अशब्दों का प्रयोग एवं पीड़ित करने, जैसी बुराईया पनपने लगती है जो आज पनप रही है। इन सभी बुराईयों को दूर करने के लिए मानव सोच पर लिखा गया ग्रन्थ जो दिव्य सत्ता से सीधा प्रसारण है इसका नाम *'मानव सोच एवं युग परिवर्तन'*, पर लिखा गया है। जो यह बतायेगा कि नाकारात्मक सोच को नहीं रोका गया तो प्रलय जैसी स्थिति उत्पन्न हो जायेगी और अगर मानवजात साकारातमक सोच में ढली तो इन कठिनाईयों से बचा जा सकेगा। इस ग्रंथ को सभी मानव पढ़े हर वह मानव पढ़े जो इस पृथ्वी पर अपने जीवन को चलाने के लिए कार्यरत हो। इसके पढ़ने एवं अमल करने से उर्जा शक्ति बढ़ेगी और आपके जीवन में खुशहाली एवं समृद्धि आयेगी। जहां पर आप कार्यरत है वहां पर भी कोई अप्रिय घटना एवं किसी कार्य में रूकावट नहीं होगी। अगर आपकी सोच साकारात्क है तो सब कुछ प्राप्त होगा। सोच से मंदिर, मस्जिद, गुरूद्वारे का आस्तित्व होता है। सोच सभी मानव जात में पनपती है। चाहे हिन्दु हो या मुसलमान, सिख हो या ईसाई, यह ग्रंथ सभी मानव जाति के लिए ईश्वरीय उर्जा स्त्रोत सोच के ऊपर आधारित है।

संसारिक प्रश्न-उत्तर-2

प्रश्न- अधर्म कहां पर?

उत्तर- अधर्म कहां पर है-अधर्म तो मानव के अन्दर भरा है।
उसकी तोल है ईश्वर के पास-सत्य मानव के अन्दर जड़ा है॥

प्रश्न-संसार कहे कैसे दिखेगा धर्म-अधर्म पनपता है कहां पर। सम्पूर्ण धरती पर कैसे घटता है-और मानव के अन्दर कैसे बढ़ता है?

उत्तर- मानव के अन्दर है ईश्वर वास-ज्ञान के चक्षु खोल।
माया मोह में फंसा है मानव-शब्द सुन्दर प्रेम से बोल॥

प्रेम से बोल सुन्दर शब्द-शब्दों से ही गीता रामायाण लिखी है।
शब्दों से ही वेद आये धरती पर-और शब्दों से ही बाईबल कुरान लिखी है॥

शब्द ही से काया का होता है बोध-शब्द ही मां कहता है।
शब्द से ही चले सृष्टि, काया के अन्दर विधाता है॥

गर्भ से ले मानव जन्म-दूध का स्त्रोत मां के अन्दर बनवाता है।
नारी से नर जन्मता-और नर नारी को मां कहता है॥

नर नारी से लेता है जन्म, नारी को ही प्रताड़ित करता है।
नारी को वस्तु समझे नर, और अशब्दों से भी बुलाता है।

प्रश्न-अज्ञानी-कहता है ना माने धर्म- ना हम ईश्वर को माने।
क्या विगड़ेगा मेरा-हम जगत में सब कुछ जाने॥

उत्तर-सत्य तू झुठला नहीं सकता-अन्दर से तू तड़फ रहा है।
ना तुझे है शान्ति अन्दर से-और अशब्दों से छेद दुनिया में कर रहा है॥

ना करता तेरे से प्रेम जगत में-तू अकेला खड़ा दुनिया में।
तू दूसरे मानव को वस्तु समझे-तेरा जीना क्या है दुनिया में॥

प्रश्न- कहे क्यों तू मुझे धर्म की बात बताता है।
तूने नहीं देखा धर्म-मुझे जताता है॥

उत्तर-मैंने देख है धर्म मानव की चेतना में है वास।
ठीक गलत की करावे पहचान-पाप पुण्य की करवाये जांच॥

संसार क्या क्या पूछता है
विश्वास नहीं हो पाता-सत्य पर

-खुद मुझे संसार प्रश्न करे कि तुम ग्रहस्थी में हो ओर तुमने ज्ञान कहां से उपजा

प्र.-तुझे ज्ञान के शब्द कहां से उपजते-खोल कर बता।
तू भी तो मेरे जैसे है-यह क्या भेद काया का बता॥

उ.-मेरे अन्दर शब्द सत्य सफर करता-माया में नहीं लिप्त।
निर्भय रहता हूं सोच मेरी सात्विक-और ईश्वर में रहता हूं निर्लिप्त॥

प्र.-तू सोच कर बता ऐसा कैसे-बना तेरी काया का है मंदिर।
तूने कर्म क्या किये पिछले जन्म में खोलकर बता कहां पर मन्दिर॥

उ.-मैंने पुण्य किये पूर्व जन्म में-और वर्तमान सुधरा हुआ है।
और रहता हूं तेरे जैसा मैं-पर मेरा आन्तरिक धुला हुआ है॥

प्र.- पर तू कैसे हमारे जैसे झूठ अहंकारियों-में जीता है, अपना जीवन।
तुझे घृणा क्यों नहीं आती किसी से-क्रोध के बिना कैसे बिताता है जीवन।

उ. मैं जपूं हर क्षण ईश्वर नाम-और तुम्हारे से बात करूं सत्य बाण।
ना लिपटती माया मुझे-यह मेरा देख जीवन का प्रमाण॥

प्र. तू क्या सोचता है हर दम-तेरा सोचने का कैसे ठिकाना।
तू व्यवहार कैसे करता है दुनिया से-और कैसे तेरा सत्य सफर सुहाना?

उ. मैं हरदम नाम जपूं मन ही मन-ईश्वर नाम पुराना।
छोड़ देता हूं जीवन का भार ईश्वर पर-यह है मेरा ठिकाना॥

प्र. सन्त कैसे मानेगे तुझे-यह क्या राज छिपा है?

उ. सन्त की परिभाषा क्या है-और तुमने ईश्वर ज्ञान क्या लिखा है।।

प्र. सन्त सुरभि मेरे अन्दर है बैठी-ईश्वर धर्म मेरा ठिकाना।

उ. सत्य धर्म पर चलू हर दम-मन में ना रखूं वासनाओं की ज्वाला।।

प्र. तुझे ही क्यों शब्द आवें-दिव्य लोक से।

दिव्य लोक क्या है-बता तू अपने तीव्र वेग से।।

उ.- मेरे मन में सोच नहीं संसारिक-सोच हरक्षण ईश्वर की बहती।

मेरा ध्यान है ईश्वर में-और रूह मेरी ईश्वर प्रेम में रहती।।

प्र.-तू इस प्रकार है कैसे बता-तू भी तो है संसारवासी।

तेरे अन्दर ऐसा क्या भरा है-तू कैसे बतावे और कैसे लिखे दिव्य वाणी।।

उ. मैं नहीं अपनी सोच फैलाता-जो सृष्टि फैलाती सारी जाती।

मेरा मन ही एकत्र ईश्वर में-कभी भी ज्योत बुझ नहीं पाती।।

प्र.-तुझे खुशी नहीं है इस बात की-ज्ञान तुझे ईश्वर ने दिया है।

तुझे दिया है आदेश फैला दुनिया में-इसका संकल्प तूने लिया है।।

उ. मेरा भ्रम नहीं है झूठ-शब्द इतना आ रहा है।

जो भेज रहा है शब्द उसे ख्याल है-मानव कहां जा रहा है।।

प्र. क्या तू नहीं चाहता विख्यात हो तू दुनिया में।
तेरा बढ़े वजूद-और सुनहरे पन्नों पर नाम लिखा जाय दुनिया में।।

उ.- मेरी कोई चाहत नहीं-मुझे धन का एक जर्रा भी नहीं चाहिए।
जो मुझे दिया है ईश्वर ने-उसी में मुझे जीवन बिताना चाहिए।।

प्र.-दुनिया में हर मानव-चाहता है नाम कमाना।
धन के भण्डार भरे-और इज्जत करे जमाना।।

उ.-मैं नहीं चाहता यह सब-भ्रम जाल है यह दुनिया में।
मैं तो खुद ही आन्दित हूं-अपनी घर दुनिया में।।

प्र. तुझे इतना शब्द आता है दिव्य लोक से-क्या करेगा इसका।
देगा ज्ञान तू मानव को-कौन अमल करेगा इसका।।

उ. जो भी शब्द आया है दिव्य लोक से-मेरा इस पर कोई हक नहीं।
एक एक शब्द है ईश्वर का-इसमें मेरी कोई बक बक नहीं।।

प्र. फिर इन शब्दों का जिम्मेदार-है कौन
जिम्मेदारी ले अपने ऊपर-क्यों घर में बैठा है मौन।।

उ. मैं मौन हूं इसलिए-क्यों कि मेरा इसमें कुछ नहीं।
जिसने दुनिया बनाई है सब है उसका-मेरा इसमें कुछ नहीं।।

प्र. तू कहता है मेरा कुछ नहीं-तुझे लिखवाया ज्ञान क्यों है।
क्या तुझे तेरा नहीं पता-धरती पर ज्ञान भिजवाया क्यों है।

उ. मुझे यह तो सत्य पता है-ज्ञान मानव कल्याण को लिए है।
बस मुझे वह करना है जो ईश्वर करे-और कहे कि-ज्ञान मानव जात के लिए है।।

प्र. जब तुझे पता है कि ज्ञान-मानव शुद्धी करण है।
क्यों-तू इसका प्रचार क्यों नहीं करता-यह क्या कारण है।।

उ. मैं क्या-दुनिया इच्छाओं में फंसी पड़ी है। रास्ता नहीं है-शुद्ध सफर समस्या जटिल खड़ी है।

प्र. फिर तू ईश्वर को क्यों नहीं-कहना यह जटिल ब्यान।
ईश्वर-ही तो तुझे लिखवाये-यह अतुल्य ज्ञान।।

उ. मैं करता हूं राजमर्रा ईश्वर से-मैं क्या करूं भगवन।
मेरा रास्ता कैसे-निकलेगा-इस ज्ञान को कैसे-फैलाऊं भगवन।।

प्र. फिर तू कर रहा है-वह काम-जो ईश्वर चाहते है।
ईश्वर है अगर दुनिया में-वही होगा-जो ईश्वर चाहते है।।

उ. हा है ईश्वर दुनिया में-ज्ञान धरती पर प्रगट-करवाते हैं।
यह तो मुझे पता है-कि ज्ञान मेरी काया से-अंकुरित करवाते है।।

प्र. यह भी पता चलेगा-कि सत्य क्या है-दुनिया में।
अगर यह ज्ञान सत्य है-तो फैलावे दुनिया में॥

उ. यह बात भी सत्य है-मैंने भी छोड़ दिया है ईश्वर पर।
जो करेंगे फैसला-मंजूर है-मुझे अपने ऊपर॥

प्र. क्या मानव अपना-भाग्य-खुदी बनाता है।
नहीं मानता ईश्वर की बात-मानव यह खुद जानता है।

उ. भाग्य तो है कर्मों का खेल-पूर्व घटा-वर्तमान बन जाता है।
जो घटता है कामों के द्वारा-वहीं लिखित हो जाता है॥

प्र. किसने देखा है-भाग्य विधाता लिखता है।
और पाप कर्म दोषी होता है-आज ज्ञान भी दुनिया में बिकता है॥

उ. जो भी पैदा होता है-दुनिया में-सभी बराबर क्यों नहीं होते।
एक बच्चा गरीब के घर जन्में-और दूसरा करोड़ों में होते॥

पाप कर्म मानव-और ईश्वर का होता है-दोषी-ना होता खुदी का हितैषी-ज्ञानी को-अपनी चेतना ईश्वर का ज्ञान-कभी बेचा नहीं जाता॥

ज्ञान तो होता है सत्य रुप ईश्वर-ज्ञान खरीदा नहीं जाता।

ज्ञान तो सत्य लिखा होता है पुराणों में-झूठ-कभी नहीं होता।
स्वार्थी मानव लिखे ज्ञान को-पकड़कर समाज में बेचने जाता॥

क्यों खुदी में चेतना नहीं जाग्रत-उसके लिए नहीं है-मूल।
क्योंकि उसने लिखा नहीं ज्ञान-उस पर तो चढ़ी हुई है-माया की धुल॥

अन्दर से निकला ज्ञान-कोई नर बेच नहीं सकता।
जैसे अपने को पुत्र इतना प्रेम करे-उसे बेच नहीं सकता॥

ज्ञान कभी बिकता नहीं-दुनिया में -किताबों का पढ़ा बिकता है।
लिखाया जाता है ज्ञानियों से-और मानव के-अन्दर हर युग में प्रगट होता है॥

जिस मानव के अन्दर ज्ञान प्रगट होता-समझो एक एक मानव जन्मे जात।
एक एक शब्द जब प्रगट होता-जीव की तरह जन्मे-जात॥

यह योग है-ईश्वर का-धर्म मानव के अन्दर-प्रगट होता।
हर कठिन समय-जब आता-दुनिया में-मानव चेतना में प्रगट होता॥

प्र. ऐसी कैसी रूह होती मानव की-जो ईश्वर प्रगट होता।
रूह होती है प्रेम ध्वनि की-ध्वनि से अन्दर-शब्द प्रगट होता॥

ध्वनि होती प्रेम ईश्वर में-मानव को मेल मिल जाना।
अश्रु बहे-ईश्वर प्रेम में-और शब्दों का प्रगट होना॥

प्र. प्रेम तो संसारिक मानव भी करता-व्यवहारिक जगत में।
पर वह क्यों ऐसा प्रेम नहीं पाता-जो उज्जवल हो-जगत में॥

उ. प्रेम ऐसा-सागर मन्थन है-कि नर नारी मथ जाते हैं।
उसी प्रेम सफर में जीवन जीते-और साथ-साथ मर जाते॥

प्र. ऐसे नर नारी को-क्या मिलता है-प्रेम जीवन सफर में।
क्या संसारिक-सुख छोड़कर-क्यों मरते है दर्द प्रेम में॥

उ. प्रेम है-कई जन्में का बन्धन-जो हर जन्म अमर पद पाता।
अगले जन्म में-भी फिर पलट कर-जीवन बन्धन में बन्ध जाता॥

प्र. फिर तो नर नारी का प्रेम-ईश्वर जैसा हो गया।
क्यों जन्में दूसरी बार-यह प्रेम तो-अमर हो गया॥

उ. प्रेम सत्य सफर करे-निस्वार्थ धर्ममय-अमर पद पाता है।
जैसा धर्म होता है-सत्य अमर-उसी तरह प्रेम-अमर पद पाता है॥

प्र. फिर तो नर नारी में-भेद कैसा-ईश्वर जैसा प्रेम।
क्यों उन्हें ईश्वर नहीं मिलते-यह कैसा है प्रेम॥

उ. प्रेम सिखता है जीना दुनिया में-सुख का सागर है।

प्रेम करो शुद्ध नर नारी-शुद्ध सागर ईश्वर में बहता है॥

ईश्वर की ही प्रेरणा होती है प्रेम-जो नर नारी में बहता है।
उसी में आनन्द मिलता है ईश्वर का और मन वान्दित फल मिलता है॥

प्रेम की लप शुद्ध सात्विक-ईश्वर है आनन्द।
प्रेम करे नर नारायण से-बन जाता है सच्चिदानन्द॥

यह युग धारण करती है धरती-प्रेम सागर बहने के लिए।
पर क्यों न ही संसार प्रेम करता-आपस में जीने के लिए॥

युग जब होता है भ्रमित-प्रेम स्वार्थी बन जाता है।
प्रेम शब्द सुनने का रहता-और मानव भक्षी बन जाता है॥

क्यों नहीं किसी से निस्वार्थ सात्विक प्रेम करता।
ऐसा क्यों है युग भ्रमित-भाई बहन पिता से भी लड़ता॥

मानव क्यों सत्य को नहीं देखता देखकर हंसता क्यों है।

मानव जब ज्ञानी को देखता है तो ज्ञान सुनने के बजाय हंसता क्यों है। ऐसा क्या है मानव के अन्दर जो उस समय पनपता है मानव की बुद्धि बस उसी को सत्य समझती है। जिसको वह रोज़मर्रा जीवन में झेल रही है। मानव उस जगह को नहीं देखता जिस पर खड़ा होकर ज्ञानी की बात सुनकर सत्य सुनकर हंस रहा है। झूठ सत्य पर हंस रहा है। आज का युग कितना भ्रमित है। धरती पर रहकर धरती को झूठ बताना, प्रकृति को झूठ बताना, जैसा ही है। ज्ञानी की वाणी को झूठ बताना जैसा है। मानव ही सब कुछ पैदा करता है हर युग मानव के द्वारा रचाया जाता है। यह गुणों के ऊपर आधारित है। जैसे गुण के मानव धरती पर जिस समय होंगे उसी प्रकार का युग होगा। अपने परिवार से ही देखो अगर आपके परिवार में सभी सात्विक गुण के सदस्य होगे तो आप देखोगे कि आप का परिवार आपका घर जहां आप निवास करते हो वह सत्य युग ही होगा। और अगर आपका गुण तमो है तो आप कलुयग की भाषा इस्तेमाल करोगे। धरती कभी बदलती नहीं धरती का दायरा सत्युग में भी ऐसा ही था। और कलयुग में भी ऐसा ही है जल पर्वत सभी इस धरा पर है। तो फिर क्या बदला मानव ही बदलता है। अपने अन्दर का बाणा और बदलकर दूसरे पर इलजाम लगाता आया है इस धरा पर दो प्रकार की शक्तियां राज करती हैं। एक तो आसुरी शक्तियां और दूसरी सुर राज करते है। राज मानव जाति के ऊपर ही किया जाता है। पृथ्वी पर ही मानव जात वास करती है और पृथ्वी सुरो की बनाई हुई सत्ता है। मानव ही इस पृथ्वी पर जो मानव रहते है उन पर राज करते है। और जो इस सृष्टि की

सत्ता है। जिसने इसे रचाया है वह सृष्टि में मानव जाति की सोच पर राज करती है। परन्तु मानव जाति इस रहस्य से अनभिज्ञ रहती है। मानव जाति तो वह ही सोचती है। जो उसे सिखया जाता है। दुनिया में समय समय पर ज्ञान प्रगट होता रहा है। बहुत समय बीतने के बाद जब धरती पर मानव भ्रमित हो जाता है। जो ज्ञान पहले से दुनिया में होता है उस ज्ञान का असर धूमिल पड़ने लगता है। क्योंकि जो भी उस पहले प्रगट हुए ज्ञान में समझाया जाता है। वह साकारात्मक मानव के ऊपर अपना प्रभुत्व जमाने में असफल हो जाता है। जो उस ज्ञान में मानव जात को वे कर्म करने के लिए मना किया गया है, उन्हीं कार्यों को मानव जात करने लगती है। भय कोई भी नहीं रहता। अनादर, अत्यचार, संस्कार हीन, मानव धरती पर विकास करने लगता है। अपना अहंकार का झण्डा धरती पर गाड़ देता है। कहता है कि यह मेरी प्रगति है तभी धर्म पीछे हटने लगता है। जो भी मन में आये मानव अपनी मनमानी करने लगता है। ऐसा समय आ जाता है कि अपनी बात ऊंची दिखती है दूसरा चाहे कितना भी ज्ञानी हो उसे छोटा दिखता है। मानव नारी जाति को पीड़ित करने लगता है। भाई-भाई को मारने पर उतारू हो जाता है। ईर्ष्या द्वेष से मानव सोच गले तक भर जाती है। झूठ बेइमानी हिंसा, मानव, मानव को मारने लग जाता है। सृष्टि में विपरीत दिशा पर मानव चल पड़ता है। जो ग्रन्थ धर्म विभूषित जगत में है और उन ग्रन्थों में ज्ञान दिया गया है। बिल्कुल मानव उसके विपरीत कार्य करने लगता है। वह इसलिए करता है क्योंकि आसुरी शक्तियां सृष्टि में मानव सोच (मन) के ऊपर बैठ जाती है। उस ज्ञान से मानव चेतना को विमुख कर देती है। मानव को वह ही अच्छा और सत्य दिखने लगता है। जो वह अपनी सोच के द्वारा कर्म कर रहा है। यह दशा सृष्टि में बहुत समय के बाद आती है जब सत्य से मानव पूर्ण रूप से मुकर जाता है। माता का दर्जा

जिसने सृष्टि को जन्म दिया वह घट जाता है। आज इस पृथ्वी लोक पर यह सब कुछ घटित हो रहा है। इसी कारण से नवीन विद्या ईश्वर को प्रत्येक कठिन समय में पृथ्वी पर भेजनी पड़ती है।

जिसके द्वारा मानव जाति की सोच का निवारण हो सके और मानव को उस सत्य को बताया जा सके जो वह भूल चुका है। उसे आगाह किया जा सके कि अगर आप अपनी उस घृणित सोच से पीछे नहीं हटोगे तो यह नाकारात्मक सोच इस सृष्टि को निगल जायेगी। काल अपना मुख खोले खड़ा है। क्योंकि आसुरी शक्तियां बस जगत में उफान चाहती है। मानव जाति आसुरी शक्तियों के वश में आ चुकी है। इसलिए पृथ्वी के वासियों सजग हो जाओ और इस सृष्टि को उस कठिन समय से बचाओ जिसका इस पृथ्वी पर घटने की आहट हो चुकी है। बस तुम्हे तो अपने विचार बदलने है। जो तुम्हारे अन्दर वास करते है। वे ही आसुरी शक्तियां है। सुरो की भी आहट दुनिया में हो चुकी है। जो सृष्टि को बचाने के लिए आ रही है। परन्तु मानव के ऊपर ही निर्भर है कि वे आसुरी शक्तियों के साथ कठिन समय देखना चाहते है या फिर सुरों के साथ अपने आपको और आने वाली पीढ़ी को स्वस्थ सुख अहिंसा से जीवन बिताना चाहते है। यह सृष्टि के मानव जाति पर निर्भर है। यह ज्ञान इस जगत को देने के लिए यह ईश्वर का भेजा हुआ पैगाम है। जो खोल-खोल कर बताया जायेगा कि आप कहां पर भ्रमित हो। सत्य सार क्या है। अगर ज्ञान ईश्वर प्रगट करे और जगत को उस रहस्य से अवगत कराकर बाहर ना निकाले तो मानव जात ऐसी अन्धेरी राही में चली जायेगी जहां पर कोई रास्ता दिखाई नहीं देता। ज्ञान के बिना मानव जात उलझ जायेगी। जैसा हिंसा वादी मानव को हिंसा ही अच्छी लगती है ऐसे ही असुरों को भी, मानव ईश्वर से हटकर रहे, और अधर्म का रास्ता अपनाये जिससे आसुरों का राज हमेशा के लिए स्थापित हो सके। जिस प्रकार से अधर्मी

राजा अपनी ताकत दिखाकर जर्बदस्ती राज करता रहता है। उसे उखाड़ने वाला कोई नहीं होता। अन्त में एक दिन सत्यवादी मानव उस राजा को उखाड़ने में कामयाब हो जाते है। सत्य की जीत होती है, इसलिए इस सृष्टि में वास करने वालों इस उपचार करने वाले-सोच को सुन्दर बनाने वाले ज्ञान को ग्रहण करो। अपने आप को देखो कि तुम कहां खड़े हो। जहां तुम खड़े हो वह सुरों की रचाई हुई पृथ्वी है। यह पृथ्वी धर्मयुक्त मानव चाहती है। असुरो का हिंसा वादी राज नहीं चाहती। यह मुल्क इस पृथ्वी की गोद में खेला है युगो-युगों से, यह धरती माता है। यह किसी को अपने से पैदा होने वाले को दुखी नहीं देखना चाहती। धरती तो यह चाहती है कि मेरी गोद में धर्म युक्त मानव वास करे। अगर इस धरती का मानव सात्विक सोच साकारात्मक दृष्टि कर्म में नहीं ढला तो, असुर एक दिन ऐसे मानव के अन्दर बैठ जायेंगे जिससे मानव के बनाये हुए यन्त्रों से सृष्टि का नाश हो जायेगा।

अनेकों जीव जो जल आकाश पृथ्वी में वास करते है सभी समाप्त हो जायेंगे। और मानव जात के पास इसका जवाब अपनी अगली पीढ़ी के लिए देने के लिए कुछ भी नहीं होगा। मानव अकेला खड़ा होकर ईश्वर को पुकारेगा परन्तु कोई सुनने वाला नहीं होगा कोई सहायता नहीं करेगा। इसलिए कठिन समय आने से पहले सुरो की आहट आई है उस पर अमल करो। जिससे इस पृथ्वी को अधर्मियों से मुक्त किया जा सके। सुरो का राज स्थापित हो सके पूर्ण पृथ्वी पर शान्ति ही शान्ति हो। मानव निस्वार्थ भाव से दूसरे मानव को प्रेम करे।

मनुष्य जात की सोच

सम्पूर्ण विश्व के नर नारियों में सोच से ईश्वर की उर्जा शक्ति संसार का जन्म लेना और संसार का पालन करना स्थापित करना और नर-नरियों के कारण ही संसार का संहार होना यह नर नारियों की सोच के द्वारा घटित होता है। इसी सोच से युग परिवर्तन होता है। सोच ही तप है, सोच ही मोक्ष वरदायनी है, सोच से नरक मिलता है, सोच से स्वर्ग मिलता है, सोच से ही धरती पर स्वर्ग जैसा धाम बनता है, सोच के कारण ही मानव संत बनता है।

मानव सोच के कारण मनुष्य जन्म लेता है और मनुष्य के अन्दर जो कर्म पनपते हैं वे कर्म मनुष्य की सोच में मिश्रित (दोनों का मिलन होकर) धरती पर विराजते है। उन्हीं को धारण करके मानव जाति सृष्टि में जीवन व्यतीत करती है, उन्हीं को धारण किए हुए मानव जन्म होता है और उन्हीं को धारण किये हुए मानव की मृत्यु होती है। उन्हीं के आधार पर मानव अपने आपको अध्यात्मिक आधार व ईश्वर को जानने में सफल हो पाता है। उसी सोच के द्वारा, कर्मों के द्वारा ईश्वर प्राप्ति होती है। मानव को ज्ञान प्राप्त होता है और पग-पग पर मानव को जीवन में ज्ञान की प्राप्ति होती है। परन्तु नाकारात्मक सोच के कारण मानव दुख-सुख के दिनों को व्यर्थ में गवां देते हैं और ज्ञान प्राप्त करने की बजाय अपना कठिन समय सोचकर और पाप में अपना जीवन बिता देते हैं उन्हें ज्ञान नहीं होने के कारण जीवन का दुख-सुख समझकर जीवन काट देते हैं, परन्तु ज्ञान की प्राप्ति नहीं कर सकते क्योंकि उन्हें इस का पता नहीं चलता कि दुख-सुख भी ज्ञान देते हैं। अगर दुख-सुख जीवन में न हो तो सृष्टि गठित नहीं हो सकती, न ही चल सकती और ना ही ज्ञान प्राप्त हो सकता है।

संसारिक मानव और सन्त फकीरों में कोई अन्तर नहीं होता सिर्फ सोचने समझने एवं दुख-सुख में ज्ञान की तरफ बढ़ना या नहीं बढ़ने का होता है। सांसारिक मानव दुख सुख को अपना भाग्य समझकर आगे बढ़ता है और अध्यात्मिक परिवेश में ढल जाने वाला संसारिक मानव उन संसारिक दुखों के कारण सन्त बन जाता है। वह उन दुखों सुखों के द्वारा ही ज्ञान की प्राप्ति एवं सृष्टि में मानव का अस्तित्व और ईश्वर की उर्जा और शक्ति का भेद पाता है। शब्दों के भेद ज्ञान अमल करने से प्राप्त होते हैं। अगर मानव सत्य अमल करे तो सब कुछ सत्य में प्रवेश करता हुआ दिखेगा। अगर झूठ में अमल करे तो अहंकार में प्रवेश होकर पतन हो जायेगा। इसी तरह से इस सृष्टि में हर मानव का जीवन एवं सृष्टि का विकास, सृष्टि में धरती पर उफान जैसी स्थिति एवं दुख दर्द से, में स्वाभाविक ही सृष्टि में युग परिवर्तन होना आवश्यक हो जाता है।

सोच, कर्म, ज्ञान-सात्विक, रजो, तमो

मेरे प्रिय, माताओं बहनों भाईयो, आप सभी को इस पैराणिक पूज्यनीय धाम पर आने पर अपने हृदय से भगवान से प्रार्थना करता हूं कि आप इस दिव्य एवं रहस्यमयी ज्ञान को अपने रमणीक हृदय से और रमणीक कानों से सुनकर अपने मन और संसारिक वाणी को किनारे करके दिव्य वाणी को धारण करोगे एवं अमल करोगे।

जिससे आपकी अंर्तआत्मा शुद्ध और सन्त प्रवृत्ति की होगी। जिसके सुनने से अमल करने से आपको सुख एवं आनन्द की अनुभूति होगी। जो सत्य आपके सामने वाणी के द्वारा ईश्वर कृपा से प्रगट होगा वह इसी कारण से होगा क्योंकि आज के मानव के लिए यह जरूरी है क्यों कि अब यह इस युग में इसी समय आया है। इसको प्रगट करने का जो मुझे ज्ञान मिला है मैं इसे मानव कल्याण के लिए आपको पैगाम दे सकूं। यह सरल भाषा में है हर मानव इसको समझ सकेगा और अमल भी कर सकेगा आज के मानव के लिए यह पैगाम जरूरी है क्योंकि मानव अपनी पहचान एंव ईश्वर की पहचान से अनभिज्ञ है इसीलिए मेरे प्रिय ईश्वर की सन्तानों यह दिव्य पैगाम, जो धरती पर ईश्वर की कृपा से आया है इसे सुनो। इस दिव्य ज्ञान में मेरा एक शब्द भी नहीं है। ना ही किसी धार्मिक किताब से लिया गया है। जितना भी लिया गया है या मुख के द्वारा प्रगट होगा वह सभी दिव्य होगा आलौकिक सत्ता से होगा। ना ही मुझे कोई लोभ लालच है बस मुझे इस ज्ञान को संसारवासियों तक पहुंचाना है। यह कार्य मुझे करना है। धन ऐश्वर्य, बड़ाई, आसन, मुझे किसी प्रकार की चाहत नहीं मेरी चाहत यह है कि इस पैगाम को संसार वासी सुने और अमल करे इसमें ही मुझे सब कुछ मिल जायेगा।

सृष्टि में हर मानव से मानव जन्म लेता है वह ईश्वर की उर्जा

का स्त्रोत है। जो मानव उस परिवार में पहले होते हैं उन सभी की सोच उर्जा के आधार पर जन्म लेते हैं। उस परिवार ने जितनी उर्जा शक्ति इकट्ठी की थी उसके अनुसार उस जन्म लेने वाले मानव पर प्रकाश छोड़ती हैं। उसका लेखा-जोखा जन्म लेने वाले की उर्जा में कर्म फलों के द्वारा उस मानव पर जीवन में जो भी घटित होता है वह सभी जो भी घटनाएं घटेगी वह उस रहस्यमयी उर्जा स्त्रोत से घटता बढ़ता रहता है। इसी के कारण कोई आत्मा सम्पूर्ण सृष्टि में नाम कमाती है और किसी को पड़ोसी भी नहीं जानता। कहां एक गुणा और कहां लाख गुणा। उर्जा शक्ति जो ईश्वर से प्राप्त है अच्छे कर्मों अच्छी सोच से प्रकाशित होती है। उसी उर्जा स्त्रोत से मानव जीवन चलता रहता है। उर्जा स्त्रोत मानव की सोच से उत्पन्न कर्मों से पैदा होती है। जिस सात्विक गुण एवं रजो गुण एवं तमो गुण से जीवन में प्रभावशील माना जाता है। वह शक्ति स्त्रोत कर्म फलों में मिलकर अपना, कर्म करती है और मानव को अपने अनुसार चलाती है। पूर्व कर्म भी उसी उर्जा शक्ति में मिल जाते हैं और अपना पूर्ण असर जीवन पर डालते हैं। परन्तु वह उर्जा स्त्रोत एक गुण में प्रविष्ट नहीं रहता। क्योंकि मानव जीवन में अच्छी सोच से परिवर्तन हो जाता है कभी तो सात्विक गुणों में मानव की चेतना चली जाती है। तो कभी रजो गुण में चली जाती है और कभी तमो गुण में परिवर्तित हो जाती है। क्योंकि मानव का जीवन इस पृथ्वी लोक पर संघर्ष पूर्ण होता है। परन्तु होता है, शुद्धी और ज्ञान वैराग्य मानव, अपने आपको पहचाने, और ईश्वर कहां पर वास करते हैं इन सभी ज्ञान की बातों को जानने के लिए मानव पृथ्वी पर आता है। किसी ने अपनी उर्जा शक्ति जो सात्विक सोच, अच्छे कर्मों के द्वारा इकट्ठी कर रखी थी उसके द्वारा अगले जन्म में वह कार्य सरल कर देती है। जो मानव पहले से ही नाकात्मक उर्जा स्त्रोत लेकर पैदा हुआ है उसे तो जन्म से ही पीड़ित करने लग जाती है।

और सम्पूर्ण जीवन वह मानव ज्ञान, न होने के कारण उससे अलग नहीं हो सकता। वर्तमान में भी और ज्यादा बढ़ जाती है। मानव को पता भी नहीं चलता कि ये दर्द दुखदायी पीड़ायें बार बार जीवन में क्यों आ रही है। उसे कोई रास्ता नहीं बताता, वह सिर्फ अपने दुख को दूसरे मानव को बता देता है क्यों कि मानव ही मानव का सहारा बनता है। अगर अनजाने में उस मानव से कोई पिछले जन्म में या फिर इस जन्म में कोई अच्छा कार्य या किसी दूसरे के लिए अच्छा सोचने का कार्य यदि किया हो तो उस मानव की दूसरे मानव से मदद मिल जाती है। अगर ऐसा कोई भी कार्य नहीं किया तो सम्पूर्ण जीवन उस मानव को दुखों में जीना पड़ता है। परन्तु वह मानव गलत नहीं है उसे किसी सन्त पुरुष ने यह ज्ञान नहीं बताया जिससे वह उस धुन्ध भरे जीवन से बाहर निकल सके। उदाहरण के तोर पर जैसे संसारिक जीवन में किसी परिवार में कोई पढ़ा लिखा न हो और उसके बच्चे पढ़ने जाते हो और उन्हें कभी किसी न पढ़ने की महत्वपूर्णता न बताई हो तो वे बच्चे आगे न ही बढ़ पाएगे न ऊंचे आसन पर बैठ पाएंगे। क्यों कि उन्हें किसी ने समय के अनुसार नहीं समझाया। ये सभी बाते मानव के अपने कर्मों और सोच के अनुसार उत्पन्न होती है। कोई कोई तो ऐसा होता है कि थोड़ा सा दुख आया जीवन में तुरन्त दूसरा मानव सहारा बन जाता है या आसान रास्ता बता देता है। क्योंकि उसने सात्विक उर्जा शक्ति प्राप्त कर रखी है वह मानव किसी दूसरे के काम जीवन में आया था या दूसरे के लिए अच्छा सोचा था।

इसलिए जगत भटक रहा है, कोई देव किसी को परेशान नहीं करते न ही कोई किसी को लाभ पहुंचा सकता। जो दुख मानव के अन्दर पनप रहा है वह खुदी जिम्मेदार है वहां उसे कमाई हुई उर्जा स्त्रोत से ही सफलता मिलेगी। कोई किसी कुण्डली या किसी जादू टोने से कुछ सहारा नहीं मिलेगा वह तो उसको अपने मन की तसल्ली

के लिए होता है। परन्तु कुछ भी नहीं मिलेगा वही जो उसने कमाया है ईश्वर की शक्ति कितनी इकट्ठी की है कम या ज्यादा इसी के उपर सम्पूर्ण मानव जाति जीवन व्यतीत कर रही है।

जो मानव इस वर्तमान में जहां पर खड़ा है वही से ज्ञान पाने के बाद आरम्भ हो तभी जीवन मूल्य जीवन क्या है, जीवन में जरूरी क्या है, जीवन दुख सुख क्यों है और क्या पैदा होते है। यह सभी कर्म से किए हुए सृष्टि के कार्य सोच से उत्पन्न होते हैं। मानव जो भाव, सोच रखेगा वैसे ही कर्म भी करेगा रास्ता साफ है। जो आज दुखी है, वह भी सफल हो सकेगा और जो सुखी है, वह ईश्वर की उर्जा स्त्रोत शक्ति को और इकट्ठी कर सकेगा।

ज्ञान से ही मानव, सम्पूर्ण बन सकता है
ज्ञान से ही दुख में, ज्ञान प्राप्त किया जाता है।

जगत का हर मानव अपना अपना कार्य कर रहा है। वह छोटा कार्य करता हो या बड़ा संसारिक हिसाब से कर्म कोई छोटा बड़ा नहीं होता है। परन्तु मानव सभी बराबर है। न कोई छोटा मानव होता है और ना कोई बड़ा होता है सम्पूर्ण मानव जाति एक ही प्रकार से गठित होती है और उसकी काया के अन्दर जो भी यंत्र लगे होते हें वे भी सभी एक प्रकार के होते हैं। बस सिर्फ अन्दर उसकी अपनी सोच के आधार पर छोटा बड़ा, घृणित प्रकार के कार्य पाप से सम्बोधित होते है। सोच के द्वारा ही कर्म पुण्य में प्रविष्ट होकर ईश्वर की आलोकिक सत्ता में मिलनसार होकर प्रेम की ध्वनि में मिल जाते हैं। क्योंकि मानव हर वक्त यह सोचता है कि मैं बुरे कार्य करूं या अच्छे, मुझे कोई नहीं देखता देखने वाला कोई बाहर से नहीं देख रहा है। वह तो तुम्हारे अन्दर ही बैठा है कुछ भी बाहर नहीं है। सबकुछ तुम्हारे अन्दर प्रविष्ट है। अगर मानव सोच शुद्ध हो तो उर्जा शक्ति मिलती

है। वह ईश्वर की शक्ति है उसी शक्ति को बढ़ाने की चेष्टा करो जितनी ज्यादा बढ़ेगी उतनी ही ज्यादा तुम्हारी उन्नति होगी। आप अपने संसारिक जीवन को सुन्दर और प्रिय बना सकोगे। प्रेम की ध्वनि तुम्हारे अन्दर प्रवेश करेगी जिससे तुम्हारे को अपने वश में रखेगी। लोभ लालच पर नियंत्रण रखेगी। तुम्हारे से ऐसा कार्य नहीं करने देगी जिससे आप जीवन में किसी कठिन परिस्थिति में फंस सको। वह शक्ति स्त्रोत जो अपने अन्दर पैदा की है उससे तुम्हारे परिवार में कोई हानि नहीं होगी। आपके परिवार में कोई अचानक दर्द की घटना नहीं घटेगी और अल्प आयु में मृत्यु नही होगी। उसी सोच के कारण मानव संसारिक उन्नति भी करता है और अध्यात्मिक उन्नति भी करता है।

संसारिक उन्नति में मानव का अपना जीवन गृहस्थ में अनेकों प्रकार की परेशानियों से मानव जीवन पीड़ित होता है। उन सभी परेशानियों से छुटकारा पाने के लिए मानव अपने अन्दर सात्विक सोच पैदा करे। किसी से ईर्ष्या द्वेष न करे सभी से प्रेम करे किसी के लिए बुरा ना सोचे, बुरा सोचना ईर्ष्या द्वेष करना ऐसी सोच मानव को भयंकर जाल में फंसा देती है जो भी सोचोगे वह भी अंकित हो जाएगा। आप अगर किसी के बारे में बुरा सोचेगे तो समझों आप अपना भविष्य खराब कर रहे है। कभी-कभी मानव गुस्से में दूसरे मानव को अशब्द और बुरा कर्म करने पर उतारू हो जाता है। वह खुदी को बरबाद करता है। सामने वाले का कुछ नहीं बिगड़ता, वह तो अपनी जगह पर है उसने आपके साथ जो भी किया है वह अपना कार्य करेगा जो जिसने किया है उसे उसका भगुतान करना पड़ेगा। आप किसी से घृणा मत करो जो जिस प्रकार से जीवन जी रहा है वह अपनी सोच के द्वारा ही जी रहा है। जैसी सोच रखेगा उसे वैसी ही जिन्दगी मिलेगी। तुम्हारी सोच तुम्हारे साथ और शक्ति स्त्रोत में बढ़ रही है और जिसकी सोच अनैतिक है वह घट रही है। दोनों से ही सृष्टि में प्रभाव पड़ता है पहले तो खुदी मानव को प्रभावित

करती है और फिर संसार में फैलने लगती है। अच्छी सोच धर्म विभूषित होकर शक्ति स्थापित करती है और बुरी सोच अधर्म अशान्ति का प्रदूषण जगत में फैलाने का कार्य करती है।

अगर आप ईश्वर में परिपूर्ण जाना चाहते हो तो उस उर्जा स्त्रोत को संसारिक कार्यों में खर्च मत करो। अपनी सोच इस तरह से रखो कि जिस प्रकार प्रकृति के अनुसार बहने का पृथ्वी पर नदियां रखती हैं। समर्पित होकर जीवन जियोगे तो तुम्हारे कार्य सभी सम्पन्न होगे। तुम्हारे अन्दर कमाई हुई जो दोलत है वह कम नहीं होगी। जो आपने सोच से पैदा की है वह उर्जा शक्ति स्त्रोत बहती चली जायगी। आप गृहस्थी में भी योगी के सामान जीवन व्यतित करोगे क्योंकि तुम्हारी सोच स्थिर हो जाएगी क्योंकि आप जब अच्छी सोच रखोगे और मांगोगे कुछ नहीं। अपने जीवन को नदी के प्रवाह की तरह छोड़ दोगे जैसे बह रही है बहने दो ऐसी सोच रखोगे तो फिर वह खर्च नहीं होगी। आपका जीवन सरल सुन्दर होगा। आपके अन्दर ज्ञान पैदा होगा आप अपनी महत्वपूर्णता जानोगे। और ईश्वर को पहचानोगे।

और अपने जीवन को समझ सकोगे कि मेरा जीवन सोच से चलता है। और इस काया का रखवाला ईश्वर ही है। वह हमारा पिता है और जब आप सत्य को पहचान जाओगे तो आप इस भव सागर से पार हो जाओगे। इससे आपको भी शान्ति आनन्द मिलेगा ओर सृष्टि में शान्ति स्थापित होगी। ईश्वर के नजदीक मानव प्राणाली प्रेम के बन्धन में बंध सकेगी। फिर दिव्य लोक एवं पृथ्वी लोक पर समान भेद बन जाऐगा और जहां पर मृत्योपरांत मानव को जाना है वह इस पृथ्वी लोक से दिखेगा। क्योंकि जिसने यह लोक बनाया है वह तो तुम्हारे अन्दर ही है। बस तुम्हें तो संभल करके अपने अन्दर भ्रमण करना है और बाहर कुछ नहीं है सम्पूर्ण सृष्टि और इसको चलाने वाला आपके अन्दर ही है।

मानव स्वयं को भोगता है, न कि दूसरों को'

मानव जिस चीज को भोगता है या जिसे भोग रहा है उसी से मुझे आनन्द व सुख मिलता है ऐसा नहीं है। मानव जो कुछ भी यह समझकर भोगता है। वह गलत सोचता है वह तो सत्य में अपने शरीर से उसे सुख प्राप्त हो रहा है दूसरों से नहीं। यह मानव की भूल है और अज्ञान है। वह सत्य को नहीं जानता।

सृष्टि का सत्य जो भी है वह सत्य पूर्ण है। उसे झुठलाया नहीं जा सकता। मानव के शरीर के अन्दर वे सभी सुख मौजूद है। जिसे वह भोगता है जैसे नर मादा अपने आप में सत्य प्रमाण है। सृष्टि उत्पन्न करने के लिए नर मादा शारीरिक सम्बन्ध करता है। उससे सृष्टि की उत्पति होती है सृष्टि की उत्पत्ति करना धर्म और सृष्टि की रचना करना ओर करने के बाद उसी से मोह करना स्वाभाविक क्रिया है। जो हर जीव के अंदर होती है। परन्तु वह नर मादा की प्रकृति की तरफ से उर्जा स्त्रोत है। जो उत्तेजित करती है और शारीरिक सम्बन्ध से नर मादा के साथ भोग करता है। उससे उसे सन्तोष ओर आनन्द की अनुभूति होती है। यह कला प्रेम कला है जो हर जीव के अन्दर प्रगट होकर सृष्टि में विराजती है। जिससे सृष्टि की उत्पत्ति होकर जीव उसी में लिप्त होकर मोह वंश अपनी उम्र गुजारता है। पशु, पक्षी, आकाश, पृथ्वी, जल के सभी जीव इस रहस्य को करते है। यह आन्नदिक रहस्य सभी के अन्दर मौजूद होता है। जिस प्रकार से ईश्वर का वास सभी जीवों के अन्दर मौजूद है, उसी तरह शारीरिक सम्बन्ध, घनिष्ठता प्रेम का सम्बन्ध, सभी जीवों के अन्दर मौजूद है। सृष्टि भी जीवों के द्वारा उत्पन्न होती है और उसी सृष्टि का हर जीव पालन करता है। इसी प्रकार से हर जीव दूसरे जीव का पेट भरता है जो उसके द्वारा पैदा हुआ है। उसका धर्म के अनुसार कृत्य पूर्ण करता है। परन्तु यह सब जीव अपनी सृष्टि विधान के अनुकूल करता

है। ऋतु के नियम ओर प्रकृति की ओर से बनाया गया नियम पर जीव सत्य में खरे उतरते है। और नियम के अनुसार सृष्टि करते हैं। ईश्वर ने उन्हें यह उर्जा स्त्रोत जाग्रत स्थिति में दिया है। जो गुण इस पृथ्वी पर सभी जीवों में होता है ओर ईश्वर ने सभी जीवों में दिया होता है। इसका तात्पर्य यह है, कि जो उर्जा स्त्रोत सभी जीवों में विद्यमान है दूसरे गुण नहीं है। जो मानव पर जीवों में होते हैं। उसी प्रकार जो गुण सम्पूर्ण पृथ्वी पर जीव में रहते हैं। सभी के अन्दर सृष्टि करने का गुण है तो फिर वह कहां से उत्पन्न हुआ वह ईश्वर की तरफ से उत्पन्न हुआ। उनके अन्दर भी शक्ति बीज है। जो उन्हें सृष्टि करने का उत्तेजना स्त्रोत बनाता है। नर मादा से सृष्टि की उत्पत्ति होती है। वह एक नर मादा के अन्दर का आनन्द है जो नर के शरीर से निकलता है और मादा के शरीर में प्रवष्टि होकर गर्भ धारण करके उसी प्रकार की सृष्टि पैदा करता है जिस प्रकार की शक्ल शरीर नर मादा का होता है। परन्तु यह ईश्वर की उर्जा स्त्रोत शक्ति है जो हर जीव के अन्दर पाई जाती है। और यह आनन्द की सृष्टि है सृष्टि पैदा करने में आनन्द मिलता है। प्रेम की पूर्ण प्रकृति की पूर्णता उस माता के अन्दर व्याप्त होती है। सम्पूर्ण सृष्टि प्रेम और आनन्द के द्वारा बनती है। वह उर्जा स्त्रोत ईश्वर की तरफ से पैदा होता है। क्योंकि ईश्वर आनन्द में हैं और प्रेम में वास करते हैं।

जिस प्रकार सृष्टि का उत्पन्न होना, आनन्द और प्रेम को सम्बन्ध है। प्रेम और आनन्द ही जगत की सत्य धर्म की नीव है। आनन्द ओर प्रेम के पथ पर चलकर ही सृष्टि बसाई जाती है। जीवों में देखिए, जो जीव शाकाहारी होता है, वह शाकाहारी ही रहता है और जो जीव मांसाहारी होता है मांसाहारी ही रहता है। समय के अनुसार संम्भोग की क्रिया करते है और सृष्टि करते हैं।

आनन्द ओर प्रेम की प्रक्रिया जब सभी जीवो के अन्दर है। सृष्टि की उत्पत्ति उसी के द्वारा उत्पन्न होती है तो वह उर्जा स्त्रोत ईश्वर

की शक्ति का स्त्रोत है। जो हर जीव में पाया जाता है। बल्कि गुण उनके अपने पूर्व के अनुसार उनकी उत्पत्ति योनियों के आधार पर घटित होते हैं। जीवों में भी आयु निर्धारित होती है। परन्तु कुछ तो जन्म लेते ही मर जाते हैं और कुछ दबकर मर जाते हैं। कुछ ऋतु के अनुसार ठंड और गर्मी के कारण मर जाते हैं। वह मर कर दूसरे जीवन में उत्पन्न हो जाते हैं और अपना चक्रपूर्ण करते हैं। यह पृथ्वी का भ्रमण है। हर जीव उसी प्रकार से उत्पन्न होता है जिस प्रकार मानव प्रणाली उत्पन्न होती है। इन्हीं कीट पतंगों में से होकर जब जीव अपने कर्मों का चक्र पूर्ण कर लेता है। तभी उसका जन्म मानव योनी में होता है। बिना गिनती वाला समय निर्धारित होता है। जो जीव जितने समय में इस चक्र को पूर्ण करेगा उसे फिर मानव जीवन मिलेगा। कितनी कठिनाइयों से भरा यह जीव कितना भ्रमण करता हुआ आगे बढ़ता है ओर फिर मानव जीवन पाकर इसी पृथ्वी पर विराजता है। जितने भी जीव इस पृथ्वी पर है सभी जीवों को मानव जात से सहायता भी मिलती है, और उत्पीड़न भी होता है। आकाश में उड़ने वाले पक्षी, चार पैरों से चलने वाले पशु, धरती के अन्दर वास करने वाले जल के अन्दर वास करने वाले सभी जीव मानव से पीड़ित भी होते हैं। मानव से सहायता भी पाते है। क्षण भर में पैदा होने वाले जीव भी होते हैं। मर भी जाते हैं यह सब कुछ ईश्वर की कला होती है। ईश्वर की उर्जा स्त्रोत के अनुसार हर जीव चेतन्य स्थिति में चलता फिरता है। उसके अन्दर दिव्य यन्त्र लगे हुए हैं। जिसके द्वारा चलता रहता और अपना सफर योनियों का पूर्ण करता है और अन्तिम में मानव जन्म लेता है जो बहुत महत्वपूर्ण है। इसी जीव की वजह से यह सृष्टि भ्रमण होता है जो सम्पूर्ण दिव्य संचालन है। जिसको ईश्वर चला रहे हैं। छोटे पैरों वाले जीव एवं बड़े पैरों वाले जीव धरती पर रेंगने वाले जीव उड़ने वाले जीव सभी के अन्दर यह दिव्य उर्जा स्त्रोत है, ईश्वर है, शक्ति स्त्रोत एक एक स्वांस ईश्वर की कृपा से

लेता है। एक एक पैर धरती पर उन्हीं यंत्रों से चलता है जिस प्रकार मानव का बनाया हुआ यन्त्र चलता है। उसी प्रकार जीव के अन्दर दिव्य यन्त्र जो ईश्वर की शक्ति का स्त्रोत लगा हुआ है। जिससे जीव चेतन्य होता है, चलता है। जीवों की उत्पत्ति सभी इसलिए बनाई गई है जिससे मानव बनाया जा सके यह अग्नि तप है। कितनी योनियों में भ्रमण करके मानव जीवन मिलता है परन्तु मानव अपनी पहचान से अनभिज्ञ है, अज्ञान है। अपनी महत्वपूर्ण और अपने प्रति ईश्वर प्रेम नहीं जानता जिसके कारण यह पृथ्वी बनाई गई है।

मानव प्रत्यक्ष ईश्वर का प्रतीक है ओर मानव काया के अन्दर ईश्वर वास है। फिर भी मानव इतनी भूल करता हुआ आगे बढ़ता रहता है। इतनी ज्यादा भूल कर देता है कि ईश्वर को युग बदलने, परिवर्तन करने की बजह धारण करनी पड़ती है। मानव अपने आप में इतना ज्याद अहंकारी ओर अहंकार के कारण पाप का भय नहीं मानता। पापी कार्य करने से नहीं हिचाकिचाता पापी कर्म करने, हिंसा करने, मानव से नफरत करने का भय नहीं मानता निडर हो जाता है। परन्तु अपने अन्दर भय को जन्म देता रहता है। हर वक्त भय की उर्जा स्त्रोत मानव के अन्दर बढ़ती जाती है। वह यह नहीं समझता कि जिस कार्य को वह निडर होकर कर रहा है। वही मानव के लिए भय पैदा कर रही है। वह क्यों कर रहा है क्योंकि वह अज्ञानी है और अज्ञान के कारण उसके अन्दर सम्पूर्ण सोच नाकारात्मक भरी हुई है जिसकी परत इतनी मोटी हो चुकी है, कि वह ईश्वर की उर्जा शक्ति बनने ही नहीं देती। जब तक सात्विक सोच पैदा होती रहेगी तब तक ज्ञान की उपज ईश्वर शक्ति सर्वेश्वर है शक्तिमान है। ईश्वर से डरना पाप ना करना जैसी परिस्थिति मानव के अन्दर प्रविष्ट नहीं हो सकती। यह मानव जाति के लिए रहस्य है क्यों कि मानव इस पृथ्वी पर सात्विक सोच लेकर आया है। ईश्वर के द्वारा पैदा होता है ओर ईश्वर के द्वारा मरता है। सृष्टि का कारण भी मानव जात

ही है जिसके कारण सृष्टि बसाई गई। इस महत्वपूर्ण को मानव नहीं जान सकता। जिससे सृष्टि में उन्नति हो और युग की आयु ज्यादा से ज्यादा बढ़ सके और मानव में धर्म का वास हो। मानव-मानव से प्रेम करे। और उस परमेश्वर को सर्वोपरि मानकर हर समय उसको याद करे इसी आधार पर यह सृष्टि बसाई जाती है परन्तु आज का मानव रक्षक बनकर भक्षक बन गया है। अपने आपको ही खाता जा रहा है। अपने अन्दर इतना भय पैदा करता जा रहा है कि आने वाले समय को सहन नहीं कर पायेगा।

क्यों कि मानव अगर इसी तरह सोच को रखता रहा और आगे बढ़ता रहा तो वो दिन दूर नहीं जब सृष्टि में हलचल मच जायेगी। और मानव के पास कोई स्त्रोत नहीं बच सकेगा जिसके बल से वह उस मुश्किल से बचा जा सके। क्योंकि जो सहारा उसे मिल सकता था वह उर्जा स्त्रोत शक्ति उसके अन्दर इतना भी नहीं बची जिससे उसकी सहायता हो सके ओर फिर उस परिस्थिति में मानव की मृत्यु होगी। तो फिर मानव इतना पीड़ित होगा कि उसका मन विचलित एवं भय से भरा होगा। और इसी अवस्था में मृत्यु को प्राप्त करेगा और फिर वह अन्ध-धुन्ध उसी सोच में घुमता रहेगा और अगर युग परिर्वतन हो गया और सात्विक धारा का युग आ गया तो वह जिसने मृत्यु प्राप्त की थी वह बहुत समय बाद उस पृथ्वी पर आयेगा। जन्म लेगा जिस समय ऐसा ही वातावरण होगा जैसे वह छोड़ कर गया था।

इस सृष्टि में कोई मरता है और कोई आता है यह मानव अमर गाथा है। शरीर का बनना, बिगड़ना है बस और कुछ नहीं।

मानव खुद ही सर्वोपरि सत्ता है ओर खुद ही दोषी है

मानव अपने आप को जाने अपने अन्दर की यात्रा करे और अपने अन्दर के यंत्रों को पहचाने ओर विश्वास करे। जो यन्त्र मेरे अन्दर लगे हुए है वह सभी दिव्य है। ईश्वर के द्वारा गठित किए हुए हैं सत्य पर अडिग होकर अमल करे। ईश्वर को सर्वोपरि मानकर गृहस्थ में ही रहकर जीवन व्यापन करे। अपनी संसारिक उन्नति भी करे। संसारिक उन्नति में कोई भी रुकावट नहीं आती अगर वह मानव अपने विषय अच्छे कर्म को ध्यान में रखे और सब कुछ ईश्वर पर छोड़ दे। झूठ बोलकर धन नहीं कमाया जाता। उस कमाये हुए का क्या लाभ वह तो बादल की छांव के बराबर होता है। कभी टिक नहीं पाता आता है, चला जाता है। चाहे मानव झूठ फरेब से कितना भी बड़ा बन जाय उसका पतन अनिवार्य है। जो मानव सत्य के आधार पर धन कमाता है। वह धन कई पीड़ियों के लिए निर्धारित होता है। अगर किसी पीढ़ी में कोई अधर्मी पैदा हो जाए तो वह धन जो पहली पीढ़ी वालों ने इमानदारी से कमाया था वह समाप्त हो जाता है। इसी प्रकार सम्पूर्ण सृष्टि के लिए है, जब तक सृष्टि सत्य के आधार पर चलेगी तभी तक सुरक्षित रह सकती है। अगर सृष्टि के अन्दर जब झूठ बेईमानी पापकर्म बढ़ने लगते हैं वह उसी प्रकार टूटती है जैसे एक मानव के जीवन में घटना घटती है। उसी प्रकार सृष्टि में भी घटती है। एक मानव का जन्म लेना, जीवन व्यतीत करना और मृत्यु को प्राप्त होना होता है। उसी प्रकार सृष्टि का वर्णन होता है। क्योंकि सृष्टि मानव के ऊपर ही निर्धारित है कि वह उसे सुरक्षित रखे या फिर असुरक्षित

रखे। मानव के ऊपर ही इसका भार होता है। भार पृथ्वी पर नहीं चढ़ता वह तो ईश्वर की बनाई हुई परम्परा है। वह अपने आप में पवित्र और शक्ति सम्पन है, जो भी भार सृष्टि में आता है वह मानव के द्वारा उत्पन्न होता है। और मानव के द्वारा कर्म होता है कहते है कि धरती पर पाप अधर्म का बोझ बढ़ता जा रहा है। वह धरती पर नहीं बढ़ता वह तो मानव जात पर ही बढ़ता है।

मानव के द्वारा ही पाप का बोझ बढ़ता है। मानव जात को ही भुगतना पड़ता है मानव ही इस पृथ्वी लोक में मूल कारण है एक पापी अधर्मी भी यह कहता है कि धरती पर पाप बढ़ता जा रहा है। परन्तु वह यह नहीं देखता कि जिस पृथ्वी पर खुदी मानव रहता है। वह तो दूसरे पर अपना दोष डालकर यह स्वाभाविक ही कह देता है कि धरती पर पाप का बोझ बढ़ गया है। उसे यह नहीं पता कि जब वह इस धरती पर वास करता है जन्म लेता है, जीवन गुजारता है, और मृत्यु प्राप्त करता है। तो फिर दूसरा कौन है जिसके कारण धरती पर बोझ बढ़ रहा है। मानव नासमझ है, अज्ञान के कारण कुछ ज्ञान नहीं है। जब मानव ही इस पृथ्वी पर वास करते हैं तो इन्हीं के कारण है धरती पर बोझ का बढ़ना। धरती पर नहीं बढ़ता खुदी मानव जाति पर पाप बोझ बढ़ता है खुद ही मानव जाति इस पाप अधर्म बोझ की जिम्मेदार है। सब कुछ मानव के अन्दर है। सम्पूर्ण सृष्टि सम्पूर्ण ज्ञान पाप कर्म और ईश्वर सभी कुछ मानव देह में वास करते है। बस जानने की आवश्यकता है। इस सृष्टि का मानव सदैव दूसरे को दोषी बनाकर अपना मन अच्छा रखना जानता है। परन्तु अपने अन्दर नहीं झांककर देखता कि कोन दोषी है। इस ब्रह्मण्ड में जो मानव जात के साथ घट रहा है मानव अपना भेद नहीं जान सका। अपने आप को अपना नहीं बना सका। ना ही दूसरे मानव को जीत सका। एक मानव दूसरे मानव को पा नहीं सका और जब अपने को नहीं पा सका और दूसरे मानव को नहीं पा सका तो फिर ईश्वर

को कैसे पा सकेगा।

हिरन की तरह मानव हर वक्त भागता जा रहा है। उसे ज्ञान नहीं कि सब कुछ मानव देह में है। जहां भी तुम तुम्हारा शरीर है वही पर सम्पूर्ण ब्रह्मण्ड वास करता है। पाप पुण्य ज्ञान वैराग्य ओर ईश्वर की आलोकिक सत्ता तुम्हारे अपने अन्दर ही है। बाहर मत ढूंढो! बाहर वाले को दोष मत दो बाहर से कोई दूसरा नहीं आया। इस पृथ्वी पर मानव जात का वास है दूसरी जात नहीं जो जिम्मेदार हो और जिम्मेदारी लेती हो।

सब कुछ जो सृष्टि में घटता बढ़ता है। उसका जिम्मेदार खुद ही मानव जात है जो अज्ञान के कारण सत्य से बहुत दूर है। मानव जाति जो अपने अन्दर लिए घूम रही है वह दूसरे के पास ढूंढने जा रही है। अपने परिवार को अपनी बुद्धि से चलाओ। अगर दूसरे की बुद्धि इस्तेमाल करोगे तो कुटुम्भ टूट जायेगा अपना दर्द खुद ही दूर करना है अपने आपको जानो। अपनी खुशी तुम अपने अन्दर से ही महसूस कर सकते हो। दुख भी अपने अन्दर से ही महसूस कर सकते है जो तुम्हारे अन्दर है। तुम्हारी महसूस की हुई कोई भी बात दूसरे को महसूस नहीं हो सकती। तुम्हीं अन्दर का दुख और सुख खुद ही उसके जिम्मेदार हो। उसका उत्तर निकालने के लिए भी बुद्धि तुम्हारे ही पास है, दूसरे के पास इसका हल नहीं है। दूसरा मानव तो तुम्हे अपनी खुशी या दुख शब्दों के द्वारा प्रगट करेगा। जब आपको पता चलेगा कि वह मानव दुखी है या सुखी है। बस पता चलने के बाद अगर आप सात्विक सोच को; मानव हो तो आप अपनी ऊर्जा शक्ति जो आपके ही अन्दर है उसी से दूसरे मानव के दुख का निवारण सम्भव होगा। अगर आप स्वयं तमों गुणी सोच के हो तो जो सात्विक मानव तुम्हारी सहायता करेगा तो उसे ही हानि पहुंचेगी क्योंकि जो ऊर्जा शक्ति सात्विक मानव के पास है। उसी के द्वारा तमों गुणी सोच के मानव का दुख हरण होगा वह खर्च होगी। अगर सात्विक मानव

दूसरे सात्विक मानव के किसी कार्य में सहयोग करेगा तो उर्जा शक्ति दोनों मानव में बढ़ेगी। जिससे दोनों को तो लाभ होगा ही और दूसरे आसपास वालों को भी लाभ पहुंचेगा। तमो गुणी मानव दूसरे तमों गुणी मानव के किसी कार्य में सहायता करेगा तो दोनों किसी भी मुसीबत में फंस जायेगे। क्योंकि उनके पास उर्जा शक्ति कमजोर हो जाती है। इसी तरह इस सृष्टि में हर मानव का भावनानुकूल स्थिति से जीवन गुजरता है, और इस सृष्टि का संचालन होता है। सृष्टि हमें विरासत में मिली है। जिसको बरबाद करने का हमें हक नहीं बल्कि अगर सृष्टि में मानव सृष्टि को बिगाड़ना चाहते हैं, तो उसे रोकने का पूर्ण हक है। अगर सात्विक सोच के मानव के सामने कोई सामने सुन्दर फल को तोड़कर मसल दे तो सात्विक मानव को दुख पहुंचेगा और वह फूल तोड़ने वाले से नफरत करेगा। इसी तरह से सृष्टि फूल की तरह कोमल फूल की पंखड़ियों जैसी सृष्टि बनी है। इसका एक भी पत्ता टूटेगा तो सृष्टि की कोमलता सुन्दरता जो सदैव से अपनी धुरी में बह रही है, उसमें उलझन आ जाएगी। अगर फूल की पंखड़ियों से एक पंखड़ी को तोड़कर फेकं दे तो फूल की रंगत समाप्त हो जाती है। इसी प्रकार से दुनिया में हिंसा झूठ अनैतिक सोच से ब्रह्मण्ड में विघ्नं आ जाता है करुणा से बसी हुई सृष्टि दया धर्म पर चलने वाली परम्परा है। इसे ईश्वर ने कितनी सुन्दरता से बनाया है। इसके साथ मानव का छेड़छाड़ करने को कोई हक नहीं। जो छेड़छाड़ करता है उसका उतनी प्यारी नहीं होती जितनी सात्विक मानव को प्यारी है, जो देखकर प्रसन्न होता है और एक मानव प्रसन्न नहीं होता दोनों में फर्क है। और यह फर्क ही सृष्टि में अच्छा और बुरा पाप और पुण्य का वातावरण बनाता है।

जिससे सृष्टि में कोई आफत नहीं आती और अगर आती भी है तो उसके जिम्मेदार वह अज्ञानी मानव होते है। जो अपने खून से भी दगा करते हैं, ऐसे मानव के लिए कोई ठिकाना नहीं न तो पृथ्वी

लोक और न ही दूसरे लोक है। वह मानव तो उलटा अधर में लटका रहता है। हर वक्त उसके सिर के नीचे अग्नि कुण्ड बन कर जलता रहता है चाहे वह जीवित हो या मृत इसलिए ईश्वर कहते हैं कि मानव एक सम्पूर्ण प्राणी है। वह अपने अन्दर के यन्त्र देखे और उन्हें संभाले ओर न तो मानव जात से छेड़छाड़ करे और न ही अपने से छेड़छाड़ करने दो। सृष्टि नदी की तरह बह रही है उसके बहने दे अपना जीवन भी बहने दे सब कुछ ईश्वर का है।

बचपन से जवानी तक स्वस्थ सुन्दर शीतल शब्दों से प्रेम से सम्बोधित करना।

इस युग के धरातल पर दुनिया बसी हुई है। इस धरातल पर मनुष्य जाति का जीवन कितना संघर्षमय एवं विचलित है मनुष्य समाज में, वह संसार, व कुटुम्भ में व्यस्त एवं ईर्ष्या, मानसिक तनाव से ग्रस्त और शरीर अस्वस्थ, दिमाग आवश्यकताओं एवं उलझनों से घिरा हुआ और स्वभाव में दर्द छिपा हुआ है आज का मनुष्य कितना गर्दिशों में है। वासनाओं में सोच का बहाव घृणित दृष्टि के वेग से उत्पीड़त है।

इन सभी विषयों के बारे में और इससे छुटकारा पाने के बारे में जो ज्ञान ईश्वर के द्वारा प्रगट होंगे वह नीचे पन्नों पर लिखा जाएगा।

सबसे पहला प्रश्न :-

सभी बच्चे बूढ़े जवान, नारी, अस्वस्थ और मानसिक तनाव से असन्तुलित क्यों है।

मनुष्य जात अपनी सोच सबसे पहले शुद्ध करें और शब्दों का उच्चारण शुद्ध, स्वर मीठा ओर शीतल करे।

धर्म के अनुसार बच्चों के अन्दर सत्य संकल्प, ईश्वर से प्राप्त की गई प्रेरणा, माता-पिता का दायित्व निभायें जिससे आपके बच्चे, दिमाग, स्वभाव शरीर से स्वस्थ रह सकें और ईश्वर की शक्ति को अपने मन के अन्दर भर सकें।

सुन्दर शब्दों का उच्चारण माता-पिता के प्रति शुद्ध ओर शीतल स्वभाव से जीवन व्यतीत कर सके और संसारिक ओर अध्यात्मिक उन्नति कर सके ओर अपने बड़ों और अन्य परिवार जनों में रहकर आदर सत्कार की भावना अंकुरित हो सकें अध्यात्मिक चेतना से आंत्रिक जगत चेतन्य हो सके।

उसके बाद खाने पीने का ध्यान समय के अनुसार कर सके, यह ज्ञान सबसे पहले माता-पिता को हो।

फिर माता-पिता बच्चों को यह ज्ञान अमल कराये जीवन में रोजमर्रा हम जो खा पी रहे है और अपना जीवन जी रहे हैं वह सब कुछ अशुद्ध है और हमारी सोच भी अशुद्ध है।

अशुद्ध सोच के कारण ही मनुष्य जीवन के अनमोल समय को गंवा रहा है और अपनी नैतिकता से मुकर रहा है।

हर वह मनुष्य जहां पर वह कार्यरत है अपने परिवार के लिए कर्म करता है उस पर खरा नहीं उतर रहा है। यह सब अशुद्ध सोच अज्ञान विपत्तियों का आने का डर नहीं तो और क्यों जीवन अमूल्य धरोहर है। उसे व्यर्थ में गवाने का डर नहीं सब कुछ स्वार्थ के आधार

पर, मिलावट के आधार पर, मनुष्य जात की खाने-पीने की वस्तु में मिलावट, शब्दों के बोलने तक में मिलावट, झूठ-फरेब धोखा नीयति में खोट, अनन्य दोष मनुष्य जात में पनप रहे हैं। मनुष्य को खबर नहीं कि इसका अंजाम क्या होगा। बीमारियां अनेकों प्रकार की पनप रही हैं। एक अकेला मनुष्य सोचता है कि मैं गलत करूंगा या मिलवाट करूंगा झूठ फरेब करूंगा तो इतनी बड़ी दुनिया में कोन जानेगा या क्या असर पड़ेगा। इसी प्रकार सात्विक मनुष्य भी यह ही सोचता है कि मेरे सत्य और मनुष्य ज्ञान देने से क्या फर्क पड़ेगा इतनी बड़ी दुनिया में दोनों प्रकार के मनुष्य दोषी है। मनुष्य अगर एक झूठ बोले तो हिंसा जन्म ले लेती है और अगर खाने पीने की वस्तुओं में मिलावट करे तो कितने मनुष्य प्रभावित होते हैं उन्हें इस जटिल समस्या का ज्ञान नहीं जो युद्ध स्तर पर दुनिया में फैल रही है।

दूसरा मनुष्य अपने आप में तनाव में है क्योंकि वह सोच रहा है कि मेरे समझाने से इतनी बड़ी दुनिया कैसे समझेगी कितना फर्क पड़ सकेगा। फर्क क्यों नहीं पड़ेगा फर्क जरूर पड़ेगा जब एक झूठ से हिंसा दुनिया में जन्म लेती है तो सात्विक पुरुष के बोलने, समझाने से फर्क जरूरी पड़ेगा। इसीलिए धर्म घर के अन्दर बैठा हुआ है कि मेरे साथ दुनिया को समझाने के लिए कौन तैयार होकर आगे बढ़ेगा। यह धर्म है।

आज का मनुष्य मिलावटी ओर ईर्ष्या द्वेष संसारिक प्रपंचों से घिरा हुआ वह अपना घिनोना कार्य इतनी बड़ी दुनिया में कर रहा है वह अधर्म है। ऐसा मनुष्य बाहर निकल कर सबकुछ कर रहा है इसीलिए अधर्म ज्यादा बढ़ रहा है और धर्म का मनुष्य घर में अपनी इज्जत बचाय बैठा है और इंतजार कर रहा है। कौन आयेगा मेरे जैसे गुण वाला मनुष्य जो इस दुनिया को जीने का ज्ञान दे सके। जो जगत

में मनुष्य कर रहा है उसका उत्तर दे सके। इसका परिणाम क्या होगा ओर मनुष्य जात को ही भुगतना पड़ेगा।

गलत सोच वाले मनुष्यों के द्वारा दुनिया में बीमारियां, झूठ का बोलबाला, बढ़चढ़ कर झूठ बोलना, धन के आधार पर अनैतिकता का खेल खेलना, यह सभी प्रकार के अवगुणों से परिपूर्ण मनुष्य जात झेल रही हैं। और रोजमर्रा की जिन्दगी मे अपना तो मनुष्य जीवन खराब करता ही है। परन्तु दूसरों के जीवन में भी बीमारियों, हिंसा, नारियों को उत्पीड़न करने जैसी बुराईया फैलाता है। जिसका मनुष्य जात को ध्यान भी नहीं होता और ऐसे मनुष्य का भेद आम मनुष्य को नहीं चल पाता। न ही सरकार को भेद पाता। समाज में ऐसे मनुष्य छिपे रहते हैं क्योंकि दोष दिखता नहीं वह तो विचारों में है उसे दण्डित भी नहीं किया जा सकता। क्योंकि आपके पड़ोस में ही देखो हो सकता है वह मनुष्य बोलने चालने में खूबसूरत हो और अन्दर विचारों में अधर्म पनप रहा हो उसे आप कैसे पहचानोगे, क्यों कि सोच तो अन्दर से पनपती है। शुद्ध हो या अशुद्ध इसका आप पता नहीं लगा सकते इसका तो ईश्वर को ही पता चलता है या फिर उसे ईश्वर की तरफ से दण्ड मिले तभी पता चल सकता है। वह भी कर्म करने वाले को ही पता चलेगा क्योंकि अपने विचार अपने कर्मों का स्वयं को ही पता होता है।

ऐसी बुराई जगत में घर घर में फैलती जा रही है ये ऐसी बुराईयां है जो ज्ञान से समाप्त की जा सकती है। अनैतिक सोच के मनुष्य को भी नहीं पता होता कि मेरे कारण दुनिया में कितना जहर फैल रहा है। जो हर परिवार नारी, बच्चे, बूढ़े को प्रभावित कर रहा है। स्वाभाविक ही ऐसे मनुष्य के द्वारा संसार में प्रदूषण फैलता रहता है।

मनुष्य की सोच उस मनुष्य को भी प्रभावित करती है जो स्वयं सोचने वाला है। और ऐसे गलत सोच के कारण शब्दों का उच्चारण

भी संसार में अपना प्रभाव हिंसा के आधार पर पनपता है। आज का मनुष्य किसी भी जगह पर गलत शब्दों का उच्चारण करने में कभी भी नहीं हिचकिचाता। ऐसा मनुष्य का परिवार यात्रा करते समय व्यवहार आपस में करते समय शब्दों का उच्चारण गलत तरीके से करेगा। उससे दुनिया में प्रदूषण फैलेगा। गलत सोच के मनुष्य उन शब्दों को अपने अन्दर बिठाकर संजो लेते हैं। क्योंकि इस युग का नर हो या नारी या बच्चा, बुढ़ा, जवान कोई भी हो गलत बात को जल्द पकड़ता है। क्योंकि समय ही ऐसा चल रहा है आसुरी शक्तियों ने सृष्टि के ऊपर अपना प्रभाव डाल दिया है। असुंरी शक्तियां ज्यादा शक्तिशाली होती जा रही है। मनुष्य जात के मनों पर प्रभाव डालती है। सोच में कटुता हिंसा वासनाओं के जन्म देती हैं।

आम मनुष्य को इस रहस्यपूर्ण ज्ञान का पता नहीं है कि दुनिया के अन्दर मनुष्य जात इतनी कठोर क्यों होती जा रही है। न तो कोई माता-पिता को मीठे शुद्ध शब्दों में बात करना चाहता। न ही कोई किसी को जीवन जीते देख कर खुश है। अगर कोई अपना ज्यादा धन कमाता है तब भी मनुष्य जात उस मनुष्य से ईर्ष्या करती है। और अगर गरीब है तो भी उसे देखकर ईर्ष्या करती हैं। इसका कारण दुनिया में आसुरी शक्तियों का फैलाव है। देवताओं का प्रभुत्व कम होना है। परन्तु इस रहस्य से मनुष्य जात अनभिज्ञ है उसे नहीं पता है कि वह किस राह पर जा रहा है।

उदाहरण के तौर पर यह राह ऐसी कठिन परिस्थितियों की उत्तेजित घृणा स्त्रोत है कि जैसे किसी अच्छे माता-पिता का पुत्र किसी गलत सोच हिंसक मनुष्यों के साथ रहने लगे, और माता-पिता कुछ न कर सके। उसी प्रकार से इस सृष्टि में हो रहा है ईश्वर धर्म है। और मनुष्य धर्ममय जीना नहीं चाहता अपने जीवन मूल्यों को अपनी कामनाओं ओर गलत ढंग से धन कमाना, उल्टे-सीधे कार्य करना, गलत सोच रखना आदि में लगा हुआ है। उसे कोन समझाये कि यह रास्ता गलत

है। दुनिया पर असुरी शक्तियां मनुष्य जात पर अपना असर जमाना चाहती है उनसे बचना है। अपने पिता ईश्वर की तरफ जाना है, जिसे यह दुनिया बचाई जा सके यह कार्य मनुष्य की सोच से ही संभव हो सकेगा जिससे मनुष्य जात निर्भय होकर इस में अपना जीवन बिता सके।

आसुरी शक्तियां कोई मनुष्य जात नहीं है। न दिखने वाली कोई ऐसी शक्ति है जो मनुष्य को दिखती हो। वह शक्ति तो अधर्मराज करने के लिए दुनिया में प्रगट होती है। जिस प्रकार से अलग अलग धर्मों के पैगम्बर होते हैं। मनुष्य जात उनको मंत्रों के द्वारा, बाईबल के द्वारा याद करती है। कुरानशरीफ के द्वारा धर्म ग्रन्थों के द्वारा सृष्टि का विधान धर्मानुकूल चलाती है। इसी प्रकार से जब अधर्म दुनिया में फैलता है तो आसुरी शक्तियां मनुष्य जात के मनो पर आकर बैठ जाती है। आप खुद ही सोचिए एक तरफ से आप सात्विक ढंग से मंत्र जाप करते हो ईश्वर का नाम भजते हैं। एक मनुष्य हर वक्त बुराई सोचता है तो बताइये कि ईश्वर का कोन-सा हुआ ओर आसुरी शक्तियों से प्रभावित सोचने वाला मनुष्य कौन-सा हुआ। इसी तरह से दुनिया में पाप हिंसा नारियों के साथ असभ्य व्यवहार मनुष्य मनुष्य को मार रहा है।

यह सब असुरी शक्तियों का दुनिया पर आसान जामाना है। यह कार्य देवताओं और आसुरों का आदि ब्रह्मण्ड से ही चलता रहता है जीत देवताओं की होती है। ओर इस सृष्टि में भी मनुष्य अच्छी सोच के साथ इस रहस्य को समझेगे तो मनुष्य जात सात्विक सोच में ढाली जा सकती है।

जब मनुष्य जात अपनी उन्नति में सराबोर हो जाती है। तब ईश्वर की चित्रकारी प्रकृति को भूलने लगती है। ओर अपने द्वारा बनाये हुए यन्त्रों पर अपना प्रभाव जमाकर अहंकार से परिपूर्ण हो जाती है। ईश्वर की बनाई हुई प्रकृति उसे अपने आगे छोटी लगने लगती

है। यह मनुष्य जाति अपने वश में नहीं रहता वह रहस्यमयी शक्तियों के आधीन हो जाता है। जिसका इंतजार असुरी शक्तियां युगों से करती आ रही है और अपना प्रभाव भी जमाती रही है। मनुष्य जात इस रहस्य को समझ नहीं पाती और आगे की तरफ बढ़ती चली जाती है। आसुरी शक्तियां मनुष्य जात पर अपना प्रभाव मनो पर जमा लेती है। और मनुष्य जात जो भी करती है वह ही उसे अच्छा लगने लगता है। और उससे जगत में पाप बढ़ने लगता है। मनुष्य जात अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति करने में व्यस्त हो जाती है। और घृणित से घृणित कार्य करने लगती है। ईश्वर का ज्ञान जो वेदों, पुराणों, कुरान, बाईबल, ग्रन्थ साहब को भी अपने व्यवसाय का जरिया बनाने एवं सुंदर शब्दों से जगत का मोह अपनी तरफ करके धन कमाने का जरिया बनाने में नहीं हिचकती। दिव्य शब्दों को मनुष्य जात बेचने लगती है। यह सब आसुरी शक्तियों का प्रभाव होता है। ऐसा जगत बनने लगता है कि पुत्र माता पिता सगे सम्बन्धियों से अशब्द बोलने लगता है। जो कार्य, मनुष्य बात नहीं करने योग्य हो वह भी कर देती है।

जिससे जगत में पाप का उफान आने लगता है। नारी जाति का अपमान, गरीबी लाचारी, भुखमरी, जैसी विपत्तियां आने लगती है। पुत्र जिस माता से जन्म लेता है उसी को अशब्द से बुलाने लगता है, संस्कार नाम अंश भर भी नहीं रह जाता। पूर्ण मानव जाति अपना मार्ग अपने विधान से चुन लेती है। किसी का कोई भय नहीं किसी की कोई शर्म नहीं नारी अपना वेष बदल लेती है। जिससे जगत में सोचती है कि हमसे मनुष्य जात प्रभावित हो परन्तु इससे हिंसा जन्म लेती है। नारी माता है और माता ही रहेगी नारी धर्म सभी विपत्तिों से बचाने के लिए शक्तिदायक होता है नारी माता बनती है और उसका दर्जा इतना बड़ा होता है कि हर नर नारी से जन्मता है। माता के चरणों में सम्पूर्ण देव लोक छिपा होता है। पुत्र के लिए माता

से बड़ा कोई दर्जा नहीं होता माता कभी भी पुत्र के लिए बुरा नहीं सोचती और सब कुछ सोच के ऊपर ही निर्धारित है। जगत की व्यवस्था पाप और पुण्य में जो प्रवेश करती है वह सोच के द्वारा ही घटित होती है। अगर सोच सम्पूर्ण जगत की सही और सात्विक है तो धर्म का स्थान सर्वोपरि होता है। अगर सोच गलत है तो अधर्म में ढल जाती है दुनिया इसे कहते है असुरी शक्तियों का प्रभाव जगत में फैल रहा है। ये एक प्रकार की उर्जा होती है जो दुनिया में पाप ओर पुण्य धर्म अधर्म का भेद बताकर उसे संसार में स्थापित करती है। जिस प्रकार एक माता कभी भी अपने पुत्र के लिए बुरा नहीं सोचेगी उस माता के अन्दर इतनी उर्जा भर जाती है। धर्म के अनुसार ही वह उर्जा ही अगली पीढ़ी तक पहुंचाती है। सब कुछ माता के हृदय में बसा है। आज का मनुष्य माता से प्रेम नहीं करता और अशब्दों से बुलाने की हिम्मत दिखाता है। माता का दर्जा इतना बड़ा होता है कि सम्पूर्ण तीर्थ और सभी दान पुण्य ना करो ओर माता की सेवा व प्रेम करो जो प्रेम माता चाहती है। वह ही प्रेम ईश्वर चाहते है एक माता की सोच अपने पुत्र के लिए इतनी ज्यादा होती है कि गंगा नदी के बहाव से ज्यादा उसकी उर्जा की गति होती है। अगर पुत्र अपनी माता से प्रेम करे उसकी ईज्जत व शब्दों से सुन्दर बोले जिससे माता प्रसन्न चित रह सके और पुत्र के प्रति हर वक्त उसका मन लगा रहे, क्यों कि माता अपने पुत्र के लिए ज्यादा सोचती है। वह अमर प्रेम सयोग होता है। वह सात्विक सोच होती है और ईश्वर सात्विक सोच के मनुष्य के अन्दर वास करते हैं। और धर्म भी वही पर टिका हुआ है। इसलिए इस भारत भूमि के निवासियों माता का आदर करो माता के आदर सत्कार से ही धर्म स्थापित हो सकेगा। जो अपनी माता का प्रेम सत्कार और आज्ञा का पालन करेगा वह इस तरह से जीयेगा। जैसे सतयुग में जी रहा हो। क्योंकि जो माता से प्रेम करेगा वह मनुष्य कभी भी किसी को नहीं दर्द देगा और

न कभी अधर्म में वास करेगा। माता सम्पूर्ण मानव जाति को जन्म देती है।

माता के वचनों पर चलने वाला कभी भी भटक नहीं सकता नर हो नारी हो हर नर की नारी माता होती है और यह भारत भूमि पर ही नहीं सम्पूर्ण पृथ्वी पर लागू होती है जहां-जहां पर मानव जाति वास करती है।

यह ज्ञान धर्म, जाति, काला गोरा, छोटा पंथ और बड़ा पन्थ यह मेरी धरती यह मेरा नाम यह मेरी ज्यादाद इन सबके लिए नहीं है। यह ज्ञान सम्पूर्ण मानव जाति के लिए है क्योंकि इसमें कोई बंटवारा नहीं है। क्योंकि ईश्वर एक है और शरीर का ढांचा पांच तत्वों से बना है। सूर्य की किरणे भी सम्पूर्ण पृथ्वी पर एक ही प्रकार से दिखाई देती है। सम्पूर्ण धरती भी एक ही प्रकार की है तो फिर अलग क्या है अलग तो मानव का बंटवारा है। जो झगड़ा करवाता है। हर पैगम्बर ने यह ही पैगाम दिया है कि हे मानव धरती पर प्रेम से जीयो ओर ईश्वर से प्रेम करो।

मनुष्य जात की सोच इतनी ज्यादा भाग रही है कि उससे जगत में अधर्म का वास और असुरी शक्तियों के द्वारा मनुष्य जात पर राज करना है। मनुष्य की सोच इतनी बड़ी है कि आप ओसत लगाईए कि एक मानव एक दिन रात में कितना सोचता है इसका कोई आदि अन्त नहीं। न ही सोचने वाला इसकी गणना बता सकता न ही इसको कोई आंका जा सकता। यह सोच इतना बड़ा दरिया है आप देखो कि आप रात दिन में किसी के लिए बुरा सोच रहे हो इस सोच की उर्जा इस जगत में क्या क्या करेगी। एक मनुष्य की सोच नदी के प्रवाह से भी ज्यादा तो है, अगर नदी का बहाव समाज बसी हुई बस्ती की तरफ मोड़ दे तो कैसी तबाही होगी इसी तरह से मनुष्य सोच है। अब देखिए कि जब एक मनुष्य की सोच में उर्जा एक नदी के प्रवाह के बराबर है, तो फिर इस सम्पूर्ण जगत की उर्जा सोचने

की क्या होगी? और कितनी तेज गति होगी। अगर सम्पूर्ण मानव जाति की सोच ईश्वर की सोच से अलग हो जाय तो अधर्म दुनिया सम्पूर्ण मानव जाति पर असर डाल देगी समझो सम्पूर्ण मानव जाति पर असुरी शक्तियों का शासन हो गया है।

और इसी सोच से धर्म बढ़ता है जितने ज्यादा होगी मनुष्यों की सोच, सात्विक अच्छी होगी दूसरों का भला चाहने वाली होगी दया सागर प्रेम से पूर्ण होगी तो समझो बस दुनिया में धर्म वहीं बचा है। क्योंकि सोच के द्वारा ही धर्म घटता है और सोच के द्वारा ही बढ़ता है। इसीलिए बार बार जब धरती पर असुरी शक्तियों का मनुष्यों के मनों पर असर हो जाता है तभी धर्म की हानि होती है। बुरा भला सभी कार्य सोच के द्वारा होते हैं। महापुरुष इसी सोच को सात्विक करने के लिए अवतरित होते हैं और असुरी शक्तियों को मनुष्यों के मनो से बाहर करके धर्म में परिवर्तन करने के लिए आते है। जब आते है तब ऐसी स्थिति दुनिया में होती है जैसे इस युग की हो गई है। सम्पूर्ण मानव जाति शब्दों का उच्चारण अपनी सोच के अनुकुल करती है। और बोलने में शब्द आते है और शब्दों से इस मानव जाति को बदला जा सकेगा।

सोच से दुनिया में अनेक बीमारियां पनप रही हैं

आज जिस स्थिति में मनुष्य जात जीवन व्यतीत कर रही है ऐसा युग पहले कभी नहीं आया। जिस तरह से मनुष्य की सोच का बहाव इतना तीव्र गति संसारिक सोच में बह रहा है वह इतना भयंकर है कि मनुष्य जात इससे आने वाले समय में बहुत ज्यादा कठिनाइयों

से गुजरेगी। क्योंकि जो यन्त्र मनुष्य जात के दिमाग में लगे हुए है वे सभी यन्त्र अच्छी सोच और ईश्वर के चिंतन के लिए लगे हुए हैं।

जिस कार्य के लिए यन्त्र मनुष्य शरीर में गठित है वे जिस कार्य के लिए उपयोग करने के लिए है उन्हें उस पर प्रयोग नहीं किया जा रहा है उससे एक दम विपरीत दिशा में मनुष्य जा रहा है।

उसी कारण से बच्चा जवान बुढ़ा मानसिक परेशानी अनेक प्रकार की बीमारियों से परेशान होकर जीवन बिता रहा है।

हर पढ़ने वाला बच्चा, अन्दर ही अन्दर इतना ज्यादा सोचता है कि उसके सोचने की शक्ति भी इतनी ताकत की नहीं है आज के युग में पढ़ाई की किताबों में ऐसा कुछ भी नहीं है जिससे बच्चे के दिमाग अन्दर ताकत मिल सके बस खर्च ही खर्च हो रही है। अगर ज्यादा खर्च होगी और ताकत कम होगी तो अपने आप ही इस मुल्क में मनुष्यों पर इतना असर पड़ेगा कि हमारी संस्कृति समाप्त हो जायेगी। कोई किसी का आदर सत्कार नहीं करेगा क्योंकि संसारिक सोच इतनी ज्यादा बढ़ गई है कि मनुष्य के अन्दर इतना दिमाग के अन्दर ताकत का पैमाना नहीं जो उसे झेल सके। क्योंकि आज के दौर में टीवी कितना ज्यादा प्रभाव डाल रहा है। मनुष्यों की कामना उस काल्पनिक दृश्य को देखने की उत्सुकता बहुत ही तीव्र गति से हो रही है। इससे जगत पर असर पड़ता है और इसको बनाने वाले ऐसा बनाते है कि भारत की संस्कृति का भी ख्याल नहीं है। उन्हें तो धन कमाना है और इससे ज्यादा कुछ नहीं। दूसरी बीमारी टेलीफोन की दुनिया में अधिक से अधिक फैलती जा रही है जरूरत से ज्यादा बोझ बढ़ रहा है हिंसा भी ज्यादा बढ़ रही है। यह तो बात सही है कि मनुष्य जात ने उन्नति की है। परन्तु ऐसी उन्नति क्या है जो मनुष्य के दिमाग को खाली कर दे कुछ दिन के अन्दर ऐसी सोच का बहाव दिमाग में चलता रहा तो ऐसी ऐसी बीमारियां जन्म लेगी जिसका

इलाज सम्भव नहीं दुनिया का हर मनुष्य दर्दमय होगा जिसका इलाज किसी के पास नहीं होगा। क्योंकि उसमें ईश्वर भी क्या करेगा जिस यन्त्र को ईश्वर ने अपने को याद करने एवं उसमें बल करने के लिए बनाया था वह ही मनुष्य जात ने छेड़खानी करके बरबाद कर देने में लगी हुई है। अपने मस्तिक्ष से तो छेड़खानी कर रहा है मनुष्य जात और प्रकृति की बनाई हुई ईश्वर की परम्पराओं को भी छेड़ रहा है। मनुष्य जात भी ईश्वर की रचाई हुई प्रकृति के अन्दर ही आती है ईश्वर ने ही मानव ढांचा बनाया है। इसलिए बनाया है कि मनुष्य जात इस शरीर के द्वारा वह कार्य करें और अपने मस्तिष्क में अच्छी सोच भरे और ईश्वर को याद करे जिससे मानव सुखी एवं समृद्ध रह सके क्योंकि मनुष्य मस्तिष्क में अगर अच्छा सोचेगा या फिर ईश्वर का चिन्तन करोगे तो किसी प्रकार की बीमारी नहीं हो सकती और आपका स्वभाव और आन्त्रिक जगत भी सुन्दर और आनन्दित रहेगा। अगर आप इस ईश्वर के रचना को अपने स्वाद की अनुसार व्यस्त रखोगे तो यह समझो की प्रकृति से छेड़छाड़ कर रहे हो। छेड़छाड़ करोगे तो भयंकर परिणाम मनुष्य जात को उठाने होंगे। क्योंकि जब आप वास्तविक संसारिक सोच और हर वक्त अपनी कामना मस्तिष्क में संजोयेंगे और इन सभी को आंखों से देखकर सोच के अनुसार ग्रहण करोगे तो मस्तिष्क में उफान आयेगा और उससे मस्तिष्क विचलित होगा। जब विचलित होगा तो वह मनुष्य को जो यन्त्र बल देते है वह कमजोर पड़ जाएगे और मनुष्य बीमारियों से उत्पीड़त हो जायेगा।

मनुष्य जात को इन सभी सोच और आंखों से वासनायें कम करनी होगी इसी से मनुष्य प्रसन्न एवं स्वस्थ रह सकेगा। अपनी सोच सात्विक करनी होगी जिससे ईश्वर की उर्जा बनेगी और मनुष्य जात को जीने की ताकत मिलेगी और धर्म का अस्तित्व भी बना रह सकेगा, और अगर सोच नाकरात्मक होगी तो सम्पूर्ण पृथ्वी पर असुरो का मनो के ऊपर राज हो जायेगा। धर्म नाम नहीं रह पायेगा इसीलिए

धरती के निवासियों यह पैगाम ईश्वर की तरफ से प्रकट हुआ है इसे ग्रहण करो।

शिक्षा में बदलाव अध्यात्मिक परिवेष में ढालना ईश्वर से प्रगट हुआ

शिक्षा का स्तर अध्यात्मिकता के आधार पर सम्पूर्ण पृथ्वी पर लागू होना आवश्यक हो गया है। जिस धर्म में जो अवतार पैगम्बर हुए है उन्होंने धर्म की ज्योति जो इस पृथ्वी पर जलाई थी उसी के आधार पर अपने -2 खण्डो में निर्धारित करनी होगी। जिससे मानव जाति की आध्यात्मिकता के आधार पर उन्नति हो सके ओर सृष्टि का मानव पूर्ण मानवता का श्रृंगार पहन कर प्रेम का सागर दुनिया में बहा सके। हर मानवता का बीज धरती पर संस्कार युक्त बो सके जिससे सम्पूर्ण धरती पर प्रेम, भाईचारा, रंग, भेद, भाषा भेद, खण्डों का भेद, ना रह सके। यह कार्य प्राथमिक आधार पर करना जरूरी हो गया है। जिससे मानव जाति भटक ना सके, वातावरण मानव दूसरे मानव से घृणा ना कर सके ऐसा बीज धरती पर बोना हेगा। क्योंकि जो भी इस ब्रह्मण्ड को चला रहे हैं वह सभी के पिता ईश्वर है। उनको याद करने के लिए किताबों के अन्दर शिक्षा में ज्ञान का वातावरण बनाना होगा। अगर सृष्टि में हर मानव अपनी ही चिन्ता करेगा तो मानव दूसरे मानव से प्रेम कैसे कर सकेगा।

इसी लिए यह पैगाम सम्पूर्ण पृथ्वी वासियों के लिए धारण करना होगा। क्योंकि सम्पूर्ण पृथ्वी, सम्पूर्ण मानव जाति, का एक ही ईश्वर है। चाहे मानव उसे अलग अलग मानता हो अलग-अलग धरती पर

वास मानता हो अलग भाषा में ईश्वर का नाम एक ही होता है सभी धर्म मानवता को प्रेम रस का बीज बोते हैं रास्ता पुण्य का धर्म का एक ही है दूसरा रास्ता तो झगड़े के लिए उत्पन्न होता है। दूसरा रास्ता स्वार्थी मानव धारण करते हैं। धर्म के मूल्यों को जानने वाले चाहे वे किसी भी धर्म से ताल्लुक रखते हो चाहे वे किसी भी दुनिया के खण्ड में वास करते हो। परन्तु उन जैसे धर्मात्माओं का रास्ता प्रेम का ही मिलेगा और ईश्वर भी एक ही मिलेगा।

संसारवासियों को यह रहस्य मालूम नहीं कि दुनिया में क्या क्या घट रहा है जो घट रहा है उसका परिणाम क्या होगा।

उसका परिणाम बहुत भयंकर मानवता के लिए होगा। क्योंकि जो भी बच्चा छोटी कक्षा में पढ़ेगा उसे मानव का सीधा लिखा हुआ ज्ञान जो संसारिक उन्नति के लिए है वह ही मिल सकेगा। उससे मानव का मस्तिष्क में उफान आ जाता है सृष्टि की उन्नति के लिए मानव की पढ़ाई शिक्षा का स्त्रोत भी जरूरी है। क्योंकि ईश्वर ने इस सृष्टि को बसाने का जिम्मा, मानव के कन्धों पर ही है। मानव जगत स्थूल में हाथ पैरों वाला है और ईश्वर ने मानव को जीने के लिए बुद्धि दी है।

बुद्धि और हाथ पैर इसलिए दिए है क्योंकि ईश्वर स्थूल में नहीं है ईश्वर प्रकाश में है। सृष्टि के कण-कण में है इसलिए ईश्वर ने इस सृष्टि को बनाने में मानव प्रणाली बनाई है। उसे इस सृष्टि को संवारने का जिम्मा दिया है। आप खुद देखिए इस सृष्टि में जो भी स्थूल में ईंट पत्थरों से, पेड़ पौधे खाने पीने की वस्तुएं जिससे मानव जीव जन्तु पशु पक्षी जीवित रह सके वह सभी मानव पैदा करते हैं और स्त्रोत ईश्वर ने बना रखा है। पानी, मिट्टी, हवा, मानव शरीर मानव के अन्दर बुद्धि सभी ईश्वर की दी हुई कलाएं हैं जिससे मानव सृष्टि बसा सके और इसके साथ-साथ धर्म की भी स्थापना की है। हर धर्म के मानवों के लिए अलग-2 खण्डों में अपने अवतार

उतारे हैं जिससे मानवता को जीने का रास्ता सिखा सके। उन्हें बता सके कि जो मानव ने सृष्टि बनाई है उसकी बुद्धि ईश्वर ने ही दी है।

मानव के सुपुर्द वह सृष्टि बनाने का जिम्मा दिया है। जो मानव की आंखों से दिख सके और जो नहीं दिखे वह ईश्वर है। जो इस सृष्टि को चला रहा है परन्तु मानव को इस कार्य सृष्टि बनाने पर अहंकार हो गया है। अपने आधार पर अपनी बुद्धि के आधार पर इस सृष्टि में मानव चेतना को चलाना चाहता हैं यह सब गलत है ये ईश्वर के विरुद्ध है।

मनुष्य शिक्षा को अपनी योग्यता, अपनी महत्वपूर्णता अपनी चेतना के आधार पर गठन करते हैं। जिससे शिक्षा का स्तर उन्हीं की बनाए गए प्रश्न चिन्हों पर चलकर मनुष्य संसारिक उन्नति करता हुआ आगे बढ़ता है। और वह उसी दायरे की पढ़ाई के अनुसार प्रगति भी करता है परन्तु किताबों के अन्दर वह गुण नहीं दिए जाते जिससे मनुष्य अपनी अध्यात्मिक यात्रा में भी उन्नति कर सके। जो मनुष्य जाति के लिए सत्य भी है और आत्म बल भी है। जो संसारिक उन्नति मानव ने की है उसे स्थापित करने का भी बल मिल सके ओर जगत में हिंसा बुराई मनुष्य का मनुष्य को मारना दूसरे मनुष्य को दर्द पहुंचाना ये सभी बुराईयां आध्यात्मिक प्रेरणा से मिटाई जा सकती है।

और जो बच्चा अपना नित्य कर्म वह पढ़ाई करता है उनका मस्तिष्क में ज्यादा कार्य की वजय से बोझ बढ़ता है। ईश्वर की उर्जा उसे नहीं मिल पाती। धीरे-धीरे बच्चा दिमागी यन्त्रों से कमजोर पड़ने लगता है और धीरे-धीरे वह जवान होने लगता है उसी समय से जब वह संसारिक कार्य के कारण उसके मस्तिष्क पर बोझ बढ़ा था उसी समय से बच्चे के अन्दर वह शक्ति कमजोर होने लगती है। जवान होने तक वह शक्ति इतनी कमजोर हो जाती है कि जो उसने किताबों के अन्दर पढ़ा वह तो उसके याद रहता है और उस पढ़ाई से उन्नति

भी करता है परन्तु वह दूसरी प्रकार की जो ईश्वर का बल जो प्राकृतिक का स्त्रोत है वह बन्द हो जाता है।

और फिर उस जवान मनुष्य के अन्दर सभी अवगुण प्रगट होने लगते है वे अवगुण जिसके लिए वे महापुरुष और अवतार वेद आदि काल से मनुष्य के अन्दर बताते आ रहे हैं। परन्तु बार-बार मनुष्य जात इस सत्य को भूल जाता है जिससे मनुष्य के अन्दर सहनशक्ति नहीं रहती और क्रोध तुरन्त आने लगता है। अपना झूठ छुपाने के लिए दूसरा झूठ भी बोलता है जिससे संसार में हिंसा जन्म लेती है। मनुष्य बदल जाता है वह ईश्वर का नहीं रहता उसके आचरण आसुरी शक्तियों के प्रभाव में आ जाते हैं फिर जगत में ऐसा होने लगता है जैसे आज वर्तमान युग में हो रहा है।

आज का मनुष्य दर्दमय में है अन्दर से छिला हुआ है बाहर से दिखावा कर रहा है। परन्तु मनुष्य जात के अन्दर कुछ भी नहीं रहा क्योंकि मनुष्य जात ईश्वर से हट गई है ईश्वर की तरफ से उर्जा मिलनी बन्द हो चुकी है।

इस युग का हर बच्चा हर जवान और हर बूढ़ा दर्दमय है। इसे मनुष्य जात को स्वीकार करना होगा जो दुनिया में बोया है मनुष्य जात को उसे भोगना होगा और अगर मनुष्य जात आज भी संभल जाए तो उसे इस कठिनाई भरे दरियाव से बाहर निकाता जा सकता है और संसार में अमन और शान्ति स्थापित की जा सकती है। इसलिए संसार वासियों धरती पर वास करने वाले ईश्वर की सन्तानों ईश्वर का पैगाम धारण करो, यह जगत सत्य में परिवर्तित हो जाएगा। आपके बच्चे जो वर्तमान में है वह भी सुखी और समृद्ध होंगे। आने वाली पीढ़ी भी समृद्धि होगी और आप भी सुख से अपना जीवन व्यतीत कर सकोगे इसीलिए सम्पूर्ण मानव जाति को ईश्वर की बनाई हुई परमपराओं से प्रेम करना होगा और मानव अपने मस्तिष्क के अन्दर वह उर्जा पैदा करनी होगी जो उर्जा ईश्वर ने मानव के लिए आदि

काल में ही मनुष्य शरीर बनाते समय प्रविष्ट कर दी थी। जो सत्य है वह सत्य है उसे झुठलाया नहीं जा सकता और अगर सत्य को झुठलाओगे तो संसार में आपत्तियां आयेगी। जिस वजह से आप अपने जीवन का सफर तय कर रहे हो जो आप इस सृष्टि में रहकर पाना चाहते हो वह सब कुछ मिट जाएगा। उसका आपको लाभ नहीं मिलेगा और आपके बच्चे आपके ही सामने बीमारियों से उत्पीड़त होंगे। जब मस्तिष्क में कुछ नहीं बचेगा तो वे बीमारियां उत्पन्न होगी जिसका मानव ईलाज नहीं कर सकेगा। मनुष्य का दिमाग हर वक्त हिंसा बलात्कार झूठ बोलना माता-पिता का आदर न करना, दया न करना, स्वार्थी बन जाएगा। अगर ऐसा हुआ तो फिर मानव किस कारण से पृथ्वी पर दुख झेल सकेगा। इसलिए मेरे प्रिय प्राणीयों धरती पर वास करने वालों ईश्वर का पैगाम सुनो और ईश्वर में अपना चित्त अपना मन लगाओ।

मनुष्य के अन्दर जो भाव अन्दर से उपजते है स्वभाव भी उस प्रकार से अंकित हो जाता है। मनुष्य अपने अन्दर के सोचने की क्रिया एवं भाव पर अंकित होना और समाज में उसी भाव और शब्दों के उच्चाण के अनुसार व्यवहार करना। इसी प्रकार से मानव का जीवन घटता है। उसी के आधार पर घर से लेकर समाज के ऊंचे-से ऊंचे पदों पर तक मनुष्य व्यवहार करता है। यह सभी कार्य संसार में रहकर मनुष्य करता है। उसी से उसका चरित्र एवं भलाई बुराई दया भाव बुरा-भाव, दूसरो को सताना, दूसरा मनुष्य कितना भी दुखी हो उसके प्रति स्नेह का भाव जाग्रत न होना, दुखी मनुष्य हो उसे अच्छाई भलाई से सात्वना ना देना।

ये सभी गुण अवगुण मनुष्य की सोच और उसे जगत में प्रगट करना और उसकी वजह से जगत में बुराई, भलाई का असर होना ये सभी कार्यकलाप मनुष्य का सामाजिक असर सम्पूर्ण पृथ्वी के वास करने वाले मनुष्य के अन्दर प्रवेश कर चुका है। आप सम्पूर्ण

पृथ्वी पर जहां पर भी समाज बसता है जाकर देखिए कि आपको ऐसे मनुष्य नहीं मिलेगे जिसकी आप अपने अन्दर कल्पना कर रहे हो कि धरती के किसी की जगह भोले मनुष्य जो बुराई से हटकर हो और निस्वार्थ भाव से प्रेम करते हो। जिनके अन्दर अवगुण ना हो जब बुराई बढ़ती है, तो सम्पूर्ण सृष्टि में बढ़ती है। आप अपनी शान्ति के लिए यह सोचते हो कि हम ऐसी जगह की यात्रा करे जहां पर कोई बुराई बड़ाई ईर्ष्या द्वेष न हो ऐसा छोर धरती के किसी भी कोने में नहीं मिलेगा जहां पर सत्युग जैसा मनुष्य हो, यात्रा में भी आपको प्राकतिक सौंदर्य ही मिलेगा जिसमे कोई खोट नहीं। अपने आप में शांत व चित्तवत सम्पूर्ण धरती का मनुष्य इस युग में अच्छा व निस्वार्थ भाव प्रेम से भरा हुआ नहीं मिल सकेगा। सम्पूर्ण पृथ्वी पर बुराई फैली हुई है। गरीब हो या अमीर हो सभी के अन्दर स्वार्थ और ईर्ष्या भरी पड़ी है। उससे मनुष्य यह सोच कर बैठा है कि उसे इससे शान्ति व सुख प्राप्त होगा। हर मनुष्य का दायरा अपनी समझ से सुख ढूंढने में लगा हुआ है परन्तु यह नहीं सोचता कि सुख तो उसके अन्दर भरा पड़ा है। परन्तु वह ग्रहण नहीं करता जिस सुख की तरफ आज का समाज भाग रहा है वह उसके अपने अन्दर है बाहर कुछ भी नहीं न बाहर ईश्वर है न प्रकृति है। सब कुछ मनुष्य के अन्दर है परन्तु फिर भी मनुष्य अपनी सोच लेकर भाग रहा है। अपने परिवार को भी सुखी समृद्ध बनाना चाहता है परन्तु जो सोच मनुष्य रखता है वह सोचता है कि चाहे वह दूसरे मनुष्य के साथ में कैसा भी व्यवहार करूं लाभ मुझ ही होगा इससे किसी को लाभ नहीं होता न ही उसके परिवार को लाभ पहुंचता और न समाज को लाभ होता बल्कि हानि होती है। मनुष्य अपना लाभ करेगा तो दूसरे का नुकसान होगा। इससे समाज में बुराई, हिंसा और झूठ का बोलबाला होता है और जो शब्द प्रगट होते हैं मनुष्य के अन्दर से वे शब्द घटित जरूर होते हैं दिव्य शब्द भी प्रगट होते हैं तो धर्म का आधार बनाते

है और जगत में धारण हो जाते है। इसी प्रकार से मनुष्य के अन्दर से जो शब्द भाव के अनकुल प्रगट हो रहे हैं वे सम्पूर्ण सृष्टि में घटित हो रहे हैं और उन शब्दों से जगत में प्रदूषण हो रहा है। क्यों कि वे शब्द स्वार्थ के आधार पर झूठ फरेब से बोले गये मनुष्य की शान्ति भंग करने वाले प्रगट हो रहे हैं। इसीलिए सम्पूर्ण मानव जाति को अपने को प्रसन्न चित्त रखने शान्ति स्थापना एवं परिवार की समृद्धि, के लिए मीठे और सुन्दर शब्द और मुख में मीठास भरे बोलने चाहिए। आज का मनुष्य अपने पास में रहता हो या रिश्तेदार हो वह यह सोचता है कि सभी मेरे जैसे होगे परन्तु वह यह नहीं सोचता कि मैं कैसा हूं वह सोचता है कि मैं ठीक हूं परन्तु ठीक कोई नहीं है। अपनी जगह पर हर मनुष्य दिखने में बोलने में कुछ दिखाई देता है। परन्तु होता कुछ और है। हर मनुष्य का जिस तरह से चेहरा अलग अलग है उसी प्रकार से सोच भी अलग-अलग है। वह सोच कैसी है उसी से धर्म की नाप नापी जाती है। सम्पूर्ण मानव जाति में प्रत्येक मनुष्य की सोच अलग अलग है कर्म भी अलग-अलग बनकर निर्धारित होते हैं। पड़ोस में या रिश्तेदारी में अगर मनुष्य यह सोचता है कि मैं और दूसरा मनुष्य एक जगह रहते हैं और एक साथ कार्यरत है तो यह नहीं है कि पहला मनुष्य दूसरे मनुष्य जैसा होगा। दोनों का दायरा अलग अलग होता है परन्तु आम मनुष्य यह भी सोच कर जीवन व्यतीत कर रहा है सारा जीवन मनुष्य की सोच के अनुकूल चलता है। कर्म भी सोच के आधार पर ही अंकित होते हैं। सम्पूर्ण संसार सोच के आधार पर अपना अपना जीवन व्यतीत कर रहा है। सोच सात्विक है तो आज भी वह सतयुग में जी रहा है। अपने अन्दर जिसकी सोच प्रदूषित है और वह कलयुग में जी रहा है। पृथ्वी कभी नहीं बदलती न ही उसका रंग-रूप बदलता, न सूर्य, चन्द्रमा, फल, पौधे, कुछ नहीं बदलते धरती रसातल में भी चली जाती है। वह इसी प्रकार की दिखेगी जैसे आज दिख रही है। परन्तु मनुष्य जात के भाव,

सोच, और सामाजिक व्यवहार बदल जाता है। अगर घृणित सोच हो तो युग भ्रमित होने लगता है। सभी मनुष्य अपनी अपनी सोच में जुट जाते हैं और सत्य का मनुष्य अकेला पड़ जाता है। परन्तु वह अपने अन्दर सत्युग जैसी शांति महसूस करता है अपने अन्दर से आन्नदित रहता है। उसे अपनी आंखों से भ्रमित जगत में घृणित मनुष्य के किए हुए कर्म दिखाई एवं सुनाई देते हें जिससे वह उत्पीड़ित होता है दुखी होता है।

कोई भी सात्विक मनुष्य समाज में किसी भी कार्य के लिए निकल जाए तो उसे उस जैसी सोच के मनुष्य नहीं मिलेगे, बोलेगे तो सुन्दर, लेकिन अन्दर से दर्द मैं छिले हुए मिलेगे और दूसरे को यह दिखाएंगे कि जैसे उस जैसा मनुष्य और कोई नहीं है। हर मनुष्य दिखावा कर रहा है जो है वह ढिढोरा नहीं पीटता और जो नहीं है वह ढिंढोंरा पीटने में लगा हुआ है कि मैं हूं। सम्पूर्ण समाज में यह बुराई बढ़ रही है। मनुष्य यह क्यों नहीं सोचता कि मैं सही और शान्ति की राह पर चलू और न किसी को दुख पहुंचाऊं और न ही मेरे द्वारा कोई मनुष्य दुखी हो। अपने अन्दर की गुत्थियों को खोले जो उसे ईश्वर ने विरासत में दी है और अपने अहंकार भरे जीवन को ईश्वर के सुपुर्द करके समाज में जीवन व्यतीत करे जिससे समाजिक ढांचे में बदलाव आ सके और मनुष्य जात अन्दर से सुखी रह सके।

ज्यादा धन से मनुष्य प्रसन्न नहीं हो सकता दुखों का हल धन से नहीं है। धन से दुख नहीं काटे जा सकते दुख की काट सिर्फ जगत में ज्ञान है। ज्ञान से ही दुख काटे जा सकते हैं। ज्ञान से मनुष्य उठे हुए हर प्रश्न का उत्तर निकाल लेता है। जो उसके दिमाग में उथल पुथल नहीं करता उस प्रश्न के कारण ही मनुष्य के अन्दर अनेको बीमारियां उत्पन्न हो रही है। जिसकी काट दवाइयों से भी नहीं है। जो प्रश्न मनुष्य के लिए उसके मस्तिष्क में उठता है उसका हल भी जरूरी है और उसको सहन करना भी जरूरी है। अगर प्रश्न

उठा मनुष्य की अपनी आवश्यकताओं के लिए उसका हल नहीं हो पाता तो उसको अपने अन्दर से हल निकालना होगा। सहन करना होगा तो हल निकल जाता है और सहन भी हो जाता है। तो वह शारीरिक ढांचे पर अपना असर नहीं छोड़ेगा और अगर प्रश्न का हल नहीं निकलता तो वह मनुष्य की जिन्दगी को भी नुकसान पहुंचा सकता है। क्योंकि वह एक प्रकार का उफान होता है जैसे नदी में उफान आ जाता है और बाढ़ आ जाती है। इसी प्रकार से इस युग में मनुष्य भ्रमित है और आवश्यकताओं से घिरा हुआ मनुष्य अन्धकार में है। हर क्षण अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए भाग रहा है। हर क्षण दिमाग में प्रश्न उठते हैं और उन प्रश्नों का उत्तर मनुष्य के पास नहीं है जिससे वह अनेक बीमारियों से पीड़ित है। मानसिक परेशानी में भी है। दर्द अपने अन्दर छिपाए रहता है दूसरे को भी बताना नहीं चाहता। अहंकार के कारण उसकी ईज्जत बिगड़ने का डर होता है वह अपनी इज्जत बचाने एवं अपनी बात का किसी को ना पता चले समाज में उसकी छिपी हुई इज्जत बनी रहे उसी जहर को पीता रहता है। अन्त में मृत्यु को भी प्राप्त हो जाता है।

मानव के अन्दर ईश्वर के बनाये यन्त्र, मनुष्य जात का निर्माण, अध्यात्मिक परिवेश में पृथ्वी लोक पर आना होता है। मानव की काया का ढांचा तो सम्पूर्ण पांच तत्वों के मिश्रण से बनता है। परन्तु बाकि सभी यंत्र अध्यात्मिक परिवेश में धर्म के आधार पर ईश्वर के द्वारा रचाये हुए होते हैं। जिनका कार्य उस काया को चलाने के लिए और सृष्टि को चलाने का जिम्मा ईश्वर की दी गई बुद्धि के द्वारा सृष्टि में मानव दूसरे मानव की सेवा करे धर्म के अधार पर जितना उसको कर्मों के अनुसार ईश्वर की तरफ से मिलता है उसी में संतोष रखे। ज्यादा आवश्यकता नई नई ना बढ़ाए। क्योंकि आवश्यकताएं बढ़ाने में मानव के मस्तिष्क पर अनावश्यक दबाव पड़ता है। उसकी सोच तीव्र गति को प्राप्त होकर चंचल मन में दबदील हो जाती है जिससे

अशांन्ति धारण हो जाती है। मानव का जीवन एवं काया और बुद्धि में परिवर्तन आने लगता है और काया के अन्दर बुद्धि पर दबाव पढ़ने लगता है तभी मानव के अन्दर कई प्रकार की बीमारियों होने लगती है जिसका मानव ईलाज करवाता रहता है परन्तु सफलता नहीं मिलती क्योंकि जिस यंत्र के साथ मानव ने छेड़छाड़ की है वह जब तक यंत्र यथास्थित नहीं हो पायेगा तब तक उसका कोई ईलाज नहीं हो सकता इसीलिए मानव को चाहिए कि वह बीमार होने से पहले जिस स्थिति में उसका मन बुद्धि थी उसी में स्थित होना होगा तभी मानव के अन्दर जिसे मानव ने छेड़ा है वह उसी स्थिति पर आ सकेगा। परन्तु आज का मानव जिस यंत्र के साथ छेड़छाड़ करता है तो वह वापस नहीं आ सकता क्योंकि मानव की सोच संसारिक बहुत ज्यादा बढ़ गई है। वापस आना बहुत मुश्किल होता है। परन्तु ज्ञान का अमल करना और सत्य संकल्प करने से वह स्थिति मानव की वापस आ सकती है। क्योंकि सबकुछ मानव के अन्दर प्रवाहित हो रहा है वह चाहे उसे स्वीकार कर ले या फिर स्वीकार न करे यह तो मानव के अपने वश में होता है। परन्तु मानव को इस तथ्य का रहस्य का ज्ञान नहीं होता कि यह सब मेरे शरीर में क्यों घट रहा है मानव तो यह सोचता है कि किसी प्रकार की बीमारी लगी हुई है। उसी के कारण अस्वथ्य रहता है उसे मालूम नहीं हो पाता कि उसने खुदी ही इस बीमारी को बुलाया है। ईश्वर के बनाये हुए यन्त्रों के साथ छेड़छाड़ करके मानव खुद ही उसका भोग भोग रहा है। यह एक धरती के खण्ड में नहीं यह तो सम्पूर्ण संसार में मानव के साथ घट रहा है। इसी प्रकार से प्रकृति के साथ मानव छेड़छाड़ कर रहा है। जिससे मानव ही दण्डित हो रहा है कहीं पर तो बाढ़ आ जाती है और कही सूखा पड़ जाता है। यह सब ईश्वर की तरफ से घट रहा है। हर दर्द मानव ने ही पैदा किया है और हर दर्द का भुगतान भी मानव खुदी देगा।

मानव को आदिकाल से महापुरुषों ने सदैव से ज्ञान के द्वारा समझाया है। इस पृथ्वी पर जो मानव से पुजवाये जाते हैं वे ईश्वर के भेजे हुए ज्ञान के दूत होते हैं। जगत में ईश्वर का पैगाम देते हैं। जब होता है ऐसा तब दुनिया मैं मानव भटकने लगता है उसे सब कुछ करने का अपने आप से लगने लगता है। क्योंकि मानव की बुद्धि अहंकार युक्त हो जाती है और मानव के ऊपर ईश्वर का पहरा हट जाता है और असुरो का पहरा मडराने लगता है। तभी जगत में उथल पुथल मचने लगती है मानव इस रहस्य को समझ नहीं पाता क्यों कि उसके अन्दर बुराइयों की मोटी काई जम जाती है। जिससे वह अपने आप धुल नहीं सकती, वह ईश्वर के पैगम्बर ही धरती के ऊपर आते हैं तभी मानव की आंखें खुलती है कि मानव कहा जा रहा है। मानव का जीने का रास्ता गलत है शान्ति प्रिय नहीं, अशान्ति से भर हुआ। अनैतिकता का जीवन अशुद्ध शब्दों से भरा हुआ झूठ से ढका हुआ। मानव का चेहरा जो दिखने में कुछ लगे और जबान से कुछ लगे। हर वक्त अपने को अच्छा समझना वह समझ ही मानव की ऐसी हो जाती है कि उसे अच्छे शब्द और जीने की राह पर चलने की प्रेरणा अगर कोई दे तो अच्छी नहीं लगेगी। क्योंकि मानव पर तो असुरो का पहरा बैठा हुआ है और सोचने समझने के यंत्रों से मानव ने पहले ही छेड़छाड़ कर रखी है तो अच्छी बातों को कहां पर स्थापित करेगे। जब मानव यन्त्रों में वह बल समाप्त हो गया है जो ईश्वर की तरफ से प्राप्त हुआ था।

ईश्वर के ज्ञान की कोई सीमा नहीं युगों-युगों से मानव पूर्ण ज्ञान पाने की चेष्टा करता आ रहा है परन्तु किसी भी युग में पूर्ण ज्ञान प्राप्त नहीं कर सकता। ईश्वर से प्राप्त हुआ ज्ञान भी सिर्फ वहां तक प्रगट होता है जो कि मानव अपनी पहचान और ईश्वर का सत्य समझ सके और अपना जीवन पृथ्वी पर धर्म के अनुसार व्यतीत कर सके। ईश्वर की प्राप्ति करके अपना मंगल कर सके। मानव धरती पर क्यों

आता है? यह सत्य जानकर मोक्ष प्राप्त कर सके। जिससे पृथ्वी पर दोबारा आने की और किसी माता से गर्भ से जन्म ना ले सके। ज्ञान इतना बड़ा है कि पल भर में ज्ञान प्रगट होता है। प्रत्येक मानव के जीवन में प्रत्येक क्षण ज्ञान प्रगट होता है। ज्ञान का दायरा नाप नहीं सकते। ज्ञान तो मानव को हर वक्त होता है क्योंकि ईश्वर तो मानव काया में बैठे हुए है जो हर वक्त मानव को ज्ञान देते हैं।

जिसको मानव समझ नहीं सकता क्योंकि मानव के अन्दर दोष भरे रहते हैं। मानव अपना लाभ देखकर जीवन व्यतीत करता हैं। वह उस आहट को नहीं सुनता जो उसे हर वक्त ज्ञान देना चाहती है। अगर आपको किसी कार्य हेतु जाना है तो आप पहले सोचोगे और फैसला करोगे कि मैं जाऊं या ना जाऊं। परन्तु आपका फैसला लोभ की तरफ जायेगा। लोभ लालच आपको उस फैसले से भी हटने नहीं देगा जिससे आप कठिनाइयों में फंस सकते हो। आप कार्य को करने के लिए उत्सुकता से चले जाओगे। वहां जाकर आप के साथ जो भी घटना घटेगी वह भी समय आप को जीवन में काटना पड़ता है। जो आपके अन्दर यंत्र लगा हुआ है वह अपको हर समय सहायता करता है। कभी भी गलत नहीं करता युगो-युगो से मानव के अन्दर लागू हुआ है और चेतन्य भी है। मानव उसकी कभी भी नहीं सुनता और जीवन, मन के ऊपर छोड़ देता है। मन की बहुत बड़ी शक्ति है जो मन को जीत लेता है वह ईश्वर का आदेश मानता है। वह मन अपना नहीं रहता वह तो ईश्वर का बन जाता है। जब ईश्वर का बन जाता है तो वह मानव को सम्पूर्ण देता है। और जो भी करवाता है वह सभी मंगल ही मंगल करवाता है। जब तक मन मानव पर राज करेगा तब तक काया को प्रसन्न रखने का कार्य कर्म करेगा। और जब मन ईश्वर के आधीन आ जाएगा तब वह सब कुछ अच्छा ही अच्छा करवायेगा दया भाव, पुण्य भाव, धर्म के अनुसार दुनिया में जीना और दूसरे को सहारा देना गरीब लाचारों को सहायता करना

जो भी करवाएगा अच्छा-अच्छा ही करवाएगा और हर वक्त मानव आनन्द में रहेगा। उसे सतयुग की आहट जैसा लगेगा आसुरी शक्तियां उस पर प्रभावित नहीं हो सकती। निर्भय होकर जियेंगा जैसा मन करवाएगा वैसा ही मंगल होगा। उससे आनन्द भी होगा। जो भी यंत्र काया के अन्दर लगे हुए है वह सभी मन के आधीन है। काया भी मन के आधीन है। जब मन ईश्वर के आधीन होगा उस समय आपका धरती पर आना और उस रहस्य को समझना द्वार खुल जाता है। वह मानव इस मृत्यु लोक में वापस नहीं आता।

मन के कारण काया के अन्दर जितने भी यन्त्र है सभी प्रभावित होते है मानव इस ज्ञान से अनभिज्ञ

काया के अन्दर जो भी यन्त्र होते हैं वे सभी यन्त्र मन से प्रभावित होते है। मन के द्वारा ही प्रयोग में लाये जाते हैं। जितनी भी शरीर की आवश्यकताएं है सभी मन से ही प्रगट होती है। मन ही चाहता है कि शरीर को क्या क्या चाहिए। भूख लगती है तो मन कहता है खाना चाहिए और मन ही के द्वारा शरीर के भोगने के लिए वह भी सब चाहिए जो अनैतिक कार्य होते हैं। जो मानव जीवन के धर्म के विरुद्ध होते हैं।

मन के आधीन जब मानव होता है तभी मानव का पतन होता है। मानव प्रणाली इसी मन के द्वारा भ्रमित होती है। मन ही मानव को भ्रमित कराता है। जो अच्छी बातों को ग्रहण नहीं करते और मनों के द्वारा जगत में हिंसा फैलती है। मन ही चाहता है कि मुझे अलग अलग सब कुछ चाहिए। गांव में लेकर राष्ट्र तक अपना हक जमाने के लिए मन का ही कार्य स्त्रोत है। एक मन पवित्र और धर्ममय स्थापित होने वाला होता है। जो अच्छा ही अच्छा सोचता

और ग्रहण करने वाला होता है। वह धर्म है, वह मन ऐसा होता है कि अगर इस शरीर की आश्यकता गलत तरीके की हो तो मन उसे ग्रहण नहीं करेगा। मन कहेगा जो गलत है वह गलत है, वह मानने से इन्कार कर देगा ऐसे मानव को बुद्धि जीव कहते है।

मन की अवस्था जब अपने लाभ के लिए कार्य करेगी तो मानव शरीर के सभी यन्त्र एक तरफा कार्य करेंगे चाहे कितने भी अधर्मी हो जाय मन से ही माया से लिप्त होता है मानव प्रणाली और मन से ही जग जीता जाता है, इसलिए मन की हरएकबात मत मानो मन के आधीन रहना आसुरों का राज्य स्थापित करना होता है। जो मानव मन को अपने आधीन करके रखता है वह धर्म है। देवताओं का राज्य स्थापित करना होता है। मन से ही युग बदलते हैं और मनसे युद्ध होते है। मन के कारण ही मानव मानव को मार रहा है। मन के कारण ही अधर्म दुनिया में बढ़ता है। जब मन अपनी अपनी बातों को अतुल्य समझने लगता है सम्पूर्ण पृथ्वी पर अपना अधिकार जमाना चाहता है तभी अधर्म राज्य स्थापित होता है। और सम्पूर्ण जगत भ्रमित होकर अच्छी बातों, कर्मों को भूल जाता है ईश्वर से हट जाता है। दिखावा करने के लिए हम अपने मन के आधीन हो जाते हैं। जो भी जगत में जो भी मानव कोई भी धर्मिक व सामाजिक कार्य करेगा वह दिखावे के आधार पर करेगा। उसका मन यह कहेगा कि मेरे कार्य को और भी मानव देखे। दिखावे के आधार पर मंदिर की सीढ़ी चढ़कर मानव घंटा बजाने का ढोंग करेगा। धर्म का प्रचार तो करेगा परन्तु दिखावे और धन के कारण ऐसे धार्मिक कार्यक्रम या सामाजिक कार्यक्रम, राजनीतिक कार्य हों कोई भी समाज में समाज के लाभ हेतु कार्यक्रम करेगा। या शब्दों से व्याख्या करेगा जो उसने अपने लाभ एवं धन, अपने मन में लिए हुए करेगा। ऐसे स्वार्थी मन से जगत के लिए परिवर्तन नहीं आ सकता। धर्म स्थापित नहीं हो सकता। जिस

कार्यक्रम या शब्दों के भाषणों में लोभ लालच नहीं होगा निस्वार्थ प्रेरणा होगी। उसी से संसार में मानव चेतना जागेगी। और मानवता का सुन्दर अंकुर फूट सकेगा। और मनो के ऊपर असुरी शक्तियों का राज्य समाप्त हो सकेगा।

मन ही से असुरी शक्तियां पृथ्वी लोक पर स्थापित होती है और मन से ही ईश्वर से प्रेरणा मिलकर जगत में धर्म का बीज बोया जाता है। दोनों शक्तियों मन के अन्दर ही है।

पृथ्वी हलचल होना

मानव के मन में परिवर्तन होना दोनों एक दूसरे के ऊपर आधारित है मानव से ही सब कुछ घटता और बढ़ता है।

इस धरातल पर जो भी घटा रहा है वह सब कुछ मानव की करनी के अनुसार घट रहा है क्योंकि शरीर कर्मों से बनता है और शरीर से कर्म बनते हैं। इसी शरीर में रहकर मानव अपनी मनोकामना करता हुआ आगे बढ़ता है। उसी स्त्रोत उसी समय मानव के द्वारा अच्छे बुरे कर्म बनते हैं। जो बनते है उनको काटना या उन्हें पीछे धिकेलना बहुत बड़ा कठिन तप चाहिए। जो मानव कर्म करता है। वह अपनी मनोकामना की सोच के द्वारा करता है। मनोकामना अगर बुराई के लिए हो तो मानवता के स्तर में गिरावट आना अति सम्भव हो जाता है। उस गिरावट से समाज में बुराई फैलाती है। धरती पर भी मानव के कर्मों का असर घटित हुआ दिखने लगता है क्योंकि जो आसान ईश्वर ने मानव के लिए बनाया है, वह आलोकिक सत्ता है। मानव जीव भी आलोकिक सत्ता है दोनों एक

दूसरे से ईश्वर ने मिलाए हुए है, और एक दूसरे पर निर्धारित हैं। जब भी मानव मन में गिरावट आ जाती है, कर्म ईश्वर के अनुसार विपरित दिशा में चले जाते हैं। तभी पृथ्वी पर हलचल का असर फैलने लगता है। जितनी हलचल आज वर्तमान मानव युग में मानव के अन्दर फैली हुई है वैसी ही हलचल पृथ्वी के अन्दर फैल रही है यह अशान्ति का पड़ाव है। मानव इस ज्ञान से अनभिज्ञ है और अपने आपको साधारण एक नारी से स्वाभाविक प्राक्रिया से जन्म लेने का एक छोटा सा तरीका एवं साधन समझ कर इस पृथ्वी पर जीवन व्यतीत कर रहा है। साधारण सी बात समझकर जी रहा है। और कर्मों के द्वारा भी जो मन में आये वह कर रहा है। यह सभी कुछ साधारण परिक्रिया नहीं है। यह रहस्य से भरी हुई ज्ञान मूल सिंद्धातवादी और धर्मवादी आलोकिक सत्ता के आधीन घटने वाली प्रक्रिया है। एक आम मानव यह ही समझता है कि नारी से नर उतपन्न होगा। वह रिश्ते में जो भी होगा वह नारी होगा या नर। बस इतनी साधरण सी बात सोचकर मानव मन अपना जीवन जीते हैं। सरल ढांचा मानव जात का समझकर उसे जीवन जीने का उसी प्रकार का बताते हैं जो उन्होंने जीया हो और जीने का रास्ता जो उनका हो उसी में ढाल देते हैं। यह सम्पूर्ण सृष्टि इसी सिद्धांत पर चल रही है। परन्तु ऐसा कुछ भी नहीं है, यह जीवन है तो सरल और स्वाभाविक सृष्टि होने वाला जीव जन्म लेकर सृष्टि को सुशोभित करता हुआ समाज में अपना दायित्व निभाता है। परन्तु निभाता उसी के आधार पर जिस आधार पर उसे सिखाया गया हो। साधारण मान कर जीवन जीना साधारण मानकर मानव जीव अपने शरीर के यन्त्रों का प्रयोग एवं मन से अपनी करनी बनाना, यह सभी कुछ मानव। ज्ञान के जगत में जीवन व्यतीत कर रहा है। परन्तु यह सत्य नहीं है, सत्य तो वह है जो मानव अपने पैदा होने का आश्चर्य माने और महत्व जाने और ईश्वर का आशीर्वाद माने

और जीने की कलाओ का ज्ञान माने। जिससे पृथ्वी पर कोई हलचल ना हो सके इस तरह से संस्कार युक्त मानव धरती पर पैदा हो। धर्म का वजूद नदियों की तरह बहें। प्रेम सागर हर मानव में झलकता हो। और ईश्वर को सर्वोपरि अपना पिता परमेश्वर को माने और अपने अन्दर ईश्वर का वास समझे। और अपने शरीर की जो नाड़ी एवं यंत्रों को ईश्वर की बनाई हुई क्यारी समझे। और खुद मानव अपने शरीर एवं अपने मन से खिलवाड़ ना करें, उन्हें ईश्वर की कलाये समझ कर प्रयोग करें। यंत्रों से छेड़खानी ना करे, अपने कर्म सोच को स्त्रोत अपनी आवश्यकताओं में लिप्त न होने दे। अपनी सोच उस परमेश्वर की तरफ मोड़ दे, जिसने उस शरीर एवं शरीर के अन्दर यंत्र बनाये है। अगर मानव ऐसा नहीं करेगा तो, धरती पर आशान्ति उसी प्रकार से फैलेगी, जैसे आज मानव के अन्दर फैल रही है। कोई भी मानव शान्त नहीं और धरती का कोई भी छोर शान्त नहीं है। धरती का सरल सुख समृद्ध रहना मानव के ऊपर निधार्रित है, यह ज्ञान के द्वारा जाना जाता है।

सकारात्मक सोच से धर्म परिभाषित है

जिस समाज में मानव रहता है। सभी का एक दायरा होता है। उसी दायरे के अन्दर वह ढल जाता है। उसी के अनुसार सामाजिक कार्य करता रहता है। परन्तु उसकी सोच का अनुपात ठीक भी होता है, और गलत तरीके का भी होता है। हर जगह मानव की सोच दो प्रकार की होती हैं, एक सकारात्मक और एक नकारात्मक/ सकारात्मक सोच का मानव अच्छा होता है। उस पर जिस मोहल्ले गली में वह रहता है, उस पर किसी प्रकार का असर नहीं पड़ता। वह तो पहले से ही अच्छी सोच का मानव होता है। बल्कि उसे उस मोहल्ले के अन्दर जो भी गलत घटित होता है, उससे उसे दुख पहुंचता है। क्यों कि सकारात्मक सोच का मानव अच्छा और बुराईयों से दूर रहने वाला होता है। उसे अपनो से भी प्रेम होता है, और दूसरों से भी प्रेम होता है। सम्पूर्ण भारत में अगर कोई कठिन घटना घटती है, तब भी उसे दुख पहुंचता है। ऐसी सोच का मानव अपने जीवन से समझोता यह सोचकर करता है, कि मुझे स्थिर रहना है। और इस बुराई के समाज में रहकर, इसी में अच्छाई पकड़ना है, और बुराई छोड़ देना है।

हर मानव पहले अपना स्वार्थ देखता है। बाद में दूसरे मानव के बारे में सोचता है। परन्तु सकारत्मक सोच वाला मानव अपने परिवार और पड़ोस रिश्तेदारियों के लिए बराबर भलाई एवं सुधार के लिए सोचता है। उसके लिए कानून चाहे कितना भी सख्त हो जाय उस मानव पर कुछ भी असर नहीं पड़ता। वह मानव बुराईयों से दूर रहता है और अच्छाईयों को अपने अन्दर सजाकर अपने आप में आनन्द उठाता है। भय से मुक्त रहता है, उसे किसी का डर नहीं होता न ही कोई शत्रु होता। ऐसे मानव समाज में व्यवस्थित

हो, तभी मानव कल्याण हो सकेगा, ऐसा मानव चाहे चंसार के लिए मन्दिर मस्जिद गुरुद्वारा न जाता हो। उसे अपने घर में पूजा पाठ भी ना करता हो, उससे उसके भाव में परिवर्तन नहीं आता। सत्य का मानव अपने अन्दर से सुखी एवं समृद्ध होता है और अपने उठे हुए भाव के माध्यम से ही जीवन में ईश्वर का तप कर लेता है। उसके पूर्ण जीवन के भावों के अनुसार वह दुनिया में पुण्य कमा लेता है। क्योंकि सात्विक मानव की सोच से परिवार मोहल्ला रिश्तेदार सभी को उर्जा मिलती रहती है। उस मानव के अन्दर ईर्ष्या द्वेष जैसी सामाजिक बुराईयां नहीं पनपती, ऐसे मानव सृष्टि में कम मिलते हैं। जिनकी ऊर्जा इकट्ठी होकर दरियाव बन जाती है। उस नदी जैसे दरियाव में संसारिक कठिनाईयों में जगत को बचाती रहती है। परन्तु हर मानव को इस रहस्य का ज्ञान नहीं हो पाता। हर मानव स्वाभाविक ही अपना जीवन व्यतीत करता रहता है। सकारात्मक मानव को किसी से रिस्वत लेना देने का कार्य नहीं करना पड़ता। ऐसे मानव के संसारिक कार्य भी अपने आप स्वाभाविक ही होते रहते हैं। जिस तरह से स्वाभाविक ही सृष्टि बनती और बिगड़ती रहती है। ऐसे साकारात्मक सोच के मानव दुनिया में कम मिलते हैं। उसी कारण से दुनिया में बुराई ज्यादा बढ़ गई है।

सकारात्मक सोच के मानव कम होने से उर्जा ईश्वर की कम बनती है। जिससे वह बुराई कट नहीं सकती बस कठिनाइयों में सृष्टि में कुछ सहायता जरूर मिल जाती है। उतना ही धर्म बचा रहता है। जितनी उर्जा जगत में सात्विक सोच की बनी हो, इसी तरह से धर्म का अस्तीत्व कम होता रहता है। उर्जा भी कम होती रहती है, और अधर्म ज्यादा बढ़ जाता है। अधर्म की भी उर्जा ही होती है। जो मानव के अन्दर पनपनती रहती है।

नकारात्मक सोच के मानव दुनिया में बहुत ज्यादा फैले हुए हैं। जिससे मानव प्रणाली दूषित एवं हिंसा बलात्कार मानव दूसरे

मानव को मार रहा है। यह दूषित सोच का नतीजा है, जो इतनी भयंकर होती है कि उसकी उर्जा सभी लोकों को दूषित करती है और प्रकृति में भी उफान जैसा बदलाव लाती है। दूषित सोच से मानव कभी भी अन्दर से शान्त भाव में नहीं रहता। उसके अन्दर ऐसा प्रतीत होता रहता है, जैसे रुके हुए जल में किसी आसामाजिक तत्व ने पत्थर फैंक दिया हो, अशान्त वातावरण में रहता है। नकारात्मक सोच का मानव कभी भी दूसरे की भलाई दूसरे का दर्द, अच्छी सुन्दर मीठी बात कभी नहीं कर सकता, वह तो सदैव अपने स्वार्थ में सलंग्न रहता है, यहां तक भी होता है, कि वह अपने खून, अपनी पत्नी, अपने बच्चों तक स्वार्थ के भाव से देखता है। बस शरीर का उपयोग करता है। अपने शरीर का भी अपने मन से भोग करता रहता है। सभी कार्य करने में तत्पर रहता है, चाहे बुरे हो या भले, उसी से उसके अन्दर नकारात्मक उर्जा का भण्डार भरता रहता है। जिससे उसका खुद का जीवन भी प्रभावित होता है, और दूसरों का जीवन भी प्रभावित होता है। ऐसे मानव के कारण ही दुनिया में बुराई पनपती है, और अधर्म बढ़ जाता है। असामाजिक तत्वों की संख्या ज्यादा बढ़ जाती है, जिससे जगत में कठिनाइयां आने लगती है। मानव दूसरे मानव को देखने के लिए राजी नहीं होता ईर्ष्या द्वेष जैसे दोष दुनिया में फैलने लगते है। संसार का हर मानव ऐसे मानव से प्रभावित होता है, क्योंकि उसे ज्ञान नहीं है। जो सोच उसकी होती है उसी सोच से नकारत्मक उर्जा का स्त्रोत इतना बड़ा बन जाता है, कि सम्पूर्ण सृष्टि में उसका जहर फैलता रहता है, उसी के कारण जगत के महामारी, भूख, नदियों में बाढ़, प्रकृति में उफान आने लगता है। मानव की आकस्मिक मृत्यु का आकंड़ा ज्यादा बढ़ने लगता है, और मानव अपने स्थान पर नहीं मरता और न ही अपने स्थान पर जन्म होता है। ऐसी ऐसी बुराइयां जगत में फैलती चली जाती है। एक दिन

ऐसी स्थिति धारण कर लेती है, कि युग परिवर्तन होने की स्थिति बन जाती है। धर्म का आस्तित्व खतरे में पड़ जाता है, सभी इस स्थिति के मानव अपना हक जमाने में जुट जाते हैं चाहे परिवार हो या जिला हो या देश हो या फिर दूसरे देश हो हर मानव अपनी महत्वपूर्णता दिखाने में जुट जाता है।

दुनिया में युद्ध जैसी स्थिति पैदा हो जाती है। जब नकारात्मक मानव की संख्या ज्यादा होगी तो गद्‌दी भी उसी को मिलेगी और गद्‌दी जब उसी को मिलेगी तो वह अपनी मनमानी करेगा और सम्पूर्ण विश्व पर राज करने की सोचेगा और सोचेगा। तो ऐसी परिस्थिति धारण करने की चेष्टा करेगा। चाहे उसे विश्व युद्ध ही कराना पड़े क्यों कि नकारात्मक मानव की सोच ही ऐसी होती है। दया, धर्म, मानवता, का ऐसे मानव के अन्दर बीज भी नहीं होता है। यह परिक्रिया सम्पूर्ण मानव जाति के लिए अंकुरित होती है। ऐसे नकारात्मक मानव सम्पूर्ण धरती पर फैले हुए हैं जिनके कारण दुनिया में हिंसा और कई प्रकार की बुराईयां बढ़ी हुई है। छोटे परिवार से लेकर बड़े-बड़े ओहदे वाले मानव तक यह प्रदूषण फैला हुआ है। इसका परिणाम सम्पूर्ण मानव जाति को भुगतना पड़ेगा।

विष का घुलना एवं जगत में मानव स्त्रोत के द्वारा घटित

सकारात्मक सोच और नकारात्मक सोच संसार इस रहस्य से अनभिज्ञ है, कि आज इस मुल्क में ऐसी कठिन परिस्थिति क्यों उपज रही है। क्योंकि मानव अपना झण्डा ऊंचा करके रखना चाहता है। चाहे दुनिया का कोई भी विषय हो परिस्थिति सभी तरपफ खराब है। इससे बचना होगा, सत्य जानकर इससे बाहर निकलना होगा,

तभी दुनिया को बचाया जा सकेगा।

इससे बचने का रास्ता अध्यात्मिक परिवेश में मानवता को ढलना होगा। जिससे इस अनहोनी से बचा जा सके। हर मानव को सत्य सफर करना होगा। सोचना होगा कि हम इस सोच के अर्न्तगत कैसे और क्यों आये। जो सोच हमे ही निगल जायेगी यह हर मानव को जीवन मूल्यों से समझोता करके संभलना होगा। सन्तों के बताये हुए रास्ते पर चलकर सत्य को अमल करना होगा। मानव सम्पूर्ण सृष्टि को भ्रमित एवं विषय भोगों, दूसरों के दर्द पहुंचाने वाली दृष्टि से देख रहा है। यह कार्य उनके लिए भी हानिकारक होगा, और जो अच्छे मानव है। उनके लिए भी हानिकारक होगा। मानव जात इस बात से अनभिज्ञ है, कि इस दुनिया के उपर राज करने के लिए असुरी शक्तियां आ चुकी है। जो धर्म विभूषित मानव की सोच को भी दूषित कर रही है। और आम मानव की तो कर ही रही है। ऊंचे-ऊंचे तख्तों पर विराजमान मानव की सोच अपने लाभ में उतर रही है।

दर्द मय धरती पर छोटी सोच अज्ञान से जीने वाले मानव

उस लाभ के कारण मानव दूसरे मानव का शोषण कर रहा है। ऊंचे स्थान पर बैठने वाले मानव अपने हाथों में ताकत लेकर समाज में विरोधी भावनाओं को प्रेरित करते है। तथा अपने लाभ के कारण जाति धर्म व्यवस्था में तोड़ मरोड़ का खेल खेलते रहते है। जिससे समाज में आराजकता एवं दूषित भावानाओं से समाज को बढ़ाया देने एवं सामाज में मानव ढांचे में ईर्ष्या द्वेष शत्रुता पैदा करने का घिनौना खेले ऊंचे मानव के लिए अपने लाभ के कारण

व्यापार जैसा खेल बना देते है। जो आम मानव को इस खेल की भनक भी नहीं लगती। समाज में नई-नई परेशानियों नये-नये दोष मानव के अन्दर पैदा होने लगते हैं। गरीबी बढ़ती जाती है और अमीरी का वातावरण बन जाता है। हर मानव अपना अपना ध्यान अपने कर्मों के अनुसार भावनाओं को नये परिवेष में डालकर जगत में प्रवाह करने लगता है। इससे समाज में दुख दरिद्रता गरीबी शत्रुता आपस में आन्त्रिक कड़वाहट पनपते लगती है जिसकी दण्ड संहिता नहीं बन सकती न्याय प्रणाली की सोच उस सामाजिक दर्द को देख नहीं सकती। और घर परिवार में पनपनती रहती है। जिससे हर परिवार का सदस्य एक जगह एक छत के नीचे रहकर भी एक साथ और अपने दुख-सुख, कोई कार्य मिलकर करने जैसी बातें एक जगह इकट्ठे होकर प्रेम भरे स्वर एवं भावनाओं में नहीं कर सकते। अपने बड़ों बुढ़ों का आदर सत्कार भी नहीं कर सकते। क्योंकि हर मानव स्वार्थी बन जाता है जिससे प्रत्येक मानव के अन्दर जो कड़वाहट है वह जहंर बन जाती है। उस जहर से मानव के मस्तिस्क में उफान आता रहता है। मानव आसुरी शक्तियों के अर्न्तगत आ जाता है और मानव उसी दर्दमय व्याकुल रहता है। वह ऐसा दर्द है कि किसी को बताया भी नहीं जाता। वह मानव अपने दर्द के रिश्तों को भी अपनी नीति के अनुसार चलाने लगता है, जो उसके परिवार में उसके दबाव में जीवन जीते हैं। उनको सभी को रोजमर्रा जीवन में एक छत के नीचे रहते रहते दर्द देता रहता है। किसी को भनक भी नहीं लगती और समाज कुटुम्भ नरक जैसा बन जाता है। जो मानव जन्म लेता है वह भी उसी संस्कार उन्हीं जैसा दिमाग बना लेकर पैदा होता है वह भी आगे चलकर वेसा ही व्यवहार करेगा जैसा उनके परिवार में पहले से होता रहा है।

इस तरह की बीमारियां मानव के अन्दर ग्रहहित होती रहती है। जिसका इलाज इस आधुनिक दुनिया में कहीं पर नहीं है। जब

दर्दमय मानव जीता है, और कर कुछ नहीं सकता तो मानव के अन्दर घुन जैसा लगने लगता है। वह घुन मानव शरीर में कैन्सर जैसी बीमारियां दिल का रोग जैसी बीमारियां उत्पन्न कर देता है। मानव को पता भी नहीं चल पाता और अन्तिम क्षणों में पता चलता है। तब उसका कोई इलाज नहीं हो सकता और मानव मृत्यु के प्राप्त हो जाता है। सुगर हृदय रोग, जैसी बीमारियों की चिंता दुख मय मानव के अन्दर पनपनती है।

इस युग के भीतर घुस कर देखिये कि आज का इस सदी का मानव कितने दर्दमय है जब मानव के अन्दर अनेक प्रकार कादर्द एवं दोष बन जाते है तो वह खुद भी सुखी नहीं रह पाता है। अपने इर्द-गिर्द के रिस्ते को भी सुखी नहीं रहने देता। उसका असर उन सभी परिवार वालों पर पड़ता रहता है जो उसके आधीन हो, या शर्म लिहाज से झुकते हो। सबसे जयादा नारी समाज में एक अलग तरह का दर्द पनप रहा है, जो हर वक्त उस नरक जैसे माहौ्ल को दर्शता रहता है और हर समय नारीं समाज को उसे सहन करना पड़ रहा है।

छोटी-छोटी बाते परिवार में कड़वाहट बन कर पनपती रहती है। मजबूर नारी जाति उससे पीड़ित रहती है कुछ नहीं कर पाती अपनी आजादी इच्छाओं से जीवन नहीं जी सकती। हर वक्त मायूस सी रहती है, ऐसी नारियों को पति से भी दुख प्राप्त होता है और अपनी ओलाद से भी दर्द मिलता रहता है। कुछ गलत फैमिया भी मानव को मानव से अलग करती है, जैसे चालांक मानव अन्दर स काला भाव रखता हुआ दूसरों की बुराई के दलदल में, बातों-बातों में फंसाता रहता है। अच्छी किस्म के मानव से अपने दर्द के रिश्तों से कड़वाहट पहुंचाता रहता है। जिससे परिवार से लेकर पूरे समाज में जहर फैल जाता है। क्योंकि बुरी सोच से मानव अपना लाभ स्वीकारना चाहता है। परन्तु यह समाज तो सीढी जैसा है, एक

दूसरे के द्वारा ही बनाया हुआ समाज एक दूसरे पर जिस तरह के भावनाओं से निकले हुए शब्दों को इस्तेमाल करेगा उसका असर सम्पूर्ण समाज पर पड़ेगा। यह समाज शब्दों से बोलने से ही गिना जाता है, एक दूसरे के बोलने से ही जगत का व्यवहार बनता है। और शब्दों से एक दूसरे मानव को सम्बोधित किया जाता है। अगर बोलने का तरीका और उस तरीके में अगर निस्वार्थ भावना ना हो तो मानव के शब्द जगत में जहर फैलाने का कार्य करते हैं। नारी समाज सबसे ज्यादा पीड़ित है क्योंकि उन्हें अपने घर में रहना पड़ता है। जिसके वे आधीन होती है, उनकी बोलचाल कैसी है, उसके ऊपर निर्भर होता है कि वह दर्दमय है या नहीं। परन्तु सम्पूर्ण समाज में कड़वाहट, गहरी बन चुकी है। जिसका नतीजा सम्पूर्ण सृष्टि उठा रही है, और आगे अपनी आंखों से देखेंगी।

नारी जाति ऐसे जगत की व्यवस्था है, जिसको करीबी से नहीं देखा जाता प्रयोग किया जाता है। यह रहस्य इस सदी का है इस सदी की नारिया पढ़ी लिखी है। सब कुछ जानती है परन्तु फिर भी दूसरे के आधीन है। आधीनता उसे कहते है जो दूसरे के द्वारा पीड़ित की जाती हो। और अगर पीड़ित ना की जाती हो। और एक दूसरे में निस्वार्थ प्रेम भावना हो तो वह स्वतंत्र है वह आधीन नहीं होती। समाज विचारों से छोटा बड़ा होता है, गरीबी अमीरी से नहीं होता। जो समाज छोटी, विचाराधारा का होता है इस समाज में हर वक्त दुखदर्द भरा रहता है। उस समाज के दायरे में सभी के सोचने का दायरा उसी तह तक होता है, जिसे तह तक वह छोटा समाज ढला हुआ है। वह समाज उसी दायरे के अंर्तगत पैदा होता है और उसी दायरे के अन्दर उसका पालन पोषण होता है जिससे वह समाज उस दर्द से निकल नहीं पाता और उसको वे ही शब्द अच्छे लगने लगते है। जो रोजमर्रा जीवन में व्यक्त करता रहता है उससे यह समाज अन्दर से दबा रहता है ऐसे समाज का दबना दिमागी

तह पर दबना होता है क्योंकि उसकी सोच सुन्दर परिभूषित समाज की नींव नहीं रख सकते। उसके सोचने, जीवन जीने, परिवार को चलाने का दायरा छोटा होता है। समाज में ऐसे कितने मानव होंगे जो इस जगत के दुख दर्द भय अन्दर से पीड़ित न होते होंगे और जिनका दायरा अपने समाज तक सीमिति ना हो दुनिया में हों, ऐसे बहुत कम मानव होते है। क्योंकि मानव अपने दायरे से ही बाहर नहीं निकल पाता। कोई कोई तो मानव इतना बतम्मीज होता है कि नशे की हालत में वह दूसरों को पीड़ित करता है। और जो अपने भी नहीं होते तब भी वे उस मानव से दुखी होते हैं, अन्दर से पीड़ित भी होते हैं।

जब दूसरे इतने पीड़ित होते हैं, तो इस मानव की अपनी दुनिया का क्या होगा। वे नर-नारी कितने पीड़ित होंगे, जिसके वे आधीन होते है। वह मानव ही राक्षसी प्रवृत्ति का हो तो क्या हल होगा। ऐसे परिवार में माता-पिता, पत्नी, पुत्र, पुत्रियां सगे संबंधियों का ऐसे मानव नरक में वास करते हैं। नरक-स्वर्ग भी इस पृथ्वी पर ही है। जितना पीछे लिखा है, वह इस सदी का जीवन का मूल कारण है। यह मूल कारण मानव की छोटी सोच का नतीजा है। जो सम्पूर्ण मानव जाति को प्रदूषित करता है। इससे मानव को ऊपर निकलना होगा, जीवन शैली का अनुकरण करना होगा इस समस्या का हल अध्यात्मिक प्रेरणा है। जिसका रास्ता स्वर्ग तक जाता है। जो मानव झूठ में लथपथ है, उन्हें जीवन का ज्ञान, सुख में जीवन बिताना, सभी कुछ बातें भावनाओं को संग्रहित करके उसे उपजाऊ बनाना, जो नर नारी समाज में सुखी रह सके और अपने जीवन मूल्यों को समझ सके। और इस सृष्टि का रचयिता कौन है जान सके। मानव इस पृथ्वी का सदैव निवासी तो रहा है, परन्तु एक बार एक रूप में नहीं रहा तो समझ लीजिए कि जिसका रूप समाप्त हो जाता है, वह दूसरा रूप उसी प्रकार का नहीं मिल

सकता। मृत्यु के पश्चात उसे अपने सभी जो प्रेम में बंधे हुए है सभी को छोड़कर जाना पड़ता है, यह अटल सत्य है। दोबारा फिर दूसरे चेहरे में उत्पन्न होना पड़ता है। सभी दूसरे चेहरे ही मिलेंगे कर्म और उसे सोच उसी प्रकार की मिलेगी जिसको वह मानव छोड़कर गया था। छोटी सोच के मानव की मृत्यु होगी, तो नरक जैसे माहौल में जन्म लेगा। अगर ऊंची सोच होगी, और इस जन्म ईश्वर को सत्य मान लिया होगा, तो स्वर्ग जैसे परिवार में जन्म लेगा। कई मानव ऐसे भी होते हैं जो दुर्गन्ध में वास करते हैं। उन्हें वह दुर्गन्ध ही अच्छी लगती है परन्तु नरक के सामान होती है। दूसरे मानव ऐसे होते हैं जो उस जगह को निकल नहीं पाते जहां पर वे छोटे दिमाग के मानव वास करते है। इसी प्रकार से दिव्यलोक होते हैं परन्तु यह सम्पूर्ण लोको का चित्रण पृथ्वी लोक पर ही घटित होता है कहां जाना होगा मृत्यु के पश्चात। यह पृथ्वी लोक के निवासियों को ही तय करना होगा कि उन्हें कहां और किस लोक में जाना है। यह मानव पर निर्धारित होता है, इसीलिए ईश्वर ने ज्ञान प्रगट किया है। और युगों-युगों से होता रहा है। जो ज्ञान देता है वह ईश्वर से पुरुषकृय आत्मा प्रेरित होती है और जिसके लिए दिया है उन्हें पौरुषकृय करने का ज्ञान दिया जाता है और समझाया जाता है, कि पृथ्वीवासियों का मूल निवास कहां पर है। मूल निवास पृथ्वी लोक नहीं हर मानव का मूल निवास दिव्य लोक है। परन्तु मानव चेतना खुद गर्ज है, वह ईश्वर में नहीं उतरना चाहती। जिससे मानव का ज्ञान इतना ऊंचा हो कि वह अपनी समझ एवं ईश्वर का ज्ञान जान सके। जिससे इस लोक से पलायन करने से पहले यह देख सके कि हमें कहां जाना है। यह ज्ञान इस सृष्टि के प्रत्येक नर नारी को करना होगा। जिससे दिव्यलोक एवं पृथ्वी लोक का सन्तुलन बना रह सके।

मानव जाति रहस्यमय जीवन धारा

मानव जाति जीवन में ऐसे धाराओं से अनभिज्ञ रहती है, जो जीवन में अनिवार्य होती है। मानव जाति उन कर्मों की धाराओं को अनदेखा अनसुना करके आगे बढ़ती रहती है, जिससे मानव जाति को कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। वर्तमान जीवन में कर्मों के द्वारा किया गया कार्य जीवन को तो बेकार करता ही है। और आगे आने वाली पीढ़ी को भी कठिनाईयों में डालता है। मानव कुछ नहीं कर सकता, क्यों कि कर्म जो भी मानव कर देता है, उसका भुगतान उसे चुकाना पड़ता है। यह अटल सत्य सारिणी है। मानव को अपने इस बहुमूल्य जीव को सदैव उन बुराईयों से बचाना चाहिए जिससे बीज बनकर दरख्त ना बन जाय। और वह दरख्त इतना बड़ा बन जाय कि पूरे समाज में फैल जाय। आप जिसे सोच से कार्य करते हो रोजमर्रा जीवन में वह सभी कुछ आप ठीक मानते है। परन्तु आप यह नहीं सोचते कि सोच के बहाव से जो कार्य आप कर रहे हो वह सभी ठीक हो। इसी भूल में आप जीवन मे आगे बढ़ते रहो जिससे आपके हृदय में दुखों का तो वास होगा ही और आपके परिवार पर भी उसका असर जरूर पड़ेगा। वह असर उस पीढ़ी से लेकर आगे आने वाली पीढ़ी तक फैलता रहेगा। वह संस्कार से युक्त बना हुआ जीवन होना चाहिए।

संस्कार युक्त जीवन कमी भी अपने और आने वाली पीढ़ी को कभी भी कठिनाइयों में नहीं फंसा सकता है। इसलिए अपनी जीवन शैली शुद्ध हवा में आजादी से रहने का सकंल्प मानव को लेना चाहिए। हर मानव अपने जीवन में सुख और समृद्ध रहना चाहता है। उसके लिए आपको उन सभी संस्कार युक्त बातों को हमेशा याद रखना चाहिए जो किसी को हानि ना पहुंचा सके। मानव का सृष्टि में स्वाभाविक ही समय के अनुसार सोच में बदलाव आने

लगता है। मानव जब तक अपने अन्दर घुमता रहता है तभी तक उसकी सोच सीमित होती है, उदाहरण के अनुसार कोई मानव गांव में रहता है, बस उसे उस परिवार के अन्दर जो बाते होंती है, और जो रोजमर्रा जीवन में उनका परिवार करता रहता है। उसी दायरे में वह मानव घुमता रहता है। उसकी सोच उसी में धीमी और तीव्र होती रहती है। क्योंकि कर्मों के अनुसार उसे उस परिवार माता पिता के यहां जन्म लेकर आना पड़ा है, उसके पिछले कर्मों के मुताबिक असली सोच में बदलाव तो आता रहता है, परन्तु उससे वह बाहर नहीं जा सकता। उसी सोच एवं कर्मों में घुमता रहेगा और अगर उसके कर्मों के अनुसार उसे उस गांव से बाहर जाना पड़ेगा तो वह जरूर जायगा। क्योंकि जो लिखा हुआ है उसे कोई नहीं टाल सकता। जिसे जो करना है जहां पर जाना है, जहां जीवन कर्म करने है वह वहीं पर जायेगा सभी तो गांव छोड़कर नहीं जाते, वे ही जाते है जिनका लिखा हुआ है। जब वह मानव गांवें छोड़कर जायेगा तो दूसरे मानव उसके सम्पर्क में आयगे और अलग-अलग तरह के कार्य देखने को मिलेगे। अलग अलग तरह के विचारधारा के मानव मिलेंगे। इसके उपरान्त उस गांव से बाहर जाने वाले मानव में बदलाव आने लगता है, और जो सोच उसकी गांव में थी उसे तो वह दबाने की चेष्टा करता है और नई सोच अपने अन्दर भरने लगता है। बाहर निकलकर जगत इसी धरती पर बसा हुआ सुन्दर दिखने लगता है और उसके सोचने समझने बोलने व्यवहार करने में फुर्ती आ जाती है। परन्तु वह उस माहौल संस्कार भोलेपन को अपने अन्दर से निकाल नहीं सकता। उसके चेहरे पर ज्यादा सोच आवश्यकताएं बढ़ने से साफ दिखने लगती है। और वह मानव अपने भेष को अन्दर से बदलने की चेष्टा करता हुआ आगे बढ़ जाता है। उसके सामने दो प्रकार की परेशानी हर वक्त बनी रहती है एक गांव की और एक शहर की। उसमें से वह निकल नहीं पाता

और अन्दर से परेशान रहने लगता है वह मानव क्यों परेशान हुआ यह उसकी दूसरे माहौल में जाने से सोच का दायरा ज्यादा तीव्र भी हो गया और आवश्यकताये ने भी उसके अन्दर जगह बना ली है। जब वह गांव में था तो उस परिवार के माहौल को देख रहा था और उसी माहौल के अनुसार अपनी सोच धीमी एवं तीव्र कर लेता था। परन्तु उसके पास आवश्यकताये ज्यादा नहीं थी वह उस भोलेपन में ही सोच घुमाता रहता था। उसको ईश्वर की तरफ से बल मिलता रहता था परन्तु शहर में आने के बाद उसे सुन्दर दुनिया देख कर वह भ्रम में पड़ गया है, वह क्या करे क्या नहीं कही वह मानव परेशानी में रहने लगता है। उसके उपर से देवताओं की तरफ से सहायता मिलनी बंद हो जाती है। उसका मन असुरों की कमान में आ जाता है। फिर वह मानव वह ही करने लगता है, जो समाज करता रहा है। इस सोच से बचना होगा जो सोच मानव के अन्दर है उसे सरल और सात्विक परिस्थिति में बहने देना चाहिए। और अपने विचार वह ही अंकित करके उस माहौल को सुन्दर बनाना चाहिए। अपने विचारों में आवश्यकताओं की बढ़ोत्तरी न करके, सामाजिक ढांचे में सुन्दर समाज मानकर नहीं बढ़ना चाहिए। क्योंकि कि संसार सुन्दर जरूर दिखता है, परन्तु है नहीं, इसके अन्दर दुख भरा पड़ा है।

यह रहस्य मानव के जीवन में बना रहता है भोली सोच के अन्दर मीठा रस टपकता है। नकारात्मक सोच से दुख टपकता रहता है। जो मानव के अन्दर ही अंकित होता रहता है। मानव के अन्दर इतना बड़ा यन्त्र ईश्वर ने लगाया है कि जो मानव सोचता है वह भी अंकित होता रहता है। और जो भी मानव दूसरे मानव से व्यवहार करता है वह भी अंकित होता रहता है। बुरा भला मानव अपनी सोच के द्वारा ही जगत में घटित करता रहता है। और वह मानव के अन्दर दिव्य यंत्रों में भरता रहता है अगर कोई मानव

आपके सामने कोई भी सांसारिक कार्य एवं लाभ हानि की बातें करेगा, तो आप यह मत सोचो की जो बात आप अपने भाव से कर रहे हो सामने वाला भी उसी भाव से कर रहा है। या तो सामने वाला गलत है, या फिर आप गलत हो, क्योंकि भाव दोनों के विपरीत होते हैं अगर दोनों के भाव पहले वाले जैसे सात्विक हो और वह अपनी बात, बिना फरेब किये साफ-साफ बताना चाहता है, आपके अन्दर कोई मैल नहीं तो आप ठीक यन्त्रों की स्थिति में हो जो आपके अदर दिव्य यंत्र लगे हुए है। और अगर सामने वाला मानव फरेबी है और बात सुनने एवं करने में उसके मन में काला है तो बुराई का हकदार वही है। उसके अन्दर उन दिव्य यंत्रों में तेजी आ जायगी जिस तरह से स्थिर जल में कंकर फेंक दी हो और वह जल लहरों में दबदील हो। गया हो ऐसा वातावरण दिव्य यंत्रों में मानव की गलत सोच गलत व्यवहार के कारण उपस्थित होकर ईश्वर की उर्जा घटाने का कार्य करता है। ऐसे ही मानव ज्यादा संख्या में सृष्टि के अन्दर जीवन व्यतीत कर रहे हैं। जिससे वे भी अनभिज्ञ है और उनके अन्दर इस ज्ञान का रहस्य छिपा हुआ है। इन्हें मालूम नहीं है कि सृष्टि में कठिनाइयों का उफान क्यों आता है धर्म क्यों कम होता है। इसी रहस्य में अनभिज्ञ सृष्टि अपने सामने अपने जीवन में कठिनाइयां दुख दर्द देख रही है। इस रहस्य को मानव नहीं समझ पाया तो मानव एक दिन अकेला ही खड़ा मिलेगा और ईश्वर को पुकारेगा कि हे ईश्वर मुझे बचाओ मुझे बचाओ और बचाने वाला कोई नहीं आयेगा मानव को दर्दमय ही मृत्यु को प्राप्त होना पड़ेगा।

और अगर मानव अपनी स्थिति, ज्ञान के अनुसार धारण करे, तो उसके अन्दर जो दिव्य यन्त्र है वे मानव की सहायता कर सकते हैं, परन्तु उनकी आज्ञा के अनुसार मानव अपना जीवन व्यतीत करे किसी से भी बात करे तो निर्मल मीठे स्वर शब्दों का उच्चारण

सही करे। दूसरे से बात करते समय अपने अन्दर सात्विक यंत्रों की प्रेरणा के आधार पर बात करे फरेब झूठ बेइमनी शत्रुता ना रखे। अपने लाभ व शत्रुता के आधारपर बात न करे जिससे आपके अन्दर दिव्य यंत्रों को आहत पहुंचे। ईश्वर की ताकत जो आपको कठिनाइयों से बचाकर उन्नति कराती है, वे निर्बल न हो जाए जिससे आपको सहायता न मिल सके, यह कार्य कठिन नहीं है। मानव संकल्प करे कि वह कभी भी किसी के बारे में बुरी एवं बात करते समय अपनी सोच सामने वाले की भलाई में रखे तभी यह सुष्टि उस उफान से बची रह सकेगी। जिसकी आहट जगत में हो चुकी है।

जगत में प्रत्येक मानव के अन्दर युद्ध जैसा वातावरण बना हुआ है। मानव की सोच के अन्दर हलचल पैदा हो रही है। वह हलचल दुनिया में अच्छा पैगाम नहीं दे सकती। मानव इस रहस्य को समझे और सुखी जीवन जीना चाहता है और अपने परिवार को सुखी बनाना चाहता है, तो इस रहस्य को समझे और अन्दर मीठे स्वर भरे किसी को आहत ना करे, शुद्ध वातावरण रखे, शुद्ध सोच को अंकुरित करे, इससे धर्म का आस्तित्व संसार में बना रह सकेगा।

मानव खुद ही यह सोचे कि यह बात क्यों कही गई है यह क्या रहस्य है? क्योंकि मानव तो स्वाभाविक ही गलतियों में होता जा रहा है। उसे ज्ञान नहीं है, कि उसका मस्तिष्क दिव्य है और उसे बल किससे मिलता है और धर्म का आस्तीतव कहां से उपजता है एक दूसरे मानव से ही यह संभव है। जब एक मानव अपना बाणा अन्दर से बदलेगा तभी संसार में अमन चैन रह सकेगा। क्योंकि मानव जानता सब कुछ है परन्तु उसे स्वीकार नहीं करता। दिव्य यंत्र ठीक प्रश्न और गलत प्रश्न दोनों के लिए लगे हुए, यह आपको ही समझना है कि आप ठीक को धारण करोगे या गलत को धारण

करोगे। दोनों की परिभाषा और परिणाम अलग-अलग है दोनों ही इस जगत को प्रभावित करते है। वह मानव प्रणाली के ही भाव में है। उसे धर्म की स्थापना चाहिए या अधर्म की स्थापना चाहिए। धर्म युग की आयु बढ़ाकर मानव को संस्कार युक्त बनाता है। अधर्म युग को कम आयु में ढालता है, क्योंकि अधर्म की आयु इसलिए कम होती है कि मानव सोच के अन्दर जो दिव्य यन्त्र लगे हुए है वे धीरे धीरे खाली होने लगते है। मानव के अन्दर धर्म नहीं रहता और घटने लगता है इसी तरह घटते-घटते युग टूटने लगता है और संहार की तरफ डोलने लगता है। अगर सोच धर्म तुल्य हो तो युग की नीव पक्की होकर मानव श्रेणी आनन्द मे जीने लगती है। युग चरमराने की परिक्रिया समाप्त होकर युग अपनी आयु पूर्ण करता है। जिस तरह से कोई मानव अपनी कामनाओं की पूर्ति के लिए नशे का इस्तेमाल इतना करता है कि वह मृत्यु को आधी आयु में प्राप्त कर लेता है। जो अच्छी काया के मानव है वो अपनी आयु निर्धारित समय को पूर्ण करते है। इसी तरह से युग की आयु होती है, और सृष्टि में मानव की अन्दर की सोच को आधार पर आधारित होती है। जब आपकी सोच अच्छी होगी तो मानव जन्म अपने स्थान पर होगा और मृत्यु भी अपने स्थान पर होगी। अल्प आयु में मृत्यु नहीं होगी और कोई हादसा नहीं होगा पुत्र पिता के सामने नहीं मरेगा नारी पतिधर्म निभावे। ईश्वर की प्रेरणा लेकर सोच प्रवाह धर्ममय प्रवाहित करे तो पति पत्नी से पहले नहीं मरेगा कोई विधवा नहीं होगी। यह समाज नारी को जन्म देना नहीं चाहता यह भी मानव की सोच है। समाज में उन भ्रष्ट मानवों की गलती का नतीजा है जिसके कारण मानव नारी को जन्म देना नहीं चाहता नारी जगत जननी होती है। जो मानव यह सोचता है कि नारी को जन्म नहीं देना क्या वह नारी से पैदा नहीं हुआ इस सत्य का उसे पता है परन्तु उसे स्वीकार नहीं करता। दुनिया में कानून से

इस दुष्परिणाम को रोका नहीं जा सकता इसे भावनाओं से रोका जा सकता है ज्ञान से रोका जा सकता है।

गांव शहर सभी में यह अज्ञान फैला है कि नारी का जन्म दुख मय है!

इससे कैसे उभरा जा सकता है? ज्ञान रहस्यमयी है, बहुत से मानव को ज्ञान नहीं कि इसका परिणाम क्या होगा। स्वाभाविक ही इसे जघन्य अपराध को करते रहते हैं। डरते तो इस समाज से है, परन्तु असली रहस्य का उन्हें ज्ञान नहीं हो पाता और वे कर देते हैं। जिसका परिणाम सम्पूर्ण सृष्टि को उठाना पड़ेगा। खाली वह मानव अपने आपको सुखी करना चाहता है। जो गर्भ में नारी हो और उसे जन्म नहीं देना चाहता वह तो उसके अपने लिए एक भ्रमित सोची हुई कल्पना है। परन्तु उसे पता नहीं कि उसका भुगतान सम्पूर्ण सृष्टि को देना होगा, जो बहुत ही भयानक होगा। यह सामाजिक अज्ञान है, जो कानून में नहीं बांधा जा सकता, इसे ज्ञान में बांधा जा सकेगा। हर मानव अपने मन में यह धारण व्यक्त करता है, कि नारी को जन्म देने से उसे दुख उठाना पड़ेगा। यह भय मानव के अन्दर अंकित हो गया है। इसके अन्दर नारियों को कष्ट पहुंचाने की कई प्रकार की प्रथायें मानव के अन्दर ग्रहित है, जैसे दहेज प्रथा, बेटी वालों को नीचा दिखाना, मर्द प्रधान है। मानव इस युग में इतना लालची बन गया है, कि अपनी कमाई से भी मानव का पेट नहीं भरता। वह मानव के अन्दर स्वाभाविक ही यह अवगुण मस्तिष्क में भर गया है। कि कितना भी ज्ञान देने खुद ही पुत्री का पिता होने के बावजूद भी मानव इस लालच को नहीं छोड़ते। इसी कारण से ज्यादातर भारत भूमि पर ही यह दुर्बल सोच के मानव,

इस जघन्य अपराध को करते है। सब कुछ जानने के बाद भी करते है, क्यों कि मानव के अन्दर लालच भरा रहता है। जिसके कारण मानव अपना होश हवास खो देता है, और नारी जाति को दहेज को लालच, में मार भी देना चाहता है। ऐसा घिनौना कार्य मानव ही करता है। जिनकी पुत्री उसके घर में जाती है, वह भी मानव ही है। परन्तु मानव का अहंकार एवं लालच, बुद्धि का ना होना ये सभी बुराईयां मानव के अन्दर भरी पड़ी है। इस युग में असुरी शक्तियां अपना आसन जमाना चाहती है जिसके प्रभाव में यह युग भ्रमित होता जा रहा है। और मानव मानव को अन्दर से छलिता जा रहा है।

इस बुराई को वे भी मानव करते हैं जिनके घर में खुद ही की पुत्री हो, वे भी मानव दूसरे की पुत्री को दहेज के ललच में परेशान करते हैं, यह जघन्य अपराध है। इस नरक जैसे अपराध का मानव इतना बड़ा दोषी बन जाता है कि सम्पूर्ण मानव जाति का दोषी तो बनता ही है ईश्वर से भी उस मानव का रिश्ता कई जन्मों के लिए टूट जाता है। वह मानव इस जन्म में भी सुखी नहीं रह सकता और मृत्यु के पश्चात भी सुखी नहीं रह सकता। जो भी मानव दूसरे मानव को दर्द पहुंचाने का कर्म करता है। वह ईश्वर का दोषी है, कानून का दोषी है, और जितने भी अच्छे किस्म की सोच वाले मानव है, उनका भी दोषी है।

इसीलिए यह रहस्य मानव जाति को समझना होगा कि सम्पूर्ण पृथ्वी पर नर हो या नारी सभी ईश्वर की संतान है। मानव को दूसरे मानव को पीड़ितों करने का कोई हक नहीं। बिना कसूर के कोई किसी को कुछ नहीं कह सकता सभी स्वतंत्र है। मानव अपनी सोचने की दिशा पर ध्यान दे कि हमारी दिशा क्या है। नारी जगत इस सृष्टि की जननी होती है। जिसके बिना यह सृष्टि चल नहीं सकती। आप ही बताओ कि जिसके बिना यह सृष्टि चल नहीं

सकती, वह कितनी बड़ी शक्ति होती है नारी जाति को समझिए वह नारी है जो आपकी माता बनती है, पत्नी बनती है, वह भी माता बनती है, हर नारी को माता बनना है, और माता का नाम जगत में सर्वोपरि माना गया है। ये सभी बातें मानव को समझनी होगी, और अपने अन्दर जो दोष भरे हुए है उन्हें बाहर निकालना होगा अगर आपके दोष बाहर निकल जायेगे तो आप खुद गलती ना कर सकोगे, हर गलती मानव लोभ लालच अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति करने के लिए करते हैं।

अपने जीवन को बहुमूल्य समझ कर, अपनी पहचान करो, कि मेरा इस पृथ्वी पर आने का कार्य क्या है। मुझे किन कृत्यों का पालन करना है, किस प्रकार के ढांचे में ढलकर जीवन व्यतीत करना है। जिससे मानव के द्वारा दूसरे मानव को हानि न पहुंचे, यह रास्ता मानव के लिए कठिन नहीं है। सब कुछ जीभ का स्वाद है। चाहे मानव कड़वा बोले तब भी जीभ का स्वाद है और अगर मीठा बोले तब भी जीभ का स्वाद है। परन्तु जीभ का मालिक तो मन है, मन ही के द्वारा जीभ चलती है, मन से ही दोष उत्पन्न होते है और मन से मानव नरक भोकता है। मन से ही मानव नर से नारायण भी बनता है। मन इन पांचों तत्वों का चलाने वाला होता है अगर मानव मन के वश में चलगा तो दोष पैदा होगे और पाप भी बढ़ेगा। दुनिया में दर्द भी बढ़ेगा और अगर मन को वश में रखोगे अपने आधीन रखोगे। तो कभी कोई कार्य गलत नहीं होगा, जीवन सफल हो जायेगा। ईश्वर को भी मानव जान सकेगा और अपने आपको भी जान सकेगा।

नर या नारी कोई छोटा बड़ा नहीं होता। अगर होता है, तो वह अहंकारी मानव को दर्शाता है। वह मानव सभी दोषों से भरा रहता है, उस मानव की इच्छा कभी पूर्ण नहीं होती। हर जन्म में अपनी इच्छापूर्ण करने के लिए एक नया पाप कर्म करता चला जाता है।

जिससे उस मानव का कभी भी पीछा नहीं छूटता। दुनिया में अगर आपको कोई भी दुख दिखता है, तो समझिए की वह उसका पिछले कर्मों का दण्ड है। ऐसा नहीं होता तो वह आप जैसा, वह भी होता। उसमें और आप में बस पूर्व के कर्मों का फर्क होता है। दुनिया में बहुत से मानव हाथ पैर से खराब होते हैं, और कुछ जीवन में हो जाते हैं, वह सब कुछ पूर्व के कर्मों का लेखा-जोखा होता है। फिर भी मानव उस कार्य को नहीं छोड़ता जो मानव जन्म लेकर वर्तमान जीवन में दुख उठा रहा है। वह पूर्व का कर्मों का फल होता है, परन्तु मानव यह ज्ञान ग्रहण नहीं करता कि पहले कर्मों के कारण तो यह दर्द भरी जीवनी मिली है। अगर आगे भी अगर कर्म गलत करेगा तो अगला-जीवन कैसा होगा।

अवैध तरीके से धन कमाने वाला किसी का धन हड़पने वाला मानव दूसरे जन्म में रास्ते पर बैठकर भीख मांगने का कार्य करता है।

सभी पाप कर्मों का दण्ड मानव को भुगतना पड़ता है। जो भी मानव ईश्वर को सत्य नहीं मानता, वह समझो दोषों के अर्न्तगत अपना जीवन बिता रहा है। और उसके मस्तिष्क में जो भी वह सोचता करता, देखता है, वह सब कुछ अंकित हो जाता है। और मृत्यु के पश्चात उसका खाता खुद खुल जाता है उसी गणित के हिसाब से उसे जन्म लेना पड़ता है और घटनाक्रम भी लिखित हो जाता है कि इस जीवन में क्या क्या करना है।

मानव सत्य प्रवाह-सोच पर नियन्त्रण

मानव सोच बहती हुई धारावाहनि है। जैसे नदी अपने वेग से पृथ्वी के ऊपर बहती है। इसी प्रकार से मानव सोच जिस दिशा में बह रही है वह सोच के ऊपर है कि वह दुनिया को आबाद करेगी या बरबाद। दुनिया में अशान्ति फैलायेगी या सत्य का दिव्य दीपक जलायेगी, यह मानव सोच के ऊपर निर्भर करती है। मानव सोच के कारण युग परिवर्तन होता है। मानव सोच के कारण ही धर्म घटता और बढ़ता है। मानव सोच के द्वारा ही युग मे अशुभ घटनायें घटती है। जब मानव सोच बुराई पर उतर आती है तभी दुनिया में अपशगुन होने लगतें है।

जैसे पुत्र माता-पिता से अभद्र व्यवहार करने लगेगा। कड़वे शब्दों से अपने से बड़ो का निरादर करने लगेगा। मानव जन्म अपने स्थान पर न होना मृत्यु अल्प आयु में होना पिता के सामने पुत्र मृत्यु होना, अनेको प्रकार के हादसे होना आरम्भ हो जाते है। जब मानव सोच विपरीत दिशा पर चलने लगती है। जब मानव सोच अच्छी सोच सात्विकी प्रवृति धारण करके प्रवाहित होती है, तभी भी युग परिवर्तन होता है। यह युग सत्य पर आधारित युग होता है। जब मानव की अच्छी सोच ना हो तो युग भ्रमित होकर डोलने लगा है, बाहर से कुछ नहीं आता सब कुछ मानव के अन्दर प्रवाहित हो रहा है। आप किसी भी सिद्ध स्थान पर जाआगे अपनी मनोकामना के लिए उससे कुछ नहीं होगा। जब तक आपकी सोच सात्विक और स्वांस सत्य सफर करता हो, उसी से आपका कार्य बन जायेगा। उसके लिए मानव को कहीं जाने की आवश्यकता नहीं। मानव अपने घर के अन्दर अपना रोजमर्रा जीवन के कर्म करता हुआ भी कर सकता है। इससे बड़ा कोई सत्य नहीं और न ही कोई तप है।

सबसे पहले आप अपने आपको देखिये कि आप कौन हो मानव हो तो पता चलेगा कि मानवता किसे कहते है। अगर आप अपनी इस जीवन की करनी को याद करो तो आपको आपका अतीत खुद ही बतायेगा कि आप क्या हो। आप भ्रमित हो या चेतन्य हो। आप खुद ही सोचिये कि आप हर वक्त क्या सोचते हो। अगर आप सृष्टि का भला मानव कल्याण हेतु या दया भाव के लिए सोचते हो तो आप अपनी जगह ठीक हो। आपके साथ कोई भी ऐसा दुर्घटना जैसा हादसा नहीं घटेगा। अगर आपकी सोच बुराई ईर्ष्या द्वेष में फंसी हो तो आपने खुद ही उस दुर्घटना को बुलाया है। न तो दुख कही बाहर से आया है, और न सुख बाहर से आया है सब कुछ तुम्हारे अन्दर है, और न ही तुम्हें कोई सुख दे सकता है। और न ही कोई दुख दे सकता है। हर परिस्थिति के लिए आप खुद ही जिम्मेदार हो। परन्तु भ्रमित जगत में वास करते हो और भ्रमित जगत जब होता है जब मानव की सोच प्रदूषित हो जाती है। ना ही कोई ईश्वर, अल्लाह, ईसा मसीह आपको कुछ दे सकता ना मांगने से गिड़गिड़ाने से तुम्हें कुछ मिल सकेगा तुम्हें तुम्हारी अपनी सोच और अतीत में किया हुआ कर्म उसके अनुसार ही मिलेगा।

आप चाहे अपनी जन्मपत्री किसी ज्योतिषाचार्य को दिखाओ या किसी धरती के ऊपर किसी मन्दिर, मस्जिद, गुरूद्वारे, में जाओ तुम्हें कुछ प्राप्त नहीं होगा। तुम जब भ्रमित हो और तुम्हे ज्ञान नहीं है। इसीलिए तो तुम भटक रहे हो। अगर आपको ज्ञान हो तो आप अपनी करनी अपनी सोच के आधार पर अपना जीवन देख सकते हो और तय भी कर सकते हो, कि मेरा जीवन कैसा होगा और किस प्रकार से आगे चलेगा। अगर आपको यह लगता है कि मैंने अतीत के कुछ अधर्मी कर्म किए है, तो जब आप यह बात सोचेंगे। आपको लगेगा कि मेरे से कुछ अधर्मी कार्य हुए है, तो आप अपने अन्दर सकंल्प कीजिए कि अब से आगे मैं कुछ भी अधर्मी कार्य

नहीं करूंगा। तभी से आपकी जीवन की नैया पार होने लगेगी। आपके अन्दर जो भय सता रहा है वह भी हट जायेगा। आप खुद अपना जीवन निर्धारित कर सकागे और जब निर्धारित कर सकागे तभी से जीवन परिवर्तन होने लगेगा। जिस प्रकार से एक मानव का जीवन परिवर्तन होता है, उसी प्रकार से युग परिवर्तन होता है।

जब मानव को ज्ञान हो जायगा फिर वह भ्रमित नहीं होगा। जीवन को सुन्दर बनाने की चिन्ता में होगा। दूसरे मानव को चाहेगा कि हंसता खेलता दिखे उसका मन मस्तिष्क सुन्दर बन जायेगा। फिर वह मन्दिरों में धन नहीं चढ़ायेगा वह दुखी दरिद्रों की सेवा करेगा। जहां धरती पर पानी नहीं, जहां मानव के सिर ढकने के लिए छत नहीं एक-एक पैसे से मोहताज मानव जीवन इस धरती पर वास करता है। उन्हें दुखों से बचाने के लिए योगदान करेगा। क्योंकि मानव भ्रमिता से निकल गया है। जब भ्रमित नहीं होगा तो सोच भी शुद्ध होगी यह तो मानव को तय करना होगा और ईश्वर तक जाने का रास्ता दुखियों दरिद्रों की सेवा करेगा, भाव से जियेगा तो इससे बड़ा कोई कल्याण नहीं। इसी के द्वारा मानव के अतीत में बुरे कर्म कटेगे ईश्वर ऐसे मानव को क्षमा कर देते है।

मानव जीवन के रोजमर्रा कर्म में बुरी तरह लिप्त

मानव का चरित्र इस प्रकार से प्रदूषित हो रहा है। चाहे छोटा मानव हो या बड़ा अपनी करनी अपने नियम व संसारिक नियमों का उल्लंघन करना व ईश्वर को धोखा देना सत्य को परे रखकर अपने परिवार व अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति करने में पूर्ण रूप

से लिप्त है आज के मानव ने उस ढांचे को भी हिला दिया है, जो ढांचा सांसरिक मानव को चलाने के लिए मनुष्य की मन की बुद्धि की रचना है। जिस रचना में मानव जीवन चलाने का स्रोत बुद्धिजीवियों ने ईश्वर की कृपा से लिखा है। वह किताबों में अंकित है। और उसी के ऊपर शिक्षा प्राप्ति होती है। परन्तु जो शिक्षा प्राप्त करता है, वह ही उस शिक्षा को जानता है। वह उस मानव की संसारिक उपलब्धि है। वह मानव उसमें अपनी संसारिक उन्नति करता है। सृष्टि को बनाने में उस मानव का योगदान होता है। और उससे सभी को लाभ भी पहुंचता है। यह बात सत्य है, लेकिन इससे अलग भी एक मानव जीवन है जो उस मानव की अंर्तआत्मा होती है वह उन किताबों के अन्दर नहीं लिखी। ना ही उसने वह शिक्षा प्राप्त की है। उसे अपनी योग्यता दिखती है, जो संसारिक मानव मन से लिखी गई है। परन्तु यह जगत खाली उस मानव की उस शिक्षा से नहीं चलता। क्योंकि उस शिक्षा के अन्दर जीने का जरिया सीधा सरल नहीं होता, उसमें सौ में से अस्सीं मानव लपेटे जाते हैं। वह व्यवस्था उन्हीं मानवों तक सीमित होती है जिन्होंने उस शिक्षा को ग्रहण किया है। बाकि सृष्टि में मानव उस विद्या उस शिक्षा के द्वारा पीड़ित भी होते है। क्योंकि वे उस व्यवस्था से अनजान होते हैं। और शिक्षा ग्रहण करने वाले अपना भाव अपनी चेतना ऊपर नहीं उठाते। दया भावना मानव सेवा से वे शिक्षा धारी मानव अलग बंट जाते हैं। वे 80 प्रतिशत मानव अलग बढ़ जाते है उससे दुनिया में अशान्ति और बेईमानी हिंसा जैसी बुराइयां फैलती है। वे शिक्षा धारी ऊंचें आसान पर बैठे हुए, मानव अपना प्रभुत्व जमा कर अपनी नीति निर्धारित कर देते हैं। जिससे मानव व्यवस्था डगमगाने लगती है। उसी व्यवस्था में मानव जीवन अपनी मजबूरी समझकर उसी दरियाव में ढल जाने में दुख उठाकर अपनी मेहनत की कमाई का हिस्सा उस व्यवस्था को बनाने वाले

मानव के द्वारा पीसने लगता है। हर मानव जीने वाली व्यवस्था में ऐसा प्रश्नचिन्ह बन जाता है कि शहर या गांव का हर मानव एक ही शब्द से कहता है कि कोई कार्य समय पर नहीं होता। और धन का कुछ, मेहनत से कमाया हुआ गरीब मानव का उस व्यवस्था में चला जाता है। मानव कभी भी उस व्यवस्था से प्रसन्न नहीं होता। क्योंकि जीवन में हर कुर्सीधारी मानव बस अपनी शिक्षा से दूसरे मानव को चलाता है। उसके पास संस्कार युक्ति नहीं होती। उसके आधीन जितना भी मानव आता है। कभी उसके कार्य से सन्तुष्ट नहीं होता।

क्योंकि व्यवस्था स्वार्थ और धन के लालच में डगमाने लगती है। जो मानव अधिकार रखता है उसे अपना पेट भरने की चाहत में संपूर्ण जीवन बिता देता है। परन्तु उसे कभी उन पिसते हुए मेहनत कस मानव की पहचान नहीं होती। न ही अपनी पहचान हो पाती और अपने अन्दर कर्मों की मोटी काई का भार अपने जीवन पर रखता रहता है। जिससे वह सन्तुष्ट नहीं हो पाता वह न ही भयमुक्त हो पाता। अपने स्वार्थ में जो मानव धन कमाता है या किसी दूसरे को पीड़ित करता है वह कभी भी सुखी नहीं हो सकता। उसके जीवन में अचानक ऐसी परिस्थिति भी आ जाती है जो एक परिवार के लिए महाप्रलय जैसा ताण्डव लेकर आती है। कठिन हादसे जैसी परिस्थिति, परन्तु मानव इस रहस्य से अनभिज्ञ रहता है। वह तो वही सत्य सोचता है, जो उसने शिक्षा ग्रहण की है। उससे हटकर नहीं चलता और जिन पर वह जीवन की सवारी कर रहा है। उसे नहीं पाता वह उसी डाल पर बैठ कर उसे काट रहा है। सत्य की पहचान नहीं, उसे जो मानव उसके दायरे में आते है उनके लिए उसका जीने का तरिका रहस्यपूर्ण बना रहता है। वे छोटे मानव उसकी नीति उसके प्रशासन के बारे में अनभिज्ञ रहते है। वह अपना कार्य अपने मुताबिक जगत में करता हुआ आगे बढ़ता चला जाता

है। जीवन का समय उसी व्यवस्था को अपने द्वारा चलाने में बीत जाता है। पता भी नहीं चलता। जैसे गरीब मानव को बचपन जवानी, बुढ़ापा आ जाता है, परन्तु उसे जीवन के संघर्षों में पता भी नहीं चलता कि कब गुजर गया। इसलिए देश-दुनिया में व्यवस्था को चलाने वाले मानव को उन छोटे मानव या अनभिज्ञ मानवों को रहस्य से अवगत कराना चाहिए। प्रत्येक मानव को इस सृष्टि का हिस्सा समझना चाहिए। जिस व्यवस्था पर कुर्सीधारी मानव बैठकर शासन करता है उसे खुद ही ढालने का प्रयत्न करना चाहिए व्यवस्था सरल और प्रत्येक मानव की समझ में आ सके उसको धारण करवाना चाहिए। प्रशासन में जो मूल रूप से उसके ईर्द-गिर्द या उसका अपना समूह जो उसके साथ सामाजिक दायित्व निभाने में संलग्न है। उसे अपने निस्वार्थ तरीके से और सामाजिक ढांचे का सदुपयोग ख्याल रखकर और संस्कार युक्त प्रेरणा, जो उसे ईश्वर ने विरासत में दी है, उसे जोर देकर प्रयोग करनी चाहिए। जिससे समाज में कोई उससे पीड़ित ना हो और सामाजिक कार्य व्यवस्था सरल और साधारण स्थिति में पनपे। अपनी चेतना में अनमोल धरोहर जो ईश्वर ने उसको सोचने की शक्ति दी है उसे प्रयोग करे, और सात्विक करे, सकारात्मक करे, अगर ऐसा करेगा तो दुनिया से बेईमानी हिंसा रिश्वतखोरी मिट जायेगी।

क्योंकि जो जहां पर बैठा है वहां पर जितना भी उसका अधिकार का दायरा है उसे वह महत्वपूर्णता से निभाये स्वस्थ बनाये। सकारात्मक सोच के द्वारा चलाये जिससे दुनिया में मानव जीवन ढांचा सुदृढ़ एवं शक्तिशाली वैभवता से गूंज उठे। मानव सभ्यता का नया अंकुर फूटे क्योंकि कोई भी मानव इस सृष्टि में बुरा नहीं है। सभी ईश्वर की सन्तान है अगर बुरा है, तो उसके सोचने का सफर बुरा है जीने का सफर बुरा है वह मानव रहस्य

और ईश्वर रहस्य से अनभिज्ञ है उसे ज्ञान नहीं है। ज्ञान नहीं होता तो कर्म बनते है वे कर्म बुरे भी हो सकते और अच्छे भी हो सकते हैं। बुरे कर्म करने वाला मानव ज्यादा से ज्यादा जीवन में भय से भरा हुआ रहेगा। मृत्योपरांत वह उस सामाजिक बुराईयों में उलझा रहेगा। क्योंकि यह शरीर स्थूल में भी है, और सूक्ष्म में भी है। जब वह मृत्यु के पश्चात भ्रमण करेगा तो वह उसी लोक में जायेगा। जैसा उसने पृथ्वी लोक पर कर्म किये थे। वहां पर जाकर भी वह उसी प्रकार से सलंग्न रहेगा, भटकता फिरेगा। जितने मानव उसके जीवन में आये और उसके कर्मों के द्वारा पीड़ित हुए थे, रिश्वत ली, या बेईमानी की, झूठ से धन कमाया सभी कुछ सामने आकर लहरायेगा और दर्दमय उसकी रूह भटकेगी। क्योंकि मानव जीवन है ही ऐसा, पृथ्वी पर रहे तो रिश्वत, झूठ, दगा, देना, और धन कमाना अच्छा लगता है। परन्तु जब वह मृत्यु होकर जाता है जितना उसने पृथ्वी पर किया है उसके ऊपर ऐसे लिपटते है उस मानव रूह पर जैसे विधुत के ऊपर कीट पतंगे और वहां तो किसी की सहायता भी नहीं मिलती सिर्फ रूह पीड़ित रहती है। फिर वह मानव जन्म लेकर समय के अनुकूल आता है तो वे मानव उसी के साथ आकर फिर उससे मिलते है और बदला चुकाते है। कभी भी बुराई मानव का पीछा नहीं छोड़ती।

इसीलिए पृथ्वी पर वास करने वालों ईश्वर की संतानों तुम खाली हाथ आये थे खाली जाना है। किसी का नहीं बदला चुकाने आये हो। बुराई को छोड़कर अच्छाई पर चलो और इस वाणी को ग्रहण करो, यह मानव कल्याण हेतु पृथ्वी पर आई है।

सृष्टि में मानव सोच से फैलता हिंसा का जहर

सम्पूर्ण सृष्टि में नकारात्मक सोच से हिंसा का जहर घर से लेकर राष्ट्र तक और देश से लेकर दुनिया तक फैल रहा है। दुनिया में हर बुराई मानव सोच के कारण फैलती है। सोच ज्ञान से परिवर्तन हो सकती है। ज्ञान से ही देश दुनिया में, शक्ति स्थापना में परिवर्तन हो सकती है। दुनिया इस मुल्क में प्रत्येक मानव चाहे वह किसी भी धर्म का हो वह सोचता विचारात्म तो जरूर है। परन्तु मानव की सोच कैसी है उसे आका नहीं जा सकता। जब मानव उस प्रदूषित सोच से कर्म करता है तभी उसकी जांच हो पाती है कि वह मानव ठीक है या गलत है। उससे पहले किसी को पता भी नहीं चलता परिवार हो या नजदीकी कोई मानव हो उसके अन्दर क्या चल रहा है उसका पता जल्दी भी लग सकता है। देर भी लग सकती है। जो मानव स्वार्थी बनकर जीवन जीता है वह अपनों के लिए भी और दूसरों के लिए भी गलत होता है। मानव के अन्दर यह ईर्ष्या द्वेष दूसरे की सम्पत्ति को अपनी सम्पत्ति समझना और दूसरे की जमीन पर अपना हक जमान जैसी बुराईयां कैसे-कैसे पैदा होती है।

मानव के अन्दर ये बुराईयां गलत संगति माता-पिता सगे सम्बन्धियों का प्यार ना मिलना, गरीबी, लाचारी भरा माहौल जिसमें वह मानव जन्म लेता है। माता-पिता अपनी औलाद को कभी भी गलत राह पर चलने की प्रेरणा नहीं देते। सदैव अपनी औलाद को अच्छे बनने की शिक्षा देते हैं। चाहे माता-पिता खुद ही गलत विचारों से ताल्लुक रखते हो परन्तु कभी भी दुनिया में हिंसा फैलाने का जुनून अपनी औलाद को नहीं सिखाते। दूसरे न ही पैगम्बर, इस पृथ्वी पर ईश्वर की शक्ति के द्वारा मानव-मानव को

दर्द पहुंचाये, यह शिक्षा नहीं देते। प्रेम करने का सबक सिखाने के लिए आते हैं। हर धर्म पूजनीय है। ईश्वर भी एक ही है। अलग भाषा मानव से जाना जाता है। फिर भी मानव क्यों दुनिया में हिंसा फैलाना चाहता है आखिर वह इस दुनिया से क्या-क्या चाहता है। एक सौ वर्ष में मानव इस धरती की गोद में कितने समा जाते हैं। किसी के पास सत्य में गिनती नहीं हो सकती। उन सौ वर्ष जीने वालो में कौन ऐसा मानव होगा जो अपने साथ वह जो उसने इस धरती पर हिंसा ईर्ष्या द्वेष के द्वारा जीता हो और अपने साथ मृत्यु के साथ ले गया हो।

यह सब अज्ञान के कारण हो रहा है। भ्रमित हो रही है दुनिया इस धरातल पर रहस्य छिपा हुआ है। सांसारिक भी और अध्यात्मिक धर्म भी। संसारिक तो रहस्य उन मानव के द्वारा छलकता है और ओछा घड़ा सदैव छलकता रहता है। इसी तरह असभ्य मानव हिंसावादी मानव हर वक्त उसी सोच में लगा रहता है कि किसका बुरा किया जाय और मुझे लाभ पहुंचे और उस ताकतवर मानव के साथ उसी गुण के मानव साथ लगते जाते हैं। कोई धन के ना होने से पीड़ित कोई परिवार में प्रेम ना होने के कारण। इसी तरह के मजबूर मानव उस ताकत वर मानव के साथ लगकर दुनिया में हिंसा जैसा तांडव करने लगते हैं। सम्पूर्ण सृष्टि में आज मानव का ऊपरी चेहरा तो साफ-सुथरा होता है परन्तु अन्दर से विचारों सोच में इतनी बुराई छिपी हुई है कि इसका वर्णन करना कठिन है। हर जगह बुराई पनप रही है। घर से लेकर पूरी दुनिया में यह अज्ञान का जहर फैलता जा रहा है। इसे रोकने का कोई इन्तजाम नहीं हो रहा है। क्यों कि सत्ताधारी मानव सोचते है कि हथियारों के द्वारा रोका जा सकता है। कभी भी उस बात को नहीं स्वीकारते जो सत्य है और हिंसा रोकी जा सकती है। क्योंकि उनके अन्दर भी ज्ञान की कमी होती है। आज इस धरातल पर जो राजयोग में है क्या वे इस

धरातल पर मानव जात बसी हुई है। उनको अच्छी दिशा देने के लिए अपनी भौतिकवादी जिन्दगी छोड़कर इस धरातल की बुराई मिटाने या प्रेम से जीने का सबक सिखाने के लिए जमीन पर उतरने को तैयार है नहीं है। जब एक मानव अपना जीवन सम्पूर्ण भोगो को भोग कर देख लेता है और उसे सम्पूर्ण देश या सम्पूर्ण सृष्टि, उसके नाम से परिचित होते हैं। वह जमीं पर उतरकर अमन चैन शांन्ति प्रेम की शिक्षा देने को तैयार नहीं। कोई भी इस धरातल पर निस्वार्थ भाव से देश मानव कल्याण के लिए निस्वार्थ, जिसको इसके बदले कुछ नहीं चाहता हो। ऐसा मानव इस धरातल पर मानव कल्याण हेतु तैयार नहीं। तो फिर इस जगत में मानव प्रेम में क्या बचेगा। जो सत्य परख है और दिव्य प्रकाश में युक्त धर्म है जिसके लिए ईश्वर भी तैयार है कि कोई इस पृथ्वी पर ऐसा मानव हो जो इस धरा को मानव प्रेम से उज्जवल कर सके क्यों नहीं है। छह अरब मानव इस पृथ्वी पर वास करते हैं। परन्तु ऐसा मानव क्यों आगे नहीं बढ़ता इसलिए आगे नहीं बढ़ता क्योंकि उसे अगर ऐसा करना पड़ा तो उसके बदले धन वैभव से भरा हुआ श्रृंगार चाहिए। सभी मानव जाति को पैदा होने के सौ वर्ष इस पृथ्वी पर बिताने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। इससे ज्यादा कोई भी मानव इस पृथ्वी पर रह नहीं सकता। यह सत्य पैगाम है। फिर भी मानव इस सौ वर्ष की आयु में कुछ वर्ष इस धरा को समर्पित नहीं कर सकता। तो फिर इस धरा पर शान्ति से जीवन जीने की आस क्यों करते है। जो दूसरे के लिए नहीं जी सकते तो तुम्हारे लिए सुख देने के लिए कौन आगे आयेगा। हर मानव की धरती है यह हर मानव का कर्त्तव्य है कि इस धरातल को हिंसा मुक्त कराये। प्रेम से जीनों की कला सिखाये परन्तु मानव हरवक्त यह क्यों सोचता है कि मेरा लाभ क्यों नहीं होता। जो भी मैं कार्य करूं उसमें मेरा नाम क्यों नहीं होता अगर आपका अपना नाम अपनी कला जीवन के अनुसार हो भी

गई तो सौ वर्ष के बाद कौन पूछेगा जब तक तुम इस धरातल पर वास करोगे। तुम्हारे मन सोच में वह गुदगुदी मची रहेगी कि मुझे इस धरा पर रहने वाले कितने ज्यादा मानव जानते है। उससे तुम्हारा अन्दर का मन सन्तुष्ट रहेगा परन्तु यह भी सत्य नहीं उस पर भी एक सोच तुम्हारे अन्दर अलग से बहती रहेगी चाहत की। तभी भी तुम्हारी इच्छापूर्ण नहीं हो सकेगी। सौ वर्ष के बाद तुम्हारा नाम मिट जायेगा। वह तो ऐसा ही वह मानव रहा इस धरा पर जो साधारण जीवन व्यतीत करते हैं वे भी सौ वर्ष में चले जाते है। फिर तुमने क्या किया इस धरा पर आकर जो तुम किसी को जीने का ज्ञान नहीं सिखा सके। ना ही तुम्हारे अन्दर वह दर्द है जो एक किसी दूसरे के लिए जीने वाले का होता है। वह दर्द तो उस मानव को होता है जिसके सामने, पिता के सामने पुत्र की मृत्यु किसी हिंसा या हादसे में हो गयी है। उस दर्द का उसी पिता को अहसास होता है इस धरापर आकर। अपनी कला से अपना नाम कमाना और विख्यात हो जाने से आप खुद को इस धरा पर उन साधारण जीवन जीने वालों से अच्छे नहीं हो और ना ही सुरक्षित हो ना ही तुम्हारे खून के रिश्ते सुरक्षित होंगे। अगर आपको इस धरा को मुक्त कराना है और प्रेम की लहर दुनिया में बहानी है तो किसी हिंसा रूपी दरिया पर नाका बन्दी करनी है तो निस्वार्थ भाव से आओ कुछ नहीं मिलेगा सिर्फ आत्मशान्ति मिलेगी और इतिहास तो दरियाव के झरोखो से मिट जाते है। परन्तु धर्म विभूषित मानव का नाम कभी नहीं मिटता सदैव ऐसे मानव पूजे जाते हैं। इसलिए इस धरा पर वास करने वाले। मानव जन्म धारण करने वालो और विख्यात मानव इस धरा पर बसने वालों उठो, जागो और इस धरा पर अपनी जबान से जन जन में प्रेम से जीने का सबक सिखाने में इस जमी पर उतर आओ, यह जमी ऐसे मानव को याद कर रही है। अगर ऐसा करोगे तो आपकी सन्तान जो इस धरातल पर वास

करती है तुम्हारे साथ में, और तुम रोजमर्रा उनकी सुरक्षा एवं धनवान बनाने की होड़ में लगे हुए हो, तभी वह सुरक्षित रह सकेगी। वरना यह मानव घृणा भरी सोच इस धरातल पर महाप्रलय जैसी स्थिति पैदा कर देंगी। यह पैगाम ईश्वर अल्लाह की तरफ से इस धरातल पर वास करने वाली के लिए आया है।

इस मुल्क में निस्वार्थ मानव का कर्म एवं मुल्क के प्रति प्रेम

यह मुल्क इस पृथ्वी पर बसा हुआ है यह सब प्रेम का प्रतीक है। अपसी प्रेम सम्बन्धों से यह चल रहा है। निस्वार्थ भाव से मानव के अन्दर ईश्वर की शक्ति एवं उर्जा उत्पन्न होती है। उसी से मुल्क की स्थिति अच्छी और बुरी होती है। परन्तु इस ज्ञान से मानव अनभिज्ञ है। वह तो स्वाभाविक और पूर्वजों के संस्कार के कारण अपना जीवन चला रहा है। चलाते चलाते उससे अनजाने में ही अच्छे और बुरे कर्म हो जाते हैं। और अनजाने में ही मानव बिना स्वार्थ के कार्य कर देता है उसी लाभ से मुल्क में शांन्ति होती है। जितनी भी होती है उसी भावनाओं से इकट्ठी की गई उर्जा शक्ति से अमन चैन बना रहता है। अशुभ घटनायें घटने में बचाव हो जाता है। शत्रुओं की निगाहें एक खण्ड के मानव दूसरे खण्ड वालों से नफरत करते है। हर वक्त दूसरे खण्ड का नुकसान चाहते हैं।

परन्तु उस नुकसान से बचाव होना वह उन धार्मिक और निस्वार्थ भाव से जीने वालो की उर्जा शक्ति के कारण ही सम्भव होता है। इस मुल्क में ऐसा नहीं है कि हर मानव की सुरक्षा कानून ही करता है। कानून तो वह संसारिक भेष है जो जीवन जीने वालों के लिए एक सहारा होता है। मानव प्रणाली की दुनिया में मानव प्रणाली को चलाने वाला मानव का ढाला हुआ एक सहारा होता है। कानून किसी का कर्म नहीं बदल सकता। दोषी को सांसरिक

ढंग से दण्डित कर सकता है। उसके विचार नहीं बदल सकता जो उस मानव के अन्दर पनप रहे है। यह एक मानवता को जीवन जीने में सहायता करता है। परन्तु वह कानून भी और कानून चलाने वालों में भी स्वार्थ घर कर लेता है। लोभ लालच से मानव अपने अन्दर पीड़ित हो जाता है। मानवता का भाव निष्ठुर एवं लोभ लालच की कमाई करने का एक उत्तेजित अंहकार बन जाता है। मानव दिन-प्रतिदिन अपने आप ही अपने परिवार की नजरों से गिरने लगता है। क्योंकि वह अपनी मेहनत से ज्यादा कमाई करने में सक्षम हो जाता है। तभी उसके विचार के अपने आप परिवर्तन होकर दोषों में परिवर्तित हो जाते हैं। जिससे मानव अपना मानवता का असली चेहरा छुपा लेता है। अपनी मंजिल जीवन की सही समझकर जीवन काटने लगता है। वह यह कभी भी नहीं सोचता कि मेरे कर्मों और मेरी सोच से इस मुल्क में कितनी बड़ी हानि होती है। इससे और इस मुल्क में सांसरिक मानव कभी भी इन बातों को इस रहस्य को नहीं जान पाता जिससे वह बुराई मुल्क में पनपती रहती है। आगे बढ़ती रहती है जिससे मुल्क में कठिनाई बढ़ती रहती है। मानव अपनी करनी से कानून को भी पीड़ित करने लगता है अराजकता घर से लेकर मुल्क में फैलने लगती है। अपराधिक गतिविधियां रोजमर्रा बढ़ती चली जाती है। जिससे मानव प्रणाली धीरे-धीरे घृणित सोच में तब्दील हो जाती है। अधर्म का बोलबाला अधिक से अधिक होने लगता है। इससे मुल्क में हर मानव पीड़ित-सा हो जाता है। मुल्क में हर मानव भय के आधीन हो जाता है। अपनी सुरक्षा कवच संसारिक परिवेष में असुरक्षित रहकर जीवन गुजारने लगता है। उसके अपने परिवार के सगे सम्बन्धि सभी प्रभावित होते है। मानव ढांचा असन्तुलित सा हो जाता है। क्योंकि मानव के पास ईश्वर चेतना नहीं रहती और जो भूल के कारण उसने कोई निस्वार्थ भाव से कर्म किया था वह भी

करना बन्द कर देता है। फिर मुल्क में उर्जाशक्ति और भी कम हो जाती है। जब कम हो जाती है तो मानव जीवन के हर विषय असन्तुलित हो जाते है। कहीं पर भी मानव जात स्थिर एवं सत्य सकारात्मक सोच पर जमी नहीं रह सकती।

प्रकृति स्त्रोत एवं मानव सोच

सृष्टि की स्थापना में पर्वतों का अपना वजूद होता है कुदरती ढंग से पर्वत भी अपना असर दिखाते हैं। उनसे भी धरतीवासियों के जीवन पर असर पड़ता है। इस प्रकार धरती पर बहने वाली नदियां, समुन्द्र सभी अपना प्रभाव दिखाते हैं। समय-समय के अनुसार इनके अन्दर उतार-चढ़ाव आते हैं सभी प्राकृतिक स्त्रोतों से मनुष्य जाति को लाभ भी होता है। नुकसान भी होता है इन सभी स्त्रोतों को मानव प्रणाली के अनुसार शांति स्थापना में भी रखा जा सकता है। ये सभी प्राकृतिक स्त्रोत ईश्वर की उर्जा शक्ति होती है। मानव की भी उर्जा शक्ति होती है। पृथ्वी के ऊपर प्राकृतिक जितनी भी व्यवस्थाएं जो दिव्य परम्परागत से धरती पर स्थापित है वे सभी मानव की सोच शक्ति से घटती और बढ़ती है। जब पृथ्वी पर मानव सोच नकारात्मक ढांचे में ढल जाती है तभी प्राकृतिक स्त्रोतों में हलचल होने लगती है। जब मानव सोच सकारात्मक बहने लगती है तभी पृथ्वी लोक पर शान्ति स्थापित होने लगती है। क्योंकि मानव सोच में से इतना बड़ा प्रवाह बनता है कि जितना बड़ा प्राकृतिक स्त्रोत पृथ्वी के ऊपर स्थापित है। उससे ज्यादा सोच से बनी हुई उर्जा शक्ति जो प्राकृतिक स्त्रोत को भी छेड़ देती है इस पृथ्वी पर जो भी दिख रहा है व सभी कुछ मानव के लिए है। जो जिसके लिए है वह ही उसको सुरक्षित रखने का उत्तरदायी होता है। सृष्टि में अगर मानव सोच सात्विक सकारात्मक हो जाय तो

कभी तूफान आंधी, ज्वालामुखी, समुद्री उफान जैसी परिस्थितियां पैदा नहीं होगी। ना ही जगत में मानव से मानव को घृणा होगी। जो मानव खुद ही इस सृष्टि में अपने आप बनाता है वह भी मानव के रखरखाव से सुरक्षित रह पाता है। जो मानव के लिए प्राकृतिक स्त्रोत ईश्वर ने स्थापित किये है वे भी मानव के द्वारा सुरक्षित रह सकते हैं। परन्तु इस रहस्य से मानव अनभिज्ञ है वह ज्ञान मानव को नहीं है।

मानव तो अपनी मनो की चंचलता के अनुसार युग पर युग बहाता जा रहा है। इसी कारण ना तो अपना मार्ग बना पा रहा है, ना ही अपने और प्रकृति के बीच शक्ति का प्रेम बन्धन बना पा रहा है। जिससे इस पृथ्वी पर मानव सदैव खुशी से जीवन बिताने में सक्षम हो सके। अपनी उर्जा शक्ति को बढ़ाकर अपनी रक्षा एवं सृष्टि की रक्षा कर सके। प्रकृति को संभाल सके, जिससे कोई घटना घटे और मानव के कारण धरती को रसातल की तरफ जाने से रोक सके। धरती, पर्वत, नदियां, सब रसातल की तरफ को जा रहे है। अगर मानव अपनी यात्रा में सकारात्मक सोच बना कर शक्ति अर्जित कर ले तो वह प्राकृतिक स्त्रोतों को रोका जा सकता है। परन्तु मानव को यह भेद पता नहीं है, कि ऐसा क्यों और कैसे घटता और बढ़ता है। क्योंकि मानव तो यह समझ कर बैठा है, कि हमें उन सबसे क्या लेना। नदियां पर्वत समुन्द्र ये सभी हमारे से कितने बड़े है इनसे हम क्यों लेना देना। मानव यह भी भूलकर रहा है कि वह तो थोड़े दिनों के लिए इस पृथ्वी पर आया है। कोई भी सौ वर्ष के लिए नहीं आया। सभी मानव अमर पथपर आये हैं। बार बार आना-जाना चल रहा है। प्रकृति स्त्रोत हर युग में ऐसे ही मिलते है। बस परितर्वन होता रहता है। मानव जात के कारण ऐसा होता है। युग में मानव की चेतना के स्त्रोत के आधार पर चल रहा है। जब इस पृथ्वी पर मानव जात समाप्त हो जाएंगी तब पृथ्वी भी

नहीं रहेगी। जल ही जल होगा। अंधेरा छा जायेगा। मानव नहीं होगा। तो प्राकृतिक स्त्रोत भी नहीं होगे। दोनों को एक-दूसरे के लिए निर्धारित किया है परन्तु मानव इसे छोटी सी बात समझकर जीवन बिता रहा है। जितनी शक्ति उर्जा सम्पूर्ण मानव जाति में है उतनी ही शक्ति सम्पूर्ण ब्रह्मण्ड में, प्राकृतिक स्त्रोतों में है। इसी से सृष्टि का सन्तुलन बनता है। इसी स्त्रोत को ईश्वर कहते हैं इसी लिए तो ज्ञान में कहा गया है कि ईश्वर कण कण में है।

आदिकाल से सृष्टि में ज्ञान सत्य के आधार पर प्रगट हुआ है। परन्तु सत्य की परिभाषा अनंत है। इसको किसी भी तरह दर्शाया जा सकता है। अवतारों के वर्णन के अनुसार, उनके जीवन के ऊपर आधारित ढंग से, बताया और लिखाया जाता है। क्योंकि कि अवतार भी ईश्वर के भेजे हुए होते हैं। किसी-किसी युग में मानव के भ्रमित किया गया है। ज्ञान भी मानव परिस्थिति के अनुसार जगत में प्रकट होता है। जिस तरह से अस्वस्थ मानव को जो औषधि चाहिए उसी औषधि को बनाया जाता है तभी अस्वस्थ मानव ठीक हो पाता है। इसी प्रकार जगत में विद्या अवतरित होती है। जिसमें मानव जाति पर अपना असर डाल सके और जो मानव के अन्दर जहर फैल रहा है उसका उपचार हो सके। जिस तरह से भाषाओं में मानव फेर बदल करता है शब्दों को कई प्रकार से सम्बोधित करता है एक ही शब्द को अलग-अलग भाषाओं में बताया जाता है। एक ही शब्द प्रिय स्वर से बोलता है और एक मानव उसी शब्द का उच्चारण कड़वे शब्द से करता है। परन्तु असर प्रिय प्रेम से बोलने वाले शब्द से होगा कड़वे शब्द से नहीं होगा। हिंसावृत्ति से कभी मानव-मानव को नहीं जीत सकता। सृष्टि में द्वेष भाव मानव ने मानव के प्रति बो रखे हैं। अगर मानव हिंसा से दूसरे मानव से कुछ पाना चाहता है तो वह पा नहीं सकता और अगर प्राप्त भी कर ले तो जीवन में उसका लाभ नहीं उठा। सकता

क्योंकि हिंसा से नियति में खोट आ जाता है। नियति अपना रास्ता उस हिंसावादी मानव से धीरे-धीरे अलग कर लेती है। इसी प्रकार मानव खाली हो हो जाता है कुछ भी प्राप्त नहीं कर सकता। जो सृष्टि में एक मानव दूसरे मानव को जीत नहीं सकेगा तब तक ईश्वर को पा नहीं सकेगा ईश्वर का स्नेह नहीं पा सकेगा।

मानव खुद ईश्वर बीज है

मानव जात का जीवन का मार्ग सरल नहीं है। कठिन परिस्थितियों से मानव जात को गुजरना पड़ता है। ऐसा क्यों होता। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि मानव अपनी पिछली भूल स्वीकार नहीं करता, करता भी कैसे, उसे खुद ज्ञान नहीं, ना समझी में जीवन गुजार रहा है। बस वह तो यह सोचकर जी रहा है कि यह सबकुछ दूसरे के कारण हो रहा है। चाहे वह ईश्वर को दोषी कहेगा या फिर दूसरे मानव को दोषी कहेगा अपना दोष कभी नहीं कहेगा। बस मानव अपने वर्तमान को बोझल बनाता जा रहा है। जिसका भार इतना बढ़ जाता है कि भविष्य भी काला बन जाता है। हर जीवन का कार्य कठिन हो या सरल सभी कुछ मानव दिनांक मानव सोच के ऊपर निर्धारित होता है। और सोच मानव के अन्दर उसके अपने पिछले जन्मों के कारण उभरती है। क्योंकि जो भी मानव इस पृथ्वी पर है अपने पिछले जन्म में जो भी कार्य किये थे उसे इस जन्म में ऐसी ही सोच मिलेगी। जिससे पिछले जीवन के कर्मों का कष्ट वह वर्तमान जीवन में भुगत सके। सदैव ऐसी सोच वाला मानव दुखी रहेगा और नाकरात्मक सोच के आधीन रहेगा। न तो दूसरों को सुखी रहने देगा और न ही अपने आपको सुखी कर सकेगा। जिसको वह दुख देता है वे भी पिछले जन्म में उसके साथ लगे हुए

आ रहे हैं। उनके और उस मानव के कर्म आपस में मेल खाते हैं। उन्होंने भी जो पिछले जन्म में उस मानव के साथ जो कर्म किया था वह दुख बनकर उस मानव के द्वारा प्रगट होता है। ना तो मानव को अपना पिछला जन्म दिखाई देता और न वे मानव दिखाई देते जो चेहरा बदल कर उसके सगे संबन्धित बनकर जीवन जी रहे है। मानव हमेशा यह कहता रहता रहता है कि मुझे यह मानव दुख पहुंचा रहा है। इसमें उसका पुत्र भी हो सकता है। और खुद पिता भी हो सकता है और सगे भी हो सकते हैं। मित्र रिश्तेदार भी हो सकते हैं। यह बात मानव स्वाभाविक ही कह देता है कि इन मनुष्यों से मुझे दुख पहुंचता है। परन्तु ज्ञान नहीं होने के कारण न तो उसे पिछला जन्म याद आता क्यों कि मानव तो भ्रमित होने के कारण पिछले जन्म को मानता ही नहीं। अगर मानव चेतना खुली हो ज्ञान हो तो पिछला जन्म मानव जरूर मानेगा और यह भी मानेगा कि जो मुझे दुख दे रहे हैं और सुख दे रहे हैं वे मेरे साथ साथ लगे हुए है। जब तक लगे रहेगे जब तक उनके पास का भुगतान कर्मों का नहीं हो पाता। प्रत्येक मानव देह को कष्ट काटना होता है क्योंकि देह के कारण ही मानव बुरे कर्म करता है। बुरे कर्म नकारात्मक सोच के द्वारा उत्पन्न होते हैं। मानव ने खुद ही जो बोया है उसे काटना अनिवार्य है। उससे बचा नहीं जा सकता ज्ञान ही बचा सकता है। ज्ञान पाने के लिए मानव उस जंजाल से भ्रमित जगत से निकलना नहीं चाहता। झूठ को सत्य मानकर जीवन जी रहा है। जब मानव सब कुछ देखता व्यवहार करता है और दुख-सुख का अनुभव करता है तब वह नहीं सोचता कि मेरी सोच जो युगों-युगों से धरती पर बह रही है वह कैसी है। अच्छी है या बुरी है। सह सोचना मानव के अपने वश में है। सात्विक सोच या भ्रमित रहकर नकारात्मक सोचे-ये मानव के ऊपर निर्धारित है।

अगर मानव सकारात्मक प्रवाह बना ले जिससे दुखों का अन्त भी हो जाये और मानव का ईश्वर पर भी भरोसा हो जाये अगर मानव अपने जीवन के समय में से एक सप्ताह का समय निकाले और अपने परिवार घर में सभी सदस्यों को यह सलाह दे, कि पूरा परिवार एक सप्ताह तक कोई अपनी सोच किसी का बुरा, ईर्ष्या, द्वेष, शत्रु के बारे में नहीं सोचेगा तो उस परिवार का जिम्मेदार मानव जो उस परिवार का दुख-सुख उठा रहा है वह सात दिनों तक मौन व्रत रखे ऐसा करने से उर्जा शक्ति, ईश्वर शक्ति स्त्रोत, आपके घर में प्रविष्ट हो जायेगी। आपका जीवन सफल हा जायेगा आपके बिगड़े हुए कार्य भी बन जायेंगे। यह ही तय है और यह तय सकारात्मक सोच के द्वारा होता है। आपको मन्त्र जाप करवाने से दुख समाप्त नहीं होते दुख-दुख तो मानव के अन्दर है। और दुख सुख तो सात्विक सोच सकारात्मक सोच के द्वारा काटे जा सकते हैं।

सकारात्मक सोच से तुम्हारे अन्दर ईश्वर की शक्ति भरती है। जो जीवन के कार्य सम्पूर्ण करती है। जीवन में सुख-समृद्धि लाती है। फंसे हुए मानव को भवंर से बाहर निकालकर रास्ता दिखाती है। अगर आपकी सोच शुद्ध सकारातमक नहीं है। और आप अपने घर में कितने भी मंत्र जाप करवा लीजिए परन्तु कोई लाभ नहीं होगा। क्योंकि जिस समय आप अपने घर में मंत्र जाप करवाओगे उस समय आपकी सोच जितनी सकारात्मक होगी उतना ही लाभ आपको मिलेगा। मंत्र जाप भी इसलिए करवाये जाते हैं क्योंकि मानव उस समय अपनी सोच सकारात्मक रखता है। ऊर्जा शक्ति ईश्वर की इकट्ठी हो जाती है तभी उसे लाभ पहुंचता है। मंत्र, वेद, पुराण सभी अपनी जगह ठीक है। परन्तु इनको धारण करने व लाभ उठाने के लिए सकारातमक सोच की आवश्यकता होती है। तभी इन पुराणों शास्त्रों मंत्रों का लाभ पहुंचता है। वरना नहीं

पहुंचता।

मानव जात इस रहस्य से अनभिज्ञ है। सोच में क्या-क्या भरा है। मानव सकारात्मक सोच से धरती पर स्वर्ग मिलता है। मानव सोच अगर नकारात्मक है तो नरक में वास मिलता है। जो धरती के ऊपर भी है और मृत्योपरांत भी है। अपनी सोच सदैव अच्छी और सुन्दर पवित्र दूसरे मानव को प्रसन्न करने वाली रखो। अपने कुटुम्भ से लेकर राष्ट्र तक की कल्याण करने की सोच सृष्टि में, हर मानव स्नेह भरी नजरों से देखे। दया-भाव से अपने मन, चरित्र को प्रेम करने की हामी भरवाये बस आपको अपनी सोच शुद्ध सात्विक सकारात्मक दिशा की तरफ मोड़नी है सब कुछ अपने आप शान्ति स्थापित हो जायेगी। आप भी सुखी होते चले आओगे। आपको खुद ही संभलना है। आपको कोई नहीं संभालेगा आप किसी का सहारा लेने की मत सोचो तुम्हारा सहारा तुम्हारा जीवन उन्नति करने वाला मंत्र तुम्हारे अन्दर ही है। तुम खुद ही ईश्र के प्रतीक हो तुम्हारे अन्दर ही तो ईश्वर मौजूद है। जिसको आप अपनी काया के अन्दर लेकर घूम रहे हो और आप ज्ञान के द्वारा इस रहस्य को जानने में असफल हो रहे हो।

जो भी संसार में घट रहा है, वह सब कुछ सकारात्मक सोच और नकारात्मक सोच के ऊपर निर्धरित है। हर कार्य धर्म का हो या दुनिया के हित का हो या सोच के ऊपर आधारित कार्य होता है। आप किसी का अगर भला या सहायता करने की सोचते हो तो आप सोचिए कि उस समय आपके अन्दर क्या चल रहा हैं। आपके अन्दर जो चल रहा है वह सकरात्मक सोच से उठा हुआ प्रसन्न है। जो दोनों मानव चेतना को लाभ पहुंचा रहा है और दोनों को उर्जा शक्ति पहुंचा रहा है। कोई भी सृष्टि में अच्छा कार्य होता है वह सकारात्मक सोच के द्वारा होता है। अगर आप किसी ऐसे मानव की सहायता करना चाहते हैं जो मानव कल्याण के लिए कार्य कर

रहा हो तो आप उसकी सहायता करने के लिए पूजा पाठ करते हो। अलग अलग जगह भारत भूमि पर कही भी आप पूजा अर्चना करोगे अपनी सहायता के लिए करोगे या फिर ऐसे मानव की सहायता के लिए करोगे। तो वह जितने उस पर्व में जितने भी मानव शामिल हुए है वह सकारात्मक सोच में ढल जाते हैं तभी ईश्वरीय शक्ति की उर्जा शक्ति उस मानव को सहायता पहुंचाती है। और अगर आप किसी विख्यात मानव की सहायता करना चाहते हैं तो भी आप उसकी तरफ सकारात्मक सोच का प्रवाह उस विख्यात मानव की तरफ भेजते हैं सकारात्मक सोच ही शक्ति है। वही मानव के अन्दर भरी पड़ी है। वह ही ईश्वर स्त्रोत है जिसके द्वारा एक मानव से दूसरे मानव तक सकारात्मक सोच का प्रवाह पहुंच कर उसे लाभ पहुंचता है। कोई किसी की भलाई करे, सोचे वह भी उर्जा स्त्रोत ही है। अगर मानव सदैव दूसरे का भला करने और सृष्टि में अमन शान्ति बहाल हो अगर सोच तो प्रवाह उर्जा शक्ति का बढ़ जाता है। जब मानव की मृत्यु हो जाती है और दूसरे मानव दुख जताने आते हैं। उसके परिवार वाले के यहां उसके घर पर तब भी उन आने वाले मानवों के अन्दर सकारात्मक सोच भरी रहती है जिससे उस मरने वाले को लाभ पहुंचता है। या फिर उस परिवार को पहुंचता है जिसे मरने वाला छोड़कर गया है। शादी मनोरंजन में मेले, जैसी सुगन्ध भरी मानव के हृदय में से खुशी की लहर जो दौड़ती है और उस कार्य को सफल बनाती है वह सकारात्मक सोच होती है। जितने मानव उस स्थल पर जायेगे वह सभी अच्छा सोचेगे तभी वहां पर ईश्वरीय शक्ति फैल जायेगी। वह कार्य सफल हो जायेगा। इसीलिए यह जगत मानव जात से बसा है और ईश्वर मानव जात में वास करते हैं। मानव सकारात्मक सोच के द्वारा दुनिया को आबाद करने के लिए उर्जा शक्ति स्त्रोत फैलाकर जगत का कल्याण करते हैं।

मानव को यह तय करना है कि इस रहस्य को कैसे जाने यह रहस्य प्रत्येक मानव को समझना होगा जिससे इस सृष्टि को बचाया जा सके। मानव सोच से ही यह सृष्टि चल रही है। मानव सोच की शक्ति का दायरा बहुत बड़ा है। उसी से सृष्टि बसाई जाती है। सब कुछ मानव देह के अन्दर है। खुद मानव ईश्वर का दर्जा लेकर इस पृथ्वी पर आया है। और उसे बचाने, बनाने, तोड़ने का कार्य मानव के द्वारा ही होता है। अगर आप इस पृथ्वी पर सत्य धर्म और शान्ति स्थापना करके जीवन खुशी में बिताना चाहते हो तो अपने आपको समझिये दूसरे का समझाइयें कि तुम कहां चले जा रहे हो, आपको जानकारी नहीं है। आप खुद अनभिज्ञ है तो दूसरो को ज्ञान क्या दोगे आपको ज्ञानी बनना है। तभी आप इस पृथ्वी पर अपनी सन्तानों को बसा सकोगे अगली पीढ़ी को सभाल सकोगे, गलत ढंग से धन कमाना, दूसरे क्री जायदाद पर हक जमाना, नारी जाति को उत्पीड़न करना, धोखे से धोखा देने, अपने लाभ के कारण दूसरे मानव, को मरवाना अलगावादी, उग्रवादी, नस्ल वादी क्या है सब बंटवारा चाहते हैं।

मानव सोच को प्रदूषित करके अपना हक जमाना चाहते है। नकारात्मक सोच से बांधा गया रेतका पुल जैसा समूह होता है। जो मानव नकारात्मक सोच में ढले होते हैं वे सभी इस पृथ्वी लोक के दोषी होते है। उन्हें उनकी सोच वक्त हक जमाना चाहती है और वह सोच जो वह लिए घूम रहे हैं जीवन जी रहे मानव मानव को मार रहे है। वह विपरित दिशा है असुरों का मानव जात पर शासन है। क्या नकारात्मक सोच का मानव इस सृष्टि में इस पृथ्वी के, किसी कोने में बसा रह सकेगा ऐसा नहीं हो सकता इस युग को नकारात्मक सोच वाले मानव ही ध्वस्त करेगे परन्तु नाकारात्मक सोच वाले मानव यह नहीं जानते कि उन्हीं के कारण उनकी अपनी वर्तमान पीढ़ी और भविष्य में दिखने वाली पीढ़ी टूट जायेगी। और

इसके जिम्मेदार नकारात्मक सोच वाले मानव होंगे क्या वह इस धरा पर वास कर पायेंगे।

नकारात्मक सोच वाला मानव जिस डाली पर बैठा है उसी को काट रहा है। इसीलिए जगत में वास करने वालों अपनी सोच साकारात्मक बनाओ सृष्टि का कल्याण चाहो। अपना कल्याण, अपनी पीढ़ी का कल्याण, नवीन संस्कृति धारण करो, भटकना बन्द करो। नकारात्मक सोच में प्रविष्ट मत होओ। यह सोच घृणा स्त्रोत है। ईर्ष्या स्त्रोत हैं द्वेष बढ़ाती है युग भ्रमित करती है। अधर्म राज लाना चाहती है असुरों की शक्ति है। महाप्रलय जैसा तांडव करवाना चाहती है। यह सृष्टि इस ज्ञान से अनभिज्ञ है। उन्हें नहीं पता है कि मानव के अन्दर ऐसा क्या घटता बढ़ता है जो सृष्टि को विषैली बना देता है। और अमृत भी बरस जाता है। मानव जात इस रहस्य को समझने में असमर्थ रही है। कोई भी मानव गलत नहीं है। सभी मानव ईश्वर का बीज है और ईश्वर के द्वारा ही चल रहे हैं। परन्तु फर्क सिर्फ इतना है कि ईश्वर साकरात्मक सोच में वास करते हैं और नकारात्मक सोच से अलग हट जाते है। ईश्वरीय बहाव समाप्त हो जाता है। परन्तु मानव फिर भी ईश्वरीय शक्ति के समीप रहता है। परन्तु उसे शक्ति स्त्रोत मिलना बन्द हो जाता है। जिससे मानव भटक जाता है। मानव को इस रहस्य का पता भी नहीं चलता क्योंकि इस रहस्य को बताने वाला कोई नहीं होता बस एक यंत्र मानव की काया में लगा रहता है। वह आत्मा के द्वारा जाना जाता है। परन्तु मन आत्मा की बात मानना बन्द कर देता है, क्योंकि मानव पर तो मन और काया को भोग करने की खुशी मन में बहेती रहती है। मन ही सर्वोपरि बन जाता है। अपनी मनमानी करने लगते है।

यह आज इस युग में चल रहा है आत्मा और मन का युद्ध मानव के अन्दर चल रहा है। हर मानव की सोच अस्थिर एवं

चंचल लहरों में घूम रही है। यह मन और आत्मा का युद्ध मानव को शान्ति से नहीं रहने देगी। क्योंकि यह ऐसा युद्ध है कि दूसरे को दिखता भी नहीं। हर मानव अशान्ति में है। अन्दर से छिल रहा है। मानव जात को अन्दर से खोखला करता जा रहा है। ईश्वरीय शक्ति को बहने से रोक रहा है। जिससे इस सृष्टि में स्थिरता आ सके और मानव आत्मा की बात माने। जीवन को सुन्दर बना सके परन्तु इस युग में ऐसा नहीं है। हर मानव जीतेजी मर रहा है। सब कुछ मानव के अन्दर भरा हुआ है। परन्तु वह उसे ग्रहण नहीं करता वह तो उस झूठी दुनिया में जो कर रहा है उसे ही सत्य मानकर आगे बढ़ चढ़ रहा है। ऐसा मानव कौन होगा जो सुख ना चाहता हो, हर मानव सुख चाहता है। परन्तु अनी पहचान नहीं करता और न ईश्वर की पहचान करता है। हर युग में मानव के अन्दर ही सब कुछ पाया गया है। परन्तु क्यों मानव बार-बार भटकता रहा है। मानव ने मन की बातें मानी है। आत्मा की अनसुनी करता रहा जिससे भवंर जाल में फंसता है। बार-बार ईश्वर ने अनेकों कवि लेखक अवतार इस पृथ्वी पर उतारे है। मानव कल्याण करने के लिए परन्तु मानव कुछ समझा कुछ नहीं समझा। जो समझा उन्होंने, जो नहीं समझ सका उन्हें उलझा दिया। ऐसा उलझाया कि वह उस कार्य को नहीं कर सका, वह ज्ञान उन थोड़े से मनुष्यों के पास रहा जो नहीं समझने वाले मानव को उलझाने में कामयाब रहा। आज भी देखिए इस भारत वर्ष में कितना समाज है जो वेदों-शस्त्रों पुराणों को जानता है और अध्यन करता है शहरों के अन्दर ही कुछ मानव जानते हैं। गांव में भारत बसता है, कौन जानता है बस उन त्यौहार रिति रिवाजों को जानता है। जिसको सारा भारत वर्ष जानता है। वह भी भ्रमिता से ग्रस्त है अपना बहुमूल्य जीवन व्यर्थ में गंवा रहा है। और छोटी छोटी बातों से पीड़ित हो रहा है।

हर गांव के अन्दर अपना एक साधारण जीवन है। मानव

अपनी मेहनत की कमाई करके अपना पेट भर रहा है। क्योंकि गांव में पब्लिक के कार्य एक प्रधान करता है वह भी अपनी जगह ठीक नहीं रहा। उसके साथ और दस ग्यारह मानव जुड़े होते हैं। बस बाकी सारे गांव को यह नहीं पता होता कि प्रधान ग्राम पंचायत क्या क्या करती है। इस गांव के लिए कितना धन पांच वर्ष के लिए सरकारी तौर से आता है। गांव के मानव तो उसी प्रकार से जीते हैं जैसे पहले जीते थे उनके अपने ही दुख-दर्द समाप्त नहीं होते। ग्रहस्थी के दुख-दर्द इतने ज्यादा होते है कि उसे तो यह भी पता नहीं चलता कि उसकी उम्र कैसे गुजर गई। एक बार जवान दिखेगा और फिर तुरन्त बुढ़ापा आ जाता है। परन्तु गांव का मानव रहता दर्दमय ही है। उसे इस दर्द से निकालने का कोई उसके पास ज्ञान नहीं बस वह तो उसी को जीवन बिताने का जरिया मानता है। गांव के मानव का भी एक सोचने का दायरा होता है। वह ज्यादा लम्बा-ऊंचा नहीं होता। तो भोला-भाला, परन्तु उसके अन्दर भी युद्ध जैसी स्थिति बनी हुई है। वह उसी दायरे में अपनी सोच नकारात्मक रखता है सकारात्मक नहीं करता इसलिए वह भी पीड़ित रहता है। मानव इस पृथ्वी पर तभी उन्नति करेगा जब उसकी सोच सकारात्मक होगी। छोटे से गांव में रहकर जीवन व्यतीत करने वाले की भी नकारात्मक सोच बन गई है। घर-घर में प्रत्येक सदस्य के अन्दर नकारात्मक सोच का युद्ध चल रहा है। नारी जाति की सोच मनुष्य जाति से और कम दायरे की होती है। वे मनुष्यों से ज्यादा दुखी और दर्दमय है। गांव के अन्दर भी ईर्ष्या-द्वेष भरा पड़ा है। उनकी सोच का दायरा भी कम होता है। उसी दायरे के अन्दर दूसरों से जलन बुराई घर-घर में झगड़ा सास-बहु में झगड़ा होता रहता है। आप ही बताओ उन्हें जब मेहनत करके अपना पेट करना है तो बुराई भलाई क्यों पनप रही है। गांव-गांव में हर परिवार के अन्दर दुखों का वातावरण है। सास-बहु

को देखकर खुश नहीं रहती। और बहु सास को देखकर खुश नहीं रहती हर जगह ज्ञान की कभी, मानव की सोच नकारात्मक बन रही है। आप बताओ गांव वालों को क्या राज करना है या उनकी ज्यादाद बढ़ रही है। बेईमानी ठगी रिश्वत खोरी की उन्हें कोई आवश्यकता नहीं पड़ती। क्यों कि गांव में यह होती ही नहीं, फिर भी क्यों दुख का साया हर ग्रहस्थी में हर परिवार में पनप रहा है। गांव भी सात्विक और सकारात्मक सोच के ऊपर ही सुरक्षित रहता है। जो मानव वहां पर सकरात्मक सोच के रहते हैं उन्हीं के कारण उस गांव के ऊपर ईश्वरीय शक्ति का आशीर्वाद होता है। हर गांव हर शहर हर परिवार के अन्दर कोई न कोई सकारात्मक सोच का मानव मिलेगा उसी से जितनी उर्जा शक्ति मिलेगी उसी के सहारे गांव शहर परिवार आबाद रहते हैं। जब सकारात्मक सोच के मानव कम हो जायेंगे उसी समय गांव में मृत्यु अल्प आयु, में हो जायेगी। गांव में अप्रिय घटना घटने लगेगी। घर-घर में अशांति सी फैल जायेगी। परन्तु एक-दूसरे को इस रहस्य का पता नहीं चलेगा। क्योंकि वह सोच मानव के अन्दर पनपती हैं दिखाई नहीं देती। आप समझो कि कोई प्रिय बोलता हो वह शब्दों का इस्तेमाल भी सुन्दर करता हो परन्तु अन्दर से नकारात्मक सोच से छिला हुआ हो आप कैसे लगाओगे। आपको पता भी नहीं चलेगा और घटनाएं घट जायेगी। गांव की बस्ती से लेकर शहरों तक शहरों से लेकर बड़े-बड़े नगरों तक परिवारों में कड़वाहट का युद्ध चल रहा है। देश से लेकर पूर्ण दुनिया में नकारात्मक शक्ति असुरों की शक्ति का राज, मनों के ऊपर असुरी शक्तियां बैठ गई है। आज इस युग में नकारात्मक शक्ति से धन कमाया जा सकता है। धन ही असुरों को निमन्त्रण देकर पृथ्वी पर बुलाती है। माया नगरी है यह धन के बिना चलती नहीं। धन के अन्दर प्रविष्ट होकर असुरों का राज कायम करवाती है। सुरो को पीछे हटाने में कामयाब हो जाती है

तभी युग भ्रमित होता है। धर्म का अस्तित्व हटने लगता है। धरती पर झूठ को सच मानकर मानव भागने लगता है। नकारात्मक सोच के कारण सकारात्मक सोच का मानव भागेगा नहीं स्थिर रहेगा। क्योंकि उसे पता है, कि मानव ही सर्वगुण सम्पन्न है।

आनन्द भी मानव के अन्दर है और परम आनन्द भी मानव के अन्दर है। दुखों को भी मानव खुद बुलाता है और सुखों को भी मानव बुलाता है। हर कार्य सोच के द्वारा होता है धार्मिक कार्यक्रम सामाजिक, राजनीतिक, घर से ले राष्ट्र तक सकारात्मक सोच से चलते है। गांव लेकर लोक सभा तक देश से लेकर दुनिया तक यह सोच का जहर फैला हुआ है

नकारात्मक सोच का पहरा-

सकारात्मक सोच का पहरा-

इन दोनों सोच में मानव बह रहा है। ईश्वरीय शक्ति भी इन्हीं में है। आपने ईश्वर को नहीं देखा तो अपने आपको देखिए, आप खुद ईश्वर के लीज हो जो ईश्वर में है वह तुममें है। तुम्हारी सात्विक साकारात्मक सोच में है।

सकारात्मक सोच से सृष्टि चलना सकारात्मक सोच में ही ईश्वर विराजमान नकारात्मक सोच से युग में मानव के अन्दर युद्ध भड़कना

मेरी प्रिय

मानव जात सत्य-सत्य ही होता है। सत्य को झुठला नहीं सकते। सत्य से ही युग चलता है। सत्य के आधार पर ही सृष्टि की रचना हुई सत्य ही ईश्वर है। सत्य अपनी सोच अपने जीवन में धारण करो। सृष्टि में सत्य की ज्योति जलाओ। अपने आपको

अच्छी सोच, सकारात्मक प्रवाह में ढालों जिससे यह सृष्टि अपने रूपान्तर स्वाभाविक ही चलती रहे। मानव जात सृष्टि में हस्तक्षेप न करे। जो मानव जात के अन्दर ईश्वरवास है उसे महसूस करे। विश्वास करे सत्य जानकर ज्ञान जानकर इस भूलोक पर जो ईश्वर की उर्जा बह रही है। वह मानव की सोच में बह रही है। उसको बदलने ना दो उसकी रक्षा करो। उसे स्थान्तंरण मत होने दो उसको नकारात्मक में मत बहने दो अगर नकारात्मक सोच बहेगी तो धरती पर उफान आ जायेगा।

जैसे बाड़ आ जाती है। सबसे पहले मानव जात अपने अतीत के बारे में सोचे, कि मैंने क्या क्या कर्म किये हैं। जीवन में कैसे कैसे शब्दों का इस्तेमाल किया है। जो जगत में हानिकारक है। इसी प्रकार से आपका पिछला जीवन है पूर्व कर्म है। जिसके कारण आपको अपना कर्मो के अनुसार जीवन मिला है। मानव जात को तो वह कर्म भी याद नहीं जो अतीत में उसने दिन गुजारे हैं। इसी प्रकार से जब मानव को अपना अतीत भी मालूम नहीं और न ही कभी याद करने की हिम्मत करता है। अगर आप अपना अतीत याद करो तो आपको जीवन की हर घड़ी का वृतान्त सामने आ जायेगा। यह तो इस जीवन की बात हुई अब आपका पिछला जीवन जो बीत चुका है। और आपने दूसरा शरीर धारण कर लिया है वह भी पता चल जाता है। जिस तरह इस जीवन के अतीत में कर्म किय हुए सभी याद आ जाते है उसी प्रकार आप जब माया-मोह से दूर हो जाओगे तो आपके सामने वे पिछले कर्म खड़े हो जायेंगे। यह जीवन भूल भूलेया है। पिछला जनम याद नहीं रहता शक्ल बदल कर इस दुनिया में आना पड़ता है। परन्तु आपको एक प्रकार से तो पूर्व कर्म जब याद आयेंगे, दिखेगे भी जरूर परन्तु उसके लिए त्याग, तप करना पड़ेगा तभी संभव होंगे। एक सत्य यह भी है, कि आप अपना जीवन जिस परिस्थिति में गुजार रहे हो वह

जीवन पिछले कर्मों का ही फल है। जो आपको इस जीवन में मिल रहा है नर हो या नारी वह पिछले जन्म में भी मिल चुके हैं। अगर मानव सत्य को माने तो यह ही सत्य है। एक स्थूल में बताया गया है, दिखाया गया है और एक सूक्ष्म में दिखाया गया है। फर्क इतना है कि योगी को अपना जीवन वर्तमान का भी और अतीत का भी याद रहता है। पिछला जन्म उसे ध्यान योग में दिखता है। संसारिक मानव अपने अतीत को भी याद करने से डरता है क्यों कि ज्यादा से ज्यादा नकारात्मक सोच से भरा हुआ जीवन रहा होगा। और पूर्व जन्मों का उसे सूक्ष्म में पता नहीं चल सकेगा। क्यों कि वह माया से अलग नहीं परन्तु ईश्वर ने इस भूमण्डल पर ऐसा कोई नर-नारी जाति नहीं जिसका स्थूल में सब कुछ न समझाया हो और महसूस ना कराया हो। ऐसा कुछ भी नहीं बस योगी और संसारिक मानव में इतना ही फर्क होता है। योगी को इसलिए सब कुछ दिखता है क्योंकि उसने वह तो छोड़ दिया है, त्याग दिया है, जो इन शीशे की आंखें से दिखता है तभी उसने ईश्वर को पाया है। इस जगत की माया को छोड़ने के बाद ही मानव उस अनुभूति में प्रवेश करता है। संसारिक मानव को आनन्द की अनुमति दी और योगी को परम आन्नद की अनुमति दी। ईश्वर कहां है मानव जात को समझाया, दिखाया, महसूस कराया फिर भी मानव समझ नहीं सका। जो संसारिक माया जाल में रहकर महसूस कराया है। जो मानव भोग भोगता है और उसे आनन्द की अनुभूति होती है वह संसारिक मानव उसे जब से सृष्टि बनी उलझ पुलझ कर भर रहा है। जा रहा है आ रहा है। जब मानव छोटी सी झलक जो आनन्द भाव आनन्द चेतना की है उससे इतनी प्रीत करता है कि युग के युग बीत जाते है परन्तु मानव उससे बाहर नहीं निकल पाता। अगर मानव जात को वह परमात्मा मिल जाय तो इतना आनन्द हजार जन्म लेकर भी प्राप्त नहीं कर सकता जितना आनन्द एक दिन रात

में अपने शरीर में प्राप्त कर सकता है। इतना बड़ा पैमाना है ईश्वर परमाआनंद का जिसका वर्णन कोई नहीं कर सकता। सिर्फ पुराणों वेदों में लिखा हुआ समझा सकता है। अपना बताया हुआ महसूस किया हुआ। बताने वाले इस भूलोक पर बहुत कम मानव होते हैं। वह ही बताते है कि सत्य में मानव के अन्दर ईश्वर हर वक्त वास करते हैं। सब कुछ ईश्वर के द्वारा घट रहा है उससे अलग कुछ नहीं। अगर मानव जात ना हो तो ईश्वर का अस्तित्व भी कुछ नहीं। जो महसूस ना किया जाए और उसको ज्ञान के द्वारा समझाया ना जाय तो फिर ज्ञान क्या और ईश्वर भी क्या है।

अपनी मृत्यु और प्रलय, जब पृथ्वी रसातल में चली जाती है यह किसी ने नहीं देखा ज्ञान के द्वारा बताया जाता है। परन्तु जो इन दोनों का मालिक है उसे मानव ने देखा है। अपने अन्दर पाया है तो बताइए कि मानव कितना महत्वपूर्ण प्राणी है। उसे ही सब कुछ सोंप दिया है। परमआनंद तो इस सृष्टि में महापुरुषों ने महसूस किया है। जब महसूस किया है तभी तो उनका नाम लिया जाता है पूजा जाता है। परन्तु ऐसा महापुरुष कोई नहीं हुआ जिससे जगत का कुछ भी चाहिए। सभी जितने भी महापुरुष हुए है उन्हें जीने के लिए इस शरीर को चलाने के लिए दो रोटी चाहिए बस और कुछ नहीं। जिसे कुछ नहीं चाहिए वह ही इस जगत को सब कुछ देने आते हैं। जिसको इस जगत से मान-सम्मान धन दौलत चाहिए वह सिर्फ लेने आते हैं। किसी को भी कुछ नहीं दे सकते और मृत्यु परान्त उन्हें उतने मानव का कर्जा चुकाना पड़ता है जितने मानव से वह मिले थे। मान-सम्मान मिला था धन प्राप्ति हुई थी। उनका जीवन अगला इतना कष्ट में होता है कि एक अधर्मी का भी नहीं हो सकता। एक जन्म में भी पूर्ण नहीं हो सकता कई जन्मों में वह भार उतरता है। परन्तु मानव जात स्वाभाविक उत्तेजना में बहती है। हर मानव धन का लालची, नाम का लालची चाहे किसी का बुरा

हो या भला उसे अपनी करनी होती।' परन्तु मानव यह क्यों नहीं सोचता कि इस (100) सौ वर्ष की आयु पूर्ण होने के बाद जाना है। सत्य है, अगर नाम हो भी गया पत्थरों पर लिखा भी गया तो सौ वर्ष के बाद कौन देखेगा। क्योंकि खुद वो देखने आयेगा नहीं परन्तु उस पत्थर पर लिखे हुए नाम के आगे हो सकता है, उस नाम पर धूल जमीं हो। अगले जन्म में उसे उस जगह की सफाई करने का कार्य मिला हो। कर्मों के अनुसार अपने ही नाम की धूल अगले जन्म में साफ करनी पड़ती है। कुछ नहीं मानव भ्रमित है सत्य नहीं जानता, न ही ग्रहण करता काया की मन की भूख मिटाना चाहता है। आत्मा की बात कभी नहीं मानता।

आत्मा की बात कभी नहीं मानता

आत्मा में परमात्मा का वास होता है। मानव सकारात्मक सोच में ढलता है उसी से उर्जा शक्ति बनती है। जो जगत को चलाने के काम आती है। प्रकाश युक्त करती है। मानव जब सभी कार्य सम्पूर्ण कर लेता है तभी मुक्ति मार्ग खुलता है। सभी योनियों में जब मानव घूमकर आता है उसमें समय कम लगता है। क्योंकि जीवों की योनी निर्दोष र्निलोभ निस्वार्स्थ, बस अपना पेट भरना और जीवन जीना और ईश्वरीय स्त्रोत से सृष्टि का होता है। उसी चक्र को पूर्ण करके मानव जन्म होता है। जब मानव का जन्म होता है तो इस सृष्टि में मानव को यह पता नहीं चलता कि वह पहली बार मानव जन्म में आया है या फिर दूसरी बार आया है या फिर अनेको जन्म लिये हैं। यह रहस्य किसी को पता नहीं चलता। जो मानव सभी योनियों को भोगकर मानव जन्म में प्रविष्ट हुआ है। वह सबसे पहले जो भी मानव आया है वह सात्विक एवं सकारात्मक सोच से आयेगा और अपना जीवन सरल साधारण ढंग से गुजारेगा।

वह मानव जन्म का आरम्भ होता है, जिस प्रकार सृष्टि का आरम्भ सात्विक और सकारात्मक सोच धर्मनुकूल ढंग से होता है उसी प्रकार मानव पहली बार जब मानव बनता है इसी प्रकार की श्रेणी का होता है। जैसी श्रेणी सृष्टि के आरम्भ में थी, फिर धीरे धीरे जन्म बदलते गये और मानव की काया बनती गई। मान और भोग के कारण मानव कर्म मानव के अन्दर जो यन्त्र लगा हुआ है उसी में लीन होने लगते हैं क्यों कि मानव जो भी कर्म करता है शब्दों को उपयोग जैसा करता है जैसी सोच में, जीवन में बहता है वह सब कुछ उसी यन्त्र में इकट्ठी होती रहती है। ईश्वर मानव के अन्दर व्याप्त है तो फिर सब कुछ मानव देह के अन्दर प्राप्त होता है प्रत्येक जन्म में उनका लेखा-जोखा अपने आप जन्म पर जन्म खुलता रहता है। परन्तु मानव अनभिज्ञ है, ज्ञान नहीं है, उसे मानव का जन्म लेना साधारण बात नहीं है। एक मानव का वर्णन सृष्टि जैसा है। जिस प्रकार सृष्टि बनती और बिगड़ती है उसी प्रकार मानव देह रची गई है। जिस प्रकार धरती सदैव बनी नहीं रहती वह भी रसातल में चली जाती है। उसका भी समय है कि वह कितने समय में अपना चक्कर मानव स्वास की तरह पूर्ण करेगी उसी प्रकार मानव देह होती है बनती और बिगड़ जाती है। अन्तिम दशा काया की जल समाधि होती है और धरती की भी जल समाधि होती है। परन्तु मानव सोचता है कि मैं छोटा सा प्राणी हूं और मेरा आस्तित्व बस इतना है कि मैं अपना पेट भर सकूं। प्रत्येक मानव की काया का बनना इस पृथ्वी पर इतना महत्वपूर्ण है कि पूर्ण पृथ्वी पर इसकी उर्जा का स्त्रोत व्याप्त है। धरती माता प्रत्येक मानव को अपनी गोद में सहला-सहला कर रखती है मानव का कृर्तव्य है कि वह अपनी माता की सोचें और अधर्मियों का राज न होने दे। क्योंकि धरती धर्म युक्त मानव चाहती है। जो मानव जिससे जन्म लेता है वह भी मां धर्मयुक्त पुत्र चाहती है। यह जगत जिससे

जन्म लेता है, जिस पर उसको निवास स्थान मिला वह दोनों माताएं धर्मपूर्ण युक्त होती है। दोनों अपनी संतानों के लिए बुरा नहीं चाहती धर्म में बहती है। अधर्म के कारण जैसे जन्म देने वाली माता रोती है उसी प्रकार अधर्म युक्त मानव के कारण धरती भी रोती है। धरती का भी पिता और माता होती है।

मानव जन्म लेकर मुक्त होने में इतना समय लगा देता है कि मानव जन्म से पहले और योनियों में इतना बड़ा भ्रमण करता है। मानव, जितना देह में, ज्यादा भरमण करता है, क्यों कि मानव के अन्दर स्वांद भोगों का अहसास होता है और उन भोगों के कारण कर्म अनैतिक, नकारात्मक सोच से गठित हो जाता है। वह सोच और कर्मो का ब्योरा जब तक ईश्वरीय शक्ति सृष्टि में ना आकर बताये उन रहस्यों को उजागर ना करे तब तक मानव भ्रमित रहता है। जगत सम्पूर्ण उसी दिशा में बहने लगता है। कुछ कार्य मानव जात के अपने आप ही बहते हैं जिसका मानव को पता नहीं चलता। वह स्वाभाविक क्रिया शक्ति स्त्रोत है। जो मानव वे अच्छे कर्मो के कारण अपने आप घटती बढ़ती रहती है। मानव इस ज्ञान, इस रहस्य को कभी भी जानकारी लेने की सुध नही करता बस मानव तो जो करता है उसे अपना किया हुआ कार्य मानता है। जो भ्रमित का स्त्रोत है। मानव के अन्दर जब सोच के कारण विष भर जाता है तभी उसे क्रोध आ जाता है। क्रोध हिंसा को जन्म देता है। क्रोध आना भी मानव का अपना दोष होता है। मानव या तो किसी अशब्द के सुनने या किसी कार्य का नुकसान अपने किसी रिश्तेदार या खून से हो जाने की वजह से या मान सम्मान, यह सब मानव के अन्दर अवगुणों की खान है। यह विपरित दिशा नाकारात्मक सोच का नतीजा है जिसका कारण दुनिया में जहर फैलाना है। घर से लेकर गांव तक और शहरों से लेकर देश तक सम्पूर्ण मानव जाति में समय की लहर फैल जाती है। सम्पूर्ण सृष्टि में मानव

अनैतिक कार्य, हिंसा, किसी से प्रीत न करना, मानव का दूसरे मानव से मतलब की बाते करना, स्वार्थ भावनायें दिखाना, नारी जाति को वस्तु समझकर जीवन बीताना, जैसी बुराईयां जगत में फैल रही है। धरती पर जहां भी मानव बसता है, कहीं पर भी ऐसा नहीं जहां बुराई ईर्ष्या, द्वेष, घृणा, क्रोध, जलन मानव के अन्दर जहर न भरा हुआ हो। जिसका उपचार ज्ञान का प्रचार दुनिया में फैलाना मानव मूल्यों से अवगत कराना है। क्योंकि सृष्टि में निस्वार्थ प्रेम करने वाले मानव नहीं मिलते यह कारण बहुत बड़ा। भयंकर परिस्थितियों के आने का सन्देश है, जो बुराई पूरी दुनिया में फैलेगी यह मानव सोच के ऊपर आधारित है। अगर मानव चाहे तो इस तूफान को रोक सकता है। जिस मानव को ज्ञान समझाया जाये या फिर जबान से कहा जाय कि हे, मानव अपनी सोच अच्छी और सात्विक करो। जीवों और सृष्टि को प्रेम से जीने दो। कोई भी गृहस्थी में मानव यह सोचता है कि मेरे घर में अशांति क्यों हैं, लड़ाई-झगड़ा क्यों बना रहता है। वह मानव भी यह चाहेगा कि मेरा घर सुन्दर हो, खुशहाल हो, और शान्ति हो, हर मानव यह ही चाहता है। उसका उपचार करने वह पंडितों, शास्त्रियों, भक्तों, तांत्रिकों के पास जाता है। परन्तु वह यह नहीं सोचता कि अपने घर अपनी काया से अलग कुछ नहीं मिलता। सब कुछ तेरे घर में ही है। उसका उपचार खुद ही तुम्हें करना है। हे मानव दुखी मत होकर जीवन बिता अशांति में मत रहो। जीवन को और इस सृष्टि को अपने आस पड़ोस सभी को हंसता खेलता देखने का स्वभाव बना। सकारात्मक सोच बना, सृष्टि को हिंसा मुक्त करा, यह पृथ्वी तुम्हारे लिए है। इस पर तुम्हारा आसन लगा पड़ा है। सम्पूर्ण पृथ्वी पर प्रकृति की सुगन्ध फैली हुई है। उसे मत नकार, उसे सत्य में मंजूर कर ले, एक प्रकार से पृथ्वी तुम्हारा घर जैसा ही है। उसकी रक्षा करना उसे खुशहाल करना तुम्हारा कार्य और

कर्तव्य बनता है। हमेशा याद रखो दुनिया में अपनी सकारात्मक सोच से इतनी उर्जा शक्ति बनाओं जो यह युग परिवर्तन हो सके। कुछ समय तक प्रेम भाईचारे की फुहार बरस सके। कोई माता-पिता दर्दमय ना हो, ना ही कोई भूखा मानव रहे, अपना कार्य खुद करो और अपने आपको ईश्वर का पुत्र मानो वह तुम्हारे अन्दर ही बैठे हैं भटकना बन्द करो।

ईश्वर का परिचय

हे परमपिता ईश्वर अपनी महिमा बताओ मानव शरीर धारी को
ज्ञान समझाओ।
विकट समय है, कलयुग का-ईश्वर, देव ज्ञान बढ़े दुनिया में
ऐसा ज्ञान बताओ॥

ज्ञान वैराग्य कैसे होता है? मानव को-छन्दों में बताओ।
मैं पुत्र हूं आपका अपना खुद गुणगान लिखाओ॥

बताओ, मुझे ज्ञान वह-जो आप में पूर्ण होता है।
उसी ज्ञान में डुबाओ मुझे-जो सृष्टि में सरल होता है॥

ऐसा ज्ञान हिन्दी काव्य में लिखवाओ-जिसे जनसाधारण पढ़ सके।
जिसके अन्दर ज्ञान वैराग्य हो और अनुसरण आपका कर सके॥

ज्ञान वैराग्य कैसे होता है-प्रभु, यह ज्ञान मुझे लिखवाओ।
आदि देव ईश्वर हो प्रभु आप, सरल हिन्दी काव्य में प्रकट कराओ॥

महीमा बताओ मुझे अपनी और मानव का कल्याण कराओ।
मैं ना जानूं कुछ भी ज्ञान-आप ही मुझे ज्ञान बताओ॥

तुम ही हो जगत दाता- 'कल्याणकारी ईवर हो।'
आदि ना अन्त तुम्हारा- तुम ही परम ईश्वर हो।।

समाहित हो तुम, प्रभु जगत के अन्दर, धारा ज्ञान की बताओ।
सृष्टि बसाई है, प्रभु तुम्हीने-मानव को कठिनाइयों से बचाओ।।

लिखवाओ ज्ञान दिव्य पुरस्कृय-जो सृष्टि में आरूड़ हो।
प्रकृति भी लिपटी हो उसमें आरे ग्रहों का प्रगटीकरण हो।

कल्याणकारी ईश्वर का खुद प्रगट होकर लिखवाना

मैं हूं देव आदि सृष्टि का, धर्म मुझसे उपजता है।
मैं करूं निर्माण सृष्टि का, प्रेम मेरे द्वारा झलकता है।।

सम्पूर्ण सृष्टि का दाता हूं। 'मैं' सम्पूर्ण लोक मेरे आधीन।
रहता हूं धरती के कण-कण में-और सृष्टि है, मेरे आधीन।।

मेरे द्वारा हीदेव पुंज-और देव लोक प्रगट हुए।
मेरे द्वारा ही दैत्य होकर-दिखे शीश नवात हुए।।

मेरा है रूप विशाल-मैं त्रिदेव महाकाल भगवान।
मेरे अन्दर सम्पूर्ण सृष्टि है, चेतन-यह मेरा है विधान।।

हिन्दू धर्म मुझे शिव कहे-मुसलमान अल्लाह से जाने।
इसाई मुझे ईसा-मसीह कहे-बौध धर्म बुद्ध देव माने॥

मेरा है रूप विकराल, मैं काल भगवान हूं सृष्टि का।
उदय होता है दिन का उजाला-मेरा ही नियम-सृष्टि का॥

मुझे हिन्दू धर्म कहें प्रिय मानकर-शरीर पर वस्त्र नहीं मेरे।
मैं छालधारी हूं, नग्न अवस्था है मेरी-देव गुणगान करते मेरे॥

मेरे मस्तक पर अर्ध चन्द्र चमकता, गले में सर्पधारी हूं।
मेरा रूप काल भगवान का है, गले के अन्दर नीलाधारी हूं॥

अनंत समय से मैं प्रकट हूं, अमर गाथा दिव्य लोक में गावे।
सृष्टि की मैंने उत्पन्न, और लगाई, बार-बार धरती की फेरी॥

अपने जैसा मानव, का चित्र बनाया, ढाला विश्वसार।
गुण अवगुण जगत जीव में ढाले, मृत्यु का प्रमाण बेशुमार॥

युग बनाये चतुर्थ मैंने - यह भ्रमण का रास्ता।
हर युग में मैंने अवतार लिया-यह सृष्टि में बनाई आस्था॥

सुर-असुर गुणगान गावे मेरे-आदि ना अन्त प्रमाण है मेरा।
उपस्थिति रहता हूं मैं, जीव के अन्दर-चेतनता का भान है मेरा॥

नारी के अन्दर कालेश्वरी का वास-नर के अन्दर मेरा भास।
आदि काल से चली हुई है, 'मेरी गाथा' मेरा सभी धर्मों में वास॥

हर युग में गाई गई, मेरी गाथा, उन्नत आदम पुरानी।
ना मेरा आदि है, और न अन्त मैं परमवादी, आदि निर्माणी।।

धर्म में है मेरा ठिकाना, मेरी कोई जात नहीं।
'मैं हूं ईश्वर' इस सृष्टि का, मेरी होती कोई रात नहीं।।

मैं अमर तत्व बनकर चमकता हूं, सभी लोकों में उजियारा।
मैं कभी सोता नहीं, 'सच्चिदानन्द रूवरूप' चेतन्य मेरा आधारा।।

मेरी माया फैली है, सृष्टि में-सृष्टि है, मेरा आकार।
ज्ञान से मैं जाना जाता, यह है मेरा आधार।।

नाम है मेरा 'कल्याणकारक' अलग-अलग धर्मों में जाना जाता।
सर्वोपरि धाम है, मेरा मानव देह, प्रेम डगर से जाना जाता।।

सन्त जन मेरी गाथा गावे-चतुर्थ युगों बनी पुराण।
पुराणों में लिखी है, मेरी गाथा, ईश्वर नाम है, मेरा गान।।

अगम्भ चेतनाओं के द्वारा ज्ञानी मुझे दूंढ लेते हैं।
मैं रहता हूं, ज्ञानियों के हृदय में, ज्ञानी मुझे प्रिय होते हैं।।

ज्ञानी मुझे हर दम याद करे, मैं ज्ञानियों को याद करूं।
ज्ञानी रहते मेरे अन्दर, मैं आदिकाल से दू मोक्ष, और अमर करूं।।

मेरे गुणो का कोई पार नहीं, मैं ईश्वर अपरम्पार।
मैं हूं अभेद, मेरा ना कोई भेद, यह ही मेरा आधार।।

मेरे लोक है सभी दिव्य, पृथ्वी लोक पर, मैं चेतन्य रहता हूं।
देखता हूं, सृष्टि को, पिता बनकर, और सृष्टि के अन्दर रहता हूं॥

गावे दिव्य लोक, मेरे नाम का भजन-सुर मेरे तक आता है।
मैं परमेश्वर इस सृष्टि का, पालन संहार जन्म, मेरे से होता है॥

रहूं मैं हर जीव के अन्दर, यह सबूत मेरा देख रहा संसार।
हर जीव थिरकता है, धरती पर, यह देखो, सृष्टि में मेरा चमत्कार॥

हे मानव :-

अध्यन कर तू इस सृष्टि का-और अपनी काया की यात्रा कर।
तुझे जो भी सृष्टि रचना में मिलेगा-वह ही काया के अन्दर भर॥

तेरी कल्पना मैंने ऐसी बनाई, जैसे बनाई सृष्टि सारी।
इसी काया के अन्दर, सभी रंग के फूल खिलाये, अलग-अलग बनाई क्यारी॥

मानव तुझे ही सौंप दिया, सृष्टि का भार -तेरे ऊपर ही निर्भर है।
तू ही सृष्टि में, पाप कर्म का भागी है-और तू ही पुण्य का बैरागी है॥

तुझे मैंने दिया है ज्ञान, युग-पुरुष-क्यों आते है, दुनिया में।
करते क्या है, दूसरों के लिये, और पैगाम क्या देते हैं, दुनिया में॥

सब कुछ, ज्ञान के द्वारा जाना जाता, जगत में क्या-क्या सत्य प्रमाण।
ज्ञान से ही जीवन होता है, सफल और ज्ञान ही करे, सृष्टि निर्माण॥

ज्ञान ही बतावे, ईश्वर की क्या पहचान, ज्ञान कर हे ईसांन।
ज्ञान दिया है, हर मानव को-अमल करे, सत्य सृष्टि प्रमाण॥

क्या-क्या दिया, मानव को, ईश्वर ने, सभी को यह पता है।
भूल जाता है, जब मानव, सत्य ज्ञान, खुद ही अज्ञान में फंसा है॥

ईश्वर नाम की कमाई, करने आया- है, मानव को सत्य समझाया है।
आंखों से दिखाया है, और-बुद्धि से समझाया है, सत्य कहां से आया है॥

सत्य भरा है, मानव के अन्दर, सभी युगों का भेद भरा है।
हर जन्म मरण भरा है, मानव के अन्दर, सतयुग का सत्य राग भरा है॥

मानव की यात्रा, आदि काल से चली हुई-समाप्त नहीं होती।
जीने मरने की आयु तय करता है मानव-पाप पुण्य से ढली हुई होती॥

सृष्टि-समय सारिणी

समय-समय की गाथा है, युगों-युगों का आना जाना।
समय के अनुसार युग चले-यह ज्ञान आदि काल पुराना॥

मस्तिष्क में उठ रही है, भय की ज्वाला-भयानक आंच लग रही है।
जल रहा है, मानव शरीर-अन्दर से भांप उठ रही है॥

कौन बुझायेगा, इस अग्नि ज्वाला को, शांत कैसे हो पायेगी।
निर्भय कैसे हो पायेगा मानव, इस युग की स्थिति कैसे, सुधर पायेगी।

सोच की भाप उठ रही है, असुरों ने डाला डेरा।
सुर देख रहे हैं, क्या हो रहा है-युग में, लगा रहे हैं फेरा॥

नियम सारिणी का विध न बना, सृष्टि सारी बंधी उसमें है।
मानव भी बन्ध जाता है। उसी बन्धन में, सृष्टि सारी जिसमें है॥

बंध जाता है, मानव उसी श्रेणी में-जिसमें सृष्टि सारी बहे।
सुरो में बहे, या असुरो में, कर्मफलों की फुलवारी लगी रहे॥

समय का ही पैगाम है, यह-असुरी शक्ति को भगाना है।
मानव पर छाई है, 'परछाई' इसी सत्य को पहुंचाना है॥

गांव-गांव शहर शहर ज्ञान फैले, हर मानव पुण्य में ढले।
मीठे शब्दों की लगे, फुलवारी और, पाप नरक कुण्ड में जले॥

सत्य सफर करे, मानव में, गुण मीठा शब्द सार रहे।
मुख से ना करे, बुराई किसी की-और मस्तिष्क में ना भार रहे॥

काया मिली है, अनमोल मानव को-इसका सार ज्ञान में है।
ज्ञान से मिले, सुख मानव को-यह ही सार वेदों में हैं॥

ज्ञान पुष्प खिला है, हर धर्म में, पिता मालिक, एक सभी का है।
इसी भेद को ज्ञान बतावे, यह भेद, वेद, बाईबल, कुरान, में लिखा है॥

समय कभी रुकता नहीं, समय सरल भी बन जाता है।
ज्ञान बाहुबल अहिंसा हो दुनिया में, अमन चैन बन जाता है॥

समय है, अमर सारिणी, यह कभी रुक नहीं सकता।
समय कठिन हो, अगर दुनिया का, समय ज्ञान के आगे झुकता॥

आखिर ज्ञान है क्या, जो युगों-युगों से, युग पुरुष समझाते है।
ज्ञान ही क्यों समझावे, ऐसी क्या, अमर बेल भिजवाते है॥

ज्ञान वह बेल है, जो अमर अजर गुणों से लदी, फुलवारी।
जीना सिखावे मानव जात को, और मानव के जीवन की करे रखवाली॥

ज्ञान से मिटे दु:ख जीवन के, और दुनिया में आवे खुशहाली।
ज्ञान से माता-पिता का मान बढ़े, और ईश्वर की मिले रूहानी।

ज्ञान से समय में हो परिवर्तन, मानव ज्ञान में बहें।
समझ हो, मानव को प्रेम की, और सोच में प्रेम बहे॥

जीव से, ईश्वर भी प्रेम भाव चाहे, सृष्टि प्रेम पर टिकी है।
प्रेम बिना कोई नहीं अपना, प्रेम बिना धरती बोझ से झुकी है॥

प्रेम से जीवन है, अनमोल, प्रेम ही धर्मसार है।
प्रेम ही गुण मानव में बहे, ईश्वर भी प्रेम की धार है॥

प्रेम बिना मानव नहीं अपना, प्रेम ही ईश्वर जपना।
प्रेम में ही आनन्द बहता, प्रेम में ही, मानव जीवन सपना॥

प्रेम भाव ही संतोष करावे, प्रेम भाव में ही, सन्त बनावे।
प्रेम भाव से सृष्टि चलती, प्रेम से ही ईश्वर, सृष्टि बनावे॥

प्रेम भाव के कारण, सतयुग नाम कहा जाता है।
प्रेम भाव में ही वेद लिखे, और प्रेम भाव ही, ज्ञान बन जाता है॥

प्रेम से ही ज्ञान उपजता, प्रेम भाव में ही, प्रकृति खिलती।
प्रेम से ही जीव होता उत्पन्न, प्रेम से ही ईश्वर, भक्ति मिलती॥

प्रेम ऐसा भाव है, इसकी कोई माप नहीं।
संतजन भी प्रेम करें, जगत में, प्रेम का कोई जाप नहीं॥

प्रेम होता है, अन्दर से प्रकट, प्रेम से ही स्वभाव चमकता।
प्रेम भाव से, ईश्वर का करे गुणगान, प्रेम में ही ईश्वर चमकता॥

हे मानव तू करले प्रेम जगत में, सुख शांन्ति का सागर भर ले।
परमात्मा को कर हर दम याद, सतयुग जैसी स्वांस भर ले॥

ना रख अपने अन्दर द्वेषभाव, तू संत सारंगी भर ले।
प्रदूषित ना कर अपना मन, अहिंसा का सुर कर ले॥

अनादर ना कर, मन से किसी का-धर्म का अंकुर भर ले।
पतित पावन बन अन्दर से तू, भाव में संत संगति कर ले॥

युग में ना फैला जहर ईर्ष्या का, धूल बनकर उड़ रही है।
मानव स्वांस पर पड़ रहा है असर, मानव के अन्दर, भाप उठ रही है॥

ना जला इस युग को, संहार का रास्ता छोड़ दें।
प्रेम डगर पर जीवन बिता, अनहोनी का रास्ता छोड़ दे॥

दफन करदे वे अवगुण, जो मानव को जला देंगे।
कुछ नहीं बचेगा सृष्टि में युग, में ज़र्रे-ज़र्रे में, भय भर देंगे॥

ऐसा मत कर, हे मानव संत संगति, भाव ज्ञान भर ले।
पिता है, तेरे ईश्वर मनो से, प्रेमभाव की हामी भर ले॥

पवित्र कर ले अपनी काया, धूल में अटी पड़ी है।
किनारे भी अज्ञान में है, ओझल, युग की शांति, भंग में जड़ी है॥

स्वार्थ में ना जीवन बिता अपना, युग टूटने का आधार बना है।
तेरे उपर ही है, निर्भर, इस युग का, सतयुग की आहट का बिगुल बजा है॥

निर्माण कर, हे मानव, युग भ्रमित हो रहा है।
सब मानव पिस रहे हैं, अपनी धुन में, युग की अवधि का पहिया टूट रहा है॥

संभल, हे मानव, अपनी कर पहचान, ईश्वर क्या है, ज़र्रे-ज़र्रे को जान।
अपना मत मान, कुछ तेरा नहीं, ईश्वर की अमानत है, कर तू गुणगान।।

खुद ही को पहचान, ईसांन एक ही है, ईश्वर तू मान।
एक-एक ईसांन सुधरेगा, धरती पर, तभी होगी, सृष्टि की पहचान।।

हे ईसांन तुझे क्यों समझावे, भगवान-ऐसासमय का है, पैगाम।
समय की, सारिणी ही है, ऐसी-इस युग में, अपनी धुन में, बह रहा ईसांन।

ईश्वर दे रहे हैं, पैगाम धर्म का, करो ध्यान, और दो, प्रेम का ज्ञान।
ईश्वर एक है, इस सृष्टि के, दो ना समझो, हे नासमझ ईसांन।।

हे ईसांन तुझे पता नहीं है-क्या क्या घट रहा है, दुनिया में।
तुझे तो बस अपनी पता है, तू भी श्रेष्ठ नहीं, इस दुनिया में।।

अपना भेद, अपने आप से पूछ-क्या क्या घट रहा है, तेरे अन्दर।
प्रवाह चल रहा है, अशुद्धी का, अशान्त भाव चल रहा है, तेरे अन्दर।।

हे मानव तू, देख कैसी है, कठिन परिस्थिति, दुनिया में।
अपने से ही औसत लगा, हर मानव है, कैसा, इस दुनिया में।।

खुद ही तू सोच, हे मानव-क्या क्या दशा हो रही है।
चारो तरफ उफान आया है, हिंसा का-अग्नि मानव में भभक रही है।।

हे मानव तू चाहता क्या है, खोलकर बता अपना पैगाम।
तू क्यों ईश्वर से घृणा करता, और मानव का, धरती पर क्यों, बनावे नरक धाम।।

कड़वा घूंट, तू खुद ही पी रहा है, अपने वजूद अहंकार में।
इस तूफान को, अपने अन्दर से निकाल, मानव प्रेम व्यवहार में।।

हे मानव, तू खुद ही सुधरेगा, तभी दूसरा, मानव सुधर पायेगा।
अनन्त समय से, दिया है ज्ञान तुझे, ज्ञान से तू, सत्य में उभर पायेगा।।

इस युग का हर, मानव कहे, क्रोध से, ज्ञानी को देख।
कड़वा देखे, अपनी नजरों से, और अन्दर से भी, कड़वा देखे।।

ज्ञान सुनने को कोई तैयार नहीं, हर मानव अपने को, ऊंचा समझे।
मानव कहे, मैं क्यों सुनूं ज्ञान की बात, ज्ञान को स्वार्थी समझे।।

हे मानव, तू सोच, ईस युग में, मानव कहां जा रहा है।
अहंकार में, दिखता रास्ता नहीं, भवंर जाल में जा रहा है।।

हे मानव, मत कर इंतजार, समय का, अपना मत बदल ले।
युग टुटने वाला है, कठिनाइयों में, अपना अन्दर का बाणा, बदल ले।।

पैगाम आया है, धरती पर मानव जात बदले, अन्दर का बाणा।
जो बदले धर्म अनुसार, उसे ही इस धरती पर है, रहना॥

पिता हैं सबके ईश्वर-पैगाम भिजवा रहे है।
सभी मानव ईश्वर को करो याद-मानव में प्रेम बढ़वा रहे हैं॥

सुनो पैगाम धरतीवासियों, अपने अन्दर से बदलो बाणा।
निर्भिक होकर जीवो जगत में, सभी को प्रेम बन्धन में बंध जाना॥

ज्ञानी भी सुनो, अज्ञानी भी सुनो, सत्य धर्म ईश्वर का पैगाम।
धरती का समय आया है, अधर्म मुक्त होने का, सभी सुनो इस धरती के ईंसान॥

गांवों-गांवों सुनो, शहर-शहर सुनो, सभी सुनो ईश्वर पैगाम।
पैगाम आया है, दिव्य लोक से, ज़र्रे ज़र्रे में बसा हुआ, सुनो पैगाम हे ईसांन॥

जीने का रास्ता है, खुद तुम्हारे पास, क्यों व्यर्थ में गंवा रहे हो।
सतयुग जैसा बनाओ, अपने आपको, सघर्ष दर्दमय, क्यों जी रहे हो॥

हल चलाते हुए, पशु चराते हुए-सभी सुनो सत्य धर्म पैगाम।
समय की धारा है, कठिन-इसका उपचार सुनो हे ईंसान॥

कठिन समय है, दुनिया का, इसी कारण आाया है, दिव्य पैगाम।
सृष्टि जा रही है, अहंकार की धारा में, युग की धारा बदल, हे ईंसान॥

जिसने भेजा है, पैगाम वह ही है, इस सृष्टि का भगवान।
बचाने के लिए दे रहा है, पैगाम, क्यों रो रहा है, युग का ईंसान॥

सृष्टि दिख रही खिली, खिली पर अन्दर से, छिला हुआ है, ईंसान।
उपचार नहीं है, इस दर्द का, कलयुग में कैसे संभलेगा, धरती का ईंसान॥

उपाचार करने के लिए है, पैगाम-धरती पर, सतयुग का पहरा आना है।
जिवेंगे इस धरती पर वे ही मानव-जिसको ईश्वर ने पहचाना है॥

जो मानव ईश्वर को मानेंगे, वे ही मानव प्रेम ध्वनि जानेंगे।
जाग्रत रहेंगे, अपने अन्दर, दिव्य ज्योत के, चक्र को मानेंगे॥

आस्था, धर्म विभुषित, ज्योत जलेगी मनोभाव में, मानव में बहेगी।
युग में बहेगी, सुख शक्ति की लहर, और जगत में, पुण्य में रहेगी।

अध्यात्मिक प्रेरणा का स्रोत बहाओ, जग में, जो अमर अजर गाथा है।
नियम सारिणी है, यह ईश्वर स्रोत-युग युगों, बही धार, विजयता है॥

भारत भूमि पर हर मानव जीव ईश्वर प्रेरणादायक

अणवेषण करो अपना, धर्म ही पूज्यनीय अमर गाथा है।
संत आयें अलग अलग, नाम धराके, धरती सृष्टि की, पुज्य माता है॥

भारत भूमि, श्रेष्ठ है उपमा, इस धरती पर, युग निर्माण होता है।
निर्भिक रहते हैं, मानव इस धरती पर, इसी धरती पर पुण्य होता है॥

श्रेष्ठ धर्म पुजें है, भारत भूमि, मुनियों की संगम धारा है।
नदिया इसमें पवित्र बहे-जो हिमालय की सहस्त्रोधारा है॥

पूज्यनीय है, यह धरती, हर मानव इसमें, संस्कारों से भरा हुआ।
हर कुटुम्भ कबीले बसे हैं, इस धरती पर-ऋषि मुनियों से पुष्प खिला हुआ॥

इस धरती पर, भय से मानव नहीं होता था, व्याकुल, विद्या का परिवार बना।
उसी विद्या के बल से, बना मानव ज्ञानी, तभी भारत भूमि का, पुष्प खिला॥

हर मानव अन्दर से, मुनियों का अंश धार, आन्त्रिक पिरोये बैठा है।
नहीं खोलता, अपने पूर्व संस्कार-अन्दर दबाये बैठा है॥

मानव खुद ही को, भूल गया है-काया शास्त्र याद नहीं।
रहता है, माया जगत की, भूल भुलैया में-पैराणिक धारा याद नहीं॥

कहां से उत्पन्न हुआ है, भारत भूमि का मानव-कहां से आया।
जन्म जात है, सिद्ध भारत का मानव, श्रेष्ठ कुल से, जन्म लेकर आया।

भूले हुए मानव को, भूल याद दिलाने आई है, दिव्य लोक की वाणी।
पिछला कर्म जो भी किया है 'भूल में' उसे अग्नि में जला देगी 'दिव्य वाणी'॥

श्रेष्ठ उपमा लेकर पैदा हुए हो तुम, भारतभूमि की ओलादो।
याद दिला रहे हैं, तुम्हें सुन्दर चरित्र-पाप कर्म को जला दो॥

सुन्दर बनो अपने अन्दर से, सम्पूर्ण सृष्टि का भार, तुम पर है।
तैयार होना है, भारत भूमि के मानव को, यह धर्म का सुर, तुम पर है॥

झंडा फहराना है, सम्पूर्ण युग में, भारत वर्ष के, नव जवानों को।
समय की धारा है, यह, पैगाम युग को भर देना है, विद्वानों को॥

अन्नत समय से, भूल हुई है, उस भूल को, याद करना है।
तुम हो प्रथम संतान, ईश्वर की, युग परिवर्तन, भारत के वीरो को, करना है।॥

वीर भी है, इस भूमि पर, ज्ञानियों का अम्बार लगा है।
संत है, सभी इस भूमिपर, योगियों का दिव्य, फूल खिला है॥

बस भूले हुए है, अपना अन्दर का बाणा-याद कुछ भी नहीं।
सफर कर रहे हैं, इस युगधारा में-जन्म से सीखा कुछ नहीं॥

पीढ़ी पर, पीढ़ी बीत गई, ना आई, अमर गाथा याद।
कहां से चला था, भारत भूमि का वंश-कहां बिताई रात॥

किसने रचाई, यह भूमि, किसने रचाया, यह ब्रह्मंण्ड।
किसने बनाया, भारत को स्वर्गधाम, किसने बनाया, मानव विद्यमान॥

ईश्वर का है, चमत्कार, विश्व की बेल, भारत से बंढ़ी है।
फैली हुई जड़ इसकी, दिव्य लोक तक चढ़ी है॥

हर मानव को लगता है, ऐसा, कि मैं बना हूं कैसा।
क्या मैं, भी संत हो सकता हूं, क्यों होऊं, मैं संत जैसा॥

हर मानव, इस भारत में, संत बनकर जन्मा है।
भूल से पापी बन गया-पर अन्दर से, संत जन्मा है॥

याद नहीं पूर्व की, अमर गाथा, ईश्वर तुम्हें, याद दिलाने आये है।
तुम्हारे ऊपर है, सृष्टि का (भार) और तुम्हे वरदान है, पाप मुक्त, कराने आये हैं॥

स्थूल में है, भारत पर मेरा असर, सृष्टि में फैलाना है।
हर मानव ही, सृष्टि में मेरा, उसके अन्दर, आस्था धर्म बैठाना है॥

यह कार्य करेगा, भारत भूमि का मानव-यह दिव्य सत्ता का कहना है।
फैलाना है, प्रेम दरिया, धरती पर, ईश्वर में प्रीत बहाना है।

हर धर्म में सत्ता है 'दिव्य-मानव,' पुरुष कृत्य विद्यमान है।
भारत के, मानव को सोंपा है, यह जिम्मा-सर्वोपरि भारत महान है॥

जात-पात का भेद ना रखो, मन में मानव, उन्नति कर रहा है।
ऐसा युग कभी नहीं आया, सृष्टि में, मानव विकास कर रहा है॥

बस विकास है, इतना काया को, संतुष्ट कर रहा है।
काया का है, भोग विकास, असुरों को मनों पर बैठा रहा है॥

समय-समय की परिस्थिति है, युग की, कभी असुर जाग जाते हैं।
कभी सुर सृष्टि में फेरी लगावे, तभी असुर भाग जाते है॥

यह कला है, ईश्वर की-घटती बढ़ती रहती है, सदैव।
कभी युग का पलड़ा, नीचे झुकता, और कभी ऊपर को भेद॥

कभी ज्ञानी उतरते हैं, धरती पर, कभी अज्ञानी ताण्डव करते।
कभी धरती पर जीव मरता है, बेशुमार, और कभी जीवों की, अधिक उत्पत्ति करते॥

यह है, दिव्य सत्ता का विधान-सर्वोपरि समय समय पर घटता।
सृष्टि है, ईश्वर आधीन, धर्म अधर्म जीव, मानव के ऊपर, घटता-बढ़ता॥

इस समय, इस युग में, ऐसा दिव्य, दीप खिलेगा।
सैहस्त्रों वर्षों का, जिसका वर्णन नहीं, ऐसा दिव्य फूल खिलेगा।।

बह जायेगें, दिव्य सत्ता की धारा में, विश्व ज्योति जलेगी।
नेतृत्व करेंगे, भारतभूमि के मानव-धर्म ईश्वर की, ज्योति जलेगी।।

भारतभूमि के मानव में, एक दिव्य ज्योति जली है।
इसी धरती पर, जो पैदा होता है, उसी के अन्दर जगी है।।

हर मानव, अब छुएगा उस कमल को, जो उसके अन्दर लगी है।
उसी में संत बैठा है, मानव के अन्दर, आहट दिव्य लोक से सटी है।।

बस इतना बदलना है, मानव को, अपना पिछला बाणा, याद करें।
तुम पुरस्कृय आत्मा हो, भारत भूमि पर, यह भूल स्वीकार करे।

हे मानव, यह ना सोच, कि तूने, क्या क्या किया है।
जीवन में, अगर तूने पाप किया है, तो भी तेरे अन्दर, संत का जीया है।।

संत है, तू अन्दर से, दिव्य सत्ता कह रही है।
भूल के कारण, तू गया, पाप भवरं में, तेरे अन्दर, दिव्यधारा बह रही है।।

अमल सत्य के ऊपर कर, तू सृष्टि का भार, संभाल ले।
तू है, भारत भूमि पर, पैदा हुआ मानव-तू सारी सृष्टि उभार ले।।

प्रयत्न कर, युग हो रहा है, भ्रमित-संत सारंगी बजा अपनी।
धुन भरी है, दिव्य तेरे अन्दर, सतयुग की, ताल लगा अपनी॥

पुष्प खिला, इस सृष्टि में, अलग, किसी को ना मान।
सन्तान है, सभी ईश्वर की, ईश्वर धर्म, अलग न जाना॥

अपने अन्दर भुला दे वे ईर्ष्या द्वेष, जो पनप-पनप कर, तू अपनापन भूल गया।
ना रही तुझे, अपनी संत संगति, तू भारत भूमि पर, पैदा होने का, सुर भूल गया॥

तेरी काया के, अंग, सभी जैसे, पृथ्वीवासी है वैसे ही, पृथ्वी पर यन्त्र हैं, जैसे।
पर भारत के सपूत, तेरे अन्दर यन्त्र लगे है, दिव्य सत्ता जैसे॥

संस्कारों के, उफान से बनी है, तेरी काया-ढली दिव्य कमंण्डल में।
इसी कमण्डल में, भारत मानव, फूल खिला-ढला शिव मण्डल में॥

याद नहीं तुम्हें, वे पैराणिक धाराएं-जो भारत में रचीं गई थी।
पूर्वज थे, तुम्हारे मुनिश्री, विद्या संस्कारों में, मढ़ी रचीं गई थी॥

धाराएं मानव ने मोड़ी है, मानव में अहंकार भरा है।
अभी भी कुछ नहीं बिगड़ा, प्रयत्न करों, संस्कारी हो तुम, तुझ में संस्कार भरा है॥

दिव्य धारा से है, भारत की मानव सृष्टि, प्रथम आदि धरातल है
इसी धरातल पर, फूल खिला, सृष्टि का, दिव्य सत्ता से, मानव ओझल है॥

नया निर्माण करो, मानव सभ्यता का, अकुंर बीज, दिव्य धार बनाओ।
युग को मोडों, ईश्वर की तरफ-संस्कार युक्त, मानव उगाओ॥

प्रथम में खुद सम्भलों, सत्य अमल करो, प्रेम से, संतानों को समझाओ।
ज्ञान भरो, उनके अन्दर-दीपक, ज्ञान प्रकाश का जंलाओ॥

ज्ञान दो, अपनापन, प्रेम से सफर करो-भर दो झोली, प्रेम में, भारत भूमि का आदर करो॥
निर्माण करते पुष्प सुगान्धित-जो धर्म से लटका हो, ऐसा यत्न करो॥

पुष्प हार, दिव्य प्रेम, चाहती है यह धरती, व्यवहार में घनिष्टता भर दो।
कमल खिलाओ स्वांस में, अपने, पंखड़ियों में, मीठा रस भर दो॥

निर्माण करो, इस दर्द भरे युग का-कड़वा स्वाद, मुख से बन्द करो।
बोली बोलो मीठी, गुण धार में-अपने अन्दर सुख सार भरो॥

शब्दों का उच्चारणशुद्ध करो, मीठा स्वर सत्य प्रमाण भरो।
सतसंग करो प्रीती में, ईश्वर से प्रेम में स्वांस भरो।।

मन्द-मन्द फैल रहा है, जहर-मन्द मन्द उतरेगा धरती से।
हर मानव में जागेगी, प्रेम की फुलवारी, तभी, फूल दिव्य खिलेगा धरती पे।।

हर मानव को, समय नहीं है, ईश्वर के समीप जाने का।
सुख भर देना चाहता है, मानव-सृष्टि के सभी, आशियानों का।।

क्या क्या सुख चाहता है, मानव-काया का मान चाहता।
मन में फिरता है, दर्द लिए, अगली पीढ़ी को, धनवान बनाना चाहता।।

क्या करेगा धनवान बनाकर, तेरे कारण युग लुप्त हो रहा है।
जिसको तू, खुशी बनाना चाहता है, वह आसन डोल रहा है।।

हे मानव, फिर, किस धरा पर, अपनी संतानों को बसायेगा।
टूट जायेगा, एक दिन यह बसेरा, तू इस भूल के कारण, पछतायेगा।।

ना सुनेगा कोई तेरी, तू अकेला धरती पर चिल्लायेगा।
ना सुनेगें, ईश्वर तेरी पुकार, तू गर्दिशो में, अपनी जान गवाएगा।।

हे मानव प्रथम में तू, उस आसन को अपना बना।
जिस पर, तू सफर में, यात्रि बनकर ठहरा है, उस पृथ्वी को पाप मुक्त करा।।

हे मानव, तुम्हें क्यों समझावे, तू है ईश्वर की संतान।
जैसे तू फिरता है, युग में भटकता, सुखी करने का देता, अपनी संतानों को फरमान॥

उसी तरह, यह सृष्टि भी है, ईश्वर की संतान।
सुखी बनाने के लिए, भेजा है, ज्ञान दिव्य, और अपनी कराने पहचान॥

हे मानव, अहंकार भवंर से निकल, सब कुछ दिख रहा है।
चढ़ी है, पाप कर्म की धूल, अम्बर में, काल का मुख, खुल रहा है॥

उस महाकाल से बच, यह निगलने को, तैयार खड़ा है।
झोंक रहे है, असुर उसमें, देव लोक, सृष्टि को बचाने खड़ा है॥

हे मानव, तू सोच तुझे जाना कहां है, किस तरफ है, तेरा ठिकाना।
असुरों की मानेगा, तो दर्द सफर करेगा, देवताओं को ना समझ बेगाना॥

देवताओं की ही, संतान हो तुम, असुर डाले युग में दाना।
दाना चुग रहा है, सम्पूर्ण युग, धर्म नहीं है स्थिर, ना रहा ठिकाना॥

युग थर थर कांपेगा, जब असुर पूर्ण डालेगें डेरा।
मानव अपने आप में, असुर बन रहे हैं, तभी लगेगा मृत्यु का ढेरा॥

हे युग मानव, सब तेरे हाथ में है, असुरो को तू, अग्नि में जला।
सुर तेरी, सहायता के लिए है, आतुर, तू अपने अन्दर, दिव्य ज्योत जला॥

श्रेष्ठ बन तू, संत जैसा रंगले, सूर ताल सारंगी बजा।
चित्त में तेरे, ईश्वर हो प्रकाशित, तू धुन ऐसी दिव्य बजा॥

भविष्य पड़ा है, तेरा भवंर काल में, अपने पिता के, सुर्पद हो तू।
ईश्वर बिठायेगे, अपनी गोद में, प्रेम भवंर में गीत गुनगुना कर, सफल हो तू॥

गुण धारा बना जीवन की, प्रेम में बजा, बजा दिव्य सुर में।
चेतन्य होगी तेरी काया, सुरताल बजा अपने सुर में॥

संत बनकर, बाणा ना रंग ना गृहस्थ को तज तू।
रह हरदम कर्म बन्ध में, और अपने अन्दर, ईश्वर धुन बजा तू॥

ना छोड़ कर जा, इस गृहस्थी को, इसी में कमल फूल खिला तू।
इससे बड़ा तप नहीं है, धरती पर, तेरी माप क्या है, सत्य बता तू॥

तेरा निर्माण किया है, ईश्वर ने, सृष्टि रचाने के लिए।
सृष्टि रची गई है, सत्य में, सृष्टि चलाने के लिए॥

सृष्टि चलती है चेतन्य, प्रभु के द्वारा, कर्म दिया, पालन कराने के लिए।
जीने के लिए बुद्धी दी, मानव को-तप दिया, गृहस्थी चलाने के लिए॥

तप करो, मन में ईश्वर भरो, सत्य सफर निर्माण करो।
पुष्प खिलाओ, इस भारत भूमि पर, विश्व का निर्माण करो॥

अध्यन करो, अपने अन्दर, क्या क्या घट रहा है, विश्व सार में।
मानव का स्तर घट रहा है, प्रेम भाव व्यवहार में।।

श्रेष्ठ बनो, अपने अन्दर, युग को विद्वान बनाओ।
हर मानव को दो, ईश्वर प्रेरणा-सत्य श्रेष्ठ मानव बनओ।।

हर खण्ड में, प्रेम घट रहा है, सृष्टि जल रही है, क्रोध ज्वाला में।
भभक रहा है, मानव, अपनी मनमानी, अहंकारों की ज्वाला में।।

मानव जात, एक ही सुर में, बहती, पिछली करनी याद नहीं।
वर्तमान को, बनाना चाहती सुन्दर, अगली पिछली याद नहीं।।

हर धरती का खण्ड, अपना प्रभुत्व, सृष्टि पर जमाना चाहता है।
खुदा से करे फरियाद, रोजमर्रा सृष्टि में, रोब जमाना चाहता है।।

नहीं पता उस मानव को, सृष्टि किसकी करामात है।
खुदा की बनाई हुई, धरती है यह, नर मादा, बनाई जात है।

खुदा, की खुदाई है, यह, मानव धरती पर बसाया।
खुद ही बसे, मानव के अन्दर, नूर मानव के अन्दर बहाया।।

धरती पर नदिया बनाई, खुद ही की, खुदाई बनाई।
दुनिया बसाई, धरती पर, और मानव को दो, नूर की परछाई।।

पाक धर्म निर्माण किया, और मानव के अन्दर ढाला।
कहा मैं हूं अकेला, इस जहान में-ऐसा वसुल डाला।।

मलकियत है, खुदा की, है इस जागीर का रखवाला।
है खुदा, इस दुनिया का पिता, है खुद की खुदाई का परवाना॥

आदम देह बनाई, खुदा ने, नूर आदम में बहाया।
तहजीब खुदा ने आदम को दी, और जीने का सलीखा सिखाया॥

मदद की, आदम देह की, खुद ही अपने जैसा बनाया।
अन्न उगाया धरती पर-और भूखा ना रहा आदम, और थपथपा कर सुलाया॥

मुल्क बनाने का दर्जा दिया, आदम देह में, यह अंश पहुंचाया।
बताया जरिया जीने का, और पाक देह में, नूर बरसाया॥

कहा, कि जा तू आदम, देह पाक बनाकर, राज चला अपना।
ना पहुंचा चोट किसी को-और मुल्क की हिफाज़त का, जरिया बना अपना॥

दहशत में जीये कोई, दुनिया में, तू पाक बनकर, कुरान अदा कर।
शैतान ना बन, जागीर नहीं है तेरी, तू पांचों समय अजान कर॥

नमाज अदा कर, हिम्मत कर हे इंसान, मत बन सौदागर।
तेरी परछाई में भी, मैल हो गया है-तू खुदा के असूलों से डर॥

तुझे बख्शीश दी है, खुदा ने, तू रहम दुनिया पर कर।
तेरे नजदीक, जो भी आदमदेह है, उस पर दया कर, दर्द मत भर॥

हे ईंसान, तू खुदा की खुदाई को समझ, तेरा आशियाना, बच जायेगा दुनिया में।
अगर नहीं समझेगा, खुदा की बात, तो तू नजर नहीं आयेगा, दुनिया में॥

तेरी तकदीर बनाने वाला है, खुदा-तू हर वक्त खुदा को याद कर।
तेरी देह की रखवाली, करे खुदा, तू दहशत ना दे, खुदा को याद कर॥

यह मुल्क है, खुदा की खुदाई, रहमत करने की, ईंसान को दी पढ़ाई।
बनाया, आदम अन्दर से, नूर का पिंजरा, और खुदा खुद बसे, अपनी दी नूर की परछाई॥

नूर बरसाया दुनिया में, और धरती पर, मोहब्बत का पैगाम दिया।
हर ईसांन, करे दिल से मोहब्बत, धरती पर खुदा ने, सभी से रहम किया।

नूर बरसाओ हे ईसांनों, यह खुदा की खुदाई है।
नहीं आया है, कोई बाहर से, यह खुदा की परछाईं है॥

सल्तनत है, खुदा की, आशियानों में ईंसान बसाये।
पैगाम दिया है, खुदा ने, सभी ईसांनों प्रेम बन्धन में, बंध जाये॥

पैदा होते ही, मीठा शरबत पिलाया, मोहब्बत करने का, ख्याल दिलाया।
खुदा ने कहा, जाओ आदम जात, दुनिया बसा, और प्रेम का सबक सिखाया॥

याद दिलाया, तू मेरा है अपना, मैं खुदा हूं, तेरा, जीवन है एक सपना।

तू मुझे माने, दिल भर से, मैं तुझे बताऊं, सत्य में, खुदा तेरा अपना॥

और कुछ नहीं, दुनिया में, सब कुछ खाली भरा पड़ा है।
खुदा में ही नूर भरा है, दुनिया में, तख्त खाली पड़ा है॥

हे आदमदेह, मैं तुझे दुनिया में भेंजू, यह तेरी ही कारामात है।
जैसा तू बोयेगा, बीज धरती पर, वही फूल की सोगात है॥

हे मानव, प्रण कर, देख भूमण्डल को, कैसे स्थिर दिखता है, यह।
ईश्वर की कारागरी है, यह-पुष्प की तरह खिला हुआ है, यह॥

घटनायें घट रही हैं, अशुभ, मानव प्रणाली की, ना समझी के कारण।
मानव, भूखे पेट सो रहा है, मानव निर्दय होने के कारण॥

मानव में अगर प्रेम बहे, हृदय के अन्दर, 'कोई भी मानव, भूखा न सोय।
अपनापन, हो मानव के अन्दर, और अपने धन का, वैभव ना होय॥

अपना अपना कह रहा है, मानव-सत्य में यह सब कुछ, ईश्वर का है।
ईश्वर ही, मानव को धनपति बनावे-यह जन्म पूर्व के, आधार पर है॥

कोई जन्म लेकर, करोड़ों का मालिक होता, कोई कर्जे में दिन गंवाये।

कोई मांगे भीख जीवन भर, हाथ फैलावे, कोई दयावान बन कर दिखाये।

मानव के अन्दर, सृष्टि सारी बिछी है, मानव ही सबकुछ दिखावे।
मानव के पास कुछ भी न हो, हृदय बड़ा विद्यावान बनावे॥

हृदय हो, जिस मानव का बड़ा, विशाल, वह ही परोपकार कमावे।
चाहे, घर में ना हो धन उसके, फिर दया धर्म, और नाम कमावे॥

सभी को पता है कि जाना है, एक दिन, धन दौलत के बीच।
फिर भी लालच में फंसा पड़ा है, मानव मोह माया के बीच॥

मानव, यह क्यों नहीं जानता, कि सब कुछ दिया, ईश्वर ने है।
जगत में, जितने भी जीवधारी है, सभी की तरफ, देखना ईश्वर को है॥

मानव, दूसरा मानव भी है तेरा भाई, तुझे ही दुख दर्द बताए।
मानव ही मानव सेवा करे, यह है दिव्य ज्ञान, यह ही वेदों ने बताए॥

सब कुछ दिया है, मानव को-धन के भण्डार भरे पड़े हैं।
बिना छत के, मानव सोते है, धरती पर, अन्न गौदामों में संड़ रहे हैं।

कौन जाने, किसकी पीर पराई, वह ही जाने, जिसने दुनिया बसाई।
जिम्मा दिया है, मानव को, और ज्ञान की दी परछाई॥

फिर भी ना समझा मानव, मानव को, दूसरा मानव, दे रहा बुराई।
कोई भी मानव, नहीं रहा शुद्ध, भवंर में युग दिखे है, टूटता दिखाई॥

जब ईश्वर ने, मानव को इतना ज्यादा दिया, कि गरीबों की हो पेट भराई।
जहां रखा है, धन मानव ने वह-किसकी है सम्पति, किसने बनाई॥

देने वाला भी ईवर है, रखवाला भी ईश्वर है, तुम्हें तो जग से लेनी है बिदाई।
फिर क्या करोगे ज्यादा धन का, किसके लिए तुमने अपनी दुनिया बसाई॥

तुम्हारी ना कोई दुनिया, ना अपना जगत में, सपनों की छत बनाई।
कब टूट ना जाय दुनिया, पता नहीं-फिर भी मानव करता, लुट की कमाई॥

लुट भी करता है, मानव ना करता, दान किसी को, यह है कैसी कमाई।
जो काम ना आवे, किसी के, और ना किसी के दर्द में बरसाई॥

ना देखा, उलटा फिर कर, दुनिया में, कितना दर्द भरा है।
अगर कुछ हाथ में है, तेरे हे मानव, दया धर्म कर, तू तो एक ज़र्रा है॥

अगर माने तो तेरे अन्दर, सृष्टि का वर्णन बहता है।
ईश्वर तेरे, अन्दर करते है वास, और अग्नि का पहिया, तेरे अन्दर चलता है॥

सभी लोक तेरे अन्दर, हैं प्रवाहित-तू जाग हे, मानव देह प्राणी।
तेरे अन्दर ज्ञान भरा इतना, कि तुझे दिखे हरदम, ईश्वर वाणी॥

ईश्वर ने तो तुझे दिया है, बहुत कुछ-पर तू ले नहीं सका, हे मानव।
तू तो रहा जीवन भर, अपनी ही धुन में-अपनी अपनी बकता रहा, हे मानव॥

बेशुमार पैदा होकर मर रहे हैं, जीव धरती पर, कोई भी अमर पद नहीं पाता।
खाली पड़ा है, आसन दिव्य लोक का, कोई भी मोक्ष को नहीं जाता॥

सृष्टि जल रही है, धुंधुंकरके-रफ्तार में, समय घटता जा रहा है।
निर्भय नहीं है, मानव दुनिया में-मानव का दर्जा, घटता जा रहा है॥

आभा भी घट रही है, मानव की, मानव अपने अन्दर, घुटता जा रहा है।
ज्ञान में तो अमर पद है, मानव का-अज्ञान के कारण, एक ज़र्रा बनता जा रहा है।

हे मानव, ज्ञान लेने के लिए आया है, तू-ज्ञान सागर भर ले।
कर, मानव जीव की हमदर्दी, और जगत में प्रेम संगम कर ले॥

सिखाया जा रहा है, ज्ञान तुझे तू अर्पण अमर पद कर ले।
अज्ञान में तुझे पता है, कि तुझे दुनिया में से जाना है, और ध्यान संगमकर ले॥

ध्यान संगम कर ले, अपने अन्दर तू आदि पुरुष प्राणी अमर है, वरदानी।
तू है, सृष्टि के आदि का जनम जात, जीवों में बदलता रहा, प्राणी।।

तू सत्य सफर करेगा, जीवन का, तो तुझे ही सुख मिलेगा।
ईश्वर भी प्रसन्न होंगे, तुमसे, और अगली पीढ़ी को, फल मिलेगा।।

बस इतनी सी बात सोच ले, इससे भी जगत में, प्रेम सागर भरेगा।
इससे बड़ी, सोच करने आया है तू, सोच इस जगत में, कोन सा अच्छा काम करेगा।।

कोई भी मानव, सिर्फ अपने लिए, नहीं आता सम्पूर्ण, जगत के लिए है आता।
कोई कोई, मानव इतना बड़ा महान, कार्य करता, उसे दुनिया में पूजा जाता।।

हृदय को विशाल बनाओ, यह पूर्ण ब्रह्मण्ड, तेरा है मानव।
तुझे ही सोंप दिया है, इसका भार, तू ही इसे, संभालने वाला है मानव।।

तू चाहे तो ज़र्रा बना रह, धरती का, बार बार आता जाता रहेगा।
या फिर तू बन, विशाल इतना, तुझे बार बार, धरती पर याद किया जाता रहेगा।।

तू एक ज़र्रा बनकर, जीवन बिता अपना, क्या सोचेगा, क्या किया तूने जीवन में।
ना दूसरों के काम आया, ना किसी के दर्द का, इलाज किया जीवन में।।

ऐसा कैसा ज़र्रा है, तू कींट पंतगों जैसा-धरती पर बस आना जाना जैसा।
ऐसा दिव्य दीप, बन तू हे मानव, सृष्टि सारी, तुझे याद करे, बनने की सोच मेरे जैसा॥

पुष्प ज्ञान दीप खिला, तू दुनिया में, जो सृष्टि को सहायता पहुंचे।
भ्रम में ना रह, हे मानव तू छोटा नहीं है, तेरा आकार, बड़ा होकर पहुंचे॥

हे मानव, तू समझ यह ज्ञान, सम्पूर्ण विश्व तेरा है, तू कर ध्यान॥
हर मानव, धरती पर है तेरा प्रिय, तू धुन बजा प्रेम की, और लगा ईश्वर पर ध्यान॥

ईश्वर पर लगा ध्यान, यह धरती धर्म का, मानव चाहती।
संस्कार युक्त पैदा हो धरती पर, निर्माण धर्म पुरुष चाहती॥

उत्थान करो धर्म के ऊपर, युग में शांन्ति सागर बहाओ।
हर मानव में बने सादगी, और साधारण जीवन बिताओ॥

संत बनो, अपने अन्दर, सुख सागर भरो, जीवन में अपने।
चारो तरफ दिखे खुशहाली, धरती पर, उत्साह रखो मन में अपने॥

सभी जीवों में देखो ईश्वर वास-सभी जीवों में कष्ट का भास।
हर जीव है, चेतन्य जगत में, और रखता है, ईश्वर पर आस॥

हर दम मन में ईश्वर को रखो, याद-सुन्दर है, जीव का बाणा।
खुदी हुई है, अन्दर से खुदा की खुदाई, भाग्य में जितना मिले उतना पाणा॥

खुद ही में करो सोच, जीवन में है क्या दोष, सभी को अपने अन्दर दिखें।
सभी को अपनी गलती दिखे-और दूसरों की भी दिखे॥

हे मानव, अगर तुझे यह कहे कि तू सब कुछ छोड़ दे।
ना कर, जगत में प्रेम भाव और निर्दय हो, नाता तोड़ दे॥

बताओ, हे मानव तेरे कैसे कटेगे दिन जीवन के, तू सुर मोड़ दे।
तू चाहे कितना भी अधर्मी हो जीवन में, प्रेम सागर तू जोड़ दें॥

प्रेम है स्वभाविक भावना ईश्वर की, खुदी खुदाई प्रेरणा है।
मानव चाहे कितना भी हो अधर्मी, प्रेम भाव बिना नहीं रह पाना है॥

हे मानव, अगर तू ईश्वर को ना भजता, ना तू करे परोपकार जगत में।
फिर भी तू जीता है, इस धरती पर, ईश्वर रखे तुझे इस जगत में॥

ऐसा क्यों है मानव, इस धरती पर-धर्मी भी जीते है, और अधर्मी भी जीते हैं।
दोनों पैदा होते है, धरती पर-और अपनी संतानों को भी भाते हैं।

दोनों रहते हैं, अपने-अपने परिवार में, पर दोनों को स्वभाव अलग-अलग।
कोई जीवन चाहता है हिंसा में, कोई रखे हिंसा को अलग-अलग॥

कोई मानव कहे, मैं ईश्वर को क्यों मानूं, कोई कहे, मैं ईश्वर को मानूं।
दोनों है, इस पृथ्वी के मानव-संघर्ष दोनों दर्द में रहे, सदा, यह मानव कहे, मैं जानूं॥

दर्द मय जीवन है, दोनों मानव का, एक धर्म पर चलता, दूसरा अधर्म पर चलता।
जीत उसी की हो जगत में, जिसने संगठित परिवार को, किया सभ्य पुख्ता॥

धर्म का मानव बीज बोवे, अमर पद के, अधर्मी की बेल सुख जाती है।
ना मिलता, धरती पर ठिकाना, अन्ध कुण्ड में, डूब जाती है॥

इसी लिए तो कुटुम्ब कबीले-अमर बेल बनकर, विराजते है।
और किसी के बीच, अधर में-फंसे रह जाते है॥

यही ही है, फर्क धर्म अधर्म में, अधर्म में, अहंकार का होता है सुरूर।
अहंकारी मानव, जीते जी फिर भटकता, और मरने पर भी रहता है, गरूर॥

अहंकारी मानव मर-कर भी चैन ना पावे-और अपना अहंकार ना छिपा जावे।
अहकांर के कारण, रूह फिरे भटकती, चैन किसी लोक में, ना पावे॥

ईश्वर मानव को, यह भी नहीं कहते, कि मानव हर वक्त, मुझे भजता रहे।
ईश्वर तो है, मानव जीव के अन्दर-वह तो खुद ही धधकता रहे॥

ना भजो, किसी भी ईश्वर का नाम-ना बनो विद्वान।
ना जलाओ, किसी देव की ज्योत-ना करो किसी का ध्यान॥

बस एक काम करो, हे ईंसान-अपने अन्दर का बाणा रंग ले।
ना कर, किसी से बैर द्वेष-दूसरे को सुखी देखकर, खुदी का बाणा रंग ले॥

ना रख, किसी से बैरभाव, हिंसा भाव, भ्रम से निष्ठुर कर ले।
परमपिता को चाहे, याद ना कर, पर मानव के प्रति प्रेम कर ले॥

अगर तू मानव से प्रेम करेगा-तभी भी ईश्वर भक्ति करेगा।
तेरा लगेगा स्वर्ग में आसन-और तू अपने आप में साधु भेष भरेगा॥

और रहेगा ग्रहस्थी में भी-पर सभी जींवों से प्रेम करेगा।
प्रसन्न होंगे ईश्वर भी, और जगत में प्रेम सुर भरेगा॥

ईश्वर कभी नहीं कहते, हे मानव, मेरा नाम जप ले।
ईश्वर कहते है, मैं मानव जीव के अन्दर-मानव प्रेम भाव जप ले॥

मैं, रहता हूं, ऐसे ही मानव के अन्दर, जो मानव जीव से प्रेम करे।
ईर्षा, द्वेष, हिंसा से दूर रहे, और माता-पिता से प्यार करे॥

मेरा कोई धर्म नहीं, ना मेरी कोई जात, ना दिखे मेरा कोई ठिकाना॥
मैं रहता हूं, जीव के अन्दर, प्रेम भाव में, यह ही मेरा आशियाना॥

मैं, ना दिखूं स्थूल काया में, ना मेरा, किसी को भान होता।
मैं रहता, मानव काया के अन्दर, परम आनन्द का, मैं भाव जताता॥

ना में किसी जीव से द्वेष करता, ना किसी धर्म में, ईर्ष्या बीज बोता।
हर धर्म में रहूं जाग्रत, पर मानव को, नहीं जांच होने देता॥

हर धर्म, मेरा लगावे ज़ोर से जयकारा, मैं रहूं मानव के अन्दर॥
मानव खाली लगावे, जयकारा धर्म उठता नहीं मेरा॥

मैं तो, धर्म को भी देखू अलग-अलग पहचान बनी है, मेरी।
पर खाली हो रहा है जयकारा-पर मानव से मानव प्रेम नहीं करता, बुराई करता, है तेरी॥

फिर खाली क्यों लगावे, जयकारा, ना तेरा हृदय कोमल, ना मेरे अन्दर प्यारा।
हे मानव, धर्म है, तेरे अन्दर मेरा-तू सत्य सफर कर जीवन में-और बन मानव प्यारा॥

तभी मैं धर्म में वास करूंगा, और हर मानव का ध्यान धरूंगा।
और रखूंगा हरदम अपने अन्दर, और धरती पर मंगल धार धरूंगा॥

रखूंगा हर मानव को प्रेम प्रीत में, सतयुग जैसी लहर चलेगी।
धर्म का प्रकाश फैलेगा, दुनिया में, और मानव में प्रेम की लहर जगेगी॥

घर घर में ज्योत जगेगी, धर्म की, अमल करने का सार होगा।
पृथ्वी पर प्रेम का फूटेगा अंकुर, जन जन में, ईश्वर से प्यार होगा॥

निर्माण करो, धर्म की व्यवस्था का, मानव चेतना का विकास करो।
अध्ययन करो, कलयुग धारा का, मानव सोच में परिवर्तन करो॥

देखो, इस सृष्टि को, तुम्हारे सामने क्या है, फल कड़वा या मीठा क्या भाव है।
पनप रही है, मानव के अन्दर घृणा स्रोत-कठिनाइयों के उबाल का भाव है॥

अपने अन्दर से बदल्ो, सृष्टि वासियों-समय का उफान आया है।
युग का समय परिवर्तन है, मानव जाग्रत होने का, समय आया है॥

ईश्वर का जपो नाम दिन रात, मानव दूसरे मानव से प्रेम करो।
ईश्वर से प्रेम करो, या मानव से प्रेम करो, यह सत्य है, अमल करो देर ना करो॥

सजग हो जाओ, पृथ्वी वासियों, धर्म का दरिया बहाओ।
निर्माण करो मानव, पृथ्वी पर ऐसा, जो प्रेम से जीने का सबक सिखाओ॥

उफान आया है, मानव, मानव के अन्दर, वैसा ही धरती पर आने वाला है।
कोई नहीं बच सकेगा, इस कठिन उफान से, जो भविष्य में आने वाला है॥

बचेगा, वही मानव पृथ्वी पर, जो धर्म विजय कहलाएगा।
करेगा, हर दम निस्वार्थ प्रेम मानव से, युग को सतयुग जैसा बतायेगा॥

हे मानव चेतना सार ईश्वर का बन-सतयुग का निर्माण कर तू।
ढोल की आवाज सुन कलयुग की-अन्दर की आहट फाड़ रही है, कान खोल कर सुन तू॥

बज रही है, आवाज भयानक-सुर ताण्डव जैसा हो रहा है।
बैचेनी फैल रही है, हर मानव के अन्दर-उथल-पुथल जैसा हो रहा है॥

ज्ञान सुनाने वाले की ना सुन तू-अपनी आवाज पर ध्यान लगा।
मची हुई है आफत, हे मानव तेरे अन्दर-तू अपने सुर की धुन बजा॥

तुझे तेरे किए पर होगा पछतावा-तू अपने कर्म की, चिट्ठी सुन।
लगा ध्यान अपने अन्दर-क्या क्या तू सोचता है, यह प्रवाह सुन॥

दूसरे को तू गलत बतावे, अपने को खरा बतावे तू।
ईश्वर को नीचा बतावे, और वासनाओं को बड़ा बतावे तू॥

भवंर जाल में फंसा है, हे मानव-तेरी भूल हो चुकी है।
ना तुझे अपना पता, ना तेरा कोई ठिकाना-रात हो चुकी है॥

अब कहां ठहरेगा, हे मानव अंधेरे में खोता जा रहा है तू।
ना तुझे इन आंखों से दिखता ना अन्दर से जाग्रत हो रहा है तू॥

अपने आप में देख, तेरे है कितने खोट-पहचान बता अपनी।
कितने तूने कर्म किए, दूषित और विचारों से, ओसत लगा अपनी॥

जब तेरे अन्दर कुछ भी नहीं है-तो तू ज्ञान की बातें सुन।
सुन, वह दिव्य ध्वनि दिव्य शब्दों की, अपनी जीवनी सुधार कर सुन॥

बुन ऐसी सोच, का जाल, जो प्रेम सागर में मिलता हो।
संगम हो, पूर्ण पृथ्वी वासियों का, और ईश्वर धुन में जाता हो॥

यत्न कर, हे प्रिय मानव, सुध अपनी और ईश्वर की ले ले।
कठिनायों के, भवंर में फंस रही है, दुनिया, सुघ पृथ्वी लोक की ले ले॥

दिव्य लोक से आई है, वाणी-मानव बना हुआ है, अभिमानी।
निचोड करेगी दुनिया का, और सुधारेगी ईसानों की, जिन्द गानी॥

हर धर्म के मानव सुनो, पैगाम धरती पर आया है, दिव्य धाम।
युग बदलने का समय है, यह, सुनो कलयुगी ईसांना॥

भ्रम में मत रहो, तुम्हें सजग कर रहे हैं, भगवान।
अल्लाह की क्यारी है, यह, खुदा को याद कर हे ईसांन॥

नफरत ना कर किसी से, एक जगह से आया है, ईंसान।
पैदा करने वाला, एक पिता है, और एक धर्म, एक ईश्वर की हो संतान॥

पिता बनकर पैगाम आया है, धरती पर सत्य सार सुनो, हे इंसान।
दया सागर है, यह वाणी दुख दर्द नहीं देख सकता, पिता है भगवान।।

अपने पिता को याद करो-अपनी अपनी भाषा में, हे ईसांन।
खुदा आये है, तुम्हारे दर पर-हे धरती के ईसांन।।

तुम दर्द मय जा रहे हो-यह तुम्हारी कर्नी की भूल है।
तुम्हारी भूल के कारण भटके हो तुम, यह करनी कांटों का फूल है।।

याद दिलाने आये है, दिव्य लोक से सुनो, पैगाम धरती वासी।
भूल जो तुमने की, कबूल करो धरती पर रहने वाले, संसार वासी।।

आंखों से तुम अपने आपको भी नहीं देख सकते-कैसे क्या छिपा है।
कहां जमीं है, नरक की धूल-और काई का तख्त कहां छिपा है।

कहां ढूंढ रहे हो ईश्वर को अपना, अन्दर का बाणा याद नहीं।
धूल में अटा पड़ा है, वह दरवाजा ईश्वर की कही आहट नहीं।।

दरवाजे पर बैठा है, पहरा असुरों का-बे परवाह मानव भाग रहा है।
मंजिल नहीं है, मानव की कोई कलयुग का पहिया डोल रहा है।।

हे मानव, प्रेम कर ले जगत में ना यहां कोई है पराया।।
धरती पर आये सभी कर्म करने-धरती पर रहने का देना है, किराया।।

अतिथि बनकर, आये हो जगत में एक दिन यहां से होगा जाना।
भूल भूलैया में है, भ्रमित जगत मानव प्रेम कर ले, ईश्वर से नहीं तो होगा पछताना॥

भीड़ पड़ी है, भारी मानव पर कलयुगी माया भार चढ़ा है।
संघर्षों में है, मानव व्यवस्था मानव पर पाप कर्म भार बढ़ा है॥

पुण्य करले इस धरा पर विद्या का अनुपान कर ले।
घर-घट में ईश्वर प्रेम कर ले मानव से, निस्वार्थ प्रेम कर ले।

युग से करले मीत ईश्वर के गाओ मन में गीत।
सरल स्वभाव रखो अपना मानव के बनो मीत॥

ना बोओ, बीज अधर्म के कांटो में उलझ जायेगी दुनिया।
ना कोई, सहारा बनेगा उलझ पुलझ कर मर जायेगी दुनिया॥

ना कोई यंत्र किसी के काम आयेगा, ना मानव पर दया भाव आवेगा।
खुद ही ने बोया है, बीज अधर्म का, कांटों की सेज बनायेगा॥

खुद ही पर करो विचार-कहां पर रहा है मानव बेकार।
ना पता कुछ, क्या लेने आया जगत में, ना कोई है आधार॥

बस भागा जा रहा है, मानव अन्दर की स्थिति है दागदार।
दूसरों की बुराई करे, मानव अपने आपको बतावे सदाचार॥

घुल रहा है, जहर युग धरा में, बन रहा है प्रलयकार।
ओसत नहीं लगा सकेगा कोई, धरती, पर अधर्म बढ़ रहा है बेशुमार॥

इसी कारण धरती हिलेगी महासागर करेगा, दुनिया पर वारा।
पर्वत धरती में सरक रहे हैं-धरती पाताल में जा रही है, बेशुमार॥

मानव नहीं सोचता, क्यों ऐसा होता है, क्यों मानव अचानक रोता है।
करनी का है, फल अधिक मानव मौत का रास्ता बोता है॥

ना छेड़खानी करो, प्रकृति से, यह विषैली बन जाएगी।
खा जायेगी, बस्तियों को और धरती पर उफान लायेगी॥

समय के अनुकूल ढालो, अपने आपको प्रयत्नशील बन जाओ।
अपने आपको करता मत समझो, ईश्वर के अनुकूल ढल जाओ॥

ईश्वर है, सभी के पिता धरती उनकी बसाई हुई है।
मानव ईश्वर ने बसाया धरती पर, यह विधि ईश्वर की बनाई हुई है॥

अहंकार मत करो, अपने ऊपर मानव अपना अहंकार छोड़ दे।
सृष्टि में ना हस्तक्षेप करे, धरती पर ईश्वर का ध्यान, जोड़ दे॥

यत्न कर, हे मानव तेरा कुछ नहीं, सब कुछ ईश्वर पर छोड़ दे।
बुद्धि दी है, तुझे ईश्वर ने अध्ययन कर, मूर्ख बनना छोड़ दे॥

सन्त है, तू अन्दर से, सत्य धर्म दुनिया में जोड़ दे।
पुण्य में जीना है तुझे, अधर्म का रास्ता छोड़ दे॥

मन से मीत बन मानव से, ईश्वर में प्रीत जगा तू।
परमेश्वर तेरे साथ है हर दम, प्रेम का स्वर धर्म पर जगा तू॥

अद्यम है तेरा शरीर ज्ञान के बिना।
ज्ञान अगर तू पावे, तो शरीर ना रहे, ईश्वर के बिना॥

इस काया की किसी को चाहत नहीं, यह जल भुन जाती है।
हर बार बनती बिगड़ती रहती, अमर पद नहीं पाती है।

जो रूह, तुम्हारे अन्दर है भरी वह अमर अज़र सार है।
वहीं होता है, अमर जगत में जो ईश्वर का दावेदार है॥

आत्मा है, ईश्वर चेतन्य-ईश्वर का भोजन अमर धार है।
इसी आत्मा में बैठे परमात्मा, यही ही, विश्व प्रकाश सार है॥

करमों के कारण, प्रकाश धुन्धला पड़ता, ना देता कुछ दिखाई।
कहां जा रहा है, मानव इस धरा पर, रोज ले रहा है विदाई॥

मानव, जब भवंर में जाता है, तभी, ईश्वर देते है ज्ञान।
उसी, ज्ञान से मानव चक्षु खोले, उसी से होती ईश्वर की पहचान॥

मन घड़न्त जीवन नहीं है, यह असीम कृपा का फल है, यह।
बड़ी मेहनत से मिलता है, मनुष्य जीवन ईश्वर का कमल दल है॥

जीवन है, अनमोल धरा, पर सम्पूर्ण मानव जाती भूल रही है।
रहती है, हर दम अपने ख्याल में, डूबी, धरती की फिरनी डोल रही है।

कौन समझायेगा, मानव को निर्गुन में है परमात्मा।
संत भेजे है, धरती पर ईश्वर ने, शुद्ध करो अपनी आत्मा॥

प्रगट करो अपने अन्दर, सतयुग की आन्दमयी धारा।
प्रज्वलित होगी, इस युग में, मानव देह के द्वारा॥

ध्यान करो, पुष्प खिलाओ धरती पर, तुम्हारा सुन्दर जीवन होगा।
करेगा प्रेम मानव, मानव से, निस्वार्थ भाव से तुम्हारा मन होगा॥

खुद ही का खुद सहारा बनो, तभी युग सुधर पायेगा सारा।
यतन करोगे वीरो की तरह, फले फूलेगा भारत, धरती का सवेरा॥

भारत की गूंज है, पैराणिक, इस सम्पूर्ण सृष्टि में फैलाओ।
प्रथम में भारत का खण्ड जन्मा, इस सत्य को दुनिया में फैलाओ॥

दिखाओ चमत्कार दुनिया में, कैसे खिली है भारत भूमि।
कैसा बीज बोया था ईश्वर ने-कैसे बनी थी भारत भूमि॥

खुद सृष्टि करता आये थे, अपने पद से, चले थे, किया था निर्माण।
खुद ही किया था, संस्कार योग, धर्म प्रचालित, किया अध्यात्मिक निर्माण॥

भारत भूमि पर, दरख्त भी पून्यनीय है, हर दरख्त में कमल दल खिला हुआ।
हर कण-कण में रस भरा प्रेम का, हर नर पैदा होता खिला हुआ।।

भूल हुई है, भारत भूमि की संतानों की, मानव अपने अन्दर समाया है।
है सभी संत यहां पर, नर नहीं है, नारायण का संस्कार पाया है।।

भूल हुई है, इस धरती पर, मानव तभी भ्रम जाल में आया है।
स्वर्ग सी धरती है, भारत भूमि-दिव्य लोक से याद दिलाने, ज्ञान आया है।।

मुक्ति भेदन, और शक्ति भेदन, और मोक्ष का द्वारा खुला है।
हर मानव, ज्ञान की बाते समझे, तो स्वर्ग का मुंह खुला है।।

इस धरती पर दिया है, दिव्य फूल, कर्मों से मानव ने चढ़ा दी है, धूल।
धूल से अटी पड़ी है, भारत भूमि, और हो रही है, भारतवासियों से यह भूल।।

सगमरमर में भी, श्रद्धा भाव से, ईश्वर प्रगट हो जाते हैं।
मिट्टी की मूर्ति बनाओ, इस भूमि की-ईश्वर जागृत हो जाते हैं।

भारत भूमि में दाना डालो, जहां पर भी, उपज से खेत लहराते हैं।
हवा चले मीठी-मीठी, प्रेम का भाव फैलावे, भारत भूमि को भाते है।।

हर कण कण में रम रहे हैं, ईश्वर, मानव का हर दम, सहारा बनते हैं।

देखते रहते है, हर जीव को कष्ट तो नहीं, वे ही ईश्वर है, जो भारत भूमि में रहते है॥

हे भारतवासियों समझो, पूर्व धर्म की बात, और-चढ़ाओं धर्म की जात।

ना लड़ो आपस में, वैर ना करो, तुम सबसे प्रिय मानव जात॥

इसी खण्ड में वजूद रहता है, ईश्वर हरदम फेरी लगाते हैं।
दिखते नहीं, किसी को प्रकाश में, दिव्य चमकते हैं॥

ईश्वर को देख सकता था, समय ऐसा था, जब प्रावीण।
धर्म था, भारत भूमि पर, योग सनातन, और मानव था, विश्वजीत॥

अब इस कलयुग में, मानव में भरा हुआ है, अहंकार।
ना भाव रहे ईश्वर में-और ना दिखे ईश्वर द्वार॥

ईश्वर का प्रगटीकरण

हे ईश्वर प्रार्थना सुनो मेरी, शब्द ऐसे लिखवाओ।
ज्ञान फैले दुनिया में, और अपना नाम याद कराओ॥

यत्न करो पिता हो, तुम जगत के, मानव जो सन्त हो, मिलवाओ।
करो सहायता मेरी, ज्ञान फैलाने में, ऐसी शक्ति भिजवाओ॥

मेरा काम नहीं है, यह ज्ञान फैलाने का, मैं क्यों चिन्तित हूं।
ज्ञान दिया है, तुम्ही ने भगवान, तुम्ही के, मैं बोलूं, मैं क्यों चिन्तित हूं॥

आप अपना कार्य करो सफल, प्रभु मुझे करने का वरदान दो।
सुने इस ज्ञान को जगत, मेरे, मुख से, ऐसा विधान दो॥

मुझे दो शक्ति भगवान, मैं इस ज्ञान को फैला सकूं।
जो बोलू मुख से ज्ञान, तुम्हारे प्रगटि करण से सुना सकूं॥

ज्ञान फैलाने में मेरी करो मदद, शक्ति का विधान बनाओ।
मेरी सहायता करने के लिए, मनुष्यों का समूह बनाओ॥

तू ना डर, किसी से, भरमण कर तू दुनिया में।
हर कोई तेरी वाणी सुनेगा, तू फैला इसे दुनिया में॥

मैं रहूंगा हरदम साथ तेरे, तुम्हीं के अन्दर बोलूंगा।
सहारा दूंगा तुझे मैं हरदम, हर हर भी मैं बोलूंगा।

तू रख बाहर, घर से पग अपने, निहार, सृष्टि कहां जा रही है।
तुझे रोकना है, उस रास्ते से, सृष्टि भवंर कुण्ड में जा रही है॥

मैंने ही सृष्टि को बनाया, मैं ही इसका पिता हूं।
मुझे ही दर्द हो, मानव दर्द में मैं ही विद्याता हूं॥

मैं ही तेरे अन्दर आया हूं, पैगम्बर बनकर, रास्ता समझाने के लिए।
माया मोह अहंकार में फंसी है, दुनिया, आया हूं, बाहर निकालने के लिए॥

मेरे पुत्र तू दुखी मत हो-ना डर इस जहान से।
अपना पग आगे रख, चल राही, मैंने तेरी बना दी जगह, इस जहान में।

तुझे तो स्थूल में खड़ा किया है, मैंने-धुन तो तुझे बजानी है।
ज्ञान का सुर भी मेरा है-और जिसे ज्ञान देना है, तुझे, वह भी मैंने बसाई है॥

पर है, समय का फेरा, मेरा प्रिय मानव बैठा है, नरक कुण्ड का डेरा।
मैं निकालने आया हूं, सृष्टि को, नरक कुण्ड मार रहा है फेरा॥

हल चल मची हुई है, धरती के ऊपर, नीचे दबाव बढ़ रहा है।
सोच का दरिया, पाप, भ्रम, मिथ्या, और असुरो में जा रहा है॥

मैं ही, मैं हूं, इस सृष्टि का पिता, सभी धर्म का विद्याता हूं।
मेरा नाम है, काल भगवान, मैं ही सृष्टि बनाता हूं॥

मैं ही सृष्टि करूं पैदा, और मैं ही संहार करता हूं।
मैं ही पालन करूं सृष्टि का, मैं ही जन्म सार कहलाता हूं॥

मैं ही सन्त, रज, तम में वास करूं, मैं ही इसका दाता हूं।
मैं ही पांच तत्व में जीव ढालू, मैं ही सृष्टि नियम बनाता हूं॥

मेरे द्वारा ही सृष्टि चलती, मेरे द्वार ही रुकती है।
मैंने ही विधान बनाया, धर्म का, यह मेरी ही शक्ति है।

मैं ही राह दिखाऊं, इस जगत को, मैं ही मुक्त कराता हूं।
मैंने ही लोक बनाये, अलग-अलग, मैं ही मोक्ष दिलाता हूं॥

मैं ही पैगम्बर, बनकर पैगाम धरती पर पहुंचाता हूं।
भटक जाती है, मेरी बनाई हुई सृष्टि, तभी मैं ज्ञान समझाने आता हूं॥

निकालता हूं, मानव के ज़र्रे-ज़र्रे से कड़वाहट का दरिया।
माप, मापी नहीं जा सकती, मानव की, आज की विपत्तियां॥

विपत्तियां आने वाली है, जगत में, मैं ज्ञान समझाने आया हूं।
मानव है मेरा प्रिय प्राणी, मैं यह ज्ञान जताने आया हूं॥

मेरी बनाई हुई, सृष्टि, में टूट रही है, मेरी क्यारी।
टुकड़े टुकड़े हो रहे हैं, धरती रो रही है सारी॥

पाप बढ़ रहा है, मेरी बनाई सृष्टि में, यह मेरा विधान नहीं।
मैंने बोया है, बीज सृष्टि बनाने में, अधर्म कोई विधान नहीं॥

मैं सृष्टि को, दर्द में भी नहीं दिखा सकता, ना बिना ज्ञान के समझा सकता।
विनाश ना हो मेरी सृष्टि का, यह मैं स्थूल कर, दिखा ना सकता॥

विनाश का मुझे पता है, कैसे सृष्टि में होता है।
उसे रोकने का जरिया, मानव जात के पास होता है॥

मैंने धरती का विछौना बनाया, इस पर मानव को बसाया।
धर्म स्थापित किया मानव के अन्दर, और मुक्ति मोक्ष का, भेद भी बताया॥

मानव रहा बार-बार अपनी करनी कर्त्ता, बनकर, मानव ने धरती पर पाप कराया।
कुछ समय तक चला ईश्वर धर्म पर, फिर अपनी काया से, मनमानी कराया॥

पाप झूठ, फरेब, बेईमानी में फंसा मानव, लोभ, लालच, मोह के वश में आया।
भूलने लगा मेरा विधान, धरती पर आने का, पाप धरती पर बढ़ाया॥

मैं ही संचारित करता हूं, सृष्टि को, धरती को घुमाता हूं।
चन्द्र सूर्य मेरे कहने से उगते, मैं ही इनका रखवाला हूं॥

बनाया दिव्य लोक, मानव के कारण, इसी लिए मानव मेरा, प्रिय प्राणी है।
पाप गर्त में जा रहा है, मानव, तभी तो, मेरी आई वाणी है॥

समय की धारा है, यह सब सृष्टि में बसने वाला, सत्य में ढल जाओ सभी।
बच जाओगे, पृथ्वी पर उफान से, ज्ञान की वाणी सुनो सभी॥

मानव जब धरती पर अपनी मनमानी करे, तभी सब कुछ कष्ट घटता है।
मेरा विधान तो है, धर्म का, मानव धर्म से हटता है॥

मानव के अन्दर मैंने भरा है, विधान, सभी है, आत्मा से विद्वान।
नहीं चलते धर्म के ऊपर, बीज बोते है, धरती पर अधर्म वान॥

मेरे हाथ से निकल जाता है, मानव जब धर्म से हट जाता है।
मेरे अन्दर तब तक रहता है, मानव, जब तक धर्म में रहता है॥

धर्ममय में ही सृष्टि करता, पालन करता, संहार का रास्ता मेरा है।
सृष्टि करता इसलिए हूं, कि धरती पर, धर्म ज्योति का रास्ता, मेरा है॥

बसाता हूं, धरती पर जीव को, पालन करने का धर्म मेरा है।
विनाश की स्थिति खुद करे पैदा मानव, यह भी धर्म ना मेरा है॥

धर्म पर अगर चले मानव, सदैव युग टूट नहीं सकते।
आयु बढ़ती रहती है, युग की, मानव अर्ध मृत्यु मर नहीं सकते॥

यह सृष्टि, खुदा की खुदाई है, दुनिया धर्म के आधार पर बसाई है।
खुदा जीव में बसा, और धर्म की ज्योति, अमर अजर बनकर लहराई है॥

मानव का अन्दर से अशान्त रहना धरती पर उसी के आधार पर उफान आना।

मानव का मन सुन्दर होगा धरती पर, उमंग प्रेम संग होगा।
धरती पर पुण्य होगा, निर्भय होगा और सतयुग, जैसा युग होगा॥

जिस युग में, जैसा मानव का मन होगा, वैसा ही धरती पर युग होगा।
धरती पर ना आपदाये होंगी, और मानव ना, अर्धमृत्यु दण्ड होगा॥

जैसा युग है, भ्रमित मानव का परिचय, ऐसे युग में, कठिन मानव जीवन होगा।
ना सदाचार रहा, मानव के अन्दर, धर्म का आसरा, झूठा ढोंग होगा॥

मानव मन अशांत परिधि में घूमे, युग भ्रमण कर रहा है।
घूम रही है, धरती अपनी धुरी में, धरती का आसन डोल रहा है॥

मुख बोल रहा है, मानव मंत्र, मुग्ध वासनाओ का मन होगा।
शब्दों के जाल में नाच गा रहा है, मानव, दिखावे का जग में संग होगा॥

मानव के ऊपर है निर्भर, धरती पर जीवन कैसा चाहिए।
जैसा कर्म करेगा, मानव, वैसा ही जीवन बनाइये॥

सब कुछ है मानव के अन्दर, धरती पर फुलवारी खिली है।
उस फुलवारी का है, रखवाला मानव, यह मानव को पूर्व कर्मों के, वेग से मिली है।

सम्पूर्ण जगत में समय की है फेरी, समय के अनुसार, मानव जन्मता है।
कभी ज्यादा वीर होते हैं, धरती पर, कभी योग जन्मता जाता है॥

कभी सत्य लगावे फेरी, धरती पर, कभी झूठ मानव बोलता है।
कभी मानव प्रेम करे जीवन में, कभी नफरत का समय डोलता है॥

हर समय चलता रहता, युग का पहिया, मानव जीव आते रहते, जाते रहते।
समय के अनुसार, मानव आता है धरती पर, जो भी कर्म बनते, बिगड़ते रहते॥

उसी के आधार पर, मानव लेता जन्म, युग में, जैसा परिवर्तन चाहते।
जिसके समय में, जो घटना घटती, वह घटना, कर्म के अनुकूल बहते॥

पहले कभी मानव आये थे, उस समय, उनके अनुसार घटना घटी।
जो अब मानव है, पृथ्वी पर, उनके सामने, वह घटेगी, जो अब तक घटी॥

वह घटना ही बढ़ती जाती, धरती के ऊपर, धर्म अधर्म की मोहर लगाती॥
ओर जैसा बोकर गया था मानव, उसी के आधार पर मुसीबत, चक्कर लगाती॥

आज जो भी मानव है, धरती पर, वह सन्त पूर्व गुणवान है।
आया है, ऐसे समय पर, जिस समय धरती पर, आना उफान है॥

घटना घटेगी जरूर, दुनिया में, धरती पर से सन्त-मानव घट जायेंगे सभी।
जो करेगा ईश्वर से प्रेम, और मानव प्रेम में, बन्ध जाएेगा सभी॥

इन्हीं मानवों में से घटेगी, सत्य धर्म पुरुष पुराण।
सत्य की नगरी बनेगी, भारतभूमि, सत्ययुग लेगा, पुण्य का विधान॥

पुण्य में फूल खिलेंगे, धरती पर, मानवता का विकास होगा।
अध्यात्मिकता की लहर फैलेंगी, दुनिया में, भारत का नाम होगा।

गुणी मानव होंगे, भारत भूमि पर, जो है अभी छंटकर उन्हीं में से सत्य विकास होगा।
अमल करेगे दिव्यवाणी, भारत भूमि पर, इसी में जो ढलने का, प्रमाण होगा॥

वह ही रहेगे भारत भूमि पर, जिसका सत्य में विश्वास होगा।
दयावान वीर, सदाचारी होंगे सभी, जिसके कर्मों में, यह विधान होगा॥

जो भी, वर्तमान में जीवन जी रहे हैं, वे ही सन्त बनेंगे।
करेगे सम्पूर्ण धर्मों का विकास, और एक ईश्वर में ध्यान धरेंगे॥

एक ईश्वर एक पिता की संतान समझेंगे, सम्पूर्ण पृथ्वी पर धर्म प्रचार करेंगे।
युद्ध स्तर पर धर्म विजय गाथा होगी, पुण्य के भण्डार भरेंगें॥

सभी है सन्त यहां पर, भूल भूलैया की नगरी है, यह।
खुद ही मानव को पता नहीं, सत्युग की नगरी है, यह॥

इस युग में जो भी है मानव, वह है बड़ा भाग्यशाली।
उसे कलयुग से जाना है, सतयुग में, यह बात है, आश्चर्य वाली॥

इस युग के मानव को अगर कहें, कि तू है सन्त फकीर।
क्यों भाग रहा है, माया के पीछे, क्यों पीट रहा है, झूठी लकीर॥

वह मानने को तैयार नहीं है, भूल भूलैया की खीर।
खाये तो डर लागे, और ना खाये, तो आफत की मचेगी भीर॥

इस युग को सुनाने आई है, वाणी दिव्य लोक की सत्य वाणी।
जो मानव इस पर करेगा विश्वास, उसकी सत्य में बदल जाएंगी ध्यानी॥

हे, भारत वर्ष के मानव महान, सुन दिव्य वाणी जान।
अपना कर्म सुधार कर, धर्म पर लगा सत्य धर्म की जुबान॥

ऐसा समय आया है, धरती पर कुछ दर्दमय फंसेंगे, कुछ संत परख बनेंगे।
चलेगा वही ही, जो कर्मों के अनुसार सत्य धर्म में ढलेगें॥

भारतभूमि पर रचा जा रहा है, यह दिव्य वाणी का कुम्भ।
इसी के निर्देश में चलेगा, जो मानव वही बनेगा महाकुम्भ॥

आशीर्वाद दिया है, ईश्वर ने, बता दिया कि, सन्त इस धरती पर जीते हैं।
उन्हें ज्ञान नहीं है, भ्रम जाल में हैं, अनभिज्ञ, होकर सोते हैं।।

उन्हें जगाना होगा, यह है मेरा पैगाम सुनो, भारत भूमि के इंसान।
जागो पैगाम आया है, धरती पर, तुम हो, सतयुग की सन्तान।।

धरती की पुकार सुनी है, दिव्य लोक में, यह धर्म वीर चाहती है।
बोझ के तले दब रही है, धरती और नदियां शुद्ध हवा में, बहना चाहती है।।

पर्वत रो रहे है, अपने ऊपर, रसातल में घुसे जा रहे हैं।
हिमालाय हो रहा है रोज नीचा, अपना धर्म खो रहे हैं।।

सृष्टि हिल रही है, अपनी जगह से, पाप कर्म के कारण।
छेड़छाड़ हो रही है, प्रकृति से मानव बुद्धि विकास के कारण।।

अपनी चाहत में मानव काट रहा है वृक्ष, नपुंसक कर रहा है।
बीज मिटाने पर तुला है, मानव जा पहुंचा, पर्वतों की गुफाओं में।।

दमका रहा है, धन दौलत का दिया, पर्वतों की कन्दरओं में।
अपनी कामनाओं के कारण, दीप बुझने वाले हैं, मानव जिन्दगानियों में।।

कोई तो इस जगत में धर्महीन, मानव, असुरों जैसा भाव।
और कोई सन्त बनकर आया, मानव का, सन्त जैसा भाव।।

कोई मानव ना माने बात ईश्वर की, चाहे भारत भूमि गर्त में जा।
कोई मानव ऐसा सन्त है, भारत भूमि में, सृष्टि में, मानव सुख से जीये जा॥

दोनों प्रकार के, स्वभाव के मानव, भारत भूमि में भरे पड़े हैं।
सन्त पुरुष भी है, अनेको, और असुर चित्त के भरे पड़े हैं॥

जो जगेगा सन्त बनकर, वह ही सन्त पुरुष कहलायेगा।
समय की धारा है, यह जिसका जिम्मा, जो दिया है, ईश्वर ने वह वही सहलायेगा॥

ऐसा युग है, यह सभी मिली जुली है, सन्तान भारतभूमि में।
कोई सतयुग में परिवर्तन करने आया है, युग को, और कोई भाव मानव, मानव को मिटाने में।

जो भी धर्म भाव भरेगा, वह समझो, सतयुग से आया, नाम लिखवाया।
और जो अधर्म में विश्वास करेगा, वह जब तक भटकता रहेंगे, जब तक ऐसा युग नहीं चलेगा॥

समय है, बहुत कम भारत के निवासियों, अपनी पहचान करो।
मानो दिव्य शब्दों की वाणी, और अपनी, और विश्व की पहचान करो॥

ऐसा मिला जुला युग कभी नहीं आया, जो वर्तमान में लहरा रहा है।
सतयुग, सन्त भाव के मानव भी इसमें रहते, और वे भी रहते, जिसके कारण युग चरमराया है॥

युग चरमरा रहा है, धरती पर अहंकार की धुल चढ़ी है।
संत बनकर आया है, जो भारतभूमि पर, उसकी काया पर वासनाओं की पट्टी चढ़ी है।

ना याद है, वह भारत भूमि, जिसमें पग पग पर, धर्म का झण्डा लहरा वे।
इसी धरा पर अवतार हुए, और गंगा जल पावन अमृत बनकर, बहता जावे॥

धर्म का झण्डा ऊंचा इतना, हिमालय की चोटी पर रंग बरसावे।
मानव है, संस्कारों में इतना ऊंचा, संगीत नृत्य से, ईश्वर को भी बहलावे॥

भारतभूमि पर आने का गोरव, सभी को प्राप्त नहीं हो पाता।
जो करता है परोपकार दुनिया में, वही मानव यहां, जन्म लेकर आता॥

सर्वगुण सर्वसम्पन्न ही भारतभूमि, सदाचारी सत्यगुणी, मानव जन्म लेते है।
अलग अलग बाणा पहनें, धरती के खण्ड खण्ड में, और साधु ईश्वर धुन में रहते है॥

गीत गाते ईश्वर प्रेम में, और भगति भाव में जीवन जीते।
प्रेम करते पेड़ पोधों से भी, और अपनी ऊर्जा से, भारत भूमि को सीचें॥

गोरवशाली है, यह भारत भूमि, अनन्त है पैराणिक प्रमाण।
मानव भूल गया है, अपनी माता की गोद में, शक्ति का पैगाम॥

हे, भारत भूमि के सपूतों, खोलों अपनी अन्दर की गुत्थियां।
जो पौराणिक स्त्रोत में ढली है, हर मानव के अन्दर सिद्धियां॥

भ्रम में मत रहो, जगाने का समय है, जागों पौराणिक धरती वासियों।
पैगाम सुनों, ईश्वर की वाणी धर्म के अन्दर ढाले, मानव प्रेम में, धरती के निवासियों॥

इस धरा पर, तुम अपने लिए नहीं आये हो, सम्पूर्ण धरा को बचाना है।
तुम्ही के ऊपर डाला है, ईश्वर ने यह पर्व, सम्पूर्ण सृष्टि में प्रेम बहाना है।

मानव बन गया है, मशीन, काया से भी छेड़छाड़ कर रहा है।
बीमारियां अनेकों पनप रही है, मानव के अन्दर, दर्दमय, रो रहा है॥

प्रथम में अपने आप पर करो विश्वास, धर्म पर मानव डोल रहा है।
करता है, धर्म की बात भारत भूमि पर, मानव का अहंकार बोल रहा है॥

खुद ही की करो पहचान, तभी लगा सकोगे, पृथ्वी पर धर्म का निशान।
खुदा की दी हुई जिम्मेदारी समझोगे, तभी लगा सकोगे, सम्पूर्ण पृथ्वी पर अजान॥

सभी धर्म के मानव है, भारत भूमि पर, सभी जीव एक समान।
सभी की काया है, धर्म पुरूस्कार, सभी प्रथम ईश्वर की संतान।।

सभी को वरदान दिया है, इस भूमि पर तुम करो अपनी पहचान।
इस मुल्क पर दया करो, ना तोड़ों विधान, प्रेम से जियो हे ईंसान।।

इस मूल्क में सभी धर्म के मानव रहते, संग-संग जीते, संग-संग मरते।
हर धर्ममय झण्डा ऊंचा करो, चाहे हिन्दु हो या मुसलमान, या इशाई बौध, सिंखों, की नानकदेव, ने दी नूर की परछाई।।

सभी मानों बात ईश्वर की, सभी अपना अपना काम संभालों।
और फैलाओं सम्पूर्ण धरती पर, प्रेम धर्म का संगीत बजा लो।।

सभी है, एक ईश्वर की संतान, सभी धर्मों में, अपना अपना ईमान।
सभी को कृत्य निभाना है, अपना अपना, ऊंचा करो मानव का स्थान।।

सिखाओं सभी को धर्म पर चलना, ईमान पर चले, और ईसांनों को दे शांति प्रवान।
यह धरती किसी एक धर्म की नहीं, यह सभी धर्मों के मानव की है, पहचान।।

सभी धर्म प्रेम करो धरती से, सभी है इस धरती की संतान।
सभी को एक जुट होकर करना है, प्रस्थान, हे इस मुल्क के सच्चे ईसांन।।

पैदा किया है, सभी को इस भूमि ने, यह सभी की माता जननी है।
ना यह किसी धर्म से नफरत करती, इसने तो सभी नर नारी जन्मी हैं॥

सभी को मिलकर, इसे अधर्म से कराना है मुक्त, धर्मवान।
फर्ज बनता है, सभी धर्मों का, सभी लगाओ ईश्वर से अज़ान॥

सभी को पहुंचाना है, पैगाम दुनिया में, शान्ति से रहो सभी ईंसान।
ईंसान, ईंसान से प्रेम करे, ईश्वर अल्लाह सभी एक भगवान॥

कोई नहीं आया है अलग से, सभी है, ईश्वर की सन्तान।
सभी में लहू बहे लाल लाल, और सभी है, एक सूर्य का विधान॥

जल की धारा, एक रंग से भरी, मिट्टी का सबूत, तुम्हारे सामने है।
इसी मिट्टी से सब कुछ है, निकलता, और इस मिट्टी से तुम जन्में है॥

इसी मिट्टी के बने, घर में वास करते, इसी मिट्टी में दफन हुए हैं।
इसी मिट्टी में लकड़ी बनती, इसी लकड़ी से, हिन्दू मृत्यु परान्त जले हैं॥

इसी मिट्टी में तुम पैदा होते, इसी मिट्टी में मर जाते है।
इसी मिट्टी से पालन होता, तुम्हारा, इसी मिट्टी को युग बताते हैं।

आपस में मत लड़ो, एक भूमि पर पैदा हुए तुम, भाई भाई हो, और हो ईंसान।
मोहब्बत करो आपस में, नफरत ना करो, किसी से, हे भारत की जन्मी सन्तान॥

मुल्क में कठिनाइयां आने वाली हैं, सजग हो जाओ, हे ईंसान।
अल्लाह को सच्चे मन से याद करो, और ईसांन को प्रेम करो, हे ईसांन॥

अल्लाह ईश्वर एक ही है, और ईसांन, ईसांन भी एक ही है।
दोनों में फर्क कौन बतावे, हे ईसांन चाहे अजान हिन्दी में लगा या उर्दू में, या फारसी में, या अरबी, में हे ईसांन॥

शैतान मत बन तू, धरती पर जन्मा है, तेरी भी माता है, हे ईसांन।
किसके लिए तू, ईसांनों से करता है, नफरत, यह केसा है तेरा ईमान॥

इस मूल्क में, कोई अगर बेकसूर मरे ईसांन, क्या दर्द नहीं पहुंचता घर में बैठे, हे ईसांन।
तू खुद ही बता, क्या यह खुदा की खुदाई है, क्या यह है तेरा ईमान॥

तूने ही बीज बोया है अधर्म का, तभी यह युग भुगतेगा इम्तिहान।
ना समझ सका, अगर मानव इस धरती को तो इस दर्द को खड़ा होकर देखेगा ईसांन॥

और मानव ईसांन खुद ही कहेगा, पुकारेगा खुदा को, ईश्वर को बचाओ भगवान।
कोई नहीं सुनेगा पुकार मानव की, घबरा उठेगा धरती पर ईसांन॥

पहुंचा, अपना पैगाम धरती पर, अपनो को समझा हे ईंसान।
अपने से अलग निकल कर देख, खुदा ईश्वर भगवान कहां पर हैं, हे ईंसान॥

देख रहे है, दुनिया को, कौन कैसे जीवन जी रहा है, ईंसान।
कौन किसको पहुंचा रहा है दर्द, कौन किसी को सता रहा है, ईंसान॥

पुण्य कर लें, इस धरा पर, मानव तेरा होगा, ईश्वर में निर्माण।
धरती पर आया है, तेरी है पहचान युग में, तू ना कर अभिमान॥

पंथ बदल अपना, विवेक धर्ममय, सत्य धर्म अपनाले अपना।
सत्य से कर मोह जगत में, सत्य ही सार है, और ईश्वर है अपना॥

मार्ग बदल इस धरा पर, धरती को पुण्य में बदल दे।
प्रेम बन्धन में, बांध मानव प्रणाली, को युग धर्म मय बदल दे।

कंठ में प्रेम शब्दों का सुर बजा, भाव ईश्वर में जगा दे।
सन्त बनकर रह दुनिया में, शंख नाद धर्म का बजा दे॥

पवन में भी गन्ध ना हो, ऐसा सुर सृष्टि में बजा दे।
महक उठे धरती सारी, ऐसा प्रेम गीत सुना दे॥

भारत के वासियों के लिए पैगाम

भ्रम त्याग दे, असत्य है सपना सत्य भाव की मोहर लगा दे।
मानव ऐसे जिये इस धरती पर, भारत भूमि को योग से सजा दे॥

यत्न कर हे मानव, है कठिन कार्य, आरम्भ कर, साहस से, दिया जला दो।
दिया जला सत्य धर्म का, भारत भूमि पर, विश्व जात को, यह पुण्य दिखा दें।

इस मिट्टी की महक से, सत्य जगा तू, सम्पूर्ण पृथ्वी पर सजा दे।
सुगन्ध से महकेगा, विश्व सारा, शक्ति है, तेरे अन्दर, ऐसा पुष्प खिला दे॥

दर्द बढ़ा है, सम्पूर्ण पृथ्वी पर, मानव जात का दर्जा घटा है।
पूर्ण, सृष्टि में एक भारत भूमि के मानव का, गौरव शाली मान बढ़ा है।

हे मानव, भारत भूमि पर, वास करने वाले, तुम्हे ही ईश्वर भनक मिली है।
तुझे ही दिया है, वरदान विश्व जात के लिए, तुम्ही से विश्व ज्योत जली है॥

कृर्त्तव्य कर पूर्ण, हे भारत की संतानों, ईश्वर की वाणी को मानो।
पैगाम दो दुनिया में शान्ति पथ का, यह ईश्वर की सत्य वाणी जानो॥

सम्पूर्ण धर्म में, मानव प्रेम बहें, विकास मानव जात का होय।
धरती ना डोले, अपनी जगह से, युद्ध आपस में ना होय॥

गुणगान करो, ईश्वर का सभी, फल फूल जायेगी यह दुनिया।
विकास होगा धर्म पर, मानव जात का, और कठिनाइयों से बच जायेगी दुनिया॥

अपने अन्दर से, वह असत्य निकालो, जो युग में दबा पड़ा है।
उस स्वर्ण खान को जानो, जो भारतभूमि में अन्दर जड़ा है॥

भेष तो है, तुम्हारा भी एक ही तरह का, पर दूसरे खण्ड का, अन्दर से चित्त एक तरफा।
पर, तुम तो हो भारतवासी, तुम तो सृष्टि को दोगे प्रेम तोफा॥

नदियों की तरह प्रेम बहाओ, दुनिया में, सम्पूर्ण विश्व है, तुम्हारा ठिकाना।
तुम रहते हो भारत भूमि पर, तुम्हें सोंपा हैं, विश्व को जगाना॥

विश्व जगाना है, तुम्हें, भारतवासियों, तुम हो प्रथम संन्तान।
ईश्वर ने तुम्हें सोंपा है, जिम्मा, बनाओ सृष्टि में धर्म मानव विधान॥

नर को दो नारायण बनने की शिक्षा, और धर्म युक्त कर्म हो।
प्रेम करे नर से नर, और धरती पर पुण्य युक्त, धर्म हो॥

मानव जात एक जात माने, विश्व में, एक सूर्य का प्रकाश जानो।
ईश्वर एक पिता सबका, गुण, चरित्र, सभ्य, संस्कार युक्त संसार मानों॥

सृष्टि के मानव का सुख सागर मन्थन प्रेम

पुष्प खिलाओं इस धरा पर, अमन चैन में, मानव स्वभाव खिलाओ।
मुक्त कराओ, अपनी पाप करनी, धर्म के उपर, मानव जीवन बिताओ॥

विश्व धरा को बनाओ पुष्प पुंज, गीत ईश्वर के सुरीलें, मीठे गाओ।
मानव फंसा है, अहंकार में, अध्ययन अध्यात्मिक पर्व में कराओ॥

गुणगान गाओ ईश्वर प्रेम का, शुभ चेतन्य रमणीक, धरा बनाओ।
सहनशक्ति से भरो धरती को, मानव ऐसा सत्य प्रमाण बहाओ॥

सत्य बनाओ, नीव धरा क़ी, अमर अजर अनुष्ठान बनाओ।
पवित्र बनो, अपने अन्दर से, गुणधारा, अपने अन्दर बिठाओ॥

पुष्प खिलाओ अपने आन्त्रिक में, जो कमल की तरह खिला हो।
महके धरती सारी पवन पुंज में, जहां आपस में, धरती का मानव मिला हो॥

खिलाओ फूल सुख सागर का, जो अन्नत समय तक जागता रहे।
पुष्प में सार हो, पृथ्वीवासियों का, पाप अपने आप भागता रहे॥

समस्त गुणों से, मानव हो सुसज्जित, दुनिया में प्रेम भाव हो।
ईश्वर के हो समीप मानव, और दुनिया में दुर्व्यहार न हो॥

मानव अपनी चेतना से, शुद्ध जीवन जिये, मानव का क्या जाता है।
कोमल रहे मन, प्रेम की फुहार बहे, और दुनिया में, धर्म का प्रकाश, फैल जाता है॥

ईमानदारी से पेट भरे, जब मानव का बेईमानी, क्यों करे मानव।
शुद्ध रखे मन अपना, और दूसरे से, झूठ ना बोले मानव॥

कलयुग में कहा जाता है, झूठ बिना धन नहीं बढ़ता।
बेईमानी करे गुप्त ढंग से, और मानव का, अहंकार का पारा चढ़ता॥

किसी भी युग में, सत्य से धन बढ़े, वह अमर पद पाता है।
बेईमानी है, बादल जैसी छाया, किसी के काम नहीं आता है।।

यह दस्तूर भी मानव ने बनाया, और दुनिया में फैलाया।
झूठ से झूठ पनपता, और मीठी बोली से, मानव को जहर पिलाया।।

झूठा मानव धन के कारण, झूठ में सत्य सार समझावे।
दे ईश्वर को धोखा, और दुनिया में जहर फैलावे।।

प्रत्यक्ष प्रमाण है, दुनिया में, क्या क्या घट रहा है, वर्तमान।
मानव देख रहा है, अपनी करनी और भोग रहा है इंसान।।

आदि धर्म व्यवस्था विधान मानों, संस्कार युक्त धरातल होगा।
निर्भय होकर जियेगा मानव सृष्टि में, पुण्य सार में धरातल होगा।।

निर्माण करो, एक ऐसे मानव का, जो सन्त प्रवृत्ति का पुंज हो।
धाराये बहे जग में, सत्य धर्म में, और पुण्य मार्गी, ईंसानों का झुंड हो।।

जिधर चले, झुंड में चले, जैसा गायों का चरता हुआ, पुंज हो।
गौलोक भी धरती पर देखे स्वर्ग, और दिव्य में धरती के, इंसानों का गुण हो।।

ऐसा होगा धरती पर तभी, मानव भय मुक्त हो पाएगा।
प्रथम में ज्ञान हो मानव को, धरती पर भय मुक्त मानव, दूसरे मानव को देख पाएगा।।

मानव जब तक धरती पर, मुक्त भय में नहीं हो पायेगा।
तब तक सुखी नहीं रह सकेगा मानव, और न ही मुक्ति का सार, बन पायेगा॥

डर डर के जीता है, मानव स्वतंत्र स्वांस भी लेता नहीं।
हर वक्त माया भ्रम में सजा रहे, अन्दर से भय मुक्त कभी होता नहीं॥

क्या करोगे ऐसा जीवन जीकर, जिसमें कोई सार ना हो।
जिसमें खुशी हो कम, और ईश्वर का आनन्द प्यार ना हो॥

हे मानव निर्भय होकर देख, एक क्षण भी, तुझे जीवन भर का सुख मिलेगा।
डर डर कर तू जीवन गवावे, सत्य स्वांस भर, तुझे, जीवन सार सुख मिलेगा॥

इस पृथ्वी पर, मानव सम्पूर्ण जीवन, अपनी संतानों को लिए, बोझा ढोता है।
सोचता है, कि मैं अपनी संतानों को इतना दूं, धन के भण्डार कभी, खाली न होता है॥

मानव इतना तो जब सोचता है, उसे पता है, भविष्य में क्या घटेगा।
ना सदा, सोचने जोड़ने वाला बचा रहेगा, और ना कभी, अगली पीढ़ी तक बंट सकेगा॥

फिर मानव है, अंधकार में, माया मोह में फंसा हुआ।
सत्य से नहीं करता प्रेम, झूठ का परदा पड़ा हुआ॥

मानव संसारिक सोच से, कई पीढ़ी के लिए, जोड़ना चाहता है।
फिर क्यों, वह ईश्वर से नाता नहीं जोड़ता, झूठी फसल उगाना चाहता है॥

ऐसा भ्रम, कहां से आया है, मानव के अन्दर, जो अंधेरे में सुनहरी जीवनी देखता।
क्यों नहीं सोचता मानव, ईश्वर में ढलना, और आगे के जीवन, भक्ति का दर्शन नहीं देखता॥

मानव खुदी कहता फिरता, जमाने में, किसने देखा है, अँगला जन्म।
जब अगला जन्म नहीं देखा, तो क्यों धन जमा करता है, कई जन्म॥

कई जन्मों का, हे मानव तू धन जमा करे, तेरी कैसी भूल भूलैया है।
और तू अपने, अगले जन्म का ना सोचे, जो सत्य ईश्वर की नैया है॥

जिस नैया में बैठकर, तू झुल रहा है, उसी पर तुझे आसन मिला।
सब कुछ दिया तुझे ईश्वर ने, और तुझे तेरी आंखों से, दिखला भी दिया॥

फिर भी हे मानव तेरी है कैसी, अन्धी सोच अंधियारी।
पडां है खुद ही नरक गर्त में, और संतानों को दे रह है, नरक की बुहारी॥

भक्ति भाव में, सुमर ले ईश्वर को, भौर का विलय कर ले।
जीवन में सुख भर ले, अमरकर, अपने अन्दर सुर घर ले॥

प्रयत्न कर, धर्म पर जीवन बिता, शक्ति ऊर्जा अर्पण कर ले।
विधा का अनुमान कर वेदों के, ऊपर, धर्म सुधार, निर्माण कर ले॥

अध्ययन कर, सृष्टि के ऊपर, ईश्वर में ध्यान धर ले।
प्रभा की बेला खिला, अपने जीवन में, आनन्द का भाव भर ले।

सुखी देखकर, ना ईर्षा कर दूसरों से, ऐसा सुर धार धर ले।
प्रेम का गीत गा दुनिया में, ऐसा प्रेम विहार भर ले॥

दूसरों को कुछ देने आया है, तू जन्म लेने का सार है, यह तेरा।
तू नहीं है, अकेला दुनिया में, आदिकाल से बसेरा तेरा॥

धरती बनी, मानव प्रणाली के ऊपर, लोक अलग अलग बनाये।
प्राणी भी रहता है, तब तक, तभी तक लोक रचाये॥

प्राणियों को रचाने हेतु, अलग अलग लोक बनाये।
धरती पर जब मानव बनाया, तभी धर्म नीति वेद बनाये॥

जीना सिखाया मानव को, और प्रेम स्वर ध्यान कराये।
प्रकृति की रोशन धरती के ऊपर, अलग अलग नाम धराये॥

सब कुछ, आधार बनाया मानव के लिए, धरती पर मानव का अधिकार।
धरती है बोझिल अधर्मियों के कारण, वर्तमान में हो रहा है, व्याभिचार॥

क्यों नहीं सोचता, मानव इस ज्ञान को, क्यों बेशुद्धी में धरती पर, आसान जमाता है।
वह धरनी है, ईश्वर की परम्परा, मानव अपनी मनमानी, क्यों चलाता है॥

वह ही क्यों नहीं चलाता मानव, जो ईश्वर ने चलाना सिखाया है।
उसी चक्र में क्यों नहीं ढलता मानव, आदि काल से, नारी के स्तन में दूध बहाया है॥

नारी के स्तन में आदिधर्म पुराना, फिर आज का मानव हो गया है, बिराना।
क्यों नहीं समझता, सत्य धर्म, क्यों नहीं अपनाता, सत्य पुराना॥

दीये दिव्य, क्यों नहीं जलाता, क्यों बनावे धरती को आशियाना।
क्यों प्रेम जगत में नहीं बहाता, मानव, क्यों शत्रु बनाता फिरे जमाना॥

हे मानव याद कर वे सब राज, जो तेरे अन्दर छिपे है।
खोल वह ज्ञान का दरवाजा, जो तेरे अगल बगल दबे है॥

अपनी, जन्म देने वाली माता की सोच, वह क्यों है आदि पुरानी।
तुझे पिलाया है, अपने स्तनों से दूध, और की है, मोह में तेरी रखवाली॥

माता की गोद भी है, आदिकाल पुरानी, और धरती माता भी है, आदि रखवाली।
क्यों नहीं ज्ञान करता, अपने अन्दर, क्यों और क्या, ढूंढ रहा है, तू धुंध में घरवाली॥

खोल अपने अन्दर के किवाड़, सारा सत्युग रंगारंग हो रहा है।
तेरी ही आंखों में परदा चढ़ा है, तू सृष्टि में अन्धा हो रहा है॥

तू क्यों नहीं रचता, युग सतयुग, तू कलयुग बनके, क्यों बह रहा है।
कलयुग, काला मन, मानव मैल में घिरा, मर मर कर जी रहा है॥

हे मानव तेरे सामने है, सब कुछ, तू नहीं, एक जन्म का वासी।
तू तो अमर है, हर युग का, और है तू वनवासी॥

तुझे यह नहीं सोचना, कि तू, इसी जन्म में आया है।
तेरी है, अमर गाथाएं पुरानी, तू सतयुग धर्म से आया है॥

तुझे देखना है, युग का धर्म, क्यों मानव, अधर्म में उपजाया है।
तुझे तो हर युग में, सतयुग जैसा बनना है, यही ईश्वर माया है॥

हे मानव यह है, तेरे हाथ में, और मन में दीप रचाया है।
तेरे अन्दर दिये जल रहे हैं, चतुर्थ युग का, है तू ईश्वर का, नहीं पराया है॥

तेरी इच्छा है तेरे ऊपर, तू किस युग में जीना चाहता।
कमल दल खिला है, तेरे अन्दर, जगत में युद्ध क्यों चाहता॥

परिवर्तन कर हे, मानव युग में, धर्म में धर्म की आस्था बढ़ा।
संस्कार में ढलने की दे शिक्षा-दूसरों के मन में स्त्रोत चढ़ा॥

हर मानव, जब सोचेगा, धर्म पर बहाना तभी, सत्ययुग में रमणकरेगा।
स्थान तभी होगा, मानव का, जब अपने मन में, संस्कार भरेगा॥

हे मानव तुझे कोई नहीं कहता, तू ईश्वर में हर, वक्त सुर भर ले।
तू तो अपनी सोच कर सात्विक, और निस्वार्थ सृष्टि में कर्म कर ले॥

ईश्वर तुझसे ना मांगे मंदिर, भजन, ना समय गवावे तीर्थों में।
तू तो बस, अपने अन्दर की सोच बहा, दे, प्रेम स्त्रोतों में॥

प्रेम कर इस जगत से, और ईश्वर को सत्य मान ले।
अवगुणों को बहा दे, असुरों में, और सूरों का अंकुर, भर मन में॥

अवगुणों से, जो मानव है, धरती पर, असुर जात के होते हैं।
जन्म लेते हैं, सुर जात में, और आसुरों से, जीवन भाव में जीते है॥

ना सोचे मानव कहां जा रहा है, जीवन पूर्ण बीता जा रहा है।
आसुरी शक्ति रह हरदम, जीवन मानव का बीता जाता है॥

समय का पता भी नहीं चलता, ज्ञान का फूल भी नहीं खिलता।
उम्र गुजर जाती है, मानव की, असुरों में ही जीवन गुजरता॥

सम्पूर्ण उम्र, मानव रह अंधरे में, रोशनी का दीप नहीं जलता।
खुद ही नरक भवंर में, फंसा रह मानव, स्वर्ग का धाम नहीं मिलता॥

भूल भुलैया में जनम रिसता रहे, मानव जीवन में, दर्द रस टपकता।
उसी रस में बस जाता है, मानव, अन्धेरा ही जीवन में चमकता॥

प्रभा बेला नहीं दिखती, अन्ध धुन्ध में, स्वर्ग का उजाला, नहीं दिखता।
ना ही मानव प्रयत्न करता, जीवन सारा, जीवन अहंकार वश झलका करता।

जिस संस्कार में जनम ले मानव, उसी में सदैव रमा रहे।
खुद ही को रखे सुख सार में दूर, और मन में सदाचारी बना रहे॥

धुन लगा रहे मानव में, पर पुराने, अंधे संस्कार में सजा रहे है।
अपनों को समझे संस्कार युक्त, सगे सम्न्धियों में, ईर्ष्या में फंसा रहे॥

दर्द छिपा कर जीता रहे, मानव, अहंकार में ना दर्द बतावे।
धुन करे काया में छिद्र, और अर्ध मृत्यु को मानव जावे॥

धरती का मानव है, कैसा इसे शुद्धी क्यों नहीं आती।
क्यों नहीं छोड़ता, अपना अहंकार, इस मानव को शुद्ध बुद्धि नहीं आती॥

कड़वा घूंट पीता रहे, जीवन भर, उठे हुए प्रश्न का, उत्तर ना पावे।

ना यत्न करे, अपनी बुद्धि से, ना ही किसी दूसरे पर, उत्तर कहलवावे॥

सम्पूर्ण जीवन ना निकले, अर्थ प्रश्न का, घुट घुट कर जीवन गवावे।

और करे काया के यंत्रों से छेड़छाड़, काया को भी मिट्‌टी में गवावें॥

काया के यन्त्र है, दिव्य धाम, ईश्वर की है, सवारी।

इसी में दिव्य धाम सजा, है और ईश्वर करे, इस की रखवारी॥

ईश्वर काया की करे रखवारी, 'क्यों मानव काया है, ईश्वर प्यारी।

पर मानव करे, यंत्रों से छेड़छाड़, ना छोड़े काया को, ईश्वरी की फुलवारी॥

खुद ही भरे करनी का फल, मानव काया को, अनैतिक में फंसावे।

काया के यन्त्रों से करे, नियम विरुद्ध कार्य, अर्ध मृत्यु तक पहुंचावे॥

अनेकों बिमारियां पनपे, काया के अन्दर, और मन में असुर बैठावे।

ना रखे मन शुद्ध चेंतन्य, और धरती पर अपना भार बढ़ावे॥

मानव जीव ही ऐसा प्राणी, जो दुनिया में धर्म आस्था चलावे।

पालन करे दूसरे जीवो का, और धरती को अधर्म मुक्त करावे।

क्यों कि मानव को ही सौपा है जिम्मा, मानव के द्वारा सृष्टि करावे।

और जो ले जन्म धरती पर, उसका पालन पोषण, मानव से करावे॥

मानव को ही ईश्वर ने रचाया, और मानव को ही दिया, बुद्धि विचारा।
मानव से सृष्टि बनती, और मानव पालन करता है, और मानव ही है संहारा॥

ईश्वर सब कुछ मानव से करवाते, और मानव के अन्दर रहते।
स्थूल से चलवाते, सृष्टि को, और मनो पर ईश्वर राज करते॥

मनों पर तब राज करते ईश्वर, जब मानव, शुद्धि करण में होय।
और दुष्ट प्रवृत्ति ना रखे मन में, और जीवन सतयुग जैसा होय॥

तभी ईश्वर रहते हैं, मानव देह में, और चेतन्य कारी बनकर।
हर वक्त करे, मानव की रक्षा, और रहते है, बनवारी बनकर॥

ईश्वर रहते हैं, अधर्मी के अन्दर, भी, और धार्मिक के अन्दर भी, रहते हैं।
पर जब मानव खुदी सोया हुआ हो, उससे क्या बंशी बजाते॥

जाग्रत रहते, धर्म पुरुष में, और ईश्वर दिव्य ज्योत जगाते।
पुण्य में, काया में करते बसेरा, और हरदम मानव को, सुख सागर बहाते॥

मन ही माया का फंदा, और मन ही स्वर्ग धाम।
मन ही मैला अधर्म है, और मन ही ईश्वर नाम॥

मन से ही दुर्बल होता, मानव, मन ही वीर वाहन।
मन ही अधर्म फैलावे जग में, मन ही ईश्वर धाम॥

जब जब सृष्टि में फैले, अधर्म की आंधी, मनो पर रची जाए, आसुरों की मेहन्दी।
मनों से ही विचार हो उत्पन्न, मनो से ही फैले अत्याचारों की आंधी॥

जब जब धरती पर, पाप बढ़े, असुरी शक्तियों का नाम बढ़े।
नाप बढ़े असुरों का, मानव मन पर, तभी ईश्वर का जाप चढ़े॥

तभी, पृथ्वी पर, ईश्वर की शक्तियां, प्रज्वलित होकर आती है।
असुरों का पहरा हटे, मानव जात पर, दुनिया में ज्ञान से, धर्म का अस्तित्व बनवाती है॥

विद्या दिव्य फैले दुनिया में, प्रारब्ध मानव कर्म जलाती है।
शुद्ध करे मानव जात को, धर्म ज्योति दुनिया में जलवाती है।

अनन्त समय से बहती आई, दिव्य पुराणों में बहती है, दुनिया।
सत्य के ऊपर जीवन है, मानव का, धरती पर बसेरा करती है, दुनिया॥

अधिकार देती है, नर-नारी को, एक ईश्वर की सन्तान बताती।
दिव्य शब्दों से अलंकृत करती, युग को सत्य युग बनाती है॥

दिव्य विद्या आती है, धरती पर युग धर्म में परिवर्तन होय।
प्रेम करे मानव, मानव से मानव जीवन श्रेष्ठ बन जाय॥

युग में ना कोई अधर्मी रहे, सत्यसार की नाव बहे।
अहिंसा से मानव में प्रेम बढ़े, और ज्योति दिव्य सार रहे॥

गुणवान हो धरती वासी, युद्ध का ना अहसास होय।
प्रगति करे मानव अपनी, चेतना की, और अध्यात्मिक प्रेरणा से बहे॥

युग बने धर्म शास्त्र, पुराणों की अवहेलना ना होय।
जाति प्रथा ना माने मानव, ऐसा पवित्र धर्म युग होय॥

ना कोई छोटा ना कोई बड़ा जगत में, गुणियों पर ध्यान लगाया।
गुणी ही, बड़ा मानव होता है, दुनिया में, बुद्धि का नाप लगाया॥

जो मानव, प्रेम, दया, भाव, पराई, पीड़ा, समझे मानव होय।
वह ही मानव, श्रेष्ठ है दुनिया में, नदियों की तरह बहे॥

सत्य सत्य होता है, दुनिया में, सत्य को काट नहीं सकता कोई।
सत्य समझाया जाता है, मानव को, प्रेम में बसर करे सब कोई॥

मेरा तेरा कुछ नहीं है, दुनिया में सब कुछ ईश्वर का सत्य है।
न कोई पराया है, दुनिया में सभी के अन्दर ईश्वर सत्य है॥

कोई जीता है अपने लिए, फिर, भी वह ईश्वर का प्रिय है।
और कोई जीता है, दूसरों के लिए वह भी ईश्वर का प्रिय है॥

फर्क दोनों में इतना कि, एक मानव अपना भला चाहता है।
दूसरा मानव दूसरे की देख कर, दुनिया में प्रसन्नचित्त रहता है॥

करम बदल जाते हैं, दोनों के, सुरभाव अलग अलग।
प्रारब्ध भी अलग अलग, संस्कार युक्ति अलग अलग॥

जीवन में खुशी अलग अलग, और आन्त्रिक चेतना अलग अलग।
मुक्ति का भाव भी अलग अलग, और ज्ञान का सार अलग अलग।।

लोक मिलते है, दोनों को, कर्मों का कारण भी अलग अलग।
अज्ञानी फिरे मृत्योपरांत भटकता, ज्ञानी को मिले, लोक अलग।।

इस धरती पर बिछि हुई है, माया सारी बुद्धि चाहिए, मानव को गहरी।
कोई बितावे जीवन आनन्दमय, कोई खोदे, खाई हिंसा की क्यारी।।

कोई गावे गीत सुरीले, कोई मुख से बजावे, गाली गलोच की धुनी।
कोई मचावे शोर, अहंकार में, कोई बजावे, धन वैभव की धुनी।।

इस जगत में, करमों को खेल निराला, ईश्वर है इसका रखवाला।
ज्ञानी रहे पृथ्वी लोक पर, दिव्य लोक जैसा, अज्ञानी बना रहे, मूर्ख चितवाला।।

मानव खुद ही दर्द मय है

मानव दुनिया में ले जन्म, कर्मों का खेल निराला।
करम पिछले खेले खेल, यह दर्द, मानव के अन्दर विशाला।।

हर दिन, जीवन का मानव झेले, मानव यह सोचकर रोता है।
कहता है कि, दर्द मेरे साथ ही, क्यों घटे, यह सोचकर सोता है।।

सोचता है, मानव क्यों ऐसा होता है, दुखों में मानव रोता है।
पीकर कड़वा घूंट, जीवन का, मानव दिशाहीन बन जाता है।।

जीवन के दुखों में, परिवर्तन होता है, मानव अपनी मंजिल से हट जाता है।
युद्ध जैसी, स्थिति धारण हो जाती है, मानव में, क्रोध भी बढ़ जाता है।।

काया के अन्दर, छेड़खानी हो जाती है, मानव अस्वस्थ हो जाता हो।
दुख भर जाता है, मानव के अन्दर, सब कुछ, सुबक कर रोता है।।

ना चले बस मानव का, रोजमर्रा मानव मरता है।
दर्द होता है, ऐसा मानव को, पिछला जन्म याद आ जाता है।।

अपने ऊपर सोचता है, मानव, मेरा दोष कहां से उपजा है।
मैं ही क्यों दुखी हूं, जीवन में, ऐसा, मानव को लगता है।।

दूसरों को देखे हंसता खेलता, यह भ्रम सताता है।
ज्ञान के बिना, मानव रह अन्ध धुन्ध में, सभी को सुखी समझता हैं।

ऐसा भ्रम जाल है, दुनिया में, एक दूसरे को देखकर, मानव जीता है।
कोई हसंता है, कोई रोता है, जीवन का पहिया, एक गीता है।।

जीवन है, भंवर जाल माया नगरी, घूम घूम कर जहां से चलता, वहीं पर आ जाता है।
और लगता है, मानव को ऐसा जैसे मेरी नगरी है, यह यह सोच, कुंआ भरता है।।

झूठी है, यह नगरी माया, कभी जीवन में, कुंआ भरता नहीं।
आदि ना अन्त है, सृष्टि का, मानव का पेट, माया से भरता नहीं।।

सोचकर जीवन बिता रहा है, मानव सुरताल बिठा रहा है।
बेईमानी झूठ, फरेब, धोखा देने का यंत्र, मन को बना रहा है।।

छेड़खानी कर रहा मानव, मानव काया यत्रों से, काया को सता रहा है।
काया है, दिव्य फूल धरती का, उसे झूठ फरेब से, गला रहा है।।

फोड़ा बन रहा है, मानव के अन्दर, युद्ध जैसा है माहौल।
धर्म पर रहता, मानव दिखावे के लिए, ईश्वर का नहीं ख्याल।।

मानव बनाया है, धरती पर यह सृष्टि का विधान।
गुण भरे अनेकों मानव के अन्दर, और रखा धर्म का विधान।।

विस्थापित किया मानव को धरती पर, और दिया ज्ञानी बनने का वरदान।
बागडोर दी, सृष्टि की मानव के हाथों, और कहा, बना धर्म की पहचान।।

लक्ष्य दिया, मानव को धरती पर, भरो ज्ञान का भण्डार।
बनो अपने आप में, सतयुग जैसा, ना रखो मन में अंगार।।

ना मिटाओ इस धरती को, यह है मानव स्वर्ग धाम।
जीने की कला समझो, और ना तोड़ो ईश्वर विधान।।

इस धरती पर, कुछ खास कार्य, करने आये हो तुम, न बनो असुरों की संतान।
ना मिटाओ इस धरती पर मानव को, मानव की करनी है, तुम्हें पहचान।।

युग का तार हिला है, मानव के अन्दर, ना मिटाओ, इसे, करो पहचान।
प्रेम में जीवन सफर करो, यह है धरती पर, जीने का विधान।।

सब कुछ मानव के हाथों में, सतयुग जैसा पग भरना होगा।
प्रेम निस्वार्थ भाव गुण अनेक, स्वांस शुद्ध चेतन्य करना होगा।।

खुद ही को परिवर्तन करना होगा, सब कुछ तुम्हारे हाथों में है।
ईश्वर ज्ञान समझाते है, मानना अमल करना, मानव के स्वांसो में है।।

स्वांस ही ईश्वर है, जो तुम्हें जीवन जीने का, अमर पद देते हैं।
उन्हीं स्वांसों से तुम करते, छेड़खानी, जो काया को चेतन्य करते हैं।

करते हो तुम काया से छेड़खानी, और प्रकृति को, अपनी पत्नी समझते हो।
जैसे चाहो मोड़ देते हो, प्रकृति को, इसे अपनी ज्यादाद समझते हो।।

सब कुछ ईश्वर का है, तेरा कुछ नहीं है, हे इंसान।
तेरा तो शरीर भी नहीं, इससे भी चेतन्य रहता है, भगवान।।

हे मानव तू किसके सहारे पर, इस धरा पर खड़ा है।
तेरा सहारा सिर्फ ईश्वर है, जो तुम्हारे अन्दर जड़ा है॥

तुझे सोंपा है, धरती पर सृष्टि बनाने, पालन करने का जिम्मा।
पर तू खुदी बन गया है, अधिकारी इसका और करा रहा है, अहंकारों का बीमा॥

याद रख हे इंसान, सत्य को कबुल कर, धरती को, सत्य का आसान बना।
यह माता है तेरी, प्रेम कर इससे, और सतयुग जैसा, भाव बना॥

टूट कर बिखर जायेगी यह, दुनिया, क्षण का भी पता नहीं चल पायेगा।
जिन कठिनाइयों को पाला है तूने, इसका भुगतान, तुझे ही दिया जाएगा॥

तू सत्य सफर कर, ना देख अपना स्वार्थ, बुराई को, जोड़ना बंद कर दे।
न जोड़ दुनिया में धन दौलत, तू अच्छाई को जोड़ना, आरम्भ कर दे॥

सन्त बन, जा, हे नर तू, नारायण का सुर भर ले।
समय है कठिन दुनिया का, ईश्वर का गुण धर ले॥

क्या क्या जोड़ रहा तू, यह सब कुछ, जोड़ना बन्द कर दे।
दिया बुझने वाला हैं दुनिया में, अंधेरे को, आने से, पहले बुराई बन्द कर दे।

खुद ही बुला रहा है, तू हे नर, इस दुखभरी कठिनाइयों को।
तेरे हाथो में है सब कुछ, समय से पहले, हटा इन बुराइयों को॥

समय बोता जा रहा है, हे इंसान अपनी शुद्धी, और कर पहचान।
अंधियारे को हटा अपने ऊपर से, और दुनिया से, प्रेम कर हे ईंसान॥

युद्ध जैसी स्थिति है, तेरे अन्दर, एकान्त में सोच बैठ, हे ईंसान।
कहां जा रहा है, दुनिया का हर ईसान, सुबह के समय अजान
लगा, और बना अपना ईमान॥

दहशत में ना जी, अपनी उम्र, ऐसे जीने का क्या फायदा।
जन जन की रूह में, अहंकार भरा है, तब भी जीना चाहता है
ज्यादा।

फुरसत नहीं है, तुझे, इंसानों से प्रेम करने की।
उलझनों में घिरा है, तेरा मन सुध नहीं है, तुझे ईश्वर की॥

ध्यान करले हे, मानव, सब कुछ इस धरा पर रह जायेगा।
तू जायेगा करमों की गठरी लेकर, शरीर तेरा मिट्टी में मिल जाएगा॥

प्रयत्न कर, हे मानव, सृष्टि को सदैव अपनी समझ।
तू ही इसे बनाता है, तू सृष्टि को प्रेम से समझ॥

तेरे बिना सृष्टि नहीं उपजती तेरे बिना ईश्वर का नहीं विधान।
तेरे कारण ही, ईश्वर धरावे नाम अपना, तेरे अन्दर ही उपजे ज्ञान॥

तेरे लिए ही मार्ग बनाया, आने जाने का, धरती उपकार मान रही है।
ईश्वर ने बसाया है, धरती पर तुझे, ईश्वर को पिता परमेश्वर मान रही है॥

हे युग में चेतन्य कारी मानव, तू श्रेष्ठ धर्ममय उपजा है।
तुझे ईश्वर ने प्रेम से भेजा, तू हमेशा ईश्वर नाम जपता है।

हर समय तू, इस धरती पर जीता है, हर क्षण ईश्वर रहें तेरे अन्दर।
प्रकाश का पुंज है तू, ईश्वर चेतन्य रहे, सदैव तेरे अन्दर॥

रहस्य ज्ञान में छुपा है, अदृश्य है, ईश्वर प्रकाश।
ज्ञान के चक्षु खोल, स्वयं दिखेगा तुझे, ईश्वर का, अपने अन्दर वास॥

अध्ययन कर, अपने अन्दर, सुर ताल ईश्वर में बिठा ले।
सोच, अपनी तीव्र वेग से, ईश्वर, तेरे अन्दर है, प्रेम से बिठा ले॥

ले ले आनन्द परमधाम का, सृष्टि तेरे अन्दर घूम रही है।
जब ईश्वर है, सृष्टि को बनाने वाले, ईश्वर की ताल, तेरे अन्दर घूम रही है॥

साधारण ना समझ, हे मानव, अपने आपको, ब्रह्मण्ड में तेरी चर्चा, चल रही है।
हो रही है, दिव्य लोक में चर्चा तेरी, भुवनश्रेवरी भी डोल रही है॥

बन्धन लगा अपने अन्दर, कड़वा झूठ शब्द बोलना छोड़ दे।
सन्त बनकर जीवन बिता धरती पर, प्रेम की धुन, सृष्टि में जोड़ दे।

संहार की स्थिति ना कर उत्पन्न, यह युग तेरा ही है।
इसे तू पराया मत समझ, आदि काल से, यह युग तेरा ही है॥

तू ही सृष्टि के आरम्भ में भी था, और आज भी, तेरी, अमर गाथा है।
तू आता रहा है धरती पर बार बार, तेरे अन्दर गुथी हुई, ईश्वरी माता है॥

अपना समझ कर युग में जीवन बिता, और मोक्ष का दरबार बना।
मोक्ष से तुझे दिव्य लोक दिखेगा, ऐसा जीवन का चमत्कार बना॥

तू जब मोक्ष देखेगा, धरती से, तभी ईश्वर दरबार देखेगा।
दिव्य लोक में जायेगी, तेरी आत्मा, तभी तू ईश्वर का, चमत्कार देखेगा।

तू भी ईश्वर में मिलकर, सृष्टि को ऊपर से देखेगा।
देखकर कहेगा, धरती वासियों से, मोक्ष का रास्ता ढूंढो, धरती पर अज्ञान झुकेगा॥

राह बना अपनी सरल, जीवन है तेरा ईश्वर वरदान।
तू इसे व्यर्थ ना गवां, तेरी अनोखी है, धरती पर पहचान॥

धर्म का साज बना अपने अन्दर, सुर ईश्वर में लगा दे।
प्रेम कर सभी जगत वासियों से, सतयुग की धुन बजा दे॥

तेरा जीवन है, अमूल्य इस धरा पर, तू सरल जन्म समझ रहा है।
तुझे नहीं मालूम, सृष्टि में है तेरा, दर्जा क्या तू छोटा सा भाव समझ रहा है॥

सृष्टि में गिनती है तेरी भी उतनी, जितनी श्रेष्ठ मानव की होती है।
बस तू ज्ञान नहीं पाता ना समझ है, पर तेरी गिनती, ईश्वर के द्वारा होती है।

वेदों पुराणों में ज्ञान भरा है, वह सभी है तुम्हारे कारण।
वनस्पतियों में फूल खिला है, वह भी तुम्हारे कारण॥

सत्य में कारण समझो, सृष्टि को बसाने का, यह तुम्हारे लिए बसी है।
ना करो युग को घायल, यह दर्द के, पहरेदारों से ढकी है॥

ना पहुंचाओं दर्द किसी को, हर मानव, इस धरती पर प्यारा है।
उल्लेख है इस धरा का, दिव्य में, और मानव का, दर्द न्यारा है।

सभी है इस धरती पर बराबर, के कोई नहीं छोटी संतान।
सभी का बंटवारा है, बराबर बराबर, सभी है ईश्वर की संतान॥

ना खुद दर्द उठाओ, धरती पर, ना किसी को, दर्द पहुंचाओं।
नर बनकर, नारायण का दर्जा पाओ, नर भक्षी, बनकर किसी को दर्द, मत पहुंचाओं॥

जो भी कर्म दिए है, तुझे इस धरा पर, उन्हें पुण्य धर्म से निभाओं।
ऐसी प्रीत बनाओ दुनिया में, जो प्रकाश फैले दिव्य, औरों से अपना नेक बनाओ।

संघर्ष करो, धरती, पर आये हो तुम, निर्भय होकर निभाओ।
खाली पड़ा है, दिव्य लोक, उसे मोक्ष की संगीनी बनाओ॥

अर्थ है, दुनिया में, पैदा होना, पैदा होकर कार्य करना, ऐसा जैसा धरती पर स्वर्ग बहना।

कठिन है, राह जीवन की, मानव जान नहीं पाता है।
पग पग पर दर्द झेले, मानव, पर ज्ञान से हट जाता है॥

क्यों है ऐसा दुनिया में, जो मानव पग पग पर, हार जाता है।
ज्ञान नहीं हो पाता मानव को, हिम्मत से दूर हट जाता है॥

जीवन में, दुख सुख सभी, मानव खुद ही पैदा करता है।
दुख भी देते है क्षण में ज्ञान, और सुख में दुखों का, ज्ञान हो जाता है॥

अगर मानव अपने आपको, श्रेष्ठ समझे, तो ज्ञान मानव में, भर जाता है।
ज्ञान तो जीवन को, सुन्दर बनावे, और अपना भेद, खुल जाता है॥

हर मानव सृष्टि में, स्वाभाविक कहता, इस धरती पर, जीवन दुख से भरा पड़ा।
हर मानव है, दुखी, इस जीवन में, हर मानव में, यह शब्द है जड़ा॥

ज्ञान नहीं है मानव को, इसीलिए यह सब सोचता है।
अगर ज्ञान नहीं है, मानव को, तो दुख को क्यों बाचता है॥

दुख सुख है, मानव के साथ लगे हुए, यह है ज्ञान का भण्डार।
दुख सुख से है ज्ञान उपजता, और यह ही है, ईश्वर का दरबार॥

यह धरती ही है, ईश्वर का दरबार, ईश्वर को कहां ढूंढ रहे हो।
इसी धरती पर होता है, ज्ञान, जीवन सफर में, तुम इसे भूल रहे हो।

इसी धरती से, तुम्हें ईश्वर प्राप्ति होगी, इसी धरती पर है, ईश्वर प्रकाश।
इसी धरती पर, ज्ञान की होती प्राप्ति, इसी पर बिछा हुआ है, विज्ञान॥

इसी धरती से, वे मानव उपजते, जो लाभ पहुंचावे, पूर्ण संसार।
वह ज्ञान, धरती पर उपजता जिससे फैले धरती पर, विधुत प्रकाश॥

कोई नहीं आयेगा, तुम्हें समझाने, तुम खुद ही, अपनी पहचान करो।
तुम्हारे अन्दर ईश्वर भी है, और ज्ञान भी है दोनों की पहचान करो॥

व्यर्थ में न खोओ, जीवन को, इस काया के अन्दर क्या है, विश्लेषण करो।
दुख सुख दिया है, तुम्हें समझने के लिए, ज्ञान का भण्डार भरो॥

तुम्हें पता है, कि दुख कहां से आया, इसका बीज कहां से, उपजा है।
सुख कहां से आया, इसका सार कहां पर है, यह भेद तुम्हारे अन्दर समुचा है।

ना किसी देव को दोष दो, ना कोई तुम्हें दुख देता है।
ना ग्रह तुम्हें कभी दुख पहुंचाते, यह तुम्हारा धोखा है॥

ना दो किसी को बुराई, तुम्हीं ने धरती पर जात बनाई।
तुम्हीं ने नफरत फैलाई छोटे बड़े की, तुम्हीं के कारण ईश्वर ने, दुनिया बसाई॥

ना आओ किसी के बहकावे में, अपने अन्दर का ज्ञान निकाला।
सब कुछ तुम्हारे अन्दर भरा है, उसे बाहर निकालो॥

ना होवे, भ्रमित किसी से, कोई भी तुम्हें दुख नहीं देता।
यह तो तुम्हारी है ना समझी, कोई भी तुम्हें, सुख नहीं देता॥

सब कुछ तुम्हारे अन्दर भरा है, पुण्य धर्म का दरबार लगा है।
देव लोक भी तुम्हारे अन्दर, और शनि का प्रकाश भरा है॥

ना भय में जीवन बिताओ, ज्ञान को अपने अन्दर, भरवाओ।
तभी पता चलेगा, क्या है जीवन धरती पर, पहचान करवाओ॥

ना दो अपने जीवन की डोर, दूसरा उसे नहीं बना सकेगा।
उत्पन्न करो अपने अन्दर से, उर्जा, तभी तुम्हारा जीवन, संवर सकेगा।।

इस धरती पर रहो, पालन करो, जो तुम्हारे द्वारा पैदा हुआ।
अध्ययन करो, अपने उपर, दुख सुख कैसे पैदा हुआ।।

तुम्ही इस प्रश्न का उत्तर निकालोगे, तुम्हारे अन्दर है भरा हुआ।
तुम्हीं खुदी बताओगे, ईश्वर कहां पर है, और यह बताओगे, कि धरती पर, सब मानव का करा हुआ।।

यूं तो दुनिया में, कई काल्पनिक ढंग से कहते हैं, ईश्वर हमने देखा है।
ईश्वर स्थूल में नहीं है, यह सत्य है, संत स्थूल के अन्दर देखा है।।

इस धरती का मूल सत्य, मानव के अन्दर सभी, देवो का वास।
दुख सुख का भास, अज्ञान के कारण, और ज्ञान में ईश्वर का, मानव के अन्दरवास।।

अपनी करनी ग्रहों पर टिकावे, अपने अन्दर ना देखे, ग्रहों का वास।
दुखों के बीज, मानव खुदी बोवे, देवों, और दूसरे, मानव पर, लगावे, दोष वास।।

मुल्क में ना, फैलाओं, अज्ञान की आंधी, मानव सुख से जी नहीं सकेगा।
भ्रमित इतना ज्यादा हो जाएगा, जैसे पागल जैसा, व्यवहार करेगा।।

पग पग पर, कांटे बिछ जायेगे, जमीं पर, सुख का स्वांस नहीं भर सकेगा।
भ्रमित इतना ज्यादा होगा, मानव, कि अपनी नींद भी, सुख से नहीं भरेगा॥

बहमी भ्रमित सा हो जायगा मानव, और कंठ में, कड़वा स्वभाष भरेगा।
डर डर कर कदम धरेगा, पृथ्वी पर, मानव, हर क्षण चिन्ता का, सुर भरेगा॥
इतना दुखदर्द भर जायेगा दुनिया में, भविष्य में, अज्ञान के कारण, मानव मरेगा॥

ऐसा होने ना दो, मानव ज्ञान भरो, अपने अन्दर, अन्दर सरल सुन्दर, जीवन बनाओ।
आई है दिव्य वाणी धरती पर, इसका सुर भरो, जीवन आनन्द में बिताओ॥

ना फंसों, पैंसों के लालचियों के अन्दर, तुम्हें कोई नहीं सता रहा।
ग्रह द्वार भी तेरे अन्दर, बस तुझे, इस कलयुग का, मानव बहका रहा।

बहकावे में ना आ मानव, सब कुछ तुम्हारे अन्दर है।
सुख दुख धन दौलत, सभी कुछ, और देने वाला भी, तुम्हारे अन्दर है॥

बस तुम्हें तो करनी है, अपनी पहचान, तू सतयुगी है ईसांन।
भ्रम से कलयुग में वास है तेरा, तू तो युगों युगों से आता रहा है, ईसांन॥

परमपुज्य ज्ञान में भरा है, ज्ञान से ही सतयुग, दरबार सजा है।
अतिथि बनकर आये हो तुम, धरती पर मोक्ष द्वार अटा है॥

इसे खोलों ज्ञान से, पुण्य धर्म में वास करो।
कर्म करो कुछ ऐसे, पुण्य के, अधर्म से जीवन में, किनारा करो॥

पुण्य से सूर्य निकलता है, धरा पर, धर्म उसका ठिकाना।
निस्वार्थ भाव से दिन निकले, सूर्य कृत्य धर्म निभाना।।

धर्म हो सम्पूर्ण दिव्य पुंज में, ऊर्जा स्त्रोत सम्पूर्ण होता है।
ईश्वर शक्ति होती है, इतनी ज्यादा, जिससे दिन निकलता है।।

सूर्य लोक में है, अपार उर्जा स्त्रोत, ईश्वर की शक्ति का समूह है।
इसी तरह, मानव के अन्दर भरी है उर्जा, जो ध्यान से बनी है।।

सत्य सफर सोच करे, मानव, उत्पन्न उर्जा स्त्रोत बन जाता है।
धर्म से करे जीवन सम्पन्न, जीवन में शक्ति स्त्रोत चमक जाता है।।

अमल करे, अगर सत्य शब्द भेंद मानव, अमर पद पाता है।
अपनी भी पहचान हो, मानव को, और ईश्वर का पता मिल जाता है।।

धर्ममय जीना, पृथ्वी पर सम्पूर्ण वास मानव करे, ईश्वर अहसास से।
पतन ना हो सके, मानव का धरती पर, रहे पुण्य धर्म में वास से।।

जीवन जीना दुर्लभ नहीं है, धरती पर, यू तो पापी भी जीते हैं।
पर पापियों का जीवन जीना क्या, वे तो नरक भाव में रहते है।।

सत्य में नरक है, उत्पीड़न जलन, कभी मिट नहीं सकती।
चुभती रहती है, हर क्षण भय से भर जाती है, कमी नहीं झुकती।।

नरक है, अज्ञान कर्म, और सोच का है परिणाम।
स्वभाव में क्रोध झलके, और अहंकार का चढ़े उफान।।

यह जीवन ज्ञान कुण्डली है, बिना ज्ञान, कुछ जान नहीं सकते।
ज्ञान के द्वारा, पहले मानव अपने को समझे, फिर ईश्वर को जान सकते।।

मानव क्यों आया है, धरती पर साधारण सी बात नहीं।
मानव अज्ञान के कारण, साधरण समझे जीवन, सिर्फ खाने पीने की, बात नहीं।।

स्वयं में बनो ज्ञानी, सब कुछ तुम्हारे अन्दर है।
स्वयं में ईश्वर को देखो, सूर्य की चमक भी तुम्हारे अन्दर है।।

जीवन तो यू ही चलता रहेगा, इसका कोई आदि अन्त नहीं।
जिस तरह से, आज दिख रहा है, उसी तरह दिखता रहेगा, दिखता तुम्हें अनहन्त नहीं।।

मृत्यु होगी मानव की, फिर जन्म लेकर आयेगा।
फिर उसी कर्म को करेगा मानव, फिर मृत्यु को पायेगा।।

यही ही धरावाहनी है, इस काया की, यह कभी रुकता नहीं।
सदैव से बन रही है, काया, इसका किसी को भेद नहीं।।

भेद तभी मिल पायेगा मानव को, जब ज्ञान पर अमल करेगा।
महत्वपूर्ण समझेगा मानव, अपने आपको, और ईश्वर के सुर भरेगा।।

अनन्त ज्ञान लिखा हुआ है, धरती पर, पुण्य प्रकाश नहीं।
ना पढ़ता मानव ज्ञान को, अमल करने का भास नहीं।

रिति रिवाजों में बंधा है, मानव, उसके आगे का, भास नहीं।
कौन सुनायेगा ज्ञान गांव गांव में, उसको ईश्वर की आस नहीं॥

गांव गांव में बसता है, भारत का मानव, अधियारों में भटक रहा है।
रिति रिवाज, त्योहार व्रत में फंसा है मानव, पर अन्दर से रो रहा है॥

ना उसकी आवाज शहर तक पहुंचती, धुन्ध में जी रहा है।
सोच की, उस पगडंडी पर, चल रहा है, जिसमें उन्नति का, जीवन ढल रहा है॥

उसे नहीं पता जीवन का, पहिया अज्ञान से ढक रहा है।
वही सोच वही माहौल, वही रिति रिवाज, अपना जीवन बिता रहा है॥

ईर्ष्या द्वेष से भर रहा है पेट, स्वभाव पर, प्रश्न चिन्ह बना रहा है।
कड़वा घूंट पी रहा है, अपने खून में ही, और अशब्दों का बोझ ढो रहा है॥

मेहनत करके, जीवन बिताया, सुख को कोई सार नहीं।
पुत्र करे वार अशब्दों का, माता पिता को देता, मीठे शब्दों का, व्यवहार नहीं॥

मानव नहीं है, कोई भी अलग, सभी एक मानव जात है।
सभी के अन्दर भरा है, ईश्वर ज्ञान, परन्तु अपने से अज्ञान है॥

हे मानव, अपने आपको जान पहले, फिर सामने वाले को, जान जायेगा।

और ईश्वर को भी जानेगा तू, और सृष्टि में आने का, तात्पर्य भी जान जायेगा।।

आगे भी सुन, ज्ञान की बातें धरती पर, प्रथम ठिकाना है।
आना है, जीव को जरूरी, पृथ्वी पर, फिर देव लोक जाना है।।

आपके अन्दर के, भाव में है, समय तुम, धरती पर, कितना लगाओगे।
कम समय भी, लग सकता है, और ज्यादा, अज्ञान में पाओगे।।

सब कुछ है तुम्हारें अन्दर, स्वर्ग धाम भी, खुला हुआ।
अमर अजर है, दरवाजा उसका, मानव के लिए खुला हुआ।।

प्रयत्नकरो धरती वासियों, पुण्य धर्म में भाव भरो।
ना दर्द पहुंचाओ, किसी जीव को, ज्ञान में वास करो।।

कोई किसीको कुछ नहीं देता, खुद तुम्हें अमर पद पाना है।
कोई नहीं सहारा बनता, खुद ही तुम्हें ज्ञान पाना है।।

ज्ञान पाओगे खुद ही, अन्दर भरा ईश्वर प्रकाश।
अपनी पहचान करो, देव हो तुम, कहां ढूंढोंगे, ईश्वर निशान।।

तुम्हारे अन्दर ही है, वह ईश्वर प्रकाश नाम।
उसी ज्योति से तुम, स्वांस भरते हो, वहीं है, परमेश्वर नाम।

जीत लो इस कमजोरी को, जो तुम्हें सता रही है।
जिसने तुम्हें दुख दिया है, खुद ही तुम्हें बता रही है॥

दोषों की बाढ़ आई है, दुनिया में, मानव मस्तिष्क भरा पड़ा है।
धूल से अटा पड़ा है, मानव सन्त बनना, वह कुण्डल अविधा से जड़ा है॥

इस धुन्ध में से बाहर निकलो, ईश्वर वाणी, तुम्हें निकाल ने आई है।
अमल करो, इस वाणी पर, तुम्हारा जीवन, सुन्दर बनाने आई है॥

कृर्तव्य को न भूलो अपने, गृहस्थी में वास करो।
सोच अपनी रखो शुद्ध, और किसी से न ईर्ष्या करो॥

ठग रहे हैं, कलयुगी दोष, तुम्हें यह ज्ञान नहीं।
मुल्क पर चढ़ी है, असुरों की माया, तुम्हें रहस्य भान नहीं॥

बाहर निकलो, उस अज्ञान से, जो तुम्हें रूला रहा है।
दर्द में क्यों फंसे हो, ईश्वर की तरफ से निकालने का, भेद आ रहा है॥

ईश्वर है तुम्हारे अन्दर, तुम्हारा सब कुछ पता है।
क्या सोचते हो तुम, रात दिन, यह यन्त्र तुम्हारे अन्दर लगा है॥

भूल कर रहे हो तुम, जो तुम्हारे अन्दर है, उसका भाव नहीं।
और तुम्हारे अन्दर नहीं, बाहर से लेते हो उसका करते नाश नहीं॥

तुम्हारे अन्दर तो सत्य भरा है, और ईश्वर कण कण में भरा है।
सत्य तुम्हें याद नहीं, दोष ईर्ष्या बाहर से, मानव के अन्दर जड़ा है।

बाहर की लीला बन्द करो, अन्दर का ताला खोलो।
ना रहो भंवर जाल में, अपने अन्दर देखों, ईश्वर को, और प्रेम से ले लो॥

धुन बज रही है, तुम्हारे अन्दर, दिव्य साज खोलो।
सुनो आवाज दिव्य लोक की, ईश्वर ईश्वर बोलो॥

निर्माण करो ऐसे युग का, कोई भी मानव, अज्ञान धुन्ध में न हो।
सुर बनाओं ऐसे शब्दों के, दुख में फंसा हुआ, इस युग में मानव ना हो॥

ज्ञान सागर प्रेम की वाणी

ऐसी स्थिति धारण करो, जो मानव हित में हो।
पहले अपने आप को जीतो, फिर चित ईश्वर में हो॥

मानव खुदी को जीते, फिर दूसरे मानव को जीत सके।
जब दूसरे मानव को पा सके, तभी ईश्वर को पा सके॥

पाना, कहते है, पूर्ण रूप से, धारण करना, प्रेम सागर बन्धन।
निस्वार्स्थ भाव, स्वभाव पर हो अंकित, और काया हो जाय कुन्दन।

भाव से, स्वभाव हो अंकित, भाव से सृष्टि में प्रेम सधता।
भाव से, गुण हो मानव में अंकित, जो मानव ईश्वर में बंन्धता॥

विश्लेषण करो, पृथ्वी वासियों, अपने अन्दर का विधान।
ज्ञान करो धारण सृष्टि में, और अपने अन्दर का जानो ज्ञान।।

सत्य सत्य हो ज्ञान से, साबित, भी होता, उसको ग्रहण करो।
जो सत्य नहीं झूठ को, सत्य बतावे, उसको पीछे करो।।

उन्नति करने आयें हो तुम, उन्नति करने का, उत्तम भाव भरो।
अन्नत समय से चल रही है सृष्टि, मानव का विकास क्या है, ज्ञान करो।।

पत्थरों में भी तुम्हें ईश्वर दिखे, ऐसा विश्वास करो।
हर मानव में, ईश्वर दिखे, ऐसी उन्नत, सृष्टि उत्पन्न करो।।

भेद खोलो, अपने अन्दर के, सब कुछ तुम्हारे अन्दर भरा है।
बस तुम्हें तो, दृढ़ करना है निश्चय, पहले ही से ही, तुम्हारे अन्दर जड़ा है।।

हे मानव ईश्वर बार बार क्यों ज्ञान सिखावें, क्यों धरती पर ज्ञान भिजवावे।
मानव को दिया है, सृष्टि संजोने का जिम्मा, बुद्धि से सृष्टि बसवावे।।

मानव है महत्वपूर्ण जीव, ईश्वर ज्ञान समझावे।
भरे प्रेम की वाणी दुनिया में, हर मानव में, प्रेम ध्वनि बजावे।।

और कहे मानव को प्रेम से और सत संगति से ज्ञान सुनावे।
प्रेम भरे, शब्दों में ज्ञान सुनावे, ओर ज्ञान का प्रकाश, दुनिया में फैलावे।।

ज्ञान फैलावे ईश्वर प्रेम से, जो मानव ईश्वर से बन्ध जावे।
ईश्वर से बन्धना ही सत्य जीवन है, यह अमूल्य धरोहर बतावे॥

गुण बढ़वावे मानव के अन्दर, अवगुणों पर रोक लगावे।
सार समझावे मानव को ज्ञान से, और अपना परिचय करवावे॥

हे रक्त के रस से भरे मानव, काया को आनन्द से भर ले।
पुष्प खिला अपने अन्दर, हड्डी मास में शुद्ध कर ले॥

पाप से मुक्त कर ले काया को, तू इस धरा पर मुक्त कर ले।
संशय में ना रह मानव, 'कष्ट उठा कर, ज्ञान का प्रकाश भर ले॥

पुण्य करले इस धरा पर, यह है, तेरा मुक्ति का ठिकाना।
या तो, तू बार बार आयेगा धरती पर, या फिर होगा, दिव्य लोक जाना॥

परमपुरुष में मिल जा बन्दे, सत्य की हामी भर ले।
जीवन को कर शुद्ध निर्भय, सन्तों की संगति कर ले॥

आफत में, ना रह हरदम, शक्ति सोच की, सात्विक भर ले।
ईश्वर है, नजदीक तेरे, इतने, इस धरा पर मुक्ति कर ले॥

नियम बांध ले, जीवन के अपने, सत्य स्वांस, भय रहित कर ले।
सुन्दर जीवन का आनन्द भर ले, बुद्धि गुणवान कर ले॥

पावन कर दे, इस धरा को, स्वांस शुद्ध हवा में भर ले।
ना फैला, अशुद्धि का जहर, दुनिया में, विचार शुद्ध कर ले॥

प्रयत्न कर ले, अपने अन्दर, अमल करने का संकल्प कर ले।
तेरा नहीं है, कुछ भी दुनिया में, इस वाक्य को पूर्ण भर लो॥

शक्तिहीन नहीं है तू, शक्ति बीज है तेरे अन्दर।
तू ना भटक दुनिया में, सुर बैठे है तेरे अन्दर॥

आसुरो पर पहरा बैठा अपने, गुणों से भाग जाएगा सभी।
सुर जब बैठेंगे तेरे अन्दर, भाग्य तेरे खुल जायेंगे तभी॥

फैसला है तेरे हाथों में, तू अमल करने का, सुर भर ले।
सम्पूर्ण दोष हर जायेगे तेरे, अन्दर से सोच सुन्दर कर ले॥

अपना नहीं है कोई दुनिया में, यह संसारिक जामा है।
ज्ञान से अगर देखेगा तू, दिखेंगी दूसरे मानव में, ईश्वर की खिली आभा है॥

हे नर, उद्देश्य बना अपना जीवन में, क्या क्या करना है।
सोंप जीवन का भार ईश्वर पर, अन्तिम में भी तुझे, यह ही करना है॥

वर्तमान में कर ले अपनी शुद्धि, फिर समय नहीं मिल पायेगा।
सतगुरू है अन्दर बैठे, ऐसा युग कभी नहीं आयेगा॥

ऐसे युग में, पाया जाता है ज्ञान धर्म का, तभी सतयुग आता है।
जब मानव झेले दुख ग्रहस्थ में, तभी जीवन समझ में आता है॥

तभी मानव करे अपनी पहचान, ईश्वर की हो जान पहचान।
तभी खिलता है, फूल कमल का, जब जीवन में, दुखी रहे ईसान॥

दुख कोई कड़वा फूल नहीं, ना ही बदसूरत है।
दुख में ही सुगन्ध भरी है, जो दुख ग्रहस्थ का है॥

इसी ग्रहस्थ में से निकले, दुख सुख, से कमल खिलता है।
सहन करने का हो, बल मानव में, तभी परमानन्द मिलता है॥

इसी काया से फूल खिले, इसी से सुगन्ध आती है।
इसी काया में आनन्द है संसारिक, इसी से परम आनन्द की, सुगन्ध आती है॥

इसी काया ने सुर बसे है, इसी काया में असुरो का वास।
इसी काया में ब्रह्मण्ड रचा है, इसी काया में नरक का वास॥

इसी काया में स्वर्ग दिखता, इसी काया में धुन्ध का वास।
इसी काया में नर अधर्मी बनता, इसी काया में धर्म का वास॥

इसी काया के सहारे, पत्थरों में, ईश्वर वास दिखाई देता है।
इसी काया में सोच से शक्ति मिलती, इसी काया से स्वर्ग दिखाई देता है॥

इसी काया में रहकर, मानव मानव से घृणा करता है, और मानव रोता है।
इसी काया से, करे मानव घोर पाप, इसी काया से तप करता है॥

इसी काया से हो अधर्मी मानव, इसी काया से धर्म में जाता है।
इसी काया से करे मानव बीमारी संग्रह, इसी काया से निरोग हो जाता है॥

इसी काया से करें प्रेम मानव, इसी काया से मानव से, मानव बन जाता है।
इस काया के भेद निराले, इसी काया से, नर से नारायण बन जाता है॥।

काया में ही सब भेद छिपे हैं, और काया ही मिट्टी का खिलोना।
इसी मिट्टी से बनता है, वह काया ढांचा, अन्तिम में मिट्टी में मिल जाना॥

टूट जाता है, यह काया का खिलौना, चला जाता है शमशान।
रह जाता है कर्म फल मानव का, जो अमर फल है, किसी को ना पहचान॥

सूक्ष्म शरीर में फिरे भटकता, अधर्मी मानव फिर पछताता।
दिखे उसे मृत्योपरांत, कोई भटकता, और कोई, स्वर्ग द्वार में जाता॥

ज्ञान गंगा सागर

फागुन मास अंक एक में, एक जली दिव्य ज्योत
दिन पूर्णमासी में, शिव-शक्ति का हो मिलन, अखण्ड जले ज्योत।

शिव शक्ति प्रगट होकर, महावीर को दे शक्ति लेखन।
लेखन करो, छन्छ भरो, ज्ञान दो, जगत को करो सुमन॥

शिव शक्ति पृथ्वी लोक पर, प्रगट होती उपहार दे जाती।
कर्म करो निस्वार्थ, उपकार करो, मन रखो सुन्दर, दिन राती॥

हे जगत वासियों अपना मन।
चित्त निर्मल बनाओ ज्ञान से पाओ॥

हे जगत वासियों,
दर्द भरा है, इस जगत में, बनो शिव के नाती।
शिव दे ज्ञान, जगत को, जगत बने बाराती॥

शिव शक्ति का हो मिलन, जले सन्तों की बाती।
उज्जवल मीठे गीत गाओ धरती पर, सन्त बने बाराती॥

ज्ञान गंगा सागर बहाओ धरती पर, ईश्वर गुण गाओ दिन राती।
शिव ने दिया है, ज्ञान धरती पर, फैलाओ, मनुष्य जाती॥

आज्ञा दी है, शिव ने, समय का अंकुर फूटा।
नींव रखी है, धर्म की, धरती पर, शक्ति का अकुंर फूटा॥

ब्रह्म की धरनी शिव की करनी, विष्णु महिमा गावे।
उमा बनी प्रकृति, ब्रह्म विष्णु ध्यान लगावे॥

ब्रह्मं, विष्णु, शिव ज्ञान की ढाल, बनकर, जगत मुक्त करावे।
माता उमा करे वन्दना त्रिदेव की, जगत का ध्यान लगावे॥

धर्म हर युग में होता, प्रलय नहीं याद आवे।
शिव दर्द बांटे, युग युगों का, कलयुग का ध्यान लगावे॥

कष्टों को करे दूर, और कण कण में, भरे शिव प्रचार।
देव लोक में चर्चा इसकी, कलयुग का करे विचार॥

ब्रह्म विष्णु शिव बैठे, देवी उमा का लगा दरबार।
धर्म घटा है कलयुग का, धर्म बढ़ावे शिव अवतार॥

शिव ने बनाई जगत विधि, कलयुग का उद्धार।
उमा शक्ति प्रगट हुई, धरती पर करे धर्म प्रचार॥

शिव ने दिया वरदान माता को, ऊंकार का दिया हार।
उमा ने जगत को जाग्रत करने का, दिया कुण्डल हार॥

दिव्य शब्दों से पहनाओ, ज्ञान कुण्डल हार।
शब्द दिव्य है, पहनाओ जगत के मनो में, जाग्रत हो संस्कार॥

शब्दों में ही शिव भरा है, शब्दों से सम्बोन्धित हो संसार।
शब्द ही ब्रह्म है, ब्रह्म शब्द है, शब्दों से करो ज्ञानवार॥

शब्द ही दिव्य वाण बनाओ, धरती वासियों को पहनाओं।
विश्व है, भ्रमित, करो जाग्रत, मानव, मानव में प्रेम बहाओं॥

हेनर, आन्त्रिक चेतना खोलो, शिव शिव बोलो दिन राती।
दिव्य शब्दों का करो पान, बनाओं दिये की बाती॥

बाती जले दिन राती अखंण्ड हो प्रकाश।
नर के अन्दर जले, ज्ञान दिये, दिखे नीला आकाश।।

आंधी चले पृथ्वी लोक पर, बुझ न पाये, दिव्य लोक की बाती।
जब नर नारी करेगे सुमरन, ईश्वर का दिन राती।।

युग चेतन्य रहे, शिव नाम से, उमा बहे नर मानव में सदा।
कमल जैसा फूल खिला रहे, नर नारी के अन्दर सदा।।

भावनाओं में फूल खिले, जगत सम्पूर्ण खिल उठे।
जगदम्बा भी प्रेम करे, जन मानस जब जग उठे।।

हे मेरे ईष्ट देव, जगत गुरू शिव करूणा कीजिए।
जिससे हो उद्धार मानव का, ज्ञान मुझे दीजिए।।

मैं लगाऊं ध्यान आप मैं, पुत्र हूं आपका।
संसारिक प्रपच्चों में रहा हूं।, जन्म जात का।।

मैं भगत हूं आपका, ज्ञान कुछ भी नहीं।
क्या करूं क्या लिंखू, नहीं ठोर मेरा कहीं।।

मैंने सब तरफ से हारकर, भगवान शरण ली आपकी।
हे ईश्वर कुछ विधि बताओ, ज्ञान ध्यान की।।

प्रार्थना मेरी ईश्वर ने सुन ली, ज्ञान बताने लगे।
ज्ञान की गंगा में मानव देह, ज्ञान बतलाने लगे।।

मानव देह यात्रा

क्यों मनुष्य जन्म लेकर आया, देह ज्ञान बताने लगे।
मनुष्य फंसा है माया जाल में, ज्ञान यह बताने लगे।।

हे मानव जान देह ज्ञान, मानव जनम रूप समझाने लगे।
पांच तत्वों से बनी त्वचा, अलग अलग यन्त्र बताने लगे।।

जन्म लेने से पहले, यह त्वचा कहां से उपजी।
पूर्व कर्मों के फलों से, नई त्वचा गर्भ में उपजी।।

हर जन्म पर जन्म लेते, नई माता बनती, संवरती रही।
पूर्व जन्मों के आधार पर, कर्मों से दण्डित होती रही।।

हर जन्म में माता बदली, त्वचा नई बनती रही।
हर जन्म का बदला, चुकाते चुकाते, थकती रही।।

हर जन्म में भेद छिपा है, मानव का पार नहीं।
यह ज्ञानियों का भेद है, अज्ञानियों को भेद नहीं।।

ज्ञान रूप में भेद नहीं, अज्ञान रूप में माया छिपी है।
ज्ञान रूप ईश्वर से मिलता, अज्ञान रूप में धुन्ध छिपी है।।

देह रूप मानव जिसे सबसे, सुन्दर जानता मानता।
देह के अन्दर, माया भेद में क्या छिपा है, मानव जानता।।

हड्डी मांस से देह बनी, नस नाड़ियों से है कसा।
चर्म चादर से देह ढका है, जिससे मानव मोह में फसा।।

देह धोखा देती है, पांचों तत्वों से बनी, तत्वों में मिल जायेगी।
देह पृथ्वी लोक में बनी, इसी मिट्टी में मिल जायेगी।।

देह मिट्टी में मिल जायेगी, कर्मों का लेखा साथ लेकर जायेगी।
कर्मों के फलों से लदेगी देह, बार बार बोझा ढोती जायेगी।

देह तो मिल जाती है निशान, मिट जाते है सभी।
भूल जाते हैं सगे सम्बन्धि, याद कोई करता नहीं कभी।।

मानव जीव रचना, पांचों तत्वों के सहयोग से।
जिसमें जीव का ढले ढांचा, ईश्वर के सहयोग से।।

ईश्वर की रचना है, सृष्टि इसमें जीव ढांचा बना।
कोई पिता बना, कोई माता बनी, कोई पुत्र बना।।

कोई पिता बनकर आया, कोई पुत्र बनकर आया, यह ईश्वर खेल।
कोई किसी खण्ड में जन्मा, कोई किसी खण्ड में, यह कुम्भ जैसा मेला।।

ईश्वर ज्ञान समझो, मेल मिलाप सब मिथ्या है, बिछुड़ने के लिए।

अज्ञान के प्रभाव से मिलेंगे, जीवन में सभी, पर बिछड़ने के लिए॥

मानव अज्ञान भंवर में फंसा, सृष्टि को सुन्दर मानता।

मानव को ज्ञान है सभी, हटेगी देह, जिस दिन, वह मानव जानता॥

देह नाशवान है, असत्य है, दुख मूल रूप।

देह से धोखा खाता रहा मानव, यह सत्य मूल रूप॥

देह धोखा देती है, अपने स्वाद के लिए, मन चलाती है।

देह ही मानव से पाप कर्म करवाती, देह अन्त में भूल जाती है॥

देह सत्य अमर नहीं, यह किराये की जागीर।

देह जीवन भर भ्रम में डालती, यह कड़वी खीर॥

देह का कर्म जन्म, जन्म बदलना, एक जैसी बनती नहीं।

हर जन्म में शक्ल बदले, दूसरी पहले जन्म को जानती नहीं॥

अज्ञानी देख, मानव देह के अन्दर क्या भरा है, मल मूत्र से सजा है।

ज्ञानी देह, मानव देह में यंत्र है दिव्य, देवताओं का दरवार सजा है॥

मानव देह में ज्ञान का भण्डार भरा है, देव द्वार खुलता।
देह के अन्दर, चांद, सूर्य, ग्रह, नक्षर, सितारे, मोक्ष का द्वार खुलता॥

अज्ञानी देह मानव के कारण, अहंकार में जीवन बिताता रहा।
देह भोगती रही अज्ञानी को, मानव यह भूल करता रहा॥

अज्ञानी देह को सत्य मानकर, अपना करता बनता रहा।
देह को, कामनाओ ईर्ष्या अशब्दों से, बोझिल करता रहा॥

कर्मों के इस जीवन खेल में, मानव अहंकार भरता रहा।
माता के गर्भ में, मानव फिर दोबारा, मांस से जकड़ता रहा॥

नौ महीने, गर्भ में नरक में पड़कर, याद ईश्वर को करता रहा।
माफ कर दो ईश्वर, माफ कर दो, ईश्वर, यह मंत्र जपता रहा॥

नौ महीने माता के गर्भ का समय हुआ, धरती पर आने के लिए।
पूर्व जन्मों के अनुसार, नया लेखा जोखा बना, नये जीवन के लिए॥

मानव जन्म लेते समय कहने लगा, हे ईश्वर माफ मुझे कर दीजिए।
इस बार मैं स्मरण करूंगा सदा, एक मौका फिर दीजिए॥

हे ईश्वर में जन्म लेते लेते थक गया, अब गलती करूंगा नहीं।
लूंगा हर दम आपका नाम, कर्म अधर्मी करूंगा नहीं॥

अब मैं भूलूंगा नहीं, ईश्वर नाम को।
भूलकर भी नहीं करूंगा, नीच काम को॥

जन्म लेते लेते ईश्वर ने, पुकार सुनी अवसर दिया।
जन्म का समय पूर्ण हुआ, और मानव को धरती पर बसेरा दिया॥

मानव जन्म लेते ही, सब कुछ भूल गया।
जो पूर्व जन्म में करता था, उसी में मिल गया॥

बचपन

खेलने हंसने रोने में, माता की गोद में, बचपन उगने लगा।
आई जवानी, नर नारी का पति, बनकर जीने लगा॥

विषय भोग अहंकारों में, नर नारी का जीवन का समय, जाने लगा।
संसारी भोग विलास, ईर्ष्या द्वेष धोखा फरेब, में अशब्द भी गाने लगा॥

नर बन गया विषय भोगी, द्वेष सभी निखर गये।
क्रोध धन का नशा, विषय भोग सब भा गये॥

समय जीवन का बढ़ता गया, बुढ़ापा आ गया।
काया थर थर कांपे, नर काया का बोझ बन गया॥

जीवन बिताते देर नहीं लगी, मानव सोचकर पछताया।
काया के यंत्र सब थक गये, काया ज़र्रा ज़र्रा हुई घबराया॥

कानों से सुनना बन्द, आंखों से दिखना बन्द, हो गया।
हाड पिन्जर की बनी काया, शक्ति नहीं, चलना फिरना बन्द हो गया॥

जीवन एक दिन फूल की तरह, खिला था, मुरझा गया।
जीवन में जो भी कर्म किया था, लेटे लेटे याद सब आ गया॥

याद आई अपनों की, जीवन में, क्या पाया, क्या खोया।
ईश्वर की भी याद आई, रोया नर, सोचकर खाली पछताया॥

कहने लगा, भगवान मैं क्या करूं, जीवन कट गया है मेरा।
ना मैंने तुझे परमपिता समझा, ना नाम लिखा तुमने मेरा॥

अब क्या करूं, भगवान समय बीत गया, काया पर नहीं जोर।
मनन कैसे करूं तेरा, ना दिखती मुझे तेरी भौर॥

हे भगवान, मनन आसन बिना, कैसे अनुभव करूंगा आत्मा।
आत्मा अनुभव बिना, मैं कैसे मिलूंगा, परमपिता परमात्मा॥

हे मानव, तू आत्मा को ना जानेगा, ईश्वर तुझे कैसे मानेगा।
मुक्ति का भाष भी नहीं हो सका तुझे, कैसे पहचानोगे॥

हे मानव, जितना समय बचा है, जीवन का, स्मरण पर परमात्मा।
सृष्टि के कल्याण की सोच, और अनुभव कर आत्मा॥

हे मानव संसारिक चिन्ता छोड़कर, ईश्वर नाम जप तू।
जीवन का तुझे पता है, क्या मिला, यह रहस्य दूसरों को बता तू॥

ईश्वर सच्चिदानन्द, उस सत्य को स्वीकार कर।
आनन्द की शुद्धि कर अपने अन्दर, परम आनन्द स्वीकार कर॥

आत्मा शुद्ध चेतन्य है, सत्य तू इसे मान ले।
परोपकार कर दुनिया में, हिंसा तू त्याग दे॥

आत्मा तेरे अन्दर है स्थापित, युगों से अजर अमर है।
उसी आत्मा में प्रवेश परमात्मा, जाग्रत अमर ज्योत है॥

हे मानव तेरी आत्मा अजर अमर है, आदि और अन्त नहीं।
नौ द्वार तेरे अन्दर है स्थापित, ज्ञान से तू सोचता नहीं॥

हे मानव दृढ़ निश्चय कर, आधीन ईश्वर के हो तू।
परंपिता को याद कर, अध्ययन अमर पद् का कर तू॥

मैं ईश्वर हूं

मैं ईश्वर हूं मेरा कोई रूप नहीं, मैं प्रकाश रूप हूं।
मेरा कोई आकार नहीं, निर्विकार विश्व स्वरूप हूं॥

मैं जगत में कण कण में बसा हूं, यह मेरा आकार है।
जो आंखें तुझे मिली आन्त्रिक चेतना, देख, वह मेरा आधार है॥

प्रण कर हे मानव, पृथ्वी की यात्रा मत कर, मुझे ढूंढ नहीं पायेगा।
अपनी काया के अन्दर की यात्रा कर, तभी मुझे ढूंढ पायेगा।।

मैं ईश्वर विधाता परमपिता, मैं मानव देह में बसा हुआ।
अन्तर दृष्टि से देख, हे मानव तेरे अन्दर में रसा हुआ।।

मैं सृष्टि करता हूं, यह मेरा खेलने का आधार।
ऋषि मुनि मेरी करे, आराधना, सूर्य, चन्द्र, ग्रह द्वार।

पुण्य में मैं जाग्रत रहूं, अधर्म में मैं सोता रहूं।
ज्ञान के द्वारा मैं जाना जाता, विश्व का विधाता हूं।।

मेरी आज्ञा से धरती घूमती, और रसातल में चली जाती है।
मेरे ही द्वारा सूर्या दिन निकाले, मेरी आज्ञा से अन्धेरी जाती है।।

मैं ही इस सृष्टि में, अवतार धर कर आता हूं।
मैं ही युग बदल कर, सत्य, धर्म की, मोहर लगता हूं।।

मेरा कोई नाम नहीं, मेरे नाम अनेक।
मैं राम, रहीम, अल्लाह, ईश्वर ये नाम है मेरे नेक।।

हर धर्म में मेरा वास, हर धर्म में भाषा अनेक।
मेरा नाम है एक, मैं ईश्वर हूं एक, सृष्टि में भाषा है अनेक।।

जिस भाषा में नाम जपे मानव मेरा, वह ही नाम है मेरा।
जिस प्रकार सृष्टि में मानव ढांचा है एक, नाम अनेक, हे मानव यह अज्ञान तेरा।।

जब तक ज्ञान के चक्षु नहीं खोलेगा, तुझे मैं दिखूंगा अनेक।
जब मानव ज्ञान के चक्षु खोले, तभी मैं दिखूंगा एक॥

मानव अपने अज्ञान के कारण, युगों युगों से पिसता रहा।
दर्दमय रहा मानव सदा, असुरों को मन में लेकर मरता रहा॥

असुरों के मनों पर असर से, मानव हर युग में डरता रहा।
ज्ञान जब हुआ मानव को, देव गणों को धारण कर, मोक्ष को जाता रहा॥

हे शरीर धारी मानव, अपना बदल, अन्दर का बाणा।
गति तेरी सृष्टि में होगी सुन्दर, तुझे होगा ईश्वर में जाणा॥

तू सोंप दे, जीवन का भार ईश्वर के ऊपर, नमन कर दिन रात।
सात समुद्र पार भी अगर तू जायेगा, ईश्वर रखेगे प्रीती प्यार॥

हे मानव तू भूल जाता है, बार बार, पर ईश्वर नहीं भूले।
जिस तरह, माता पुत्र को कभी नहीं भूले, उसी तरह, ईश्वर अपनी सृष्टि को ना भूले॥

हे जन्म जात, संसारिक माया से मलीन नर, नारायण कैसे बनेगा तू।
सौ वर्ष में छह अरब मानव, जन्म लेकर मर जाते है, पर कब जाग्रत होगा तू॥

हे मानव कब समझेगा, ज्ञान रहस्य, जमीं पर आने का मतलब।
क्यों आया है तू सृष्टि में, क्या क्या कारण है, क्या था तेरा मतलब॥

जाग्रत कब होगा हे मानव, तुझे मैं ज्ञान दे रहा हूं।
सृष्टि सुधार इस युग की, तुझे समय के अनुसार बता रहा हूं॥

हे मानव तेरे कारण ही, मुझे स्थूल में आना पड़ता।
धिक्कार है, तुझे हे मानव, तुझे बार बार जन्म लेकर, आना पड़ता॥

मेरा वही मानव है प्रिय, उसे मैं कहलाता हूं।
जो करे मुझे याद हर वक्त, और, मानव सुर में बहता हूं॥

मैं प्रेम भाव में वास करूं, धर्म है मेरा ठिकाना।
अधर्म में असुरों का पहरा, मानव हो जाता है बेगाना॥

सृष्टि तो मेरी ही बसाई हुई, प्रकृति में मेरा वास।
ज्ञान से मैं जाना जाता, ज्ञानी को होता मेरा भाष॥

मैंने सृष्टि बसाई है, अपने पास बुलाने के लिए।
मेरे से ही सृष्टि है निकलती, और तड़पती है, मेरे में आने के लिए॥

मैंने अनेक लोक बनाये, कर्मों का है आधार।
जो जैसा कर्म करेगा मानव, वैसे पिंजरा पड़ा आकार॥

जो भजे मुझे प्रेम भाव से, वह मुझे पाता है।
जो जैसा भजे सोच भाव से, वह उसी द्वार पर जाता है॥

इसी कारण युग का समय, बहुत बढ़ता जाता है।
मानव शुद्ध चेतन्य ना हो तब तक, मेरे पास नहीं आता है॥

इसी तरह से मानव, जन्म पर जन्म लेता, भोगता रहता है।
समय की सारिणी युग युगों की, बढ़ती जाती, और मानव निर्भय नहीं हो पाता है॥

एक मानव की जन्म जात स्थिति, ऐसी, जैसी सृष्टि सारी।
कुछ आ रहे है कुछ जा रहे हैं, पर ईश्वर के पास, जगह खाली सारी॥

कलयुग में कोई कोई, ईश्वर के पास, स्वर्ग में जाता है।
नरक कुण्डों में, भ्रमण करता हुआ, मानव, फिरता रहता है॥

जैसा मानव आज है, मृत्यु के पश्चात, जन्म लेकर वैसा ही होगा।
जैसा मृत्यु से पहले कर्म करता था, वैसा का वैसा होगा॥

जब तक सत्य को नहीं, पा सकेगा मानव।
फिरता भटकता रहेगा, इस कलयुग का मानव॥

मृत्यु भी अगर होगी, इस युग में, आसन नहीं पा सकेगा।
भटकता रहेगा मानव धुंध अधर में, मुक्त नहीं हो सकेगा॥

मानव की सोच है इतनी ज्यादा, तीव्र, वह पुण्य नहीं कमा सकेगा।
शान्त नहीं रह सकेगा मानव धरती पर, विष फैलाता रहेगा॥

ना दर्द में रोयेगा किसी के, अपने स्वार्थ में बहेगा।
दया भाव का बीज भी नही रहा मानव में, सत्य नहीं छुएगा॥

अपना अपना कर्म करेगा मानव, अपनी बुद्धि से जियेगा।
अपने कर्म को अच्छा बतायेगा, मानव, दूसरे को छोटा बतायेगा।

अपनी करनी से खुदी रोयेगा, मानव, दूसरा हाथ नहीं बटायेगा।
घर परिवार में तो रहेगा मानव, स्वार्थ अपने खून से करवायेगा॥

अपनापन निस्वार्थ, ईश्वर चिन्तन सभी छुट जायेगा।
अपनी बुद्धि के अन्दर, युद्ध जैसा बना रहेगा, शत्रु आसपास रहेगा॥

समय की धारा है यह, कोई ज्ञान समझने को तैयार नहीं।
रहता है मानव अपनी ही धुन में, ईश्वर को सत्य मानने को तैयार नहीं॥

पुष्प खिला धरती के कण कण में, मानव के अन्दर दबा पड़ा है।
ईश्वर रहता है मानव काया के अन्दर, मन वासनाओं से भरा पड़ा है॥

हे कलयुग के मानव सोच तेरी स्थिति क्या है, तू ईश्वर की शरण ले ले।
कलयुग भटक रहा है, रास्ता नहीं साफ, हे मानव, तू ज्ञान, ध्यान ले ले॥

हे मानव तेरा है भविष्य कठिनाइयों में, तू उपचार अपना करले।
ईश्वर को याद कर, और मानव से दया भाव, निस्वार्थ सेवा कर ले।

अपनी पीढ़ी सुधार, तभी युग सुधर सकेगा प्रथम में स्वीकार कर ले।
तेरे पीछे पीछे दूसरी पीढ़ी भी चलेगी, तू इस युग का उपचार कर ले॥

कौन आया है अमर होकर, कौन इस जग में बना रहता है।
सबको एक दिन जाना है, और यह ही डर मानव को बना रहता है॥

निर्भय नहीं रहता इस युग का मानव, हर वक्त डरता है।
कर्म नहीं है ठीक मानव के, झूठ सोच में बसता है॥

झूठ है, हिंसा की जननी, झूठ से अहंकार पनपता है।
झूठ से मानव धन कमावे, वह शत्रु बनकर झलकता है॥

झूठ का सहारा ना ले मानव, धुन्ध फैल रही है।
चारो तरफ आफत मची है, मानव की नैया डोल रही है॥

मेरा मेरा ना कर हे मानव, सब कुछ ईश्वर का है।
तेरा तो यह शरीर नहीं, यह भी ईश्वर का है॥

हे मानव तू बदलेगा कैसे, यह प्रश्न कलयुग पूछ रहा है।
बदलना नियति है मानव की, प्रेम भर मानव के प्रति, युद्ध ना छेड़।
कर्म कर निस्वार्थ, सोच असुरी छोड़ दे, देख फिर युग बदल रहा है॥

सशंय में न रह मानव, तू संघार का रास्ता छोड़ दे।
हिंसा मत कर जीवन में, असुरी सोच छोड़ दे॥

देवताओं का ले आश्रय, चिन्ता करनी छोड़ दे।
मानव से कर निस्वार्थ प्रेम, आवश्यकताओं का पिंजरा छोड़ दे॥

नर से नारायण बनने के लिए आया है, तू नरभक्षी मत बन।
तेरे से ही सृष्टि बनी है, ज्ञान का आश्रय ले, अज्ञानी मत बन॥

खोट तेरा नहीं, यह समय की धारा है, इसे सहारा देना छोड़ दे।
प्रयत्न कर, अपने अन्दर, दया प्रेम अहिंसा, को जग में मोड़ दे॥

अर्थ हर उस प्रश्न का है तेरे, पास, जो तेरी सोच में उठता है।
हर प्रश्न का उत्तर निकाल अपने अन्दर से, जो अन्दर पनपता है॥

हर प्रश्न हर घड़ी पनपता है, तेरे अन्दर, जवाब सही दे तू।
गलत भी जवाब है तेरे अन्दर, सही का हुंकारा भर तू॥

तेरे अन्दर लगा है ईश्वर यन्त्र, वह सब कुछ बताता है।
जीने के लिए सभी प्रश्न उठते है, जवाब तुझे मिल जाता है॥

फिर हे मानव, तू क्यों बदलना नहीं चाहता, इस दुनिया में।
तेरे अन्दर सब कुछ ज्ञान भरा है, सही रास्ता बना, इस दुनिया में॥

सोच तेरी इतनी बड़ी है, कि तू पन्नों पर लिख नहीं सकता।
व्यर्थ में अपनी उर्जा गवाता है, तू व्यर्थ में, धर्म क्यों नहीं उपजता॥

जितना समय व्यर्थ सोच में गंवावे, उतना धर्म आधीन गवा तू।
तेरे यंत्र भी शुद्ध होंगे, और धरती पर प्रेम, और धर्म बढ़ा तू।

निर्भय होकर, जीवन जी दुनिया में, दोषी मानव का ना बन तू।
ईश्वर का तभी बनेगा, जब मानव से प्रेम करेगा तू॥

अपना उत्थान सुखी रहने का कर रहा है, तू इस युग में।
पर नहीं पता है तुझे कहां अटकी है, तेरी नैया ईस युग में॥

हे मानव, तू दरिया के बीचों बीच खड़ा है, पार कौन लगायेगा।

तुझे पता नहीं ज्ञान, नहीं, स्वाभाविक ही, तुझे ज्ञान मिल जायेगा॥

जब तू अपनी सोच, ईश्वर की तरफ मोड़ देगा।

और प्रेम करेगा मानव, मानव से, फिर मानव नहीं डरेगा॥

सोचेगा सुख चैन से, जब ईश्वर मनन करेगा।

निर्भय रहेगी तेरी सोच, जब तू, सत्युग जैसा स्वांस भरेगा।

हे मानव तेरी सोच में, जो अवगुण भरा, स्वांस भी बदबूदार बना है।

सोच से ही युग बनते बिगड़ते, और सोच से सतयुग बना है॥

सोच से ही वेद बने है, और रामायण सोच का ही करिश्मा।

सोच के कारण मानव को सन्त कहते, यह देखो ईश्वर का करिश्मा॥

सोच से ही मानव, दूसरे धर्म से घृणा करता।

सोच से ही जाति, छोटी को अपमानित करता॥

ज्ञान के बिना मानव जीवन में भय से व्याकुल

अज्ञान के कारण, मानव हर क्षण, भय से व्याकुल रहता।

अज्ञान में भय भरा है, ज्ञान मानव को निर्भय करता॥

मानव जन्म लेकर बचपन, जैसा भाव अंकित करे।
रहे मुक्त झूठ फरेब, से, और सात्विक भाव अकिंत करे॥

बचपन से उपर बढ़े मानव, सोच दूषित करता रहता।
अपना भय छिपाता, झूठ का सहारा लेता, और दर्दमय हंसता॥

अज्ञान के कारण मानव झूठा, जीवन जीने का ढोंग करता।
अपनी करनी छुपाकर, दूसरों की हंसी उड़ाता रहता॥

अज्ञान के कारण मानव ना देखे, अपनी दूसरो की पहचान।
उसी सोच में सफर करे, मानव, जिसमें अपनी करनी रखे ध्यान॥

उसी ध्यान में उम्र गुजारे, नहीं करता, धरती पर आने की पहचान।
क्यों आया है, मानव धरती पर, क्यों बन जाता है, शैतान॥

ज्ञान के बिना हर दम भय में रहता, कभी कोई कर दे मुझ पर वार।
शत्रु भी मानव अपने आप पाले, और ना करे कार्य सुधार॥

ज्ञान करे मानव जीवन में, और दूसरों से करे, सत्य व्यवहार।
और समझे जीवन का मूल्य क्या है, और क्यों आवे धरती पर बार बार॥

इसी ज्ञान को ना समझे मानव, भय में रहे जीवन सार।
कभी अपना डर लागे, कभी पत्नी पुत्र का, भय का करे विचार॥

मुक्त ना रहे, मानव, ना करे अध्यन, जीवन रहे बे विचार।
विचार करे भी अगर, मानव, संसारिक उन्नति में रहे बेसुमार॥

ना सोचे मानव कि, यह जीवन है, आदिकाल से झमेला।
ना कोई सुखी रहा जग में, ना रहेगा, आगे आने वाला॥

जो भी मानव धरती पर आया, उसका है ज्ञान रखवाला जाना।
ज्ञान से ही सुखी रहे मानव, ज्ञान से ईश्वर को जाना॥

ज्ञान ही करे मोह माया से दूर, भय से रहे कोसों दूर।
ज्ञान से समझे जीवन, और अपनो को रखे झूठ से दूर॥

ज्ञान ही खोले मुक्ति का द्वार, जीवन बन्धन काटे।
सुमरन करे ईश्वर का, और सन्तों के नजदीक बैठे॥

ज्ञान से जाने जीवन है मिक्ष्या, सब कुछ मिट जायेगा।
यहां नहीं है अपना कोई, देखते ही देखते सब छूट जायेगा॥

अमर, अजर नहीं है, कोई आत्मा अजर अमर साक्षात है।
वह ही ईश्वर से मिलावे, वह ही विश्व जात है॥

सम्पूर्ण विश्व आत्मा में है, प्रविष्ठ, हड्डी मांस में लिपटा हुआ।
हर नर नारी में है वास ईश्वर का, संसार में लिपटा हुआ॥

हर मानव है मोह के वश, सत्य परख का ध्यान नहीं।
सत्य परख करे मानव, तो मृत्यु का कोई भय नहीं॥

मानव जब सत्य जान लेगा, फिर भय नहीं रह पायेगा।
सुख से रह पाएगा, मानव जीवन में, और मुक्त भी हो पायेगा॥

सत्य सत्य है मानव नहीं जानता, ना ही उसे पहचानता।
सत्य में रमण करे मानव, सत्य ही जीवन उभारता॥

सत्य जानने के लिए ही, मानव धरती पर आया है।
सत्य से ही सुख मिले जीवन में, और सत्य ही सन्तों ने समझाया है॥

सत्य ही गणपति है, सत्य ही माता बनी, सत्य ही ईश्वर प्रमाण।
सत्य ही राह दिखावे, जीने की, सत्य ही मुक्ति मोक्ष वरदान॥

मानव जब सत्य समझ लेगा, जीवन का, धरती पर मुक्त होगा।
धरती पर मुक्त होगा, जो मानव, वह ही मुक्ति द्वार में होगा॥

कोई भी मानव किसी जगह जाये, और वहां उसे दर्द मिले।
चाहे अज्ञानी हो, या ज्ञानी, दूसरी बार वह ना मिले॥

कोई भी मानव, जीवन भय दर्द मय, जीना नहीं चाहता।
चाहता है, सुख मिले, धन मिले, अभिमान में जीना चाहता।।

अज्ञानी भी कभी नहीं चाहता, जीवन में दर्द मिले।
सुखी रहे मेरी काया, और कुटम्भ को भी, सुख मिले।।

मानव चाहता तो जरूर है, सुख, परन्तु उसमें जाना नहीं चाहता।
करता है जीवन में अपने स्वार्थ की बात, अपने मन को समझाना नहीं चाहता।।

फिरता है भटकता, मानव, इस जीवन में, कभी टिकता नहीं।
बार बार आता है, जन्म लेकर, धरती पर, कभी रुकता नहीं।।

जब तक नहीं रुकेगा मानव, स्थिर नहीं होगा, दर्द मय रोएगा।
जब स्थिर होगा मानव, धरती पर, तभी सुखी नींद सोएगा।।

स्थिर होगा जब धरती पर मानव, वह सत्य पा सकेगा।
और जाएगा। मृत्यु के बाद स्वर्ग, मय, वह टिक पायेगा।।

हे मानव तू क्यों करता है, अभिमान तेरे रूप बन रहे अनेक।
तेरा चेहरा बार बार अलग अलग, ढांचे में बना, तू बना अनेक।।

हर चीज दुनिया में एक से दूसरी है, ईश्वर नहीं अनेक।
एक ही ईश्वर है इस सृष्टि के, एक मय ही सृष्टि समावेश।

मानव सोचता है कि मेरा चेहरा, कितना सुन्दर प्यारा है।
मानव के देखते ही देखते, उम्र गुजरती है, चेहरा मुरझाया है॥

उम्र के साथ-साथ मानव को, ज्ञान ईश्वर ने दिया सौ बार।
मानव नहीं समझ पाया, अभिमान में, जीवन सत्य एक बार॥

जितना भी मानव है धरती पर, सभी को ज्ञान दिया है।
मानव जब ज्ञान ईश्वर का ना समझे, तभी सन्तों ने दिया है॥

सन्त आप भी हो, सन्त और आम मानव की, चित्रकारी एक।
युग बदल जाते हैं, अज्ञान के कारण, ईश्वर को बतावे अनेक॥

सबसे पहले, ज्ञान मानव को, दिया जन्म सार।
अपने आप ही जीवन में उपजे, मानव ने नहीं किया विचार॥

बार-बार सत्य याद दिलाया, ज्ञान का बिगुल बजाया।
मानव ना समझा आवाज ज्ञान की, और हर जन्म व्यर्थ गवांया॥

जब बार बार मानव नहीं समझा, ज्ञान की बात।
युग गुजर गये, तभी धर्म हुआ आहत, मानव न समझे बात॥

तभी ईश्वर की प्रेरणा से, युग पुरुष समझावे, और करावे ज्ञात।
जीवन क्या है, मानव क्यों आया धरती पर, वह समझो बात॥

इसी बात से ज्ञान बढ़े धरती पर, और खुला रहे दिमाग।
उसी उपज से बच्चा ले जन्म, और रहे ईश्वर सदा भास।।

निर्माण हो सृष्टि का, प्रेम से, मीठे स्वर गूजें आकाश।
धुन्ध ना फैले धरती पर, और प्रदूषित ना हो आकाश।।

धर्म की ज्योति जले हर नर नारी में, और चिंतन का रहे भाष।
पृथ्वी पर नदिया भी गौरव पवित्रता से बहे, धर्म रहे विधि वास।।

पुण्य प्रेम अहिंसा रहे, मानव के अन्दर, ना लगे ग्रहण वास।
निर्मल बहे धाराये धरती पर, उत्सुकता में रहे नर वास।।

अध्यन करे मानव, जगत ना माने अलग वास।
एक ब्रह्मण्ड है, एक ईश्वर की, मन में रहे भाष।।

चिन्तन करे हर मानव, ईश्वर का, और गुण का रहे वास।
ईश्वर को सत्य माने, और मात पिता की सेवा करे दिन रात।।

युग एक खण्ड में नहीं बसता, पूर्ण पृथ्वी खण्ड वास।
हर जगह मानव बसता, और हर जगह चिन्ता का भाष।।

खुदी की चिन्ता ना करे जो, ईश्वर से नाता जोड़े।
दूसरों की भलाई करे, और प्रेम का खाता खोलें।।

निर्भय रहे, सदैव संतोष पर्व, मन में जमा रहे।
दूसरों पर दया करे, और सन्त संगति में सटा रहे॥

यही ही गुर गीत है, सतगुरू ईश्वर नाम।
सुमरण करो धरती वासियों, यह है सत्य नाम॥

गुण रखो अपने पास, धन का ना करो अभिमान।
काया भी अपनी नहीं, चलेगा एक दिन मृत्यु बाण॥

संग करो सन्तों का, अभिमानी की छाया में ना रहो।
लपेट लेगी एक दिन मानव को, अज्ञानियों की माया में ना रहो॥

ध्यान करो सतगुरू का, यह आरम्भ, और अन्तिम फैसला।
जन्म बिताओ, धरती पर कितने ही, पर यह अटल मसला॥

विद्वान बनो सर्वसाधारण बनो, जीवन में पुष्प खिलेगा।
योग्य उसे कहते है, जीवन मैं, जो सन्त पुरुष बनेगा॥

घर न छोड़ो, देश ना छोड़ो, सदैव रहो, जहां जन्म लिया हो।
पर्वतों में, ना करो ध्यान ईश्वर का, जिसके घर में दिव्य दिया हो॥

जिसने घर में ही ज्योत दिव्य जलाई हो, उसका क्या कहना।
ईश्वर तो कण कण में है, पृथ्वी की यात्रा में क्या बहना॥

सब कुछ तो मानव के घर में, काया में ईश्वर वास।
फिर कहां घूमें मानव, बेसुरा बनकर, हिम्मत करे भाष॥

चेतन्य करे अपने यन्त्र दिव्य, और करे सन्तों में वास।
अनभिज्ञ रहे बुराइयों से, और मन रखे ईश्वर पास॥

धर्म माने सभी धर्मों का, न्याय प्रिय, और ईश्वर एक जात।
ना कोई छोटा है, जगत में, ना कोई मानव की जात पात॥

सुर दिया है ईश्वर ने, सभी को, मन से करे मीठी बात।
हृदय रखे, दूसरों की प्रीत में, जीवन बितावे दिन रात॥

असुरों का ध्यान रखे, युग पर काली छाया छाई है।
देवगणों के ऊपर, कलयुगी बुराई की छाई है॥

सोच समझकर शब्द निकालो, जीभ को रखो बन्द।
ना चलाओ इसे हरदम, ना लगने दो, अशब्दों को जंग॥

अपने मन से संकल्प करो, जन्म मानव का हो गुणवान।
जो नर नारी से जन्में, वह पहले विश्वास करे, मां का, बने विद्वान॥

असुरी सोच से ना जनमें मानव, यह इस धरती की पुकार।
न्याय प्रिय सन्त जन्में धरती पर, यह हर नर करे पुकार॥

नियम सार, सारिणी सार, समय सार बना है, यह ब्रह्मण्ड।
बनता है विधि विधान से, और मानव बने पिण्डदण्ड॥

अपनी शक्ति भरे मानव, अपने अन्दर, दूसरों को करे बलवान।
हिम्मत की बात करो, दूसरों के सामने, युग की करो पहचान॥

हर मानव इस सृष्टि में, अज्ञानी नहीं होता, ज्ञान का है प्रसव।
अज्ञानी होता है, चाहत में मानव, अपनी पहचान से ना रहे सजग॥

उत्तम कोटी का जन्म है, मानव का, ईश्वर से है नाता।
सब कुछ दिया है, प्रभु ने मानव को, मानव पर लिया नहीं जाता॥

बिपरित दिशा में, चलावे मन अपना, अच्छाई से दूर रहे।
न्याय प्रणाली, ईश्वर की ना माने, धर्म से दूर रहे॥

हे मानव, कौन सिखायेगा, हर जन्म लेने वाले को, जीवन ज्ञान।
पिता ईश्वर है, तुम पिता बनकर दो, जन्म लेने वालों को ज्ञान।

बनाओ, संस्कार युक्त युक्ति में ही बहे संसार।
योग में ब्रह्मण्ड चलता, योग में विश्व सार॥

अध्ययन करो अपने अन्दर, ध्यान ईश्वर पर करो।
विश्व की बात करो अपने अन्दर मानव, मानव से प्रेम करो॥

सम्पूर्ण पृथ्वी पर है मानव डेरा, और ईश्वर एक रखवारा।
हर मानव है भाई भाई, चाहे किसी भी खण्ड में हो बसेरा॥

धर्म में मानव किसी में बंधा हो, धर्म के सुर है मीठे गीत।
हर मानव प्रेम चाहता है, हिन्दु हो, या मुसलमान सिख ईसाई सभी एक दूसरे के मीत॥

कौन राज करेगा, इस धरती पर, पहले ही ईश्वर का है शासन।
मानव पैदा होते है रोजमर्रा, ईश्वर का ना, हिला सका कोई आसन॥

पहले जब कुछ नहीं था, धरती, आकाश, सूर्य, चन्द्र, प्रकाश, अन्धेरा छाया था।
तब भी, ईश्वर की सल्तनत में, दिव्य दिये जले थे, प्रकाश छाया था॥

कौन जाने माया ईश्वर की, भेद किसी को ना पाया।
युग युग बीत गये, मानव भ्रमण के, भेद अन्तिम ना पाया॥

वेदों में भी सार दिया है, अन्तिम आरम्भ पूर्ण छोर नहीं।
ज्ञान के आधार पर, पुष्प खिला है, पूर्ण भेद वेदों में सार नहीं॥

खुदी को भी नहीं जान पाया मानव, इस सृष्टि की माया में।
ना किसी ने आकार बताया, इस सृष्टि की छाया में॥

ज्ञान भी हर युग में प्रगट हुआ, यह है ईश्वर का चमत्कार।
ज्ञान युग के आधार पर हुआ प्रगट, उससे अधिक निराकार॥

जितना ज्ञान जिस युग में दिया, उससे ज्यादा नहीं दिया।
जितने में युग चल सके, ज्ञान का उपदेश, उतना दिया॥

छोड़ देते है, ईश्वर पूर्ण भेद, इस जगत को भाष नहीं।
अनन्य प्राणी जन्में है, इस धरती पर, जिसका कोई आभास नहीं॥

अपने बनाये हुए इस ब्रह्मण्ड को, खुदी सजाते है।
संहार करते पालन करते, और जन्म सार खुदी कहलाते हैं॥

मानव मानव है, ईश्वर की बनाई इमारत।
ईश्वर इस सृष्टि में, नहीं करते तिजारत॥

जो मानव ईश्वर में लिप्त हो जाते है, प्रेम बन्धन बंध जाता है।
भेद सृष्टि के छिपा लेते है, बस प्रेम आनन्द बन्ध जाता है॥

इसी में मानव ईश्वर को, पाने की बात करता है।
सत्य है प्रेम बन्धन में, अन्तिम छोर, प्रेम आनन्द ईश्वर करता है॥

मानव उसके परे भी जाना नहीं चाहता, खुदी बंध जाता है।
ईश्वर से, सृष्टि के प्रश्न पूछना बन्द करके, मुक्त हो जाता है॥

विज्ञान मानव की, संसाररिक उन्नति का, जरिया मानो।
विज्ञान बढ़ जाता है ज्यादा, तो विनाश का जरिया मानो॥

ज्ञान दुनिया में, जब बढ़ जाता है, तब युग अमर पद पाता है।
निर्भय होकर जीता है मानव, मोक्ष का राज धरती पर खुल जाता है॥

मानव को धरती पर, दिव्य प्रकाश दिख जाता है।
अपना स्थान देखकर, वह मानव मुग्ध हो जाता है॥

सृष्टि में आना जाना, बना रहता है, सन्त कोई कोई बने।
सन्त का हृदय होता है कोमल, सृष्टि की भलाई करे॥

सृष्टि में हर वक्त आनन्द में रहे मानव, सुख सागर तन में बहे।
यात्रा करे, जीवन की शुभ भावनाओं में, मानव का हृदय कोमल रहे॥

हे मानव

सुन्दर शब्द दे विश्वास में, विष का प्याला ना दे।
चुगली ना करे दूसरों की, अपनी सफाई में सोतन ना दे॥

फूल पर भवंरा देख मडराता, प्रेम का सबक सीख ले।
तेरा तन है, इसी माटी से बना, फूल की जड़ कहां है, भाप ले॥

सरल स्नेह दयावान बन, सुन्दर तेरा जीवन होगा।
मुख पर मुस्कान भर, तेरा आंत्रिक, जगत भी सुन्दर होगा॥

कंण्ठ से कांटा ना चुभा, घायल हो जायेगी, दुनिया।
अपने को भी दर्द होगा, मिट जायेगी यह दुनिया॥

ना फैला झूठा जहर, झेल नहीं पायेगी यह दुनिया।
फूट जायेगा यह झूठ का प्याला, यह मिट्‌टी से बनी दुनिया॥

खंण्ड खंण्ड ना करो मानव मानव को, टूट जायेगी दुनिया।
विश्व पर से, असुरों का पहरा हटाओ, तभी संभल पायेगी दुनिया॥

संहार करना साधारण रहस्य नहीं, मानव का बिछुड़ना है।
युग टूट जाता है जब, मानव का भवंर जाल में फंस जाना है॥

मृत्यु उपरान्त मानव को, किसी लोक में, मिलता नहीं ठिकाना।
घुमता रहता है मानव, अर्ध सत्यकुण्ड में विराना हो जाता है विराना॥

ना मानव इस धरती का वासी रहता, ना ईश्वर प्रीत में जाता।
घुमता रहता ऐसी धुन्ध में, ऐसे ही विपरीत, लोक में जाता॥

घूमता रहता मानव, छाया बनकर, जब तक युग ऐसा नहीं आता।
उसी समय तक घुमता रहता, जब तक मात पिता, धरती पर, अपने जैसे नहीं पाता॥

इसी कारण युग पुरुष हुए है, धरती पर ज्ञान समझाने को।
मानव पाप करनी छोड़े, बचावे अपने आन्त्रिक अंधियारे को॥

सफर है लम्बा, याद कुछ भी नहीं, रहस्य से भरा है जीवन।
ना पता धरती पर आने का, ना जाने का, अधर में फंसा है मानव॥

सुधसुरती लगा धरती पर, तुझे स्वर्ग दिखेगा।
अर्पण कर दे ईश्वर को, नाव तेरी अटकी है, किनारे दिखेगा।।

नर है तू, नारयण बनकर भज, सर्वोपरि गुण धार बन।
नारायण को मान प्रिय अपना, भोगो का भोगी ना बन।।

हे मानव तू कहेगा, ज्ञान मुझे ही क्यों बताया जाता।
ज्ञान प्रगट होता है, ईश्वर स्त्रोत से, युग को समझाया जाता।।

ईश्वर सत्य सार है, इस सृष्टि में, तभी तो सत्य उपजता है।
मानव जितना भी धरती पर है, ईश्वर से ही प्रेरित होता है।।

सत्य जब जन्मता है, धरती पर, जब युग भ्रमित होता है।
मानव, मानव से नफरत करता, तभी दुनिया में ज्ञान प्रकाश चमकता है।।

ज्ञान की ज्योत चमकती है, दुनिया में, दिव्य प्रकाश डेरा डाले।
अज्ञानी भी दृष्टि खोले अपनी, आसुरों की नैया डोले।।

पैगम्बर दे, सत्य सबुत सृष्टि को, शंख नाद बोले।
धरती की पुकार है, जीव मानव सत्य शब्द बोले।।

असुरों की भीर लगी है, जग में सुरो का मस्तक झुक रहा है।
असुर फैला रहे है, जहर हिसा का, सत्य का झंडा झुक रहा है।।

शोध करो अपने अन्दर, क्या भरा है, मानव के अन्दर पैगाम।
क्यों ज्ञान आता है, दिव्य लोक से, क्यों ईश्वर भिजवावे पैगाम॥

खुदी सोच हे मानव, यह कैसी सृष्टि बनी है, यह कैसा चमत्कार।
ईश्वर ही इसे बनाते है, और ज्ञान भिजवाते हैं, यह देखो दिव्य चमत्कार॥

विश्व एक जात है, दूसरी जात क्यों बनावे ईसान।
एक ही जात ईश्वर की है, सत्य सुनो यह पैगाम॥

जल की धारा भी धरती पर बहे, मिलती महासागर में।
महासागर भी ईश्वर की देन, रहती है दिव्य सागर में॥

प्रथम में जल ही जल था, जल से ही पृथ्वी बनी है।
आकाश से वायु निकलती, वायु से अग्नि बनी है॥

कहां से आकाश बना, कहां वायु बनी, स्त्रोत कहां पर है।
कहां से अग्नि होती है उत्पन, पांचों तत्वों का पिण्ड, कहां पर है॥

कहां से लेता है, स्वांस जीवन का, जीव जीवन्त है।
कहां से वायु, जल, अग्नि, पृथ्वी, पर वास देखो जीव का है॥

कौन भेज रहा है, तत्व पुंज, कौन है इसका रखवाला।
किसने बनाई सृष्टि, कौन है ऐसा विचित्र मतवाला॥

क्यों बनाई सृष्टि, क्यो मानव बनाया, क्यों बसाया धरा पर।
क्यों करे प्रेम जगत से, क्यों आता शरीर धर कर, ज्ञानी बनकर॥

कैसे कैसे ग्रह बनाये, कैसे कैसे रंग भरे जगत में।
कैसी कैसी वन वनस्पति बनाई कैसे फूल खिलाये जगत में॥

कैसे केसे बुद्धि मानव बनाये, विधुत जैसे फूल खिलाये।
कौन है वह, इस जगत में, अन्न उगावे मानव को पेंट भर खिलाये॥

कौन है वह, महासागर से जल उठाके, पृथ्वी पर बरसावे।
कौन है वह, जीव का भरे पेट, अपने से पहले भोग लगावे॥

किसकी है चमत्कारी, जितना जीव है धरती पर, भूखा ना सुलावे।
कौन है वह चिन्ता करता है, जगत की, और जीवों को थपथपाकर सुलावे॥

नींद क्यों आवे, मानव को, समय सारिणी बंधी हुई।
चिन्ता कौन करता है, जगत में मानव की, जीने की हिम्मत बंधी हुई॥

कितना खाता है, जीव मुख से, एक युग का अनुमान नहीं।
सबका भोजन पचावे, कौन ऐसी अग्नि का, भेद नहीं॥

आंसुओं का अंकुर है, कहां पर, खुशी रोने का रस अलग अलग।
निकलते है दोनों एक जगह से, मोती बनते अलग अलग॥

जीवन ले जन्म धरती पर, माता के स्तनों में, रस कैसे टपकता है।
जीव के आने से पहले, भूख मिटाने का प्रेम झलकता है॥

कौन है वह जो जीव को रखे चेतन्य, स्वांस के द्वारा धंधकता है।
अग्नि का वास फुंकारते मारे, इसी अग्नि में युग, झलकता है॥

मैं हूं ईश्वर

मैं हूं ईश्वर एक, ब्रह्मण्ड मेरी कलाकारी है।
जीव मेरे अन्दर से हो उत्पन्न, काया मेरी चित्रकारी है॥

मैंने ही ध्यान किया जब, सृष्टि को उपजाने का।
मेरी ही कल्पना खेल है यह, जीवों को उपजाने का॥

मैं खुदी बना प्रथम में, मानव जैसा, उसी में जीव ढाला है।
माया बनाई, बसने के लिए मोह, के वंश मानव ढाला है॥

ज्ञान दिया, माया मोह से दूर, होने के लिए, ज्ञान ने मुझे पहचाना है।
ज्ञान है, जिस मानव के अन्दर, मेरे अन्दर वह ही आना है॥

हे मानव मैंने तुझे दिया है, सब कुछ, मेरा चिन्तन तेरे पास नहीं।
मैं हूं सृष्टि का रखवाला, तुझे मेरा निर्विकार भास नहीं॥

तुझे मैंने उतारा है, पृथ्वी पर, शुद्ध कार्य करने के लिए।
जब तक तू मेरा है, जब तक जिवेगा, मेरे लिए॥

हे मानव तू है मेरा दिव्य श्रोत, जगत में तू बहता है।
तेरी ज्योति जलती है मेरे अन्दर, जब धरती पर तू रहता है॥

जब तू, मेरी ज्योति की रोशनी में है, तुझे दिखें अंधियारा।
ज्योति से बुरे कर्म करे तू, धरती पर, ना दिखे, तुझे दिव्य उजियारा॥

कर्म कर शुद्ध सात्विक, तुझसे अलग नहीं, मेरा ठिकाना।
मैं रहूं तेरी काया के अन्दर, तू नहीं है, बेगाना॥

मैं हर पल तुझे ज्ञान सुनाऊ, आत्मा मेरा ठिकाना।
तू सुने मन की बात, मन तेरा फिरे, वासनाओं की ज्वाला॥

मन का ताबेदार है तू, मुझे स्वीकार नहीं।
मन को कर दे मेरे सुपुर्द, मन को दूं मैं, अधिकार नहीं॥

मन ही मैं बन जाऊंगा, यह मेरा सत्य पैगाम।
मन के वश में ना रहे, यह है मेरा विधान॥

अश्व की तरह दौड़ रहा है, यह मन का गुरूर।
युग कर देगा भ्रमित, यह आसुरो का है सरूर॥

मन कहता है, बार बार मुझे, अधर्म अच्छा लगता है।
मन चाहता है, भोग भोगना, इसी लिए जन्म लेकर बार बार आता है॥

सतगुरू की निगहों में रहो, मन के वंश से रहो दूर।
अनैतिक नैतिक जगत शोध करो, और मन की इच्छा को जाओ भूल॥

मनन करो ईश्वर का, या, सोच सत्य सफर करो।
ईश्वर है इस सृष्टि के दाता, इंसाफ खुद ही करो॥

बुद्धि में तुम्हारे लिए, दिव्य लोक लिखा है।
बुद्धि से सम्भलों जगतवासियों, सृष्टि में ईश्वर तात लिखा है॥

कौन आया इस जगत में, किसी का नहीं ठिकाना।
सब कर रहे है सफर, सभी को कर्मों के अनुसार जाना॥

कर्म बनते हैं ज्ञान के द्वारा, ज्ञान के चक्षु खोल।
निर्माण होगा इस युग का, अध्यात्मिकता का शब्द बोल॥

न्याय करेगे ईश्वर, करुणा दीप जल रहा है।
विधि का विधान है यह, सतयुग दीप जल रहा है॥

फिर रही है युग भी फिरनी, घटना घटेगी जरूर।
टूट जायेगी जकड़ी हुई प्रथा, नई दिशा मिलेगी जरूर।।

मानव पृथ्वी का आशिक प्राणी
स्वास बहे जीव के अन्दर दिव्य आभास

जो बेल कभी खत्म ना हो सके, मानव जात, ऐसा दिव्य प्रणी।
उसी मानव देह में लिपटा हुआ, गुप्त रहस्य ज्ञान की वाणी।।

भेद छिपे हुए है मानव के अन्दर, आदि अन्त पुराने।
उन्हीं भेदों में छिपा हुआ है, ईश्वर, तभी वेद बनाये निराले।।

जिस तरह से, गठित किया मानव को, ईश्वर की रीत पुरानी।
उसी रीत में मीत मिली ईश्वर की, रीत, मानव को है निभानी।।

मानव रचना है, ऐसी इसमें धातुए है, अनेको पुरानी।
धरती का ढांचा भी मानव जैसा, वही धरती वहीं मानव प्रणाली।।

अनेको नाड़ियां गठित है, मानव के अन्दर, आदि काल पुरानी।
अगल अलग नाड़ी का महत्व, पालन पोषण करता, करता निर्माणी।

मानव अज्ञान में समझता, यह शरीर मेरा है।
ज्ञान कहे, शरीर में है आत्मा का वास, ईश्वर, कहता मेरा है।।

मानव शरीर है, दिव्य, ईश्वर का ठहरने का ठिकाना।
रमणीक है, स्थान प्रभु का, मानव ने युगों से नहीं पहचाना॥

मानव काया में समाया हुआ, सम्पूर्ण संसार खजाना।
अध्यात्मिक परिवेष में मानव उतरे, तो देखे ईश्वर कला जमाना॥

देखे मानव, अध्यात्मिक परिवेश में जाकर, दिव्य आसन कहां लगा है।
कहां पर प्रकाश है दिव्य, और स्वर्ग का धाम कहां छिपा है॥

मानव चाहे दिव्य धाम देखना, देखे आदम देह पुरानी।
कहां से होती है सृष्टि प्रकाशित, कहां पर स्थित है देव नगरी विद्यावानी॥

आत्मा का प्रकाश देखे मानव, अपनी दिव्य आंखें खोल।
प्रकाश कहां से आया है, ज्ञान के सागर में जाकर बोल॥

अमर गाथा है तेरी, हे मानव, आत्मा तेरी है पुरानी।
प्रलय भी आई इस पृथ्वी पर, मिटी नहीं तेरी निशानी॥
हर जीवधारी में, आत्मा का है प्रकाश, उसमें बैठा है विधि वास।
मानव पहले भी, और आज भी रखता है, ईश्वर भास॥

मानव अपना जाने रहस्य, तभी पहचाने ईश्वर वास।
ज्ञान में बैठा है ईश्वर, यह रहता है, सभी जीवों को आभास।।

युग प्रलय बीत गई, मानव ना समझ पाया, यह अमर गीत।
कहां से फुंकारे मारे स्वांस, और किसका है, यह अमर मीत।।

कितना प्रिय है तू मानव, ईश्वर करे तेरी कितनी प्रीत।
तू ना करता प्रीत ईश्वर से, फिर भी तेरे अन्दर चल रहा है, दिव्य गीत।।

दिव्य गीत तेरे अन्दर चलेगा, जब तक, शरीर मृत्यु तक जायेगा तेरा।
फिर भी वह गीत चलता रहेगा, जब शरीर नहीं रह पायेगा तेरा।

फिर दोबारा जन्म लेगा, धरती पर, फिर तुझे तेरे अन्दर गीत देगा सुनाई।
ईश्वर की प्रीत जीव से गहरी इतनी, रहा मानव अज्ञान में, फिर भी गुनगाई।।

ईश्वर से प्रिय कुछ नहीं, ईश्वर ही जीव का प्रिय है।
ईश्वर ही चेतन्य रखे जीवन को, स्वांस चलना जीव के लिए अनिवार्य है।।

स्वांस ही रूप है ईश्वर का, रिश्ता आदि काल पुराना।
आदि काल से, महसूस करता आया मानव, ईश्वर है सृष्टि रखवाला।।

अज्ञानी को भी ज्ञान है, यह स्वांस का चलना क्यों है।
कहां से चल रहा है यह, और मृत्यु के बाद बन्द क्यों है॥

हे मानव अमल कर सत्य पर, स्वांस रूप को ईश्वर मान ले।
तेरे कट जायेगे पिछले कर्म, तू ईश्वर को पिता मान ले॥

तेरे नजदीक तेरा नहीं अपना कोई, तू ईश्वर को अपना मान।
हर वक्त तेरे अन्दर गीत चल रहा है, तू, इस गीत को दिव्य प्रकाश मान॥

हर मानव बराबर है दुनिया में, कर्म अलग अलग किए हुए।
फल भी अलग अगल, और पाप पुण्य से जुड़े हुए॥

अज्ञानी के अन्दर भी अमर गीत चले, जिसकी अमर कहानी।
ना कभी बन्द हुई इस पृथ्वी पर, ना कभी बन्द हो सकेगी ईश्वर वाणी॥

अमल करना ही ईश्वर को पाना है, यह लिखी हुई है, काया के अन्दर कहानी।
जो करे सत्य अमल इसको, ना ढूंढने जावे, कही पृथ्वी की यात्रा पुरानी॥

सब कुछ लेख लिखा है, मानव के अन्दर, दिव्य दीप जले है।
मानव देख, अपने चक्षु से धरती पर, दिव्य फुल खिले हैं॥

जिस प्रकार अज्ञान में, ले स्वांस ईश्वर का, है यह सत्य भास।
अज्ञानी भी देखे धरती पर वास, खिला हुआ, प्रकृति का प्रकाश॥

जन जन में ज्ञान प्रसार

मुनष्य जात का हो हितकार, जगत में खुशी से रहे नार।
नर-नार रहे खुशी सेश जन जन में रहे, शान्ति सार॥

भरमार रहे धर्म की आंधी, जगत में बहे, सतयुग जैसा पानी।
पानी बहे सतयुग जैसा, नदिया, भरी रहे, कलयुग की नदियों का पानी॥

नदियों का पानी भरपुर रहे, धरती रहे ना प्यासी।
मनुष्य भी उगाये फसल भरपूर, दुनिया ना रहे प्यासी॥

सन्तों की सन्तान हो तुम, सन्त ही जीने की राह बतावे।
सन्त दीप होते है ईश्वर के, ज्ञान धर्म की ज्योत जगावे॥

विधान बनावे सन्त धरती के, उपर दिव्यवाणी के अनुसार।
जगत में फैले सन्तों की वाणी, जगत का करे उद्वार॥

मनुष्य का करे उद्वार, धरती भी करे स्वीकार।
धर्म के मनुष्य रहे धरती पर, धर्म का है अधिकार॥

धर्म का रहे अधिकार, धरती धर्म के मनुष्य चाहती।
पुकारती रहती ईश्वर को, ईश्वर की ज्योत दिव्य बहती॥

धरती चाहती धर्म फले फुले, विद्या उन्नत हो विधान।
स्वार्णिम रहे उज्जवल धरती, यह है ईश्वर का धाम॥

यह है ईश्वर विधान, पूर्व में आदिकाल से रहा, भारत भूमि धाम।
बोओ बीज धर्म के, धरती पर, बन जाय, भारत भूमि विश्व धाम॥

भारत भूमि बने विश्व धाम, सुनो पैगाम बनाओ स्वर्ग धाम।
सम्पूर्ण विश्व करे, भारत भूमि को याद, और करे यहां विश्राम॥

विश्राम करे भारत भूमि पर, नाम जपे भारत भूमि स्वर्ग धाम।
विश्व में जगे धर्म चेतना, और पहुंचे विश्व में धर्म पैगाम॥

ऐसी बनाओ विधि भारतवासियों, भारत को विश्व करे प्रणाम।
जगत झुके भारत के आगे, भारत का जब, मनुष्य बने विद्ववान॥

विधवान बने हर मनुष्य, भारत का, दुनिया में हो पहचान।
भारत भूमि का मान बढ़े, जब हो शब्दों, का दिव्य ज्ञान॥

सन्त करावे पहचान, धर्म की विश्व ज्योति जगावे।
अखंड बनावे ज्योत, सन्त विश्व में फैलावे॥

विश्व में फैले धर्म ज्योत, और सन्त धर्म को, एक माला में पिरोवे।
भारत की धरती से उठे ज्योति, और विश्व में ज्योति जगावे॥

विश्व में सभी मानव है एक, पिता है सबका, ईश्वर है नाम।
सन्तान है सभी ईश्वर की, ज्ञान का पैगाम दे, हे इंसान ईश्वर एक है भगवान॥

भारत भूमि पर ही उगता है, जिसका नाम दिव्य फूल है।
जमता है, भारत भूमि पर, अंकुर फूटा है, देखो सृष्टि स्थुल है॥

ना करो भूल भारत की, सन्तानों ईश्वर ज्ञान पहचानो।
सत्य का जलाओ, दीपक ज्ञान का प्रकाश जानो॥

सत्य धर्म उपजाओ, भारत भूमि पर, और नई पीढ़ी को समझओ।
सत्य धर्म की ज्योत जगाओ, और जन जन में फैलाओ॥

ज्ञान ऐसा फैलाओ भारत भूमि पर, मानव किसी से ना करे घृणा।
मानव मानव से प्रेम करे, और ईश्वर को कहे पिता अपना॥

अपना पिता सत्य से कहे, 'ईश्वर को' और सत्य ज्ञान पहचाने।
विश्वास करे मानव एक है, धरती पर, ईश्वर को दूसरा ना माने॥

मानव किसी भी खण्ड में रहे, खुशी प्रेम से जीना चाहता है।
ऐसे मानव कम है धरती पर, जो हिंसा से जीना चाहता है॥

ऐसा कर्म करो धरती वासियों, ना हो सके, मन चित्त भंग।
असुरी शक्तियां पिघल जाएं, जब धर्म बढ़े सतसंग॥

मानव में रहे मेल मिलाप, और बढ़े धर्म सतसंग।
निर्भय रहे, मानव धरती पर, खुशी से, स्वस्थ्य रहे, मानव अंग॥

जीवन हो निर्भय मानव का, झूठ में ना मन रहे।
ऐसा ज्ञान हो मानव को, हिंसा में ना जीवन रहे॥

झूठा मानव न हो सकेगा, उदय, यह कथन दिव्य लोक का है।
निर्णय विश्व को करना है, कहना महावीर का नहीं, दिव्य लोक का है॥

सत्य बोलो चलो धर्म पर, विजय हो लोटोगे।
शरीर त्याग कर जब जाओगे, पूजनीय माने जाओगे॥

धरती पर मानव रहे धर्म मय, दिव्य लोक है धर्मसार।
बैठै है वहां धर्मगुरू, निकाले झूठ सत्य का सार॥

सार निकाले झूठ सत्य का, मानव को देते दण्ड।
जैसी मानव धरती पर करे करनी, करते हैं माप दण्ड॥

जन्म लेना, मरना, दिव्य लोक को जाना, कोई खेल नहीं।
अज्ञान है यह, भ्रम जाल है, जीना मरना कोई आसान नहीं॥

एहसान नहीं मात पिता पर, अपना अपना कर्म करो।
जीवन है अकेला ना रहो निर्भर, निर्भय होकर यत्न करो॥

यत्न करो कुछ ऐसा, जो उपजाऊ होय।
मृत्यु के बाद भी, दिव्य लोक मे जाय॥

दिव्य लोक में जाय, मानव ब्रह्म में मिल जाय।
आने जाने में ना व्यर्थ समय गवावें, फिर पृथ्वी लोक पर न आए॥

सत्य तो यही है, सृष्टि का, सभी को दिव्य ज्योत जलानी है।
मृत्यु के बाद जाना है, सभी को एक दिन, ईश्वर में ज्योत मिल जानी है।

ईश्वर ने तभी तो ज्ञान दिया है, मानव के क्या सत्य प्रमाण है।
मानव का धरती पर आना जाना, मूल कारण, मुक्ति का विधान है॥

तभी तो, नर भक्षी भी बन जाता है, और नर नारायण भी बन जाता है।
मानव दूसरे मानव से, करे घृणा और ईवर से अलग हो जाता है॥

ईश्वर रहते है हरदम हर जीव में समाहित, रहस्य जीव ना जाने।
समाहित होते हैं, ईश्वर का मानव परिचय जाने, और अपना भेद पहचाने॥

तभी निकलता है कमलदल, जब मानव अपने को जाने।
अपनी काया का मूल कारण, और यंत्रों को दिव्य स्थान माने॥

मानव काया है, दिव्य यंत्रों का पुतला, ज्ञान के द्वारा पहचानेगा।
जो भी, ज्ञान के द्वारा मूल कारण जानेगा, वही ही सत्य को पहचानेगा॥

जो नहीं जान सकेगा सत्य, वही काया का बोझ ढोवेगा।
आयेगा बार बार धरती पर, और खायगा पिवेगा कमायेगा फिर मृत्यु में जायेगा॥

परिवर्तन उसी मानव में होगा, जो सत्य में जीवन बितायेगा।
काया को मानेगा दिव्य आसन, और ईश्वर के समीप जायेगा॥

दुनिया में मानव रोजमर्रा पैदा होते है, और रोजमर्रा मरते भी हैं।
क्या बदलाव है मानव जीवन में, सभी एक तरह पैदा होते और एक तरह मरते है॥

फिर वह ज्ञान, सत्य ईश्वर का, बताने का क्या महत्व रहा।
ना मानव ने अपने आप को जाना, ना ईश्वर की प्रीत में रहा॥

फिर कैसे बनेगी सत्य की फूलवारी, जीवन की नैया कैसे उतरेगी पारी।
हर मानव को एक दिन, सत्य में जाना होगा, तभी बन सकेगी, यह धरती फूलवारी॥

यह भी एक प्रारब्ध है, मानव का, ईश्वर में मिल जाना।
छोड़कर माया मोह जगत का, बैराग्य में उतर जाना॥

बड़ी कठिन तपस्या है, यह मानव को अपनों को त्याग देना।
और जगत से मोह को हटादे, और ईश्वर में चले जाना॥

यह कार्य यह सत्य, वह मानव अपनायेगा, जिसका प्रारब्द निखरा हो।
पुण्य कमाया हो पूर्व जन्म में, और संतों की शरण में रहा हो॥

ऐसे मानव ही, इस जन्म में, परिवर्तन हो सकेगा, जगत में।
पहले भी पुण्य कमाया हो, और आज वर्तमान में, ईश्वर गान गाया हो॥

ऐसी स्थिति धारण होती है मानव की, सतयुग की धारा बहेती।
ऐसे मानव के लिए युग नहीं बदलते, बस सत्य की फूहार निकलेगी॥

इतना मानव है धरती पर, किस किसका नाम दरबार में लिखा है।
कौन कौन जायेगा, दिव्य दरबार में, किसकी करनी में, निर्विकार लिखा है॥

कौन बनेगा सन्त युग में, कौन कौन सत्य सफर करेगा।
कौन जीवेगा निर्भय होकर, कौन धर्म प्रचार करेगा॥

ज्ञान यह नहीं कहता घर छोड़ों, और अपनो को छोड़ों।
ज्ञान कहता है, रहो जगत में, सत्य सफर करो, और ईश्वर को न छोड़ो॥

हर वक्त याद करो, उस सत्य को, जिसको तुम झुठला नहीं सकते।
जिसके द्वारा तुम जीवित हो, और जिसके द्वारा, तुम्हारे स्वांस चलते॥

बस कर्म करो अपने अपने, और मुख में ईश्वर नाम जपो।
पूर्व अगर पापी था, वर्तमान में तप करो, हर समय ईश्वर नाम जपो॥

कोई धर्म या ज्ञान नहीं कहता, कि तुम घर छोड़कर तप करो।
तप तो वह है, कि धुन्ध में रहकर भी, रास्ता ढूंढों, और सफर करो॥

ईर्ष्या द्वेष, अहंकारियों से, भर पड़ा है यह जगत, खाली नहीं है, धरती का छोर।
शुन्य पड़ा है आसन, पृथ्वी पर, ना दिव्य कवचधारियों का शोर॥

तूफान आया है धरती पर, अहंकारियों का उत्थान हो रहा है।
धन की परंपरा है धरती पर, हिंसा का जोर हो रहा है॥

हे मानव तुझे अगर सुधरना है, या तप करना, है बड़ा कठिन।
ईर्ष्या द्वेष अहंकार, झूठ, हिंसा, से भरा पड़ा, यह जगत है जटिल॥

समस्या है जटिल दुनिया में, कैसे तू, तप कर सकेगा।
रहेगा समस्याओं में घिरा हुआ, और कैसे बुराईयों से बच पायेगा॥

हे मानव सुन ज्ञान की बात, तप कैसे होता है, ईश्वर का।
ऐसी कठिन स्थिति, जब होती है, तभी तप होता है, मानव का॥

ऐसा युग, कभी नहीं आया धरती पर, जिसमें कण कण में बुराई भरी हो।
आंखों में दया धर्म न हो, किसी के प्रति, धन और अहंकार की, पट्टी बंधी हो॥

ऐसे युग में ही तपस्या होती है, जिसका वर्णन किया नहीं जा सकता।
ऐसे जगत में रहकर, और उनसे अलग भी रहकर, तप किया जा सकता॥

कण कण में, बुराई का दरिया, हटाकर, ईश्वर में लिप्त हुआ जाता।
उन्हीं में रहकर, बुराइयों के बीचों बीच में, तप किया जाता॥

ऐसी तपस्वी है, धरती पर आज भी, जिनके सहारे धरती रुकी हुई।
मानव जात का कल्याण चाहे, और ईश्वर से कड़ी जुड़ी हुई॥

ऐसा मानव कम है दुनिया में, पर उससे बड़ा तपस्वी नहीं।
रहते है इस अन्ध धुन्ध में, पर चढ़ती उन पर पाप की धुल नहीं॥

मानव जाति की धर्म कर्म जीवन में धारण करना

जीवन सुधार एवं अपने परिवार की रक्षा एवं राष्ट्र एवं सम्पूर्ण पृथ्वी की रक्षा

सत्य परख, जीवन करो धारण, नारी जाति को आहवान।
विश्व बंधा है नारी जाति से, संतों के मुख से, ज्ञान सुनो, और अपनी करो पहचान॥

निर्माण करो इस सृष्टि का, अध्यात्मिकता के सूत्रों पर।
जन्म दो संस्कारी नर नारी को, जो खरा उत्तरे, गुण धाराओं पर॥

अध्ययन करो, इस युग का, कहां भाग रहा है ईसांन।
खुद ही को कुछ पता नहीं, रास्ता क्या है, जीवन का, भागा जा रहा है इंसान॥

क्यों आया है, इस धरती पर, नहीं किसी को पहचान।
ना करे माता को भी याद, किसने पैदा किया ईसान॥

नारी से नर जन्मता, यह ज्ञान समुचा मान।
जैसे माता जन्म दे नर नारी को, इसी तरह सत्य ईश्वर को मान॥
नारी जाति साधारण नहीं, इस युग की है, शक्ति पहचान।
गलती कर रहा है, इस युग में मानव, जन्म दे नारी है महान॥

सब कुछ समाजिक लाभ लालच में खुद ही फंसा है ईसान।
दूसरे के अपर दोष लगावे पर जीने की प्रथा धारण न करे ईसांन॥

अपने लालच के कारण दहेज, जैसी प्रथा बहावे ईसांन।
दुखी रहना दूसरो को दुख पहुंचाने का, जरिया ही ईसांन।

जितना तुझे तेरी मेहनत का मिलेगा, वह ही पचा पायेगा इंसान।
दूसरे की दौलत पर ना निगाह जमा, तेरा सब कुछ लूट जायेगा ईसांन।।

जब दूसरे की दौलत मिलती है तुझे तू खुशी से तिलमिलायेगा।
जब इसी करनी का फल, इसी जीवन में मिलेगा, तू रोता हुआ सिसकायेगा।।

कोई नहीं सुनेगा तेरी आवाज, जब तेरे साथ घटना घटेगी।
ना कोई जायेगा अस्पताल, जब तेरी करनी तेरे साथ बढ़ेगी।।

दूसरों की दौलत पर ना निगाह जमाओ, यह मानव को निगलती है।
यह है लालच की ललक, आसुओं के द्वारा झलकती है।।

निर्माण करो भारत वर्ष का, जिसमें योगी अवतार हुए।
कितना महान है, वह मानव जिसने, इस धरती पर कर्म किये।।

जिसने भी जन्म लिया है, इस धरती पर, वह जन्म जात योगी होता है।
ना समझ है, अज्ञानी है, पहचान नहीं अपनी, इसी दोष में रहता है।।

ज्ञान करो भारतवासियों, यह धरती पौराणिक नगरी है।
इस धरती पर जिसने जन्म लिया, दिव्य लोक की सगरी है।

ज्ञान करो कुछ ध्यान करो, ईश्वर को याद करो दिन रात।
कर्म करो निस्वार्थ भाव से, कंठ में रखो मीठे शब्दों की बात।

निर्माण होगा युग का नया, नये युग में ढलना सीख लो।
समय आ रहा है युग परिवर्तन का, अध्ययन करना सीख लो॥

अपने परिवार की ना सोच हे मानव, समुचे विश्व की सोच।
दशा है सम्पूर्ण विश्व की खराब, तू पहले बदल, और कर अपनी खोज॥

खोज कर अपनी, तेरे अन्दर ईश्वर ने, क्या क्या भरा है।
खुद बैठा हुआ है तेरे अन्दर, और दिव्य लोक भी भरा है॥

अपने आपको मत मान साधरण, तू है भारत वासी।
तेरे पूर्वज थे योगी सन्त जन और तू है अध्ययन वासी॥

तूने ही इस भारत वर्ष में योग चलाया, तू ही है पूर्ण वासी।
तेरे ही पूर्वज थे राम कृष्ण, ईसा मसीह, तेरे ही पूर्वज बुद्धवासी॥

तूने ही धर्म चलाया, इस भूमि पर, तू खुद ही रहा वनवासी।
तू रहा नारायण के साथ मिलकर, तूने ही बनाये सिद्धवासी॥

तूने ही देखा युद्ध भारत भूमि पर, तूने ही संहार देखा है।
तूने ही असुरो को, ईश्वर के हाथों मरते देखा है॥

अध्यन कर अपने अन्दर, सभी यंत्र तुम्हारे अन्दर लगे हैं।
उन्हीं यंत्रों में सब नाम लिखे है, जो पूर्व में तेरे सगे हैं॥

सभी के साथ सभी युगों में, तू आया है ईसांन।
तेरे जैसे ही अवतार हुए है, तुझे नहीं है पहचान॥

पांचों तत्वों में तू भी उस समय था और नारायण भी थे।
तुझे अपनी पहचान नहीं रही, पर नारायण थे भगवान॥

हे मानव तुझे अपनी पहचान नहीं तू सब भूल गया है।
तेरी करनी नहीं थी निर्मल निस्वार्थ, तू पिछला भूल गया है॥

तूझे मैं पिछला जन्म याद दिलाऊं तू है सदाचारी।
तेरी है अमर गाथा पुरानी, पर याद नहीं तुझे तू लाचारी॥

तू फंसा हुआ है संसाररिक बन्धनों में, तेरे अन्दर पर्दा पड़ा है।
तुझे नहीं पिछला जनम याद, तेरे अन्दर कर्मों की, धुल जड़ा है॥

तुझे याद दिलाऊं पिछला जन्म, तू सन्त की बात मान।
निर्मल बन जा अपने अन्दर, सत्य तू ईश्वर को मान॥

अपने आपको ढाल उन, पैगम्बरों जैसा बन तू।
तेरे अन्दर पैगम्बर भी ढले हैं, तू खुद ही अवतार धर तू॥

ज्ञान पैदा कर अपने अन्दर से, भारत भूमि में बना है तू।
तेरा निर्माण इस मिट्टी से हुआ है, जिसकी रूह से बना है तू॥

यह है दिव्य खण्ड भारत भूमि, प्रथम निर्माण की अधिकारी।
जल से उतपन्न हुई धरती है, यह ईश्वर की उजियारी॥

मान है इस धरती का, दिव्य लोक की निगाह लगी है।
धर्म की जननी है यह ईश्वर की, दिव्य ज्योति से सजी है॥

इस धरती का मानव है पौराणिक, धर्म युक्त है निर्माण।
भूल भूलैया में है इस धरती का मानव, और है अभिमान॥

सत्य समझो निर्माण करो अपना, सम्पूर्ण सृष्टि पर, करना उजियारा है।
इसी धरती के मानव को जलानी है, दिव्य ज्योति, करना सत्य उजियारा है॥

सत्य समझो सत्य करो अपर्ण, यह समय सारिणी, दिव्य विद्या है।
जगाने आई है सोते मानव को, और संतों की जगाई विद्या है॥

हर मानव इस भारत वर्ष का होता है, सन्त परव।
भूल गया है बस अपने आपको, और रहता है अर्ध सत्य॥

पूर्ण सत्य अमर ज्योति है, इस धरती पर जो भी मानव आया है।
पूर्ण सृष्टि मे जलानी है धर्म ज्योति, और सृष्टि को बचाने आया है॥

हिन्दू हो या मुसलमान, सिख हो या ईसाई, बोद्ध हो, यहुदी, या जैनी।

सभी धर्म के पूर्वज है यहां पर, भारत भूमि ही ऐसी जगह बनाई॥

जो सम्पूर्ण मानव जाति का धर्म के अनुसार मार्ग दर्शन।

करने के लिए ईश्वर ने यह भारत भूमि बनाई॥

ऋषि मुनियों का नाम लेता है मानव, शब्दों में भरा अच्छा लगता।

सुनकर आनन्द भी आता, पर घर जाकर कुछ याद ना आता॥

तप करना होगा, इस धरती के मानव को, दृढ़ संकल्प करना होगा।

सत्य मानकर भूल हुई है, ईश्वर से कहकर, क्षमा कर दो, कहना होगा॥

छाई धूल अहंकार की, सृष्टि वासनाओं में, डूब रही है।

समझना होगा, ज्ञान भारतवर्ष को, यह सहम सहम भर रही है॥

कदम बढ़ाना है, प्रथम मानव बनकर, भारत वर्ष में रहने वालों को।

टूट जायेगा हर खण्ड पर, अहंकार का दरिया, कोई नहीं आयेगा बचाने को॥

भारत भूमि के निवासियों को, विश्व को बचाना होगा।

मानव दूसरे मानव का स्नेह, करने का धर्म अपनाना, होगा॥

मानव की कोई जात नहीं, धर्म एक ईश्वर ठिकाना।
सूर्य दो नहीं निकलते, यह देख रहा है जमाना॥

यह देख रहा जमाना, वायु एक ही थिरकती।
वशुन्धरा पर हर खण्ड में, जल की धार बरसती॥

हर धरती पर दिखे आकाश, प्रकाश की ज्योत धधकती।
खून बहे जीव की नस नस में, ईश्वर की कृपा बरसती॥

हर मानव मुख से बोले शब्द, शब्दों से सृष्टि चलती।
भाषा है अनेक जगत में, बुद्धि के अन्दर सरकती॥

हर मानव की सोच है, अलग अलग, धर्म की ज्योति झलकती।
उसी से निकले, धर्म सोच आस्था, के अनुसार बनती बिगड़ती॥

जैसे मानव भारतभूमि पर है, ऐसी ही काया, का बना ब्रह्माण्ड।
भाषा अलग, सोच अलग, रंग अलग, जीना मरना, एक सामान॥

कही काला, कहीं गोरा, काया की चित्रकारी, एक सामान।
गुण दोष मानव में, अलग अलग, चाहे रहे एक छत के नीचे, चाहे रहे गुरु धाम॥

मस्तिष्क से मानव अपनी करनी करे सुख ना मिले जहान।
मस्तिष्क रखे ईश्वर सुपुर्द काया को समझे देव वाहन॥

गुण धर्म का बाणा पहने, आपत्तियों को करे, सहन।
कोई भी कड़वा बोले शब्द, बुरा ना माने, उसका करे गहन॥

तपस्वी बने परिवार में रहकर, ज्ञान का भण्डार भरा है।
हर पल में ज्ञान मिले, मानव को, ग्रहस्थी में जीवन, सार भरा है॥

ज्ञान कही बिकता नहीं, धारण करने का विधान।
अच्छी बात रखो पास में, बुरी का ना रखो विधान॥

रोजमर्रा जीवन में सीखो, अपने अन्दर से, हर पल निकले ज्ञान।
उसी सोच में ज्ञान भरा हुआ है, हर प्रश्न का करो समाधान॥

संसार में, कोई भी ज्ञान बाहर से नहीं, मानव के अन्दर पनपता।
संघर्ष करो, जीवन में मनन करो, अपने अन्दर से झलकता॥

ईश्वर ने सब कुछ दिया है, मानव उसे संजो नहीं सकता।
पर मानव ने, ईश्वर को क्या दिया, सुपुर्द भी नहीं हो सकता॥

जिस ईश्वर ने, मानव को बनाया, उसका भी ख्याल नहीं।
मांग रही है, मंदिरों में जाकर दुनिया, अपनी काया का ध्यान नहीं॥

सब कुछ इस काया के अन्दर, ईश्वर को कहां ढूंढे इंसान।
पत्थरों में कहां ढूंढ रहा है बन्दे, ईश्वर तो तेरी काया ही, मन्दिर महान॥

हर युग में मानव को, ज्ञान दिया संतों ने, बचपन की तरह।
जैसे पिता पुत्र को ज्ञान समझावे, कवियों की तरह॥

हर माता पिता कवि होते हैं, संतान का दर्द समझे।
युग जब भ्रमित होता है, पुत्र अपने आपको कवि समझे॥

नर हो या नारी, ज्ञान का कोई भेद नहीं, सभी है अधिकारी।
कम उम्र हो, या ज्यादा, ज्ञान का पार नहीं, कम उम्र भी हो जाए, सदाचारी॥

इस दुनिया में बड़ा छोटा, ज्ञान से आंका जाता है, मानव।
धन से अभिमानी तोले तोल, यह युग की भ्रमिता है मानव॥

घर्म के अन्दर सम्पूर्ण मानव, और अधर्म में भी ढला है मानव।
धर्म निकले मानव के अन्दर, अधर्म भी उपजता है, जो सोच मानव॥

आधीन है, दुनिया ईश्वर के, पूंज प्रकाश देख हे मानव।
सन्तों के दर्शन कर, ज्ञान भर अपने अन्दर, है मानव॥

सैहस्त्रों वर्षों में कितने जीव, आते और चले जाते है।
पर तू ज्ञानी क्यों नहीं बनता, तुझे क्यों नये नये, जन्म भाते हैं॥

जिस तरह से तू रोजमर्रा, काया के लिए, भोग भोगता है
सोचता है, हर रोज नया भोग भोगुंगा, तुझे कौन रोकता है॥

रोकने वाला भी तेरे अन्दर है बैठा, और भोगने वाला भी बैठा।

तू नहीं सोचता है, मानव कोन है, ऐसा महान, जो तेरे अन्दर बैठा।।

हर वक्त करे तेरी रखवाली, तेरी कही नैया ना डोले।

हर वक्त तुझे, तेरी करनी का फल दे, तू नमन एक बार भी ना बोले।।

तेरा हृदय है कितना कठोर, तेरे अन्दर है प्रभात भौर।

तेरे अन्दर कमल नयन, सब कुछ देने वाला, तू क्यों बना है चोर।।

ठगना चाहता है तू ईश्वर को, धन आंसुओं के बदले।

आंसू तेरे गम के है, तू नहीं रोया कभी, ईश्वर के बदले।।

हे मानव, तू अपनी काया के, कष्ट में रोया जीवन भर।

ना रोया तू ईश्वर प्रेम में, तेरे बीत लिए है, कितने जीवन वर।।

तूझे नहीं पता सुख आनन्द का, धरती पर क्या मिलता है।

तू सदैव रोया है, अपनी चाहत में, यहां सब कुछ कर्मों से मिलता है।।

एक दिन सोच तू, ईश्वर से मिलने की, प्रेम आंसू बहा।

वे आंसू भी तुझे देगे आनन्द, तू ईश्वर सुर में बहा।।

अपने आप तुझे होगा एहसास, तुझे ईश्वर देगे साहस।

ऐसा प्रतीत होगा तुझे, जब तेरे आसुं बहेगे, शुद्ध भास।।

उन आंसुओं में मिलावट नहीं होगी, भ्रमित नहीं होगा ईसांन।
शुद्ध सरोवर से निकलेंगे आंसु, और निर्मल, कोमल होगे, भगवान॥

अध्यन कर रासलीला कर, ईश्वर से नाता जोड़ बन्दे।
सत्तगुरू ही इस ब्रामण्ड के मालिक, सत्य का बाणा पहन बन्दे॥

सूर ताल मिला प्रेम का, रस टपकेगा इस युग में।
भ्रम में ना जीवन बीता, सत्य सुमर ले इस युग में॥

चारों दिशाओं में अंधा-धुन्धा, विचार धाराये फैली हुई।
एक तो दिव्य ज्योत जलाओ, दिख रही है, दुनिया अन्धकार में जाती हुई॥

सन्त बनो अपने अन्दर-शैतानों की सोच छोड़ दो।
गुण घरो देव जैसे, जगत को, पुण्य की तरफ मोड़ दो॥

चेतन्य करो दिव्य आत्मा, जो सर्व व्यापी है।
अखण्ड अमर, कभी नापी नहीं जाती है॥

उसी में उतर जाओ-गहराई कुछ भी नहीं।
दूर तुम्हें दिखती है, दिव्य ज्योति, सबसे पास में रही।

ईश्वर रचना एवं ज्ञान मणी

माणिक धार पिरोईये, सत्य सांरगी नार।
अति विद्या गोरक्षणी, पुरुणा विधार॥

पुस्तकम् आधार·विवेक, पुष्य अणी धार।
विवेक सन्धि जापणा, विधि का करो वार॥

पण हरी विविज्ञा, पुण्य पुष्य हार।
गण नायक अधिनायिक, पृथ्वी पाणिनि हार॥

विधि अनन्त आत्मा, अध्या शक्ति बीज।
पुण्य कर्म धर्म बीज, उगे सत्य बीज॥

अणु अर्क साध्वी, सन्तन भृज्ञा राज।
सन्तन ब्रह्मी रागिनी, उत्तम बाज॥

सुधी कर्मा साध्यणी, उदय मनुष्य जात।
पिरोई धर्ममय वैष्णवी, अगम्भ भाष॥

सुक्ति कर्म निर्भय जगत, सन्तन संग सार।
निर्यात ब्रह्मं, विष्णु बरसे अमृत धार॥

विधि सन्तन ब्रह्मं हरी, लगे तन हार।
बसे अनन्त ब्रह्मम, शिव शिव जपे दिन-रात॥

गुण दोष धर्म मनुष्य रखे, अपने पास।
गुरूवा भेद परख करे, शिष्य रखे आस॥

अनिमिथ्या धर्म गुरू, सैहस्त्रों विधि राग।
नियम धर्म शास्त्रार्थ, पुण्य धर्म अभिभाष॥

मणी धर्म सतगुरू ब्रह्मम, पन्च तत्व निर्माण।
मनुष्य जात परख धर्म, आंत्रिक जगत निर्माण।।

अवधि परख परख चिन्तन करे, परमानन्द मिले दिन रात।
नित्य नित्य भजे ब्रह्मं राग, मिले सुख आनन्द सुरति भाष।।

गुण अजय अमर निर्माण भवे, शक्ति बीज सुन्दरम।
मणी ब्रह्म तेज ऊगे, सत्यम् विश्व शिवम्।।

गुण दोष जानें अपना, मनुष्य देह धर्म।
मुख बीज धरे हरी, बीज गुर्णा देही कर्म।।

पुण्य कर्म आत्मा, सतगुरू की नींव।
आदिकाल जन्म जात, पिरोई अभिरित।।

गुण धारा शिरौमणी, अध्यन करे, मनुष्य जात।
घट धट घड़ा भरे, बूंद बूंद पिये, दिन रात।।

अन्ध भरा युग भ्रमित, सैहत्रों जन्म जात।
पिये मनुष्य छकछक कर, छुआ छूत का भात।।

पुण्य कर्म करे मनुष्य, उम्र बढ़े दिन-रात।
युग बढ़े सत्य कर्म बढ़े, शिव रहे अतिपास।।

गुण धार नदी प्रवाह, चेतन्य निर्विकार।
अध्यन ज्ञान पिरोइये, सन्तन पन्थ धार।।

अणवेषण ब्रह्मम जगत, सुधी मनुष्य जान।
मन विष्णु धार पिरोइये, जगत मनुष्य जात॥

गुण ज्ञान धर्म अजय निर्भय, सतसंग निर्विकार।
अनन्त कोटी धर्म अजय अमर, शिव करे स्वीकार॥

सन्तन भगवा रंगिये, चेतन्य देह पुण्य हार।
गुण-दोष नर निहारिये, पुण्य रखिये अपने पास॥

दोष धर्म, नीच प्रथा, मनुष्य ना मानिये।
सतसंग भवः जगत तारण, मनुष्य मार्ग जानिये॥

सतुगुरू सीख धर्म आस्था, परमेश्वर सत्य मानिये।
चरित्र सुन्दर, नर कर अपना, पुष्य हरि जानिए॥

कुदरती अध्यन मन धारिये, नदी किनारे बैठे।
मनन धारा मन नर भजिए, सत संगति सुरभि बैठ॥

गऊ रक्षा कीजिए, प्रथा आदि धर्म।
पुण्य हरी मिले नर प्रण प्रथा, चतुर्थ युग॥

नर नियम अपना, बांध लो, चार्तुर्य युग।
नर धर्म सात्विक, विष्णु चतुर्थ युग॥

भारत भूमि घूमती, भ्रमण करे अनंत।
गुणगान करे शिव का, सैहस्त्रों अनंत॥

प्रभाकारी विष्णु, अनंत कोटि आधार।
परम गुण धार प्रज्ज्वलित, युग करे विचार॥

युग करे विचार, मन मन रखें भाष।
सत्य गुण सात्विक, विष्णु का हो आभास॥

पृथ्वी पूर्ण हरी मिले, सन्तन जैसा हार।
जगत में फैलावे धर्म, युग में बरसे फुहार॥

अनंत कोटी ब्रह्मंण्ड रचे, सूर्य रचा प्रकाश पुंज।
गुण रचा धर्ममय, ज्ञान रचा सन्तन में, रचा पुंज॥

अवधि रची धरती की, युग रचा भ्रमण।
सुक्ति रची नर में, सन्त बने, करें भ्रमण॥

युग रचा विधि विधान रचा, पुण्य रचा विधमान।
सांख्य रचा ज्ञान सागर, पुराण रची विधिमन॥

माध रचा महीना अपना, धर्म पके भुवन।
साज रचा देवगणों का, सुर रचा भुजंग॥

साज रचा सारिंगी रची, खुद ही रची भुजंग।
पृथ्वी रची नीर बहाया, वन वनस्पति रची युगम॥

नीर बहाया चीर कर धरती, महासागर तक फैलाया।
सीचे धरती की प्यास, और मनुष्य की प्यास बुझाया॥

पुष्प बनाया धरती ऊपर, सुगन्ध्यिा भर आई।
मोतियों जैसी ओस बनाई, डालियों की नम कलाई॥

उभरी कलाई प्रकृति देखों, सन्तों ने मुख से गाई।
ईश्वर की कला है देखा, यह कैसी औषधि बनाई॥

आदि अनंत, आत्मा, अजर, अमर, विकराल।
आदि पुंज छिपा है अन्दर इसके, भरा पड़ा है दिव्य विशाल॥

अनंत हन्त पूजनीय, पाणिनि ग्रह भवनाम।
असंख्य भूखण्ड में से, लिखा हुआ विधि विधान॥

अभिनन्दन ब्रह्मदेव का, करते हैं दिव्य देव।
आसन पर है विराजमान, भगवान त्रिदेव॥

सन्तन पुष्पहार

सन्तन प्रभु लालसा, रमण करते हैं फकीर।
भेष बदलकर रहे जगत में, ईश्वर की खावे खीर॥

रमण करे दिन रात, युग-युगों से है नाता।
औझल रहे दुनिया से, पाप उन्हें नहीं खाता॥

पाप दृष्टि उन्हें छू नहीं सकती, रहे धर्ममय हरदम।
हर दम समीप रहे ईश्वर के, और हरि दृष्टि में रहे हरदम॥

दुनिया दारी में रहे सदैव, पर भेद किसी को ना पाये कभी।
रमण करे धरती पर, और वेश ना दिखावे कभी॥

अपना बाणा ओंढ़े रखे, अपना भेद ना बतावे कभी।
दिव्य ज्योत जले अखंण्ड, उनके अन्दर, दिव्य प्रकाश फैलावे सभी॥

देखें दर्द मनुष्यों का, और सन्देश ईश्वर तक पहुंचावे।
पापियों का अहंकार खुद ही, अपने अन्दर पी जावे॥

सत्य धर्म की नाव चलावें, जगत में धर्म का झण्डा लहरावे।
युग भ्रमित ना हो, नर नारायण का, ज्ञान भेद बतावे॥

युग को समझावे सत्य शब्द, और धर्म की ज्योति जगावे।
दिव्य शब्दों से युग में ज्ञान पिरोवें, और जीने की राह बतावे॥

धर्म सत्य अमर बेल है, सूखती कभी नहीं।
निर्णय चाहे समय कितना भी ले, झुकती कभी नहीं॥

सत्य अमर बेल है, निर्विकार दिव्य है प्रकाश।
दिव्य सत्ता पर टिकी हुई है, और तीनों लोकों में देखो प्रकाश॥

धर्म से भ्रमित युग

युग भ्रमित होता है जब, अन्धकार डाले अपना डेरा।
विद्या ना अनुकूल रहे धरती पर, मनुष्यों में फैले असंगतियों का डेरा॥

पुण्य न कमावे कोई धरती पर, खाली पड़ा रहे आसन।
पुण्य अगर कोई कमावे तो, गावें अनेकों भाषण।।

कहां पर पुष्प खिल रहा है, धर्म का जग खाली पड़ा।
पुष्प सत्य धर्म नहीं, खिला धरती पर, विश्व खाली पड़ा।।

आंत्रिक चेतना से देखो, रास्ता सामने दिव्य दीप खड़ा है।
सन्त बनों अपने अन्दर, देखों सत्य ही सत्य खड़ा है।

झूठ फरेब ना रखो मन में, मन रखो शुद्ध साफ।
कौन तुम्हें दुख दे रहा है, ना रखो ईर्ष्या जाप।।

ईर्ष्या द्वेष का ना जपो हर दम जाप, अन्धकार फैल रहा है।
ज्योत बुझेगी एक दिन धरती पर, दिव्य आसन डोल रहा है।।

भंवर में फंस रही है दुनिया, संध्या हो रही है।
सत्य धर्म पिरोवे मन में, समय बीत रहा है, रात हो रही है।।

रात होगी दुनिया में, फिर क्या कर पायेगा ईसान।
अन्धेरा छा जायेगा दुनिया में, कहा जी पायेगा ईसान।।

खाई खोद रहा है, दुखों की आज का ईसान, बोझ कमर में बांध रहा है।
बोझ झूठ फरेब का, और धन का, लालची बन रहा है।।

क्या करोगे इंसानों, ऐसी झूठ पाप की कमाई का।
जिससे मरे जीव दूसरा, ना रहे मनुष्य ईश्वर की भलाई का।।

हे मनुष्य, दूसरे मनुष्यों को, ना दुख पहुंचावो, धरती पर ईश्वर पैगाम आया है।

हे मनुष्य, जिस पीढ़ी के लिए, जोड़ रहे हो, उनका भी कठिन समय आया है॥

खुदा ईश्वर से डरो बन्दों, सुखी हाल में जीने दो, इस बस्ती को।
यह दुनिया बनाई है खुदा ने, ना जलाओ, इस रस्सी को॥

सत्य अमर यह रस्सी ज्योत है, दुनिया बंधी हुई है।
सत्य सत्ता से बनाई गई, और खुदा की रचाई हुई है॥

इस धरती को बसाया है, यह ईश्वर की सौगात।
इस धरती के सत्य सम्पूर्ण धर्म समझो, यह ईश्वर की है जात॥

आपके अन्दर क्या दर्द छिपा है, खोल कर बता हे ईसान।
क्या करेगा दूसरों को दर्द देकर, क्यों खोल पाप की दुकान हे ईसान॥

कौन आयेगा सत्य पाने तेरे पास, दर्द तू सबको दे रहा है।
पाप की कमाई करने तू, दर्द दूसरों को दे रहा है॥

जीने दे इस सत्य मुल्क को, हे खुदा की सन्तान।
क्या खुदा का तूने कर्त्तव्य निभाया, जन्म लेकर ईसान॥

झूठ फरेब ईर्ष्या का रास्ता छोड़ दे, अभी भी समय है हे ईसान।
कब्र, अग्नि मिलेगी तुझे, इसके सिवा ना, कुछ मिलेगा हे ईसान।

शरीर का स्वाद इच्छा भोग छोड़ दे, यह शरीर भी तेरा नहीं।
शरीर भी ईश्वर का गठन है, इसे ना नोच, यह तेरा नहीं।।

तुझे क्या पता, कि तेरे कारण, दुनिया में दर्द बढ़ा है।
पहुंच रहा है पैगाम धरती का, ओर ईश्वर को भी पता है।।

प्रेम कर ईश्वर से, कर उम्र का सफर तय, मन में कर भय।
खोल का आंखें देख सामने, तेरे खड़े है, भाई, बहन, माता, पिता, यह पैगाम, मन में कर तय।।

घर में भी प्रेम से रहो ईसानो, ईर्ष्या द्वेष को पहचानो।
कमर तोड़ देती है ईर्ष्या जगत की, धर्म सत्य की बात मानो।।

छोटी छोटी बातों से दर्द, में उम्र बीत जाती है।
महसूस कुछ भी नही रहता, मृत्यु नजदीक आ जाती है।।

हे ईसानों क्यों ऐसा करते हो, क्या रखा है, दुख ढोने में।
जीओ और जीने दो, सुखी होकर मन को रखो, खुदा के आशियानों में।।

पुण्य कमाओ, पुष्प बनकर रहो, इच्छाधारी बनना छोड़ दो।
रहो बचकर ईर्ष्या द्वेष से, और हिंसा करना छोड़ दो।।

ईर्ष्या द्वेष जन्म देते हैं, दुखों को, अकुंर फूट जाता है।
लगाते हों तुम पौधा ईर्ष्या का दरख्त बन जाता है।।

सुध करो अपनी, देखो ज्ञान से, तुम क्यों आये हो, पुण्य धरती पर।
काम तुम्हें ईश्वर, ने क्या सौंपा था, ज्ञान से देखो, कृत्य धरती पर॥

खुदी से लगाओ ध्यान, यह ज्ञान तुम्हें उपज जायेगा।
सभी मनुष्यों में, भरा पड़ा है, वह लेख उपज जायेगा॥

विद्या सुधी अनेको बार आई, दुनिया में, समझना सका ईसांन।
युग सदैव भ्रमित रहा, नींद से ना जागा, कलयुग का ईसांन॥

लटक रहा है अधर में, ना करता विद्या का अनुपान।
विष पिला रहा है, अशब्दों का, और घृणित कर रहा है काम॥

विद्या अनूप धारा है, आदि काल से बहती आई।
सृष्टि बनी है जब से, निर्मल बहती आई॥

युग बनता है, नर नारियों से, धर्म सत्य है युगपान।
गृहस्थियों में बसा है युग, और अध्यात्मिक है नाम॥

ज्ञान सत्य वह प्रवाह है, विश्व बह रहा है।
बुद्धि भरी है, हर नर नारी में, स्थिर सत्य बह रहा है॥

युग सत्य पर भ्रमण करे, चिन्ता किस बात की।
आधीन है मनुष्य ईश्वर के, ध्यान रखे मीत की॥

आभूषण अन्यन परंपरा, विद्या है अनमोल।
गुण धारा प्रज्वलित, फैलाती है खगोल॥

विस्तार से बहती है जग में, नियम सत्य सारिणी से रहे।
गुणगान करती रहे हरि का, विद्युत प्रवाह समान रहे॥

अनंत भ्रमण करती है विद्या, चेतन्य ईश्वर रूप।
उतारे धरती पर प्रभु, दिव्य सत्ता अनुभूत॥

करे रक्षा जगत की, धर्म का झण्डा फहरावे।
गुणगान करवावे अपना, और मनुष्य जात को राह बतावे॥

अवगुणों का करे छुटकारा, और गुणधारा फैलावे।
मनुष्य के अन्दर पिरोवे, दाने बनकर माला बन जावे॥

अवगुण बदल दे, मनुष्य जात का, और कंठ में अमृतरस चढ़ावे।
ज्ञान धारा करे प्रज्जवलित, और धर्म की राह दिखावे॥

वीणा बनकर बजे कान में, सुर देव लोक से आवे।
ज्ञान शब्दो की माला बनाकर, जगत को पहनावे॥

घर घर बजवावे धुन अपनी, ओर शंख देव लोक में बजवावे।
नर नारी ध्यावे ईश्वर को, विद्या अपना सत्य रूप दिखावे॥

बदले युग दिव्य विद्या, ओर जग को दर्शन आवे।
करे भ्रम दूर जगत का, और सांख्य दर्शन दिखावे॥

भेद बतावे जगत का, और नवीन विद्या धारण करवावे।
भेष बदलकर फिरे जगत में, और विष्णु से टेर लगावे॥

मुक्त करे जगत को, और नई राह दिखावे।
सन्तों के मुख से, हर नर नारी के अन्दर भरवावे॥

सतसंग करवावे अपना, और गुण दोष बतावे।
छांट छांट कर करे उन्नत, पुण्य, और पाप, को भी समझावे॥

पथ धर्म छांट छांट कर, पंक्ति में लगवावे।
विधान अनुकूल करे स्थापित, नया संविधान रचावे॥

अणवेषण करे पृथ्वी पर, पुण्य बेल जगावे।
पुण्य बेल हो हरि हर, और जल का अश्रु बहावें॥

काट छांट कर करे सुधार, नये जग का निर्माण करावे।
पुष्प बनकर दिखे धरती पर, चारो और सुगान्धि फैलावे॥

निर्वाह करे अनेकों जीव का, धरती पर पालन पोषण करावे।
जड़ करे हरी अन्दर धुसकर, और पौधा बाहर दिखावे॥

पुष्प बनकर खिले वसुन्धरा पर, और अपना राज बतावे।
सुगान्धित करे जगत को, और अपना भेद बतावे॥

पुण्य धर्म का भेद बतावे, अपना और मनुष्य चरित्र छिपावे।
मनुष्य ना देखे भेद अपना, और पुण्य धर्म झूठ बतावे॥

सतसंग में ना जावे मनुष्य, नीच संगति ही भावे।
पुराण पुरुष का भेद ना जाने, और धर्म को भ्रम बतावे॥

धर्म को भ्रम बतावे, मनुष्य और पुष्प को, नर बीज बतावे।
सुगन्ध को कहे, गन्ध भरी, उपकार ईश्वर का, कहां न जावे॥

अहंकार के कारण मनुष्य, दूसरों की बढ़ाई ना गावे।
गावें तो, सोचे कि, कभी मेरा, कुछ ठगा ना जावे॥

विश्व पड़ा है खाली, विधा ना रही फुल माली।
ना जतन करें मनुष्य अपना, उम्र कट रही है खाली खाली॥

ना करे ज्ञान ग्रहण ईश्वर का, सत्य का गुण ना धरे।
पुष्प बनकर रहे जगत में, अहंकार में ना जड़ा रहे॥

ना करे ज्ञान ईश्वर का, भय सदा बना रहे।
अभय रहने का ना ले वरदान, और माया में सदैव फंसा रहे॥

मानव जात

खोते खोते कई जन्म पा लिए, अब कुछ कर्म साध ले।
परम पुरुष की जा संगति में, अपना जीवन बांध लें॥

हे मनुष्य कर्म कर ऐसा पावन, दुखी ना दूसरा कोई होय।
प्रण कर अपने अन्दर ऐसा, जो जागता भी सोय॥

निर्भय रह जगत में, हे मनुष्य तेरा कुछ भी नहीं।
ईश्वर ने भेजा है तुझे, तू सोया हुआ है, तेरा कुछ भी नहीं।

अपना अणवेषण कर, तुझे किसने बनाया है।
मिट्टी जल, अग्नि, आकाश, पवन से तू आया है॥

तेरा पिता है एक ईश्वर, एक ही धर्म बनाया है।
धर्म भी, एक की है, छत्र छाया में बसाया है।।

धर्म है ईश्वर नाम, मनुष्य, मनुष्य से प्रेम करना सिखाया है।
और ढाला है, प्रेम की डगर पर, सुगन्ध से प्रेम बसाया है।।

हे मनुष्य जात, सत्य को ढाल, अपने अन्दर सदाचार बना।
मुख से प्रेम की मीठी बोली बोल, यही जीवन आधार बना।।

मुख में जड़ी है, जीवन कर वश में अपने, शब्द हितकार।
अशुभ शब्द ना कर प्रयोग, सदैव रहो सदाचार।।

भज ले बन्दे ईश्वर नाम, फल पक रहा है।
नीव रखी है कर्मों के उपर, युग भभक रहा है।।

छूटेगी चिंगारी जगत में, उफान आने वाला है।
विश्व थर्रायेगा एक दिन, मनुष्य कराहने वाला है।।

मनुष्य खड़ा देखेगा एक दिन, उसकी ना सुनेगा कोई।
सुनेगा कोई नहीं दूसरा, दूसरों की, ना सुनेगा कोई।।

अकेला ही पुकारेगा मनुष्य, ईश्वर को मेरी मदद करो।
मेरा नहीं कोई सहारा, हे ईश्वर मेरी मदद करो।।

कोई नहीं सुनेगा, मनुष्य की, मनुष्य अन्धेरे में घूमेगा।
प्रकाश नहीं देगा, दिखाई कहीं, विश्व भी घूमेगा।।

हे मनुष्य समय है, जाग उठ, प्रभात बेला हो रही है।
समय ना गंवाओ, समझो ज्ञान की बातें, प्रकाश फैला रही है॥

चेतन्य होकर देख तू, अपने अन्दर, मनुष्य क्या कर्म कर रहा है।
जाग उठ देख आस-पास, क्या हर मनुष्य, पाप कर्म कर रहा है॥

हे मनुष्य, समझा दूसरे मनुष्य को, तू दिशा हीन हो रहा है।
समय कठिन आने से पहले, आंखें खोलो इम्तिहान हो रहा है॥

खुल रही है, खिड़की, आहट तूफान आ रहा है।
रोक दो इस तूफान को, ईश्वर कह रहा है॥

फैला दो, जग में, ईश्वर का नाम, ना दुख सहे कोई।
पैगम्बर, बन कर उतरे धरती पर ज्वाला, ना बुझ सके कोई॥

पैगाम आया है धरती पर, धर्म में सठ जाओ सभी।
कर्म करो स्वच्छ, और ईश्वर में लिप्त, हो जाओ सभी॥

समय का ना करो इन्तजार, समय बीता जा रहा है।
पुकारों ईश्वर को, युग घटता जा रहा है॥

हे मनुष्य जात, समझ अपने आपको, ईश्वर की कर पहचान।
कठिन समय से पहले, ढूंढ तू अपनी, और ईश्वर की पहचान॥

समय कठिन आ रहा है, हे मनुष्य जात, तेरे कर्मों के कारण।
भाग रहा है, भंवर ईसान, अपनी और ईश्वर की पहचान, ना के कारण॥

पहचान ना अपनी, ना ईश्वर से, प्रीत लगाई तूने।
अपना वजूद समझा, अपने से, ईश्वर को ना बताई तूने।।

तू है ईश्वर की सन्तान, ईश्वर तुझे ढूंढ रहे है।
कहां फंसा है, तू ईसांन, सत्य सफर में ढूंढ रहे हैं।।

पिता ढूंढ रहे हैं, पुत्र को, कहां गया खो, पुत्र मेरा।
नहीं दिखता प्रकाश में, असंगतिय में खो गया, पुत्र मेरा।।

पुण्य कमाओं धर्म, बढ़ाओं, नया निर्माण होगा, हे ईंसान।
ईश्वर देगे ज्ञान तुझे, सुधी कर हे ईंसान।।

पूर्वजों का ध्यान कर, और कर, भविष्य की पहचान।
वर्तमान ऐसा बना अपना, कि उतरे धरती पर भगवान।।

ना दुख पहुंचे तुझे, ना पहुंचे, आने वाली सन्तान।
सभी सुखी समृद्ध रहे, दुनिया में, हे मेरे प्रिय ईंसान।।

खत भेज रहा हूं धरती पर, लिखवा कर पैगाम।
सुनो मेरे प्रिय नर नारियों, धर्म का यह पैगाम।।

मैं ही ईश्वर एक हूं, दुनिया का, सत्य है मेरी पहचान।
सन्तों में मैं जाना जाता, प्रकाश पुंज है, मेरी पहचान।।

स्थूल में मैं नर में दिखूं, नारायण मेरा नाम।
स्थूल में, बस कर, नर में धराऊं, नया नाम।।

गुण दोष की करूं पहचान, धर्म में ढालूं हर ईंसान।
प्रेम, दया, धर्म, अहिंसा से जाना जाऊ, भगवान मेरा नाम॥

समझो ज्ञान की बातें, दिव्य सत्ता बता रही है।
खोल दो सत्य के चक्षु, रास्ता दिखा रही है॥

ईश्वर का धर्म सन्देश

ज्ञानी ईश्वर से कहता है

हे प्रभु जतन कर, विश्व का, अंकुर नर-नारी में सत्य का भर।
मनुष्य जात है अनजान, करुणा कर, सत्य सागर भर॥

अति विनय करता हूं, आपके चरणों में हे देव।
प्रार्थना मेरी सुनो, हे जगत धारी देव॥

पूर्ण कर दो कल्याणकारी, धर्म की पगडंडी हमारी।
सुन लो देव अधिकारी, दुखों में पड़ी है दुनिया सारी॥

माफी दे दो इस दुनिया को, अन्धेरी रात होने वाली।
सुख सागर बहाओ जन जन में, और प्रभात बेला प्यारी॥

जगाओ दीप जग में, संशय में ना रहे नर नारी।
आन्त्रिक चेतना जगाओ, दिव्य शब्दों की लगाओ फुलवारी॥

गीत दिव्य भेजो धरती पर, कंठ बने चेतन्य हारी।
विधान रचो ऐसा, गुण ज्ञान फैले, दुनिया सारी॥

शुद्ध सिद्ध करो दिव्य शब्दों को, खोल कर चेतन्य क्यारी।
हर नर-नारी माने सत्य संकल्प, सर्वोपरि गिरधारी॥

चेतन्य करो विश्व को, अपने ही नाम से बनवारी।
खुद ही मनुष्य ढले दिव्य शब्दों में, सत्य देव गिरधारी॥

गुण दोष की परख हो जग में, सन्तों की लगाओं फुलवारी।
जन-जन में प्रेम पुष्प खिले, और ज्ञान की लगे क्यारी॥

धुन बजे आपकी घर घर में, गावें नर नारी, दिव्य शब्दों की फुलवारी।
धर्म के अंकुर फूटें, जगत में, और सभी बने विद्याधारी॥

पुष्प बने गण विश्व के, कण-कण में, बसे आपकी सवारी।
विधि का विधान रचो ऐसा, कि बीज सत्य का बोवे, सन्तों की सवारी॥

सन्त गांवें जगत में, दिव्य शब्दों की फुलवारी।
अर्पण करे, विश्व पूरा, और बंधे विद्या नवीन धारी॥

उतसुक्ता में निर्मित करो, पांच तत्वों की सवारी।
सन्त बनकर प्रभु, गुण गावे, जावे गांव गांव सवारी॥

ईश्वर मनुष्य जात को कहते है

हे मनुष्य जात, सुन धर्म, का सत्य परवाना।
मधुर गीत सुन, दिव्य शब्दों से, इसको तुम्हें है निभाना॥

छोड़ दे बुरी संगति, कंठ सुधार अपना बन्दे।
घट में बैठा है, ईश्वर, नाम कड़वा शब्द, ना बोल बन्दे॥

सुख सागर बहेगा जग में, सन्त करेगें गुणगान।
सन्तन के मुख से निकलेंगे, दिव्य शब्दों के बाण॥

पिरोये जायेंगे जगत में, जन-जन में सत्य नाम।
अंकुर ऐसा फूटेगा, सत्य कर्म से, करेगें सभी काम॥

कर्म बदल दो अपना, समय बदल रहा है।
गुण धरो अपने अन्दर, शिव बोल रहा है॥

सत्य समझो गुण ज्ञान बढ़ाओ, सत्य का आसन डोल रहा है।
भूलों ना ईश्वर को बन्दों, खुद ईश्वर, शिव बोल रहा है॥
झूठ में फंसी है दुनिया, सत्य का आसन डोल रहा है।

हर मनुष्य फिरे भटकता, युग डोल रहा है,
भूलो ना ईश्वर को बन्दों, खुद, शिव बोल रहा है॥

मेरी ही सन्तान हो तुम, मैने ही सृष्टि रचाई।
इसी सृष्टि में, गुण ज्ञान धर्म की, चढ़ाई परछाई॥

सत्य सागर बहो जगत में, सन्तों की उपज कराई।
सिखाया सत्य बोलना, धर्म की रीत बनाई॥

नर के अन्दर भरा दिव्य गुण, और औषधि धरती पर उगाई।
छोड़ी ना कुछ मनुष्य की इच्छा, और पांच तत्वों की काया बनाई॥

फिर भी ना बसा ईंसान, धरती पर, कर्मों से करे पाप कमाई।
छोड़ दो अपनी बुरी आदत, नहीं तो ईश्वर को, कैसे दोगे जवाबदेही॥

दोष छोड़ दो अपने बन्दो, रखो सन्तों की परछाई।
छाया में रहो धर्म की, नहीं तो जायेगी, एक दिन ढाई॥

पंख लगाकर उड़ो धर्म का, ईश्वर की गाओ बड़ाई।
ईश्वर ने बनाई है, और धर्म की साख बचाई॥

उतारें कई बार जगत में, सन्तों ने, ज्ञान की नींव धराई।
समय समय पर सन्तों ने, धरती पर आकर, जगत को राह दिखाई॥

समय की करो पहचान, युग बदल रहा है।
पाप का घड़ा भर चुका है, शिव बोल रहा है॥

तेरा वजूद क्या है, खोल, कर, आंखें देख हे ईंसान।
तुझे भी ईश्वर ने बनाया, और धरती पर पहुंचाया पैगाम॥

पैगाम भिजवाया है, धरती पर, सुन हे इंसान
सत्य कर्म कर, हद टूट चुकी है, ना बन शैतान॥

दुनिया बनाई है, ईश्वर ने, तू भी बनाया एक ईंसान।
भार उतार! अधर्म का, सत्य से जीना, सिखाया हे इंसान॥

जीना सिखाया प्रेम जगाया, आपस में मेल से रहना।
पर तू ना जागा, ना तूने किसी को जगाया, सदैव तूने किया बहाना॥

तू तो खुद ही, अपने जाल में फंसा है करवट बदल इंसान।
झूठ फरेब की सोच छोड़ दे, सत्य का दीप जला हे इंसान॥

झूठ से कमर तोड़ दी तूने, अपनो की भी, दूसरे को क्या जानोगे।
खून का रिश्ता भी दुश्मन बन रहा है, कैसे जगत संभालोगे॥

गुण दोष अपने पराये की, ना की पहचान, जीता जा रहा है तू इंसान।
जीवन का समय काट रहा है तू, धुंध में, पाप बोता जा रहा, हे तू इंसान॥

तेरे ही कारण पाप बढ़ा है, धरती का आसन डोल रहा है।
समय की सुन आवाज, शिव बोल रहा है॥

क्यों व्यर्थ समय गवाओं बन्दो, ईश्वर को पहचानो।
संकल्प करो, अपने अन्दर, दिव्य शब्दों को पहचानो॥

करो ईश्वर को याद, तुम्हें याद दिलाने आये है।
भूल गये थे, जन्म का कर्म, वह याद दिलाने आये है॥

पंच भूल पंच दोष से धूल चढ़ी है, ईसानों को जगाने आये है।
पंच दोष, पहचानों अपने, पंच गुणों में, ढालने आये हैं॥

भय से, तुम गुजार रहे हो जीवन, झूठ ही है भय भवन।
आंधी तूफानों को, ना लगाओ गले, ना व्यर्थ गवाओ जीवन॥

खा जायेगा यह दर्द दुनिया को, कड़वा घूंट पिलायेगा।
टूट जायेगी संस्कारी रस्म, सभी युग एक दिन घबरायेगा॥

अपने आपको पहचानों बन्दो, आप में क्या कमी है।
कर्म कैसे किये है, पीछे हटकर देखो, क्या कही पर धर्म नमी है।

जिस धरती पर रहते हो, वह सत्ता है, ईश्वर की।
उसी सत्ता (पृथ्वी) को, बेच रहा है इंसान, पहचान करो स्थिति की॥

कौन तुझे माफ करेगा, तू बन ना शैतान।
छोड़ दे, पाप की नगरी को, बन जा शुद्ध इंसान॥

तेरा वजूद क्या, देख अपने आपको, हे इंसान।
तुझे भी ईश्वर ने बनाया, बुद्धी दी, समझाया हे इंसान॥

पैगाम आया है, सत्य लोक से, सुन हे इंसान।
सत्य कर्म कर, हद टूट चुकी है, ना बन शैतान॥

दुनिया बनाई है, प्रेम सागर की नगरी, तू भी बनाया, एक इंसान।
धर्म रखा इंसान के सुपुर्द, और खुद बसा, देह में भगवान॥

फिर भी ना सुधर पाया इंसान, धर्म से भी धन कमावे।
झूठ बोले, निडर होकर, पाप कर्म से भी ना घबरोवे॥

तू तो खुद ही, जाल में अपने फंसा है, धरती के इंसान।
तुने नहीं देखा कभी, तुम्हारी देह में बैठा है, भगवान॥

देख रहा है, तेरे कर्मों को, सर्व सत्ता धारी भगवान।
ना मिल सका, तू उसमें, तुने बदल दी, मन की धुरी हे इंसान॥

दुख दिया, दर्द में खुद ही फंसा है, ईश्वर का प्रिय है, हे ईंसान।
जाग जा, अपने अन्दर, गुण बदल अपने जिससे तुझे दिखे भगवान॥

गुण दोष की, ना की परख तूने, जीता जा रहा है।
जीवन कट रहा है, धुन्ध में, पाप बोता जा रहा है॥

तेरे ही कारण पाप बढ़ा है धरती पर, दिव्य आसान डोल रहा है।
दिव्य लोक की तू सुन आवाज, शब्दों में शिव बोल रहा है॥

शिव दे आवाज, शब्द ना खाली जावे, ओर दुनिया में प्रकाश फैलावे।
समय की धुन्ध उतारे, जगत की, और मनुष्य के अन्दर लगी काली काई हटावे॥

सुन्दर बीज उतारे, धरती पर, धर्म की फसल उगावे।
जिसके अन्दर मीठा स्वाद, और प्रेम की भाषा सिखावे॥

ईश्वर सन्तों के लिए

उत्पन्न करवावे वे मानव जगत में, जो सुन्दर चरित्र धारण करवावे।
बैठावे मनुष्य के अन्दर मीठे शब्द, और प्रेम सागर बहावे॥

प्रस्तुत करे दिव्य वाणी, और धर्म भी लाज बतावे।
सन्तों के मुख से निकले गीत सुरीले, भू लोक पर जावे॥

सन्त करे रमण धरती पर, पन्थ रमणीक करावे।
अन्ध का घेरा हटावे जगत में, और दिव्य प्रकाश फैलावे॥

मुख में भरे हैं शब्द दिव्य, मनुष्य को चेतन्य करावे।
सुख सागर भरे, मनुष्य के मन में शान्ति ग्रहण करावे॥

जगत है मित्या, सत्य टूट रहा है, क्षण भर में।
तुम भी बह रहे हो, उस धारा में, क्षण भर में॥

कौन तुम्हें याद करेगा, स्वप्न देखो अपने मन में।
सत्य का दीप जलाओ, मन शुद्ध मिलेगी तन में॥

शुद्ध करो भाव अपने, फैला दो सारे जग में।
फैलेगी ऊर्जा दिव्य लोक की, दर्द ना भरे जग में॥

खिल उठेगा फूल एक दिन, प्राणी के मन में।
शान्त होगा मन अन्दर से, हर प्राणी के तन में॥

सुखी शान्त रहेगी दुनिया, बीमारी ना होगी तन में।
विचार करो शुद्ध अपने, सुखी रहोगे जग में॥

मानव में बदलाव

एक बदलो पहले मनुष्य, दूसरा अपने आप बदलेगा।
भौर होगा मनुष्य जात में, दिव्य सूर्य मनुष्य में जगेगा॥

फूल खिलेगें घर-घर में, दुखी सागर ना बहेगा।
खुद को करो बुलन्द इतना, कि सागर प्रेम बहेगा॥

शुक्ल पक्ष मैं रहे मन चेतन्य, सूरभि कंठ लगावे।
हर मनुष्य का चित्त करे शुद्ध, और भाव सत्व करावे॥

अणवेषण करे मनुष्य जात का, प्रभु का अंश बहावे।
ज्ञान बतावे परम पिता का, और ईश्वर में चित्त लगावे॥

हर मनुष्य का चित्त करें स्थिर, पूर्ण मासी जैसा बहावे।
मनुष्य को ज्ञान बतावे, और सत्य का भेद समझावे॥

ईश्वर मनुष्य के लिए

गुण धार करो प्रज्वलित, शुद्धी परमेश्वर में, धरो ध्यान।
ज्ञान को धरो ध्यान में, धरती पर दिव्य प्रकाश, प्रज्वलित, करो, विधान॥

सन्तों को मानो, ब्रह्मं देव सूक्ष्म पर ध्यान ना धरो।
सूक्ष्म प्रकाश है दिव्य, बैठा है सन्त के अन्दर, भाव करो॥

उत्तेजित ना करो मन अपना, खुद ही में ज्ञान संग्रह करो।
मन का करो विकास धर्ममय, माया में मन चेतन्य ना करो॥

नित्य-नित्य भजन करो, शिव का, आंहे दुख न भरो।
सन्त बनो तुम भी, अपने अन्दर, गुण ज्ञान करो॥

खुद ही फंसा है मनुष्य भंवर में, अज्ञान में घूम रहा है।
ना समझता सत्य कथन, अंधकार में घूम रहा है॥

हे मनुष्य समझो, सत्य कथन, समय की पुकार है।
बता रहे है, ईश्वर गुण धार, जगत में, सत्य धर्म फैला रहे है॥

युग हो रहा है भ्रमित, सोचता है कि, जो दिखता, वह सत्य अमर है।
ना सोचता, टूट जायेगा एक दिन, सब कुछ, तुम्हें यह ना, खबर है॥

ढह जायेगी, यह दुनिया एक दिन, पता ना चल पायेगा।
संन्त बचेगें एक दिन दुनिया में, सबका पतन हो जायेगा॥

सन्त बनो शुद्ध भाव करो। अन्तिम लक्ष्य है तुम्हारा।
तुम खोये जा रहे हो, अपनो से भी, कठिन समय है तुम्हारा॥

लक्ष्य ढुंढो अपने अन्दर, तुम कहां जा रहे हो।
पथ तुम्हारा है घूमिल, दिशा, भ्रमित हो रहे हो॥

हे मनुष्यों बदल दो अपनी मंजिल, समय बदल रहा है।
दुखों का दरिया, आ रहा है सामने, मनुष्य सो रहा है॥

खोल दो वह दरवाजे अपने, अन्दर, दिव्य शब्दों की हवा जाने दो।
रास्ता बने ईश्वर तक जाने का, और दुनिया को समझाने दो॥

ग्रहण लगने वाला है दुनिया पर, विष फैल रहा है।
रोक दो, इस दोष को, जिसको विश्व झेल रहा है॥

करवट बदलो अपनी, दिशा सुख की खुल जायेगी।
मनुष्य समझेगा ज्ञान की बाते, दुखों की खिड़की बन्द हो जायेगी॥

ईश्वर कहते हैं सन्त के अन्दर

यह सृष्टि मैंने बनाई, सत्य देव है मेरा नाम।
सन्तान हो तुम मेरी, पालन करना मेरा काम॥

भटक गई है दुनिया, राह पर लाना मेरा काम।
दर्द दिख रहा है मुझे दुनिया में, दिव्य में मेरा धाम॥

चेतन्य करो आत्मा, मैं उसमें बैठा हुआ हूं।
अपनी करो पहचान, मैं मनुष्य के अन्दर लेटा हुआ हूं॥

भूल रहे हो तुम, सत्य अमर प्रमाण।
दुख ढो रहे हो तुम, यह नहीं मेरा विधान॥

जन्म दिया है, दुखों को इस मनुष्य जात ने।
कर्मों के अनुसार मिले, दुख पाप की याद में॥

समझा रहा है विश्व को, अपनी बुराई छोड़ दे।
समझ लो ईश्वर है क्या, अपनी बड़ाई छोड़ दे॥

सत्य समझ अपने अन्दर, समय पर बता रहा हूं।
अन्धकार में जा रही है, दुनिया, यह चेता रहा हूं॥

समय है अभी भी, झूठ का रास्ता छोड़ दो।
सम्पूर्ण करो ईश्वर को, भूल का रास्ता छोड़ दो॥

मैं पिता हूं आपका, ज्ञान धरती पर बता रहा हूं।
भूल जो मनुष्य ने की है उसे जता रहा है॥

मेरी ही सृष्टि है यह, अन्धकार होने वाला है।
मैं चाहता हूं निकालना, प्रकाश होने वाला है॥

मनुष्य कर्म करे पाप के, क्या मैं बचा पाऊंगा।
कर्मों का भुगतान, क्या मैं दे पाऊंगा॥

कर्म है मनुष्य के अपने, ईश्वर कुछ नहीं कर सकते।
बदल सकते है ज्ञान से मनुष्य को, और कुछ नहीं कर सकते॥

जो पाप हीनता झूठ-फरेब फैला है, जग में, इससे अन्धकार फैल रहा है।

इसको दूर करने के लिए, दिव्य आसन बोल रहा है॥

पिता पुत्र को समझा रहा है, पाप कर्म करना छोड़ दे।
एक दिन तुम होगे दुखी, यह झूठ बड़ाई छोड़ दे॥

इसी प्रकार ईश्वर दे पुकार सृष्टि में, मनुष्य पाप करना छोड़ दे।
परम पिता को माने, अपने उपर अपना, अधिकार जमाना छोड़ दे॥

सन्तों की सुनो ज्ञान की बातें, सृष्टि में अंन्धकार ना हो।
उत्पन्न ना हो मनुष्य कर्म, के कारण, दुखों का संचार ना हो॥

ना घट सके वह घटना, जो मनुष्य देख नहीं सकता।
बचना हो उस समय से पहले, जिसे मनुष्य रोक नहीं सकता॥

तभी कठिनाइयां रुकेगी जग में, जब संतों की वाणी बढ़ेगी।

नदियों की तरह ज्ञान फैलेगा, घर-घर जन-जन में, शुद्ध हरी रहेगी॥

ज्ञानी ईश्वर से कहता है

हे प्रभु जतन कर विश्व का, अंकुर सत्य का भर।
मनुष्य जात है अनजान, करुणा सत्य सागर भर॥

अति विन्रम भाव पड़ा हूं, चरणों में हे देवम्।
प्रार्थना मेरी जगत की, और से है, जगतधारी देवम॥

पूर्ण कर दो कल्याणकारी, धर्म की पगड्डी हमारी।
सुन लो दिव्यधारी, दुखों में पड़ी है, दुनिया सारी॥

माफी दे दो इस दुनिया को, अन्धेरी रात होने वाली है।
सुख सागर बहाओ जन-जन में प्रभात बेला प्यारी॥

उगाओ ज्ञान का दीप जगत में, संशय में ना रहे नर नारी।
आंत्रिक चेतना जगाओ, दिव्य शब्दों की लगाओ फुलवारी॥

ज्ञान गीत दिव्य भेजो धरती पर, सुर बने चेतन्य हारी।
विधान रचो ऐसा, गुण फैले, दुनिया सारी॥

सिद्ध करो दिव्य शब्दों को, खोल कर मनुष्य चेतन्य क्यारी।
हर मनुष्य दृढ़ रहकर माने, सत्य संकल्प गिरधारी॥

चेतन्य करो विश्व को, अपने ही नाम से बनवारी।
खुद मनुष्य ढले दिव्य शब्दों में, हे दिव्य विश्वधारी॥

गुण दोष की परख हो जग में, सन्तों की लगाओ फुलवारी।
जन-जन में फूल खिले दिव्य, और प्रेम की खिले क्यारी॥

पुष्प बने गण विश्व के कण कण में, बसे आपकी सवारी।
विधि का विधान रचो ऐसा, जो जग में चले सन्तों की सवारी॥

सन्त गांवें जगत में, दिव्य शब्दों की फुलवारी।
अर्पण करे विश्व को, लोक नवीन विद्या बंधे न्यारी॥

उत्सुकता से निर्मित करो, पांचों तत्वों की सवारी।
सन्त, प्रभु के गुण गावे, और गांव-गांव फिरे बलिहारी॥

ईश्वर मनुष्य को कहते हैं

हे मनुष्य जात सुन, धर्म सत्य का परवाना।
गुण धर ले, मनुष्य जात अपने अन्दर, तेरे बैठा है मैखाना॥

छोड़ दे बुरी आदत (संगति) सुर सुधार अपना बन्दे।
घट में बैठा हूं मैं (ईश्वर) नाम मेरा जप ले, हर पल बन्दे॥

सुख सागर बहेगा जग में, सन्त करेगे गुणगान।
सन्तन से सुर से निकलेंगे, शब्द होंगे दिव्य बाण॥

पिरोये जायेगें जन-जन में, सत्य हरी नाम।
अंकुर सत्य का फूटेगा जग में, कर्म बनेंगे अनुसंधान॥

कर्म बदल दो अपना, समय बदल रहा है।
गुण ज्ञान धरो अपने अन्दर, शिव बोल रहा है॥

सत्य समझो गुण प्रेम बढ़ाओ अपने, सत्य का आसन डोल रहा है।
झूठ में फंसी है दुनिया, पाप अधर्म का, बोल-बाला रहा है॥

हर मनुष्य फिरे भटकता, विश्व डोल रहा है।
भूलो ना ईश्वर (शिव) को बन्दो, शिव बोल रहा है॥

हे मनुष्य जात ना कर अपनी हट, जीना सीख ले।
समय है बहुत कठिन, उपकार करना सीख ले॥

यत्न कर आंत्रिक चेतना से, सुगन्धित कर अर्पण तू।
सहम कर ना देख, अविश्वास से, ईश्वर को, दिशा अपनी बदल कर देख ले॥

दिशा बदल अपनी शुद्ध कर, प्रभात का सूर्य को देख।
उगा है पृथ्वी पर तुम्हारे, लिए, जाग उठ कर देख॥

समय बदलो अंकुर, नये फूटेगें सभी।
अगुण बदलो अपना, निर्भय होगे नर-नारी सभी॥

गुण दोष की करो पहचान, यह है तेरा इंम्तिहान।
पुष्प बनकर खिल दुनिया में, शिव लेंगे तेरा इंम्तिहान॥

सुरभि भर अपने अन्दर, दया का अंकुर भर ले।
सहज ही तुझे होगा ज्ञान, तू प्रभात बेला पुष्प भर ले॥

दीप जला तू ज्ञान का, रोशन जगत में कर।
यत्न कर चेतन्य बनकर, विश्व आत्मा बनकर॥

विश्व बदलेगा तेरे कारण, तू दिव्य प्रकाश दिव्य बन।
संस्करण कर अपने अन्दर, तू सत्य युग का मनुष्य बन॥

सुन्दर होगे तेरे सपने, और अपनी आंखों, से, फूल खिले देखेगा।।

प्रेम का छात्र दरयाव देखेगा बहता, जग में, और सुन्दर भाव देखेगा।

दुनिया में कोई नहीं दर्द सहेगा, यह वाक्या सोच ले।
प्रण कर हे मानव, अपने अन्दर, धुन्ध से हट रोशनी ज्ञान की देख ले।।

समय का सूरज निकल रहा है, प्रकाश पुंज यह देख ले।
पूर्ण कर रहे हे मानव सत्य कर्म, धरती पर आने का कारण देख ले।।

तुझे ज्ञान दे रहे हैं (ईश्वर) मनुष्य पर दया करके देख ले।
तुझे भी ज्ञान मिलेगा, और शान्ति की ज्योति जगा कर देख ले।।

तेरे द्वारा जन्म लेने वाले, पुरुस्कृत जगत देख ले।
देव लोक से, हुआ मनुष्य जात, जगत देख ले।।
आने वाली पीढ़ी को भी देख ले।।

ज्ञान भरो अपने अन्दर पृथ्वीवासियों, पुष्प खिल जायेगें सभी।
भूल कर रही है दुनिया, निकलो बाहर, दीप जल जायेगे सभी।।

यत्न कर दृढ़ होकर हे (मनुष्य) तेरे अन्दर बैठा है भगवान।
आरंभ कर ज्ञान भरना, जो जगत, सुखी रह सके ईंसान।।

गुण पिरोले अपने अन्दर, दिव्य ज्योति जल चुकी है।
कमण्डल में (शिव) के रखा है जगत, तीसरी आंख खुल चुकी है॥

सोच कर देख (हे ईंसान) तू, भ्रम में जी रहा है।
कौन सा धन गड़ा है, धरती में, जो तू खोद रहा है॥

कब तक खोदेगा धरती, कोई इसका अन्त नहीं।
धरती तो है पाताल तक, जल का भी अन्त नहीं॥

सन्त बन (हे इंसान) अपने अन्दर, मन की इच्छा छोड़ दे।
प्रयत्न कर ज्ञान भर अपने अन्दर, व्यर्थ का ध्यान छोड़ दे॥

शुद्धी कर्मों का दरिया बाह, पाप कर्म ना कर तू।
जीवन चला शुद्धि से, दूसरों को दुख ना पहुंचा तू॥

सत्य समझ ना हठ कर, सत्य ही सार है दुनिया में।
सत्य के उपर सृष्टि टिकी है, सत्य ही पार लगावे दुनिया में॥

सत्य को समझना है, जीना और मरना, जन्म लेना है दुनिया में।
सत्य ही राह दिखावे, सत्य ही समझावे, ईश्वर क्या है दुनिया में॥

सत्य की राह पर चलो सभी, सत्य का आसन पृथ्वी पर खाली पड़ा है।
सत्य से हटी है दुनिया, दिव्य लोक भी खाली पड़ा है॥

ना कोई चले सत्य पर, ना कोई मुक्त होए।
ना जाय स्वर्ग द्वार में, ना मुक्त होए॥

ना मुक्त होए धरती से कोई, ना दिव्य लोक में जाए।
धरती से ही भरे दिव्य लोक, ना मोक्ष द्वार में जाए॥

दिव्य लोक में ना जाय आत्मा, तो परम पुरुष का दर्जा कैसे पाए।
चाहत दुनिया में है इतनी ज्यादा, कि मृत्यु तक भी ना जाए।

कैसे हटेगा अन्धेरा मनुष्य जात का, कई जन्म सत्य से दूर रहता है।
ना सत्य रास्ता पूर्ण करना सोचे, मनुष्य जन्म अधुरा रहता हैं॥

सत्य की करो परख, सत्य में उतरना होगा, हे ईसांन।
तेरे बिना खाली पड़ा हुआ है, दिव्य आसन भगवान॥

तेरे से ही सृष्टि बनी है, और दिव्य लोक में, शासन करे भगवान।
भगवान का है तू प्रिय प्राणी, यह सोच सत्य हे ईंसान॥

रहस्य गुढ़ छिपा है, तेरे अन्दर, खोज कर देख हे इंसान।
पैगाम कर्म दर्द भी लिखा है, तेरे अन्दर, खोल कर देख हे ईंसान॥

तेरा दर्जा छोटा नहीं है, दुनिया में यह चित्रकारी देख।
भगवान भी तेरे, अन्दर बसे, यह अलोक धारी देख॥

देख तू ज्ञान से सभी लोक, तेरे अन्दर छिपे है।
भूल से तू जी रहा है, दुनिया में, शब्द दिव्य, लिखें है॥

तेरे भाग्य में क्या लिखा है, वह कर्मों की गठरी देख।
सब कुछ दिया है तूझे, ईश्वर ने, यह दिव्य कलाकारी देख।

सुन्दर चरित्र बना अपना, प्रिय विश्व का फूल बन तू।
ईश्वर तूझे ज्ञान बता रहे हैं, ज्ञान फूल बन तू॥

सैहस्त्रों युगों से जल रहा है, अग्नि दफन की दशा देख।
तेरी ही खातिर सृष्टि रची है, धरती पर पैगम्बर आहट देख॥

क्या क्या छिपा है, तेरे अन्दर, तुझे बता रहे है, भगवान।
तू जाग सत्य देख उठकर, तुझे समझा रहे है भगवान॥

तेरा ही कर्म बता रहे हैं, तू भूल रहा है ईंसान।
तेरे अन्दर जो भरा हुआ है, वहां पर बैठा है भगवान॥

सन्त बन हे (मानव) ज्ञान भर, अपने आपको जगाकर देख।
जला एक सत्य दिव्य प्रकाश जगत में फैला कर देख॥

यत्न कर प्रथम, आरम्भ कर, ज्ञान जगत में पिरोकर देख ले।
जाग जायेगे, सभी सोये हुए हैं, जगत को जगाकर कर देख ले॥

एक मानव जगेगा, दुनिया में, जाग जायेगे, मानव सभी।
वाणी है, ईश्वर की सुनेगे, जाग बह जायेगे सभी॥

हे मानव दया धर्म सत्य कर्म, निर्भय से जीना सीख ले।
कौन तेरा है इस दुनिया में, ज्ञान भर कर सीख ले॥

पुण्य कर दुनिया में, शुभ कर्म करने आया है, तू।
सन्त बन कर जीने का, सत्य सबूत बनकर आया है तू॥

हे मनुष्य जात, सत्य की वाणी फैला दुनिया में, सन्त बनकर जी।
पुण्य कर्म की बेल कर हरी, पुष्प प्रेम बनकर, दुनिया में जी॥

स्मरण कर 'शिव' ईश्वर अल्लाह की ज्योत दिव्य जला ले।
पूर्ण कर वे कर्म अपने, सत्य युग जैसा बना ले॥

हे मानव ना भंवर में फंस, तेरे कंठ में बैठा है शैतान।
तू शक्ति कर अर्जित पूर्ण, कंठ में बैठा है भगवान॥

ना कर अनादर, मानव कौम का, मानव काल में जा रहा है।
कर्म बदल अपने, शब्दों का, प्रयोग कर नेक, शब्द आकाश में जा रहा है।

ना छोड़ अशब्दों की कड़वाहट, दिव्य लोक में शब्द जा रहा है।
दिख रहा है ईश्वर को, यह कठ भंवर, मनुष्य लोप में जा रहा है॥

ना कर ऐसा कर्म, ना बोले झूठे कड़वे बोल।
संग तेरे कुछ नहीं जायेगा, ना बोल झूठे बोल॥

आदि से सृष्टि बनी, तेरे जैसे 'असंख्य मानव क्षण भर में मरते रहे।
हर किसी के अशब्द काम ना आये, अब तक झूठ फरेब में मरते रहे॥

समय समय पर परम पुरुष पांच तत्वो में पहचाने गये, दिव्य शब्दों की बौछार हुई।
जिनको आज, याद करे दुनिया और धरती पर पूजा बार बार हुई॥

दृढ़ निर्णय करो नर नारियो, 'अशब्दो का ना बोलो बोल।
कड़वा इतना होता है, कि 'बुजुर्गों के दर्द का, दुनिया में बने माहौल॥

कड़वे ना बोलो बोल, युग कठिनाइयों को झेल रहा है।
ईश्वर के पास जाती है खबर, धर्म का आसन डोल रहा है॥

ना फंसाओ एक दूसरे मानव को, तुम्हें छोटी बात दिख रही है।
पर झूठ में फंसी है दुनिया, यह बात देवों को दिख रही है॥

मानव सोचे एक झूठ बोले, क्या बिगड़ जायेगा।
एक झूठ से बने छेद, धर्म में, पाप दुनिया में बढ़ जायेगा॥

एक मानव एक झूठ बोले, फैले जहर दुनिया में।
झूठ से बढ़ती है हिंसा (दुनिया में) पाप बढ़े शिवालयों में॥

ना कर हठ छोड़ दे जिद, अपनी, दूषित जगत को ना कर।
ना ज्ञान है तूझे जर्रे का भी, तू शब्द से आहत ना कर॥

तुझे पता नहीं (अशब्द) से दर्द, बढ़ा मनुष्य दूसरा, अन्दर से छिल रहा है।

तू बोले कड़वे बोल, दिल दूसरे मानव का जल रहा है॥

कौन सिखायेगा तुझे, जीने में, कौन सा सुख छिपा है।
ईश्वर की गनगनाहट, दिव्य शब्दों की सुन, तेरी दशा क्या है॥

दशा क्या है तेरी, हे मानव, अपनी भूल कर स्वीकार।
समय बीत रहा है, तेरे जीवन का, ना कर धिक्कार॥

सुन दिव्य शब्दों की गनगनाहट, पक्षी भी सुनेंगे सभी।
तू तो है एक मानव (श्रेष्ठ), पापी भी सुनेंगे सभी॥

हे मानव तेरे अन्दर, नस नस में, नूर भरा है।
ईश्वर तेरे नजदीक हैं, इतने सुख भरपूर भरा है॥

तेरे अन्दर गुण भरा है, और तेरी बुद्धि का, आकार बड़ा, है।
तेरे से ही पालन करवावे (ईश्वर) तेरे ही अन्दर, सहांर भरा है॥

तेरे द्वारा ही दूसरा (मानव) बनवाने का सुर भरा है।
तेरे से ही संस्कार भरवावे, और तेरे अन्दर ही स्वर्ग भरा है॥

तेरे ही भाव के कारण (मैं ईश्वर) तेरे करीब रहता हूं।
तेरे शरीर की करू सवारी, पर तेरे से अनभिज्ञ रहता हूं॥

तूझे नहीं पता मैं हूं (ईश्वर) जगत पिता मेरा नाम।
तेरे अन्दर भी (मैं बैठा हूं) और जगत चलाना मेरा काम॥

अब मान (हे मानव) तू कितना बड़ा महान।
जब (मैं एक ईश्वर) जो चलावे सम्पूर्ण जहान॥

सोच हे मानव तू मेरे लिए, कितना है प्रिय श्रेष्ठ।
मैंने ही अपना बोया है, बीज, शक्ल समझ प्रिय श्रेष्ठ॥

तू क्यों भूला है मुझे, मैं तो तेरे अन्दर ही, करूं सवारी।
चैतन्य रखूं तेरी बुद्धि, और धरती पर करवाऊं सवारी॥

दोनो पैरो से चले तू, यह है मेरी दिव्य कला।
स्वांस लेता है तू धरती पर, यह है सृष्टि कला॥

तेरे से, मैं नहीं ओझल होता, सृष्टि चला रहा हूं।
पर तू ना कभी जाना मुझे, बार बार-शरीर तेरा, अग्नि में जला रहा हूं॥

इसलिए उस बुद्धि से सोच, जो तुझे ईश्वर ने दी है।
अहंकार छोड़ अपना, मांग क्षमा, जो बिना मांगे दी है॥

बुद्धि का सदुपयोग कर, संवर जायेगी यह दुनिया।
बहा बुद्धि को प्रेम, सागर वाणी में, पुष्प बन जायेगी दुनिया॥

बुद्धी से सोच हे मानव, तेरा क्या है, इस काया में।
तेरा कुछ नहीं है अपना, सब कुछ लिपटा है माया मे॥

माया भी रचना है (ईश्वर) की भूल जगत को कराई।
माया से कैसे निकले (मानव) यह बुद्धि भी बताई॥

माया मोह मरण है, जगत में, सुख का भाव दिखे।
हर मानव को माया मोह में, प्रेम सजे, और बाद में दुख दिखे॥

माया मोह है दुख का सागर, डूबे ना निकल पाये कभी।
और माया मोह से निकले मानव, बाहर, तो डूबे ना कभी॥

भरा सागर है माया मोह का, मानव सदैव डूबा रहे।
स्वास ले ना सके, निर्भय होकर, सारा जीवन डूबा रहे॥

खुल कर देखो विश्व जनो, ईश्वर तुम्हें जगाने आये है।
जिस भूल में तुम फंसे हों, उस भूल को बताने आये है॥

ईश्वर नहीं कहते, कि तुम दुनिया में, जीना मरना छोड़ दो।
ईश्वर कहते हैं कि धर्ममय, छेद करना छोड़ दो॥

जियो धर्ममय, जो सत्य सृष्टि प्रेम का, सागर बहा दो।
माता पिता की करो सेवा, जन जन में धर्म का अर्थ बहा दो॥

लिप्त ना हो माया जाल में, सुगड़-सुगड़ रूलाती है।
काट देती है मानव जीवन, सघर्ष दर्द में सुलाती है॥

हर वक्त ना निर्भय रहे मानव, परिस्थितियों में घिरा रहे।
जतन करे खुश रहने का, पर अपनी इच्छाओं में घिरा रहे॥

इच्छा करे सुखी रहने के लिए, पर निर्णय सत्य ना करे।
दुख ढोये सम्पूर्ण जीवन, बुद्धि का सर्वे सत्य ना करे॥

हे मानव जो आप पाना चाहते हो, वह मानव प्रगति नहीं।
मानव ज्ञान करे, धरती पर, खाली मृत्यु स्वयं प्रगति नहीं॥

जन्म सार जीना सत्य वार, दुर्व्यवहार ना जगत में होय।
कंठ में भरो सात्विक शब्द, इन्सानियत का पतन ना होय॥

गुण धर्म प्रसव नीति जन्म सार, प्रेम सागर मन्थन।
उत्पत्ति सृष्टि कला (ईश्वर) प्रेम, मानव प्रेरणा मन्थन॥

उग्र मानव धर्म हीन प्रथा, प्रेम धार सतयुग प्रथा।
पुरुषार्थ जीवन चरित्र प्रथा, अधार्म जीवन कालीयुगी प्रथा॥

पुण्य कर्म सात्विक गुण धार, अध्ययन मन विचारिये।
सत्य गुण धारियों पुण्य कर्म, सद्बुद्धि विधारिये॥

अणवेषण, कर अपने अन्दर, गुण दोष विचारिये।
मानव कहां फंसा है दर्द में, गुण धार पिरोइये॥

ईश्वर मनुष्य देह धारी को बता रहे है ज्ञानी

सन्त बन कर सन्तोष मन में कर, ज्ञान का द्वारा खोल।
स्थिर हो अपने मन में, सशंय का द्वारा खोल॥

हित कर जगत में, पुरुषार्थ की नींव धर।
जिसमें हर नर नारी बहें, युग में ऐसा गुणकर॥

हे मानव, तेरे से ही युग बना है, और धरती बनी बिछौना।
प्रिय मानव सन्त बन तू, ना रहे भूखा कोई, सभी को मिले खाना॥

अवधि बीत रही है, युग की, परिवर्तन चक्र बन रहा है।
घुट घुट कर जी रहे है, बुद्धिजीवी, पाप पुंज बन रहा है॥

हे मानव प्रकाश बन तेरे से ही, सतयुग बनेगा युग सारा।
तू सन्त बनकर ज्ञान पिरोले, अपने मन में हो जायेगा जग में उजियारा॥

कर दृढ़ सकंल्प, मैं सन्त बनूंगा, रखूंगा धर्म सत्य पर चलूंगा।
दूसरों को बताऊंगा, भेद नर नारायण का, खुद पुष्प बनूंगा॥

प्रायशचित करूंगा पिछले जन्म का, और इस जन्म का करूंगा।
क्षण में चित्त बदलूंगा अपना, और दुनिया को बदलूंगा॥

मैं भी एक नर हूं, इस जगत का, मुझे तो ज्ञान हो गया।
मैं पहुंचाऊंगा यह ज्ञान, धर्म का, मैं स्थिर हो गया॥

मैं बदलूंगा ज्ञान भरकर, तभी तो दुनिया बदलेगी।
पुष्प खिलेंगे जन जन में, और नदिया भरकर चलेगी॥

हे मानव भर ले कंठ में, मीठा राग, ध्वनि बजा जग में।
अवधि घट रही मानव की, पुष्प धर्म खिला जग में॥

शक्ति मनुष्य से हट रही है, मानव में सात्विक गुण ना रहा।
सात्विक सोच, मनुष्य अगर रखें मन में, शक्ति बीज मनुष्य में बना रहा॥

हे मानव जात, खुद सोच अपने मन में, शक्ति कर अर्जित।
जीवन के तुम्हारे सभी कार्य, होगे पूर्ण शक्ति कर अर्जित॥

सोच अपनी, शुद्ध कर लें, शक्ति, तुझे जीने की मिलेगी।
कार्य तेरे सभी होंगे पूरे, काया भी तेरी स्वस्थ होगी॥

पुण्य कर, धर्म मय ढल, सात्विकी रख विचार।
अपने अन्दर सोच, ना बुराई, ना रख विकार॥

मनुष्य जात माया में लथपथ, लिपटी हुई है आज।
ना कोई काया से स्वस्थ, और ना शक्ति मिलती है, आज॥

मन में रखें उथल पुथल, मानव शरीर डोलें।
इसी कारण, अस्वस्थ रहे काया, झूठ मुख से बोले॥

यह जहर फैल रहा है, दुनिया में, संशय में ना रहो।
संभलों जगत वासियों, कंठ से ईश्वर में रहो॥

अध्ययन करो अपने अन्दर, मन में धुन्ध फैल रही है।
निकालो जहर, गलत सोच का, बीमारी फैला रही है॥

सन्त बनो, अपने अन्दर, शुद्ध विचार जाने दो।
काया आपकी, रहेगी स्वस्थ, पुण्य धरती पर छाने दो॥

ध्यान योग लगते है, विचारों से, सोच अपनी बदलनी होगी।
दिशा सात्विक है अगर, मानव की, सन्त सुर बनानी होगी॥

हृदय रखो, सुन्दर सोचो, सृष्टि रहे, मंगल में सदा।
शत्रु भी सुखी रहे जग में, और मिथ्या, ना पनपे ज्यादा॥

अपने परिवार में, सात्विक गुण भरो, चेतन्य करो आत्मा॥
ईर्ष्या द्वेष ना रहे मन में, सदैव प्रसन्न रहे परमात्मा॥

ईर्ष्या द्वेष भी खुद, जन्म देता है, मानव, यह है कलयुगी पिंजरा।
सटा रहता है मानव इसमें, सत्य रहता है सदैव धुंधला॥

आदि काल से बनी सृष्टि, दोष मानव में पनपते रहे।
भेद मानव छुपावे अपना, सत्य से आंख झपकते रहे॥

दोष मानव में हो, जिसमें ज्यादा, वह नरक भोग रहा है।
दोष हो जिस मानव में कम, वह स्वर्ग भोग रहा है॥

सत्य गुण खोल कर देखे, अपने, सुखी महसूस करोगे।
झूठ में तो दुनिया फंसी है, झूठ में जीकर क्या करोगे॥

झूठ तत्य का समाधान करना है मानव, को, समय आ गया है।
झूठ पर टिकी है दुनिया, टूटने का समय आ गया है॥

झूठ रेत की दीवार बनकर, लटकती है दुनिया में।
झूठ दे जन्म हिंसा को, ईर्ष्या का जहर फैलाती है दुनिया में॥

हे मानव तुझे तो खुद ही, समझना होगा ज्ञान।
इसी में तेरा जीवन बसा है, यह ही है विज्ञान॥

हे मानव अपनी प्रगति कर अन्दर की, शुद्धी गाठ खोल दे।
परमेश्वर की लगा लौ, अपनी झूठी स्वप्न सोच छोड़ दे॥

स्वप्न सोच छोड़ दे बन्दे, युग बीत रहा है।
घट रही है तेरी उम्र, नाम ले ईश्वर का समय बीत रहा है॥

खोल दरवाजा, अपने अन्दर का, सामने सत्युग दिख रहा है।
घटा काली छाई है, तेरे सामने पर्दा हटा, सुख दिख रहा है॥

मन में ना सोच उफान भरी बातें, ईश्वर दिख रहा है।
मन बना अपना भर इसमें नाम, ईश्वर दीप दिख रहा है॥

सन्तुलन बना अपने मन का, स्वरूप तेरा बदलेगा।
हे मानव कर संग्रह शक्ति, विश्व भी तभी बदलेगा॥

सोच, विचार कर सत्य मानकर, अपना अन्दर का रूप बदल।
संशय में ना रह, खोल दे, निर्भय होकर, बन्द स्वरूप बदल।।

तेरे, अन्दर ही सबकुछ छिपा है, खोज अपनी पहचान।
औषधि भी तेरे अन्दर छिपी है, और अन्दर ही भगवान।।

काया तेरी सुन्दर बनी है, भरा पड़ा है संसार।
इसी काया में छुपा हुआ है, चतुर्थ युग परिवार।।

हे इंसान सो रहा था तू, अब है समय जाग उठ।
सामने तेरे ईश्वर खड़े हैं, पहचान कर जाग उठ।।

बता रहे हैं तेरी पहचान, तू चतुर्थ युग का हे ईंसान।
तेरे अन्दर छिपे हुए है, ज्ञान पुंज सृष्टि भगवान।।

तेरे मेरे में फर्क कोई नहीं, तेरी काया में मेरा बसेरा।
काया को तू समझे भोग माया, भूल गया है सवेरा।।

रात ही दिख रही है तूझे, तू समझ रहा है दिन उजाला।
हे मानव भूल भ्रमण में है, तेरी यात्रा, तू सत्युग का है रहने वाला।।

हर जन्म में, तू भूल गया है, तू कहां से आया, कहां का रहने वाला।
तू आया है, सत्य लोक से तेरा अपना है, सिर्फ उपर वाला।।

तूने ही अपनी भूल से, अपने को, बार बार बनाया।
तेर ही कारण, युग बीत रहे हैं, तूने ही चतुर्थ युग बनाया।।

सब कुछ, तेरे कारण हो रहा है, यह ईश्वर सृष्टि है।
तेरे ही कारण, नरक भोग धरती पर, तूने ही पुण्य में धारती रची है।

हे मनुष्य, गुण तेरे अन्दर है, ईश्वर के, पुण्य करना तेरा काम।
आधीन तू नहीं किसी के, धर्म की आस्था बनाना तेरा काम॥

तू किसी के आधीन नहीं, पर तू माया में लिपटा रहता है।
कोई भी तेरे ऊपर तनाव नहीं, पर तू भोगो का गुलाम रहता है॥

चाहत की तू करे गुलामी, ईश्वर की चाहत ना करे।
जो (ईश्वर) बैठे है तेरे अन्दर, तू उसका आनन्द ना चखे॥

हे मानव खोल चक्षु अपने, सत्य का समय आ रहा है।
सत्य में हो सम्मिलित, असत्य का, जाने का समय आ रहा है॥

सत्य में मेल कर, मिल कर, ईश्वर में बस जा।
छंट जायेगी दुनिया, तू पाप कर्म से हट जा॥

सत्य कर्म कर, सत्य से ही बचेगी दुनिया।
झूठ का पर्दा हटेगा, झूठी नहीं बच सकेगी, दुनिया॥

हर मनुष्य, चीज की, एक अवधि होती है।
सत्वगुण अगर पद है, धूर्त गुण की हद होती है।

सत्व गुण समावेष है, ईश्वर में, सत्युग वेश, धारण करवावे।
तमोगुणी मनुष्य खावे भोग, पेट भर भरकर, और दूसरों को झूठ बतावे॥

झूठ मनुष्य लगावे ग्रहण, अपने खून में भी, छेद बतावे।
जीने ना दे दूसरा को भी, और अपनो से भेद छिपावे॥

परिवार के अन्दर रहे, सत्य बनकर, पर अन्दर झूठ छिपा रहे।
गुण सत्य ना सिखावे, किसी अपने को, झूठ बक बक छिपा रहे॥

हे मानव सन्त बन, कर्म पुरुष बन, विचार शुद्ध धार ले।
पुण्य हार धारण कर, मिथ्या शब्द सुधार ले॥

ध्यान कर तू कहां खड़ा है, तेरे अन्दर तो जहर भरा है।
जहर निकाल तू, अपने अन्दर से, तेरे अन्दर ईश्वर नाम जड़ा है॥

कहां खो गया हे मानव, तू-तो मेरी सृष्टि है।
सृष्टि तो मैंने बसाई है (धर्ममय) तू क्यों बना दुष्टि है॥

क्यों बना बता मुझे, तेरी कैसी सृष्टि है।
बन्द क्यों कर रहा है, आंखें तूं, देख कण कण में, सृष्टि है॥

सृष्टि फैली है जहां तक, वहां तक है मेरा वास।
तू बता तेरा है कहां ठिकाना, और कहां पर है तेरा वास॥

है पुण्य धरती के वासी, बता तुझे, धरती कितनी मिली है!
उतनी ही मिली है, धरती तुझे, जितने में बार बार, तेरी काया जली है॥

बाकी तो पड़ी है, सम्पूर्ण सृष्टि, पृथ्वी पर, क्यों तू हक जमाता है।
तेरा नहीं है कुछ भी दुनिया में, तू तो कच्चा धागा है॥

संभल कर देख, कैसे कट रही है, तेरी जिन्दगी।
देख तूने क्या खोया-क्या पाया, तू करले खुदा बन्दगी॥

बन्दगी कर ले ईश्वर की, तेरे कर्म सुधर जायेंगे।
अपने विचार बढ़ा, सात्विक, सभी जन्म मुक्त हो जायेगा॥

विचारों में गांठ लगी है, अवगुणों की, गुणों में बिठाले।
सन्त बन तू अपने अन्दर, सुरों की गुनगुनाहट जताले॥

शुद्ध अपने अन्दर कर विचार, धर्म की माला पहन ले।
जिसमें दाने हो अनेक, ईश्वर जानकर पहन ले॥

सब्र कर ले, अपने अन्दर, शान्त स्वभाव में बदल।
ना किसी को दुख पहुंचा, सत्य भाव में बदल॥

गुण दोष की कर परख, निर्भय होकर जांच ले।
ना दोष लगा दूसरे पर, अपनी परख बाच ले॥

पहले देख अपनी नजर, क्या देख रही है।
यह कैसा सुन्दर संसार है, स्वप्न सोच रही है॥

संसार है सुन्दर बाणा, भोगे तो पड़े पछताना।
युग-युग भी ढल जाते हैं इसमें, यह है बहुत पुराना॥

पांच तत्वों में कितने (मानव) आये (धरती पर) ना रहा अमर ठिकाना।
टूट जाती है बनी बस्ती भी, मानव हो जाता है बेगाना॥

हे मानव नूर भर अपने अन्दर, ईश्वर साज सजा ले।
दिन कट रहे हैं तेरी, जिन्दगी के, ईश्वर में लो लगाले॥

कौन तेरा है, दुनिया में, हिसाब अपनी, बुद्धि में बैठा ले।
कौन आया तेरे साथ, दुनिया में, मन का दर्द हटाले॥

कौन से तूने पाप किये थे, जो तू आज दुखी है।
तूने किसी की अधर फंसी हुई, (नाव दरियाव) में देखी है॥

देख कर क्या तूने निकाली है (नाव) किसी की, यह जन्मपत्री दिखा ले।
अगर तूने निकाली है (नाव भवंर से किसी) की तो तू ईश्वर से मुक्ति पा ले॥

हे मानव तुझे पता है, सब क्या किया, तूने दुनिया में।
इस जन्म का तो तुझे पता है, पिछले का तू सोच ले॥

बैठा ले सोच में अपनी, तू वर्तमान तेरा सुखी नहीं रहा।
पिछला तेरा कर्महीन था, इसी कारण तू दुखी रहा॥

कहां कहां दिखाता फिरे तू, जन्मपत्री, तेरे अन्दर सब लिखा है।
प्रयत्न कर बुद्धि से अपनी, तेरे अन्दर पुर्नजन्म लिखा है॥

ज्योतिषियों के ना लगा चक्कर, तेरा तुझे ही पता है।
तेरे कर्म कैसे थे, पूर्व में, और अब भी तू झूठ से सटा है॥

कौन बतायेगा कर्म फल तेरा, धुन्ध में भरा पड़ा जीवन।
सत्य कर्म ना किये तूने कभी, भार धरती पर पड़ा जीवन॥

धरती मर रही है बोझ, तू इसका हल ढूंढ बता।
तेरे से ही धरती पुण्य धर्ममय होगी, यह ज्ञानी से पूछ बता॥

हे मानव, इतना सबकुछ जानकर, क्या तू करेगा, संकल्प कि मैं सत्य नमन करूंगा।
रखूंगा हरदम ईश्वर को याद, यह प्रण करूंगा॥

मानव नाम भज ले, ईश्वर का, निर्णय कर आत्मा।
शिव बनकर बसे है तेरे अन्दर, आदि पिण्ड परमात्मा॥

पुण्य बनकर सुगन्ध फैला दुनिया में, शुद्ध प्रेम करके देख ले।
सन्त बन अपने अन्दर मन्दिर, गुरूद्वारा, मस्जिद, बन कर देख ले॥

फैला सुगन्ध दुनिया में, दूरी बढ़ी है, मानव प्रेम में, दूरी घटाकर देख ले।
तभी चलेगा पता तुझे, जीने का आन्नद क्या है, यह ज्ञान संग्रह कर देख ले॥

जन्म तो रोज लेता है मानव, धरती पर, नहीं सुगन्ध, उठती है कहीं।

तभी चलेगा पता तुझे जीने का आनन्द क्या है, यह ज्ञान संग्रह ले कर देख ले॥

जन्म तो रोज लेता है मानव, धरती पर, नहीं सुगन्ध, उठती है कही।
सत्य, सफर कर रहा है सत्य लोक में, नरक धरती पर है, ज्यो का त्यों ही॥

हे मानव सोच, तूने जन्म लेकर, दर्द के सिवा भी कुछ देखा है।
अगर तूने कुछ देखा है तो बस अपना स्वार्थ, लाभ देखा है॥

हे मानव, तू सोचता होगा मन में अपने, कि मुझे ही ज्ञान क्यों देते है।
मैं क्या भूला हूं धरती पर आकर, यह क्यों मुझे बताते हैं॥

हे मानव, तेरे ही कारण (ईश्वर) मैंने धरती बनाई उस पर किया तेरा वास।
मैं ही सृष्टि कर्ता हूं, और मानव में मेरा जीव पूर्ण वास॥

मुझे ही पता चलता है तेरा, कि तू आदि पुरुष नहीं रहा।
तेरे अन्दर धुन्ध भर गया है, माया का, तू शुद्ध नहीं रहा॥

मेरा ही शासन है पृथ्वी पर, मैंने ही तुझे बसाया है।
मैंने ही तुझे मानव बना कर, ज्ञान देकर भिजवाया है॥

मेरा ही तू, सबसे प्रिय प्राणी है, अपनी शक्ल में बनवाया है।
तुझे मैंने दिया सब कुछ, पर तू ना समझा, मेरे लिए पराया है॥

इसीलिए मैं तुझे, शब्दों से वाक्य बनाकर, सन्त के द्वारा भिजवाता हूं।
जब तू भटके पृथ्वी लोक पर, तभी मैं सन्त बनकर समझता हूं॥

तेरे ही कारण, शब्द दिव्य भेजे जाते धरती पर, धर्म सुगन्ध फैलाने।
कड़वे शब्द निकलावाऊं, मानव के अन्दर से, मीठे शब्द आता हूं फैलाने॥

हे मानव तू प्रश्न (ईश्वर) से भी करता रहा हर युग में।
तुझे मैंने ही बनाया पर यह ज्ञान भूलकर, तू जन्म पर जन्म लेता रहा है हर युग में॥

हे मानव अब तू कहेगा, कि क्यों, मुझे धरती पर बसाया है।
धरती है धर्म पुंज, कुण्डल रमणी, तुझे इस पर सजाया है॥

पर तुझे धरती पर सजाया, मुक्ति धाम जाने के लिए।
पर तू हर युग में ना मुझे समझा, गलती करता रहा नरक जाने के लिए॥

मैंने तो इस सृष्टि को सुगन्ध भर कर, सुगन्ध में वापस जाने के लिए बसाया है।
पर मानव के अन्दर भरी हुई है।, ना समझी की दुर्गन्ध और मानव समझे, भूल में आया है॥

मैंने सृष्टि बसाई है सतयुगी धारण, धर्म नीति शास्त्र, गुण ज्ञान, मानव धारण करें।

कभी भी पुण्य कर्म से ना हटे, मानव, अपना मुक्ति दान करे॥

हे मानव

अशब्द अज्ञान भी तेरे से पैदा हुआ, यह वाक्य सुन, है ईसांन।

मैंने तो तेरे अन्दर ज्ञान भरा है, और काया में तेरी बना (बसा मैं) भगवान॥

दुखो का बीज भी बोया है तूने, हे सृष्टि के इंसान।

तुझे मैं बार बार समझा रहा हूं, शुब्ध ज्ञान भर, हे इंसान॥

जितनी भी मानव है धरती पर, हर प्रश्न का उत्तर है, मेरे पास।

चाहे जहरी वाणी बोल कर प्रश्न कर, जवाब हर मिलेगा मेरे पास॥

ईश्वर कहते हैं

हे मानव तू हिन्दु नहीं, तू मुसलमान नहीं, तू सिख नहीं, तू इसाई नहीं, तू है मेरा प्राणी प्यारा।

तूने ही कौम का बीज भरा है, जगत में, तू तभी से हो गया, मेरे से न्यारा॥

तूने ही जात पात बनाई, तूने ही किया मानव बंटवारा।

तूने ही क्रोध हिंसा बढ़ाई जगत में, तू हो गया अपनो से पराया॥

तूने ही क्रोध से हिंसा बढ़ाई, जगत में, तू हो गया हत्यारा।
तूने ही सत्य को झूठ बताया, तू सत्य सुनने में हो गया बहरा।।

मैं हूं एक ईश्वर जगत का, तू मेरे द्वारा ही धरती पर आया।
मैंने ही बीज बोया है मानव का, तभी तो तू धरती में समाया।।

धरती पर समाया है तू, यह ज्ञान अपने अन्दर समा।
जैसे धरती में बीज, पौधा बनकर निकले, ऐसे ही अपने अन्दर ज्ञान जमा।।

सन्त बन तू अपने अन्दर, बीज सत्य का उगा।
जो धर्म की, फुवार चले जग में, तू मानव पूर्ण बनकर जगा।।

तेरे ही कारण, विमुख हो रहा है, मानव प्रेम धरती पर।
सहन कर 'दया भाव' कर तू, प्रेम बढ़ाने आया है धरती पर।।

पुण्य कर सत्य पर चल, तेरा नहीं है, मृत्यु लोक ठिकाना।
तूझे तो जाना है, सत्युग में, तू समझ आदि काल पुराना।।

आज नहीं उपजा तू, आदि काल से, धरती पर आ रहा है।
शक्ल बदल कर आता है तू, और काल के मुख में जा रहा है।।

कितना समय लगायेगा तू, अपनी भूल स्वीकार करने में।
भूल ही तो है तेरी, तू झूठ स्वप्न में, और बुद्धि हरने में।।

बुद्धि तेरी कहां गई, तू गुण अपने सवार ले।
तेरा मन फिरे भटकता, तू जीवन को, दर्द से उभार ले।।

प्रत्यन कर समझा रहा हूं, सन्त के द्वारा, पूर्ण धर्ममय सठ जा।
क्या करेगा झूठ में रहकर, दर्द से छोड़ नाता, तू सुख में सठ जा॥

अश्रु क्यों बहा रहा है तू, दर्द में, कर्म धर्ममय बस जा।
तोड़ ना मेरी बनाई हुई कला, तू प्रेम मेरे में बस जा॥

तू झूठा भेष ना भर, तुझे याद नहीं करेगी, यह दुनिया।
झूठ फरेब का उतार पर्दा, निर्भय हो, यह है तेरा जीने का जरिया॥

सत्यधर्म, मन भवंर में ना फंस, सन्त बनकर जीना सीख ले।
उत्पत्ति ना कर हे मानव अपने से, ज्ञान भरकर देख ले॥

जन्म देने का आशीर्वाद, मैंने तुझे ही दिया है।
कर्महीन ना बन, ऐसे जी दुनिया में जैसे सन्त जीया है॥

कड़वा ना देख आंखों से, तू है खुदी अपनो का दोषी॥
तू अगर, संस्कार युक्त होता जीवन में, तो सभी होते तेरी साथी॥

क्यों तू फिरे भटकता अकेला, अपने पर कर भरोसा।
विश्वास कर अपने ईश्वर पर, ना आ सके तुझे खरोचा॥

जैसे तू बीज बो रहा है, धरती पर, वैसा ही उगेगा।
ना तूने वह कर्म किये, कि जन्म लेने वाला हर मानव कब जगेगा॥

मानव पैदा हो रहे हैं, धरती, उपज धर्म की ना रही।
ना सीखे तुम धर्म पर चलना, जीने की राह, मानव निर्माण में ना रही॥

हे मानव, खुदी बनो सरल उत्साहित धर्ममय जीना सीख लो।
मानव करो पैदा ऐसा धरती पर, सत्य धर्म पुरुषार्थ से जीना सीख लो॥

नहीं तो यह धरती भार से, रसातल में, चली जायेगी एक दिन।
बोझ इतना बढ़ गया है, यह टुकड़ों में बंट जायेगी, एक दिन॥

हर मानव अपने अन्दर देख कि, वर्तमान युग का क्या चल रहा है।
धर्म घट रहा है दुनिया में, मानव भेड़ चाल चल रहा है॥

नहीं देखता सामने अपने, कौन दे रहा है धोखा।
अपने अन्दर जब, धूल अज्ञान की भरी है, तो अधर्मी देंगे धोखा॥

कौन किसके पीछे चल रहा है, चाहत धन कमाने की रही।
कोई शान्ति चाहता है अपने घर में, कोई जाना चाहता देवताओं की राही॥

पर हे मानव तु तो भटक रहा है, कौन तुम्हें सब कुछ देगा।
तुम्हारे अन्दर ही बैठा है (ईश्वर) पहचानो वह ही सब कुछ देगा॥

बहकावे में ना आओ, धरतीवासियों, तुम जा रहे हो भूल भुलैया में।

तुम्हारा रास्ता धुन्ध में पड़ा है, तुम सोचते हो, मैं सत्य ढूंढूगा शिवालय में।।

पर तुम तो जा रहे हो, उस नदी के किनारे, जहां से पार नही हो सकोगे।

जिस पर तुम्हारा विश्वास टिका है, वह भी है, भ्रमित, पार ना हो सकोगा।।

बेल बढ़ रही है अधर्म की, धर्म सूख रहा है।
राह पड़ी है, धुन्ध में मानव की, इस दर्द में सन्त रो रहा है।।

किसी के बहकावे में मत आओ, अन्दर तुम्हारे सन्त बैठा हुआ है।
खोलो अपने अन्दर का दरवाजा, खुदी ईश्वर बैठा हुआ है।।

सन्त बनो अपने अन्दर से, ना कोई दर्द में रहेगा।
खोजो अपने अन्दर वह कलायें, तभी तुम्हें ईश्वर, दिव्य लोक दिखायेगा।।

क्यों फिरते हो, भटकते, सोचो तुम्हें क्या पाना है।
तुम्हारी काया में ही सब छिपा है, जो तुम्हें पाना है।।

काया के अन्दर करो खोज, कि इसका निर्माण है कैसा।
कैसे कैसे बनाई है काया, और ईश्वर इसमें है कैसा।।

कौन तुम्हें देगा ज्ञान यहां, तुम अपने आपसे से पूछो।
अन्धेरे से निकालेगा कौन, तुम यह दिव्य वाणी से पूछो।।

हे मानव, सत्य रमण कर, पृथ्वी पर, विश्व भभक रहा है।
अपने अन्दर के खोल पट, मानव सत्य से हट रहा है।।

हे मानव तू जानता, सब कुछ है, पर नियम नहीं बांधता।
सुर में अपने जी रहा है तू, पर सत्य नहीं मानता।।

सत्य सुर है निर्भय संस्करण, दिव्य गुण धाम।
(मैं ईश्वर हूं) मेरे अन्दर सज, धज उठा, विश्व में उफान।।

सुर अपने कर चैतन्य, ईश्वर की लौ लगा।
ग्रह नक्षर तेरे अन्दर बसे हैं, तू सत्य ही गुहार लगा।।

गुहार लगा सत्य सुमरण की, अतीत तेरा निखर जायेगा।
सन्त करेगे रमण धरती पर, युग सुधर जायेगा।।

मनुष्य बनकर परिभाषा समझ, कौन है, तू कहां से आया।
किसने भेजा तुझे, रमणीक धरती पर, तू बीज बनकर, कहां से आया।।

तेरा पता तुझे नहीं मालूम, तू अपनी करनी, भूल गया है।
हे मानव तेरा ठिकाना नहीं है, मृत्यु लोक, तू युग बदलने आया है।।

युगों से हो रहा है तेरा भ्रमण, तू अपनी काया की चिकित्सा करा ले।
विश्व फिर रहा है भटकता, बीमारी से, तू औषधि बना ले॥

औषधि तेरे अन्दर ही है, तू सत्य सफर सोच, बढ़ा ले।
तेरी काया होगी निरोगी, तू ईश्वर में लौ लगाले॥

लौ लगाले ईश्वर में तू, अन्धा ना बन कर जी।
देख सामने तेरे, प्रकृति खड़ी है, तू यह ज्ञान समझ कर जी॥

देख ले अपनी आंखों से, ईश्वर ने क्या क्या बनाया।
फूल में महक बनाई, और धरती पर पौधा उगाया॥

जल दिया जीने के लिए, और अन्न धरती पर उगाया।
दांत दिये खाने के, और धरती पर, मुक्ति धाम बनाया॥

सुर दिया शब्दों का, और प्रेम बहाव बनाया।
शब्दों में आनन्द रस भरकर, मंत्र ईश्वर तक पहुंचाया॥

मंत्र के द्वारा धरती पर, मनुष्य नर, से नारायण बनाया।
महासागर से जल भरकर, धरती पर बरसाया॥

हे मानव तू फिर भी करे अहंकार, ना विश्व को बिगाड़।
तेरे ही कारण मनुष्य, दूसरे मनुष्य से करे दुर्व्यवहार॥

हे मानव ज्ञान समझ धुन अपने अन्दर देख, किसकी बज रही है।
हर क्षण तू स्वांस, अपने अन्दर सुन, धुन ईश्वर की बज रही है॥

खोल किवाड़ धर्म मय अपने, सत्य परख कर, ना आंसू बाह।
कठिन समय आने वाला है, युग का सत्य सुमिरण की लहर बाह॥

राही बना, इस काया की ऐसी, ना कोई दर्द का कांटा चुभ सके।
दर्द हरे समय से पहले, और युग सत्य में बदल सके॥

सोच विचार कर मैं (ईश्वर) तुम्हें समझा रहे है।
तेरा सब कुछ मुझे पता है, तुझे राह सत्य की बता रहे है॥

हे मानव तू सोच बना ऐसी, जैसे दरिया प्रवाह, बहे धरती पर।
देख नदियों का प्रवाह, धरती पर, शुद्ध निर्मल बहता धरती पर॥

अनंत समय से समझा रहा हूं, मानव कर, तू अपनी पहचान।
युग बीत गये है दर्द में तेरे, कर तू इस युग की पहचान॥

यह धरती, युग है भ्रमित मानव धुन्ध सोच में, डूब रहा है।
ना करता अपनी पहचान, मानव इच्छाओं, में डूब रहा है॥

शक्ति फल देने वाली, ना करता अर्जित, निर्माण असुरो का हो रहा है।
असुर बैठे है मानव काया के अन्दर, कालयुग भ्रमित हो रहा है॥

हर मानव देख रहा है, सुख का पिंजरा।
सुख भरा है मानव के अन्दर, वास पिंजरा॥

सुखों की सोच में, इच्छा घुमा रहा है, मानव हर क्षण।
पर नहीं सोचता कि, हर क्षण दर्द बढ़ रहा है टूट रहा हर क्षण॥

सोच तो मानव के अन्दर, स्वांस के साथ बहती है।
स्वांस ही, ईश्वर सत्य प्रवाह, बहाव अन्नत बहती है॥

सोच स्वांस में ही बैठी है, ईश्वर, अनंत समय से बह रही है।
इसी सोच में युग बदल जाते है, हर युग में मानव जाति, रो रही है॥

ऐसा क्यों है, हे मानव, क्यों तू सत्य सफर ईश्वर में, नहीं रहता।
क्यों रहता है हमेशा, दूर, ईश्वर से, तू ईश्वर में, घुल क्यों नहीं जाता॥

घुल जा ईश्वर में स्वास हर एक, ईश्वर में ले ले।
तेरे कट जायेगे, पाप कर्म पूर्व के भी, और वर्तमान की सुध भी ले ले॥

संस्कारयुक्त बन तेरी काया में, रमण करेगे परमात्मा।
सत्य कर सफर स्वांस तू, तेरी शुद्ध करेगे आत्मा॥

आत्मा में प्रवेश है परमात्मा, सुख प्रेम अपने अन्दर भर।
विश्व का बना सन्तुलन, धर्म की औषधि निर्भय भर॥

औषधि बनेगी तेरी सात्विक सोच, अवगुण तू निकाल दे।
सत्य रमण कर कर अपने अन्दर, आत्मा अपनी निखार दे॥

सुख भर कर जी तू, हिंसा जगत में ना कर।
तेरे कारण ही, निर्माण हुआ धरती का, मानव से दुर्व्यवहार न कर॥

आनन्द भर कर जी तू, है, दिव्य लोक का वासी।
ना मर बार बार धरती पर, तू हकदार है स्वर्ग का, वासी॥

तू तो आया है, सृष्टि बसाने, तू भूल ना कर।
भूला हुआ ज्ञान, याद करके, वर्तमान में आगे बढ़॥

प्रेम नगरी बना अपनी ग्रहस्थी को, आनन्द जीवन का उठा ले।
सब कुछ भरा है, तेरे अन्दर, ज्ञान की ज्योति जला ले॥

ना कर हिंसा युग में, प्रेम का सुर बजा ले।
प्रेम सागर बाह अपने अन्दर मात पिता का दर्जा सर्वोपरि सुझा ले।
सुमरण कर ईश्वर का, तू संत संगति सजा ले।
भूले हुए कर वे काम, तू अपने मन में, प्रेम शंख ज्योत जला ले॥

ना फैला कड़वाहट जगत में, तू अगली पीढ़ी सत्य सजा ले।
सत्य सजा ले अपने अन्दर, और पाप कर्म अपने जला ले।।

समय आ गया है, अब भूल अपनी, ज्ञान से सुधार ले।
प्रेम का सत्य सफर करें, मानव, मानव की, दूरी मन से हटाले।।

द्वेष भाव ना रख मन में अपने, प्रेम की डगर पर जीवन बहा ले।
ईश्वर में लगा मन, अपना, और संत संगति में मन लगा ले।।

मन लगाले संत संगति में, ब्रह्म सुर बिठाले।
ध्याले सुरमणी अपने अन्दर, सात्विक गुण बिठाले।।

अन्त करण कर चेतन्य अपना, निर्भीक होकर जीवन जी ले।
सत्य की मर्यादा रख अपने अन्दर, भौर किरण बिठा ले।

उदय कर अपना जीवन, सत्य धर्म अपना ले।
गुण धर्म चेतन्य, नीर हरी, मुख द्वारा बिठाले।।

अर्क चढ़ा अपने अन्दर, सुर ताल बिठाले।
भौर हुआ सूर्या उगे, तू त्रम स्वभाव बना ले।।

आस्था बना अपने अन्दर, प्रेम की छाव बना ले।
वक्त चल रहा है जैसा, वैसा ही भेष बना ले।।

भेष बना ले वैसा जैसा, चित्रकारी बनावे।
उसी भेष में कर रमण दुनिया में, प्रेम की राह दिखाले॥

मन्ध धूमिल पड़ा, धर्म दुनिया में, शक्ति अपनी बढ़ा ले।
गुणधारी बन तू मानव में, चेतन्य, द्वीप जला ले॥

सुखी भोग देख रहा है मानव, पर धर्म की पहचान नहीं।
नरक सत्य में बसा रहा है मानव, अन्दर की पहचान नहीं॥

नरक का द्वार खुला है, मनुष्य जा रहा है हर क्षण।
खुला है नरक दरवाजा, भोग रहा है हर क्षण॥

निर्माण कर रहा है मानव, अपनी सफलता के लिए।
अपने अपने आप में है, असफल मानव, धर्म सोच के लिए॥

भ्रमित् छेद बना है, मानव के अन्दर, वह कभी भरता नहीं।
जीने का सुर साज ढूंढ रहा है, मानव, पर शान्ति मिलती नहीं॥

जो कर्म करने के लिए आया है, मानव, उस पर पर्दा ढका हुआ।
जो नहीं करने आया मानव, उसका पर्दा खुला हुआ॥

अपने स्वार्थ में डूब रहा है मानव, अपने पराये की पहचान नहीं।
सदैव रहता है स्वार्थ के अन्दर, सुख शान्ति की पहचान नहीं॥

उम्र कट रही है अज्ञान में, बचा हुआ कुछ नहीं।
जो बचा था गवा दिया बुराई में, लिखा हुआ कुछ नहीं॥

खाली पड़ा हुआ है स्वर्ग आसान, कोई मानव मुक्त नहीं।
जब धरती पर सत्य धर्म नहीं, तो कहीं प्रकाश नहीं॥

दिव्य ज्योति धर्म की, धरती के ऊपर ही जलती है।
जब दिव्य ज्योति मानव के अन्दर जलती है, दिव्य लोक में दिखती है॥

मानव को बनाया है इसी कारण, कि पृथ्वी पर दिव्य ज्योति जले।
सत्य लोक का ना हो आसन खाली, और विश्व में, नई धर्म ज्योति जले॥

यह है धर्म ज्योत, मानव के अन्दर, ईश्वर साक्षात्कार।
निणर्य हो जाता है, पृथ्वी लोक पर ही, जायेगा मानव ब्रह्मद्वार॥

जब धरती पर ज्योत, मानव के अन्दर जलेगी, सत्य लोक में होगा प्रकाश।
तभी मानव मुक्त हो सकेगा, धरती से पहुंचे ब्रह्म लोक प्रकाश॥

ऐसा मानव बनना होगा, हर एक जगत वासियों को।
जो भी नर नारी आये हैं दुनिया में, मुक्त एक दिन होना होगा सभी को॥

राह बनी हुई है स्वर्ग लोक की, वहां दिव्य गुणधारी जाते हैं।
मुक्त होते है पृथ्वी लोक से, वहां पुरुस्कृत धारी जाते है॥

आज राह पड़ी है खाली, कोई भी दिव्य पुरस्कृत नहीं रहा।
मनुष्य इस युग का मर कर रास्ता जानता, शमशान तक रहा॥

भ्रमित जगत सोच रहा है, बस इतना कि, मृत्यु सत्य प्रमाण है।
पर वह यह नहीं जानता, मृत्यु शरीर, सत्य प्रमाण पंच ढाल है॥

इसी ढाल शरीर, में यह बीज छिपा है, जिसे मनुष्य भूल रहा है।
उसी बीज में छिपा हुआ है मानव, मुक्ति राज, मानव अनभिज्ञ रहा है॥

उसी बीज में से निकलता ईश्वर, और सत्य धर्म बाण।
उसी सत्य धर्म बाण में से निकले, सत्य लोक पुराण॥

सत्य लोक पुराण में से निकले, युग पुरुष पुराण।
युग पुरुष पुराण में से निकले, आदि देव पुराण॥

आदि देव पुराण में से निकली, सृष्टि रचना पुराण।
भेद छिपा है मानव के ही अन्दर, मानव भी है आदि पुराण॥

पुराणों में से निकली धर्म रचना, सृष्टि रचना आदि देव महान।
देव महान निकले, और सृष्टि पर करे, रचना वाहन॥

सृष्टि रचना खिलौना है, खेलने का, ईश्वर का यह है फूल।
आदि ब्रह्मंण्ड छिपे है इसमें, और पृथ्वी पर धर्म है मूल॥

पृथ्वी पर धर्म है मूल, ईश्वर का सत्य भेद बतावे।
निर्मित करे औषधियां, प्रकृति अपना भेष बतावे॥

धर्म रचना करावे ईश्वर, सृष्टि मानव बहता जावे।
हर मानव जीवे धर्ममय, और ईश्वर को ध्यावे॥

विधाओं का मानव के अन्दर प्रेम भाव करावे।
अनंत कोटी ब्रह्मा की, कला सम्पूर्ण बतावे॥

गुण धार बहे जगत में, और मानव के अन्दर पिरौवे।
स्वभाविक ही मानव में धर्म, पनपे और गुण रहस्य भी बतावे॥

संस्कार मानव के अन्दर, पनपे, यह ईश्वर धर्म बतावे।
गुण-दोष भी परख करे, मानव, यह बही भी बनावे॥

मानव के अन्दर ही, सब कुछ भरा पड़ा, यह ईश्वर बतावे।
मानव के अन्दर वेद छिपे है, ईश्वर अपना दृश्य दिखावे॥

मानव को सब कुछ दिया है, (ईश्वर) यह सत्य सार बतावे।
धर्ममय मानव चले जीवन में, तो सम्पूर्ण ज्ञान सामने आये॥

सम्पूर्ण धर्म मानव के अन्दर है पिरोया, और ईश्वर का धाम बतावे।
मानव काया के अन्दर करे वास, ईश्वर, मानव से ही वेद बचवावे॥

मानव से ही वेदों की करे गठना, और मानव को ही सुनावे।
मानव ही दूसरे मानव को, ज्ञान बतावे, और ईश्वर भेद बतावे।।

मानव से ही वेदों की करे गठना, और मानव को ही सुनवावे।
मानव ही दूसरे मानव को ज्ञान बतावे, और ईश्वर भेद बतावे।।

एक ज्ञानी, मानव काया के अन्दर छिपा, राज बतावे।
अज्ञानी ज्ञानी की बात सुनकर, मुख से ठिडावे।।

अज्ञानी कहे, ज्ञानी को सुन, ज्ञानी, तू तो दुनिया को बहकावे।
कहां छिपा है ईश्वर, झूठ है, सब यह, तू अफवा फैलावे।।

ज्ञानी कहे अज्ञानी को, तू कर अपनी पहचान, हे पशु नादान।
तू तो धरती का एक ज़र्रा भी नहीं, और ईश्वर का है कण कण में दान।।

तू तो मर रहा है बोझ अहंकार से अपने से बड़ा नहीं दिखे कोई।
नरक में पड़ा भोग रहा है तू, फिर भी अहंकार के कारण करे झूठी बड़ाई।।

ना समझ, नादान है तू, जो आंखों से देख रहा है, वह सब है ईश्वर की पहचान।
देख सामने तेरे सृष्टि है, कितनी सुन्दर, तब भी ना करे बखान।।

सब कुछ इन आंखों से, तुझे दिख रहा है, पर तुझे अहंकार हो रहा है।
अहंकार के कारण, ना बने तू छोटा, अपने अन्दर ही झूठ पका रहा है॥

तुझे जो दिख रही है, सृष्टि, इसकी भी बड़ाई ना गावे।
ना गावे ईश्वर नाम तू, ना गुणी की समझाई बतावे॥

सृष्टि तो बनाई, ईश्वर ने सुन्दर पर टूट जाती है।
नहीं रहती अमर, यह धरती भी रूठ जाती है॥

अधर्मी के कारण, धरती भी अपना, रास्ता बदल लेती है।
अधर्मी बार-बार लेता है, जन्म, तीनों लोकों में, शक्ल बदल जाती है॥

अधर्म है मानव के अन्दर, मानव, मन धुरी में पनपता है।
उसकी तोल है ईश्वर के पास, सत्य भी मानव के अन्दर झलकता है॥

अज्ञानी कहे कैसे दिखेगा धर्म, अधर्म पनपता है, कहां पर।
और धरती पर घटता है कैसे, और मानव के अन्दर उपजता है कहां पर॥

मानव के अन्दर है ईश्वर वास, ज्ञान के चक्षु खोल।
माया मोह में फंसा है मानव, शब्द सुन्दर प्रेम से बोल॥

प्रेम बोल सुन्दर शब्द, शब्दों से ही रामायण गीता लिखी है।
शब्दों में ही वेद आये धरती पर, और कुरान, बाईबल लिखी है॥

शब्द ही से काया का होता है बोध, शब्द से ही मां कहा जाता है।
शब्द ही से चले सृष्टि, और काया के अन्दर, शब्द विधाता है॥

गर्भ से ले मानव जन्म, ईश्वर दुध का स्त्रोत, मां के अन्दर बनता है।
नारी से ही नर जन्मता, और नर-नारी को, शब्द मां कहता है॥

नर-नारी से ही लेता है जन्म, और नारी को, शब्दों से प्रताड़ित करवाता है।
नर-नारी को अधर्मी समझे वस्तु, और अशब्दों से बुलाता है॥

प्रश्न : यह युग धारण करती है धरती, प्रेम सागर बहने के लिए।
पर क्यों नहीं संसार प्रेम करता, आपस में जीने के लिए॥

उत्तर : युग जब होता है भ्रमित, प्रेम स्वयं स्वार्थी बन जाता है।
प्रेम सिर्फ शब्द सुनने का रहता है, और मानव भक्षी बन जाता है॥

प्रश्न : क्यों नहीं किसी से, निर्भय सात्विक निस्वार्थ, प्रेम नहीं करता।
ऐसा क्यों है युग भ्रमित, मात-पिता, भाई, बहन, पत्नी से भी लड़ता है॥
उत्तर : यह समय है, युग का बदलने का, मानव अन्दर से बदल रहा है।
गुण दोष की नहीं परख दुनिया में, धर्म को नोच रहा है॥

प्रश्न : कब तक चलेगा यह सम्राज्य, हिंसा कठिनाईयों का।
मानव भाग रहा है अपनी ईच्छा धुरी में, पापी परछाईयों का॥

उत्तर : यह सम्राज्य टूट जायेगा एक दिन, मानव अपने अन्दर सुलग रहा है।
अहंकार मान-सम्मान की आंधी चल रही है, मानव अन्दर से हिल रहा है॥

प्रश्न : मानव क्यों नहीं देखता सामने अपने, फूल किसके बल से खिल रहे हैं।
खिला रहा है कौन सी है, हवा धूप, वह उसे कौन पहुंचा रहा है॥

उत्तर : वह है ईश्वर एक छत्र, पूर्ण धरती पर कण-कण में बह रहा है।
क्षण भर भी मानव सोचे ज्ञान, तो पता चले, कि फूल ईश्वर खिला रहा है॥

प्रश्न : मानव एक क्षण भी नहीं रुकता, मन भाग रहा है।
क्यों हर वक्त, मन चाहत में चलाता, और फिर हंस रहा है॥

उत्तर : इस युग का कर्म ही है ऐसा, मानव, सत्य पर हंस रहा है।
खेल रहा है वेद गुणों से, और धन कमा रहा है॥

प्रश्न : कौन कहेगा यह ज्ञान उस मानव को वह धर्म उल्टा बहा रहा है।
कौन रोकेगा, इस दरिया झूठ फरेब को, मानव सुर अहंकार में गा रहा है॥

उत्तर : जो मनवाने वाला है, संसार, उसी का लगाया पौधा।
सींचता भी वहीं है, बढ़ाता भी वहीं है, और काटता भी विधाता॥

प्रश्न : अधर्म की बढ़ रही है बेल, लम्बी, पीछे हटने को तैयार नहीं।
सारा झगड़ा है, धन का दुनिया में, कोई ईश्वर पाने को तैयार नहीं॥

उत्तर : इस दुनिया में बचेगा वही मानव. जो ईश्वर प्रेम करेगा।
टूटने वाली है अहंकारियों की शृंखला, अपना कर्म पाप खुद भरेगा॥

प्रश्न : ऐसा क्या घटना घटेगी दुनिया में, धर्म दूषित क्यों हो रहा है।
ऐसा युग क्यों आया है धरती पर, जो धर्म धूमिल हो रहा है॥

उत्तर : घटनायें घटेगी कर्मों के आधार पर, सन्त रो रहा है।
उत्पति बीज बो रहे, अधर्म का, मानव धर्ममय सो रहा है॥

प्रश्न- ऐसा क्यों होता है, जब मानव अपनी, मनमानी करता है।
अपनी जगह बनाने में मानव अतुल्य, हिंसा करता है॥

उत्तर- जब मानव भूल जाता है, सत्य ईश्वर का नाम भी ना लेता है।
रहता है हर वक्त, अपने ही अहंकार में, पर सब कुछ खोता जाता है॥

प्रश्न : हिंसा भी बढ़ रही है दुनिया में, सब्र मानव को होता नहीं।

उपचार भी अपना, खुदी से करना चाहता है, सत्य विचार नहीं।।

उत्तर : समय करवट ले रहा है, युग का, आधीन है दुनिया आसुरों के।

पनप रहा है मानव के अन्दर, असुरी शक्ति विचारों से।।

प्रश्न-कैसे कटेगा यह भंवर कांटों का, मानव सभ्य कैसे जी पायेगा।

समय बीत रहा है दुनिया का, मानव खेल-खेल रहा है, पर जहर पियेगा।।

उत्तर - कट जायेगा समय यह भी, पर विश्व घबरायेगा।

होनी होने को बनी है, पर सन्त विश्व को चेतन्य बनायेगा।।

उत्तर -क्या ईश्वर को पता है, कि मानव धर्म से हट रहा है।

ईश्वर है मानव के अन्दर, खुद ईश्वर बता रहा है।।

उत्तर- ईश्वर को खबर है पल-पल की, दुनिया उसी से निकलती है।

उसी से लेती है जन्म, और मृत्यु के बाद भी, उसी मे मिल जाती है।।

प्रश्न : जब उसी ईश्वर की सन्तान है सब, तो क्यों पाप बढ़ता है।

क्यों मानव उसी के आधार पर, अपना कर्म नहीं करता है।।

उत्तर-क्योंकि मानव स्वभाविक ही, उसे जब सब कुछ नहीं मिलता।

और जब उसे जीने के लिए, ज्यादा मिलता, तभी मानव दूसरे से जलता॥

प्रश्न -ऐसी कौन सी चेतन्य अवस्था है काया में जिससे मानव सुधरता है।

उस काया का ज्ञान बताओ, वह सात्विक ज्ञान, कहां से उभरता है॥

उत्तर- मानव के अन्दर है, ऐसी गुत्थी, जिसमें अमर रस टपकता है।

पर नहीं मानव समझता, उस गुत्थी को, उसी कारण भटकता है॥

प्रश्न - कहां से आरंभ करे, मानव, उस ग्रन्थी में जाना।

जन्म पर जन्म ना ले मानव, और फिर धरती पर आना॥

उत्तर-ऐसी ग्रन्थी है मानव सोच, जो सरसर बह रही है।

उसी सोच को, मोड़ना होगा सात्विक, जो विमुख हो रही है॥

प्रश्न- बताओ ज्ञान यह खोलकर, मानव कहां से चलना सीखे।

ज्ञान कैसे आये मानव को, और ईश्वर प्रेरणा कैसे सीखे॥

उत्तर- मानव को कुछ भी पता नहीं, ज्ञान कहां से आता है।

ज्ञान से दुख कटता है दुनिया में, और ईश्वर मिल जाता है॥

उत्तर-ज्ञान भी उसी काया में है, और अज्ञान भी भरा पड़ा है।
उम्र चाहे कितनी भी हो मानव की, ज्ञान मानव में सोया पड़ा है॥

जिस समय ज्ञान का अकुंर, अमल, बुद्धि में लेकर फूटे।
उसी समय समझो, उस मानव का जन्म-मरण छूटे॥

उसी क्षण मानव लेता है, धरती पर जन्म, जब ज्ञान अकुंर फूटे।
उससे पहले की उम्र बीती हुई, सब व्यर्थ में समझो छूटे॥

बार-बार मानव जन्म लेता है, धरती पर करता वहीं, जो आज है करता।
उसी भवंर में, घूमता रहता है, जन्म, माया का मुंह खुलता उलटा॥

भवंर जाल है अज्ञान में मानव, जीवन उल्टा लटक रहा है।
मुख है अज्ञान का नीचे की तरफ, भरता नहीं कभी, भटक रहा है।

प्रश्न-मानव भंवर कुएं से कैसे निकलेगा, मानव प्रीत बताओ।
कैसे भरेगा उसके अन्दर ज्ञान, वह अमली ज्ञान बताओ॥

उत्तर- मानव भंवर कुएं से चाहे निकलना, तो भय उसके सामने खड़ा हैं।
भय के कारण हो प्रीत दुनिया में, मानव से मानव की और ईश्वर भी सामने खड़ा है॥

ईश्वर कहते हैं मानव, तू बदल अपना अन्दर का बाणा मैं बैठूंगा।
बना काया, और सोच का मंदिर, में उसमें बैठूंगा॥

यह काया मैंने इसी कारण, घड़कर, पृथ्वी पर बसाई है।
इस काया में मैं करूं सवारी, और पांच तत्वों से बनाई है॥

पर तू हे मानव, ना जाने अपनी पहचान, कि तू मेरा प्रिय है।
तू तो जी रहा है, अपनी ही सोच में, तू, तो जगत में निर्भय है॥

तेरा सहारा मैं हूं, और कोई सहारा नहीं दुनिया में।
दुनिया भी मैंने बसाई, और शक्ति बीज भी, मेरा दुनिया में॥

पर तू, मेरा मेरा तेरा तेरा करना छोड़ दे, मेरा कर तू यकीन में मै ही तेरा पिता हूं, ज्ञान कर अमल कर, मैं संभालूंगा तुझे, तू कर यकीन॥

भावर्थ- हे मनुष्य विश्वास कर ईश्वर पर और धर्ममय अपना भाव रखकर। जीवन व्यतीत कर। अपने अन्दर सन्त सुन्दर भाव वाला मनुष्य बन इससे तुझे ईश्वर की शक्ति प्रदान होगी।

भावार्थ- हे मनुष्य धरती पर तू पुण्य करने के लिए आया है। धर्मय खुद को ढालने और दूसरों का पुण्य भाव जाग्रत जगाने आया है। अपने अन्दर उस सांसारिक वस्तु की चाहत मत कर जो

वस्तु मिलने में तुझे हानि हो, सहज ही संसारिक वस्तु तुझे प्राप्त हों उसके ग्रहण कर।

भावार्थ- शिष्य कहता है गुरू से, ऐसा क्या कारण है मेरे गुरू देव कि ईश्वर को यह संसार बसाना पड़ा और कीट पंतगे, भी मनुष्यों के साथ पृथ्वी पर उतारे यह बताओ।

गुरू भावार्थ-गुरू जी शिष्य को समझाते हैं, कि सुन मेरे प्रिय शिष्य जिस ईश्वर ने इस संसार की स्थापना कि है उसका पार कोई नहीं पा सकता। उसकी खोज तो वह ज्ञानी ही कर सकता है जो ईश्वर भक्ति में निपुण हो। इसी लिए मनुष्य जात को गुण ज्ञान समझने की शक्ति दी है। दूसरे जीवों को यह ज्ञान नहीं दिया सोचने समझने की शक्ति नहीं दी।

भावार्थ- जितना भी जीव धरती पर है चाहे वह पशु हो पक्षी हो धरती पर रेंगने वाले कीड़े, मकोड़े हो सभी अपने पूर्व कर्मों का कर्मफल काट रहे है बार-बार जन्म लेकर नई अवस्था नई योनी भोग रहे है।

दोहा- तू कर यकीन धर्म पर डट जा, सुर नारायण पर धर ले।
सन्त बन अपने अन्दर, शक्ति ईश्वर की कर ले।

श्लोक-पुण्य करले धरती पर तू, धर्म जाग्रत कर ले।
मन में ना रख चाहत भोग की, सन्त अपने अन्दर बन ले।।

प्रश्न-ऐसा कोन-सा कारण है कि, सृष्टि बसानी पड़ी।
ईश्वर ने मनुष्यों की सृष्टि बनाई, और जीवों की उत्पति करनी पड़ी।।

उत्तर-यह भेद छिपा है सृष्टि में, ईश्वर का पार नहीं।
गुण दिया है मनुष्य जात को, दूसरे जीवों का, शब्द सार नहीं।।

हर जीव है धरती पर अपना, पूर्ण कर्म काट रहे हैं।
अपनी योनी भोग कर, नई योनी काट रहे हैं॥

काट रहा है धरती पर हर जीव, चक्कर अपने प्रारब्ध का।
भुगता रहा है पिछला कर्म, पाप कर्म योनियों का॥

हर जीव का समय है निर्धारित, वह धरती पर, कब तक रेंगेगा।
कब उसे मिलेगी योनी दूसरी, और कब तक मृत्यु चक्कर में घूमेगा॥

घूमेगा जब तक वह, जब तक, समय ईश्वर के द्वारा मिला है।
रेंगने वाले जीव भी है, और चार पैरों पर चलने वाले भी है
और उड़ने वालों को भी भोग मिला है॥

कुछ जीव ऐसे भी है होते, जो धरती में अन्दर रहते।
इन जीवों की उत्पत्ति में (काया) शरीर भी है होते॥

इन्हीं योनियों में घूमकर, मनुष्य जीवन मिलता है।
और कर्मों के अनुसार मनुष्य, इन्हीं जीवों में भटकता है॥

यह रहस्य है सृष्टि का, हर जीव ईश्वर के बिना तरस्ता है।
हर जीव में है ईश्वर वास, कर्मों के कारण जीव बनता है॥

असंख्य योनी में घूमें जीव, कभी धरती में रेंगता है।
और कभी उड़ता पक्षी बनकर, और कभी चारों पैर से भागता है॥

यह सब कर्मों का खेल है सृष्टि का, इसी तरह जीव उत्पीड़न झेलता है।
इन्हीं पीड़ाओं में से गुजर कर, मनुष्य जीवन मिलता है।

बहुत समय तक जीव घूमता है, धरती में कीट पतंग बनकर।
जीव में भेद छिपा है, जाति का, पर स्वास चलता है ईश्वर बनकर॥

सब कुछ लिखा हुआ है, ईश्वर ग्रन्थों में, सत्य सुमिरण कर।
हे मानव तुझे खोलकर बता दें, अगर तो, रोवे, पिछला जन्म सुनकर॥

हे मानव तेरा जन्म बड़े, तेरे कर्मों की पुण्य बेल से हुआ।
ना खो, इस बेल पुण्य की डगर पर, चल, तेरा जन्म, अमर बेल के लिए हुआ॥

पशु-पक्षी, कीट, पतंगों, में भी जीवन है, स्वांस वे भी लेते हैं।
जैसा जीवन मरण तेरा है, वैसा उनका भी होता है, वे भी जन्म लेते हैं॥

बस फर्क इतना है ज्यादा, कि तुझे चेतन्य संस्करण से बनाया।
बुद्धि दी तुझे सोचने समझने की, और पुंण्य धर्म में ढालकर बनाया॥

जीवन तो धरती पर, चलने रेगने उड़ने वाले भी, जीव जीते हैं।
और जन्म भी लेते हैं, और मृत्यु सार, सत्य से रहते हैं॥

गुण-दोष की परख नहीं, उन जीवों में, पर भोग वे भी करते हैं।
जन्म मृत्यु उनके भी अन्दर है, और मोह भी वह करते हैं॥

उन्हें नहीं है, ज्ञान जगत का, और अन्दर भी, वे भी, ईश्वर गुणगान करते हैं।
आवाज दी है जीवों को भी, प्रातः काल ईश्वर नाम जपते हैं॥

उन्हें भी पता है, कि हमारा परमपिता परमेश्वर है।
उसी की सन्तान है हम, और इस धरती पर परमेश्वर है॥

जीवों की भी रक्षा, करते हैं (ईश्वर) समय से पहले मर नहीं सकते है।
जीते है ईश्वर स्वांस लेकर, और उत्पत्ति भी करते है॥

चींटी से हाथी तक जीव, उत्पत्ति कारक निर्माणी है।
उनको भी बनाया है ईश्वर ने, यह ही तो, प्रकृति कल्याणी है॥

नियम सारिणी है उनकी भी, जनम विधि समयानुसार पाते हैं।
आयु का लेखा जोखा भी है उनका, समयनुसार मरते है॥

हर जीव का है आवागमन धरती पर, स्नेह ईश्वर से करते है।
पर मानव सब कुछ जानकर भी, धर्म में जीने से कतराते हैं॥

कितना प्रेम किया मानव से ईश्वर ने, मानव को अपने जैसा बनाते समय।
कितनी योनि भोगी मनुष्य ने, तभी मनुष्य जन्म पाते है॥

धरती का भार भी छोड़ा है, मानव जात पर, भरोसा दिलाते हैं।
धर्म की ज्योति भी जलाकर दी, मानव जात को, और उन्हीं से जलवाते हैं।।

मानव जात को गुण देते हैं, सत्व गुण, और धर्म की ज्योति जलवाते है।
धरती पर सदैव रहे अमर धर्म ज्योति, सत्य का दीपक जलवाते हैं।।

गुण धार पुष्प अमर बाणा, शक्ति बीज सृष्टि मूल।
सैहस्त्रों धारा बहती है, गुणी मानव में, मानव है ईश्वर मूल।।

अति हृदय से प्रसन्न होता है मानव, गुण पाकर दुनिया में।
ज्ञान अमल होता है, जब आनन्द पाता है, मानव दुनिया में।।

सन्त भेद बतावे ईश्वर का, और मानव को समझावे।
घृणा ना कर किसी से, मेरे प्रिय, मानव को बतावे।।

गुण धार पिरोवे सन्त मणी, बनकर मानव के अन्दर।
अवगुणों को करे अवरुद्ध, और अमर ज्योत जलावे अन्दर।।

जीवन की राही पड़ी, भय के कारण, खाली-खाली।
निर्भय नहीं रहता मानव, विश्व की धरती पड़ी है, खाली-खाली।।

उत्पन्न हो रहा है, रोज मानव पर, विद्यावान नहीं।
जन्म देने वाला मानव भी, शुद्ध संस्कारी नहीं।।

उत्पन्न होना मानव का, धर्म प्रवाह विद्यवान नहीं।
धर्म के मानव, निर्भय नहीं है, वर्तमान युग में, संस्कार नहीं।।

भार बढ़ रहा है धरती पर, मानव दोषी बन रहा है।
सोचता है हर वक्त निर्भिक रहता, पर भय से व्याकुल हो रहा है।।

कौन करेगा सहायता मानव की, ईश्वर रूठ रहा है।
खुदी करेगा मानव सहायता अपनी, युग बदल रहा है।।

अपने आपको बदलो, नर से नारायण कैसे है बनते।
सन्तों की वाणी सुनो, और सुनो मानव चेतन कैसे बनते।।

धारणा अवगत हो रही है युग में 'धर्म में जाने की।
टूट रही है सीमा अधर्म की, मानव के दर्द में जाने की।।

वसुन्धरा पर राज हो रहा है, असुरों का, मानव के अन्दर।
देव पड़ रहे हैं धूमिल, धर्म लोप हो रहा है, मानव के अन्दर।।

दुख दर्द से निकलो, समझो अपने आपको।
मानव के अन्दर क्या छिपा है, समझो इस सत्य को।।

मानव बन रहा है भक्षी, मानव ना करता जीव रक्षा।
मानव नहीं करेगा, जीवो की रक्षा, मानव तो बदले में मांगे भिक्षा।।

मानव को नहीं अपनी पहचान, मानव है अनजान।
मानव में ना रहा दया भाव, वह न करता यह ज्ञान।।

ज्ञान हो अगर मानव को, प्रेम का सागर बहे दुनिया में।
समझ सत्य पर आवे मानव को, दुधारू संस्कृति बढ़े दुनिया में॥

कहां जा रहा है मानव, अपना ही स्वार्थ देख रहा है।
पिछली पीढ़ी को भी नहीं देखता, अगली पीढ़ी को भी खो रहा है॥

हे मानव, कैसे होगा निर्माण, विश्व का, धर्म के अनुसार।
तू कैसे करेगा उन्नत्ति धर्ममय, पिछली पीढ़ियों के अनुसार॥

हे मानव शुद्धी अपनी कर धर्ममय, गुण दोष की कर परख।
निर्भय से जीने दे दूसरों को भी, और धर्म की कर परख।

ध्यान अपना लगा ले ईश्वर में, दुनिया बसी रह जायेगी।
ना टूट पायेगी वह ज्योति धर्म की, और दुनिया बच जायेगी॥

समय है, अभी भी, पुण्य धरती पर, मानव ला सकता है।
बचा सकता है दुनिया को, प्रेम की नदियां बहा सकता है॥

धर्म की धुरी में मानव खुद, अपने आपको पहले डाले।
फिर दूसरे मानव को करें प्रेम, और ईश्वर विश्वास में डाले॥

हे पुण्य धरती के वासी मानव, तेरा चित्त कहां खो गया है।
तू क्यों फिर भटकता, तेरा वजूद धरती पर सो रहा है॥

जाग उठ हे मानव, तेरा समय उठने का, प्रभात हो गया है।
ईश्वर का बनाया, सूर्य निकल रहा है, और पैगाम सत्य दे रहा है॥

और रोज निकल रहा है, सत्य सफर में मानव को जीवन देता है।
और सत्य बताकर रोजमर्रा, मानव को ईश्वर राज बताता है।।

कहता है कि हे मानव, अगर दुनिया में, मैं भी नहीं निकलता।
तो तू क्या करता, इस पुण्य धरती पर तू अंधेरे में ही रमता।।

मैं भी तो तेरे लिए निकलता हूं, नियम सार, सत्य सारिणी से।
करता हूं जगत का जीवन-पालन और ईश्वर सत्य नमन से।।

मैं भी, ईश्वर की प्रमाण, एक मूल सत्य सार में, हिस्सा हूं।
और तू समझ अपनी महत्वपूर्णता, हे मानव, मैं तेरे लिए निकलता हूं।।

दिन मेरे द्वारा ही निकलता है, यह दुनिया में सत्य प्रमाण।
मैं भी आदेश से होता हूं प्रगट, ईश्वर है कितने महान।।

मैं भी तो जगत के लिए तपता हूं, युगों से चल रहा है, मेरा वाहन।
तू सोच हे मानव, तू भी इस धरती पर, कर्म करने आया महान।।

हे मानव, तुझे ज्ञान देने के लिए, मैंने धरती पर सब कुछ दिया।
पर तू स्वार्थ अपने अहंकार के कारण, सदैव धरती पर जिया।।

तूने ना कभी देखा, मूल्य अनमोल, अपनी ना ईश्वर की, प्रकृति देखी।
तू तो रहा सदैव अहंकार के भंवर में, तूने नाप कभी ईश्वर की ना देखी।

तू तो बह रहा है सरासर तूफानों में, तूने ईश्वर की कृपा से तूफानों से नाव ना निकलती देखी।

क्योंकि तूने तो बस, अपना भाव अहंकार में, भरकर जीवन बिताया, ईश्वर प्रेम से भंवर में, फंसी नाव, ना अमर होती देखी॥

प्रेम कर हे, धरती वासी, सतुगरू ईश्वर में रम जा।

बुराई छोड़ अपनी, ज्ञान-जान अमल कर, गहराई चेतना में बस जा॥

बस जा तू ईश्वर में प्रेम में, ना व्यर्थ समय गवां।
धरती पर धर्म बढ़ेगे, तेरे द्वारा यह है अमर दवा॥

सुपुर्द कर दें तू जीवन अपना, मनुष्यता का फर्ज निभा।

तेरे से ही बदलेगा जीवन, अपनो का भी, ओर दूसरों का भी फर्ज निभा॥

विश्व क्या चाहता है, वह सत्य, तुम्हारे सामने खड़ा है।
मांग रहा है, हर मानव जवाब, झूठ से हर मानव बड़ा है॥

झूठा फरेबी मानव बड़ा है, आज सत्य को दबा रहा है।
सत्य, दुखी मानव है, मनुष्य में, और ईर्ष्या फैला रहा है॥

ना दोष दो दूसरों को, अपनी गलती करो स्वीकार।

नियत रखो साफ सथुरी, दूसरे के धन पर, ना जमाओ अधिकार॥

ना देखों दूसरों को, कि वह धनवान क्यों बना।
वह पूर्व के कर्मों के कारण, ऐसे ही घर में जना।।

ना करो ईर्ष्या द्वेष किसी पर, तुम्हारा भाग्य, तुम्हारें साथ जुड़ा है।
देने वाले ने, तुम्हें तुम्हारे कर्मों का दिया, ओर दूसरे को भी, कर्मों का मिला है।।

ना करो नफरत किसी से, सभी मानव, प्रेम से जीना चाहते है।
प्रेम वह सागर है दुनिया में, सब नम्र, भाव से जीना चाहते है।

ज्ञान का खोला दरवाजा, अपने अन्दर, दिव्य ज्योत जलाओ।
प्रेम करो ईश्वर से, और मानव को गले लगाओ।।

समय बदलो कठिनाइयों का, युग बदल रहा है।
मानव अगर चाहे बदलना, इस प्रेम में, यह ज्ञानी समझ रहा है।।

करो सोच अपनी अच्छी, घृणा करना छोड़ दो।
प्रार्थना करो हर वक्त ईश्वर से, मानव मानव का प्रेम जोड़ दो।

इस सात्विक सोच से, हे मानव, तुम्हें ईश्वर उर्जा मिलेगी।
उसी उर्जा से बदलेगा माहौल, दुनिया में सभी को शांति मिलेगी।।

कभी कभी ऐसा भी होता है, कि सूखा पड़े गांव-गांव।
गांव गांव दुखी हो सूखे से, गुहार लगावे हरीद्वार।।

हर मानव गांव का दुखी हो, सूखे से, और ईश्वर की गुहार लगावे।
और करे पुण्य दान, और अपना भाव, ईश्वर तक पहुंचावे॥

इसी प्रकार ईश्वर की शक्ति होती है, गठित जीवन प्रेम सागर, बहाने के लिए।
जब मानव इसी प्रकार बदले, ईश्वर प्रसन्न होते हैं, बरसात पहुंचाने के लिए॥

इसी प्रकार हर मानव अपने विचारों को, सुन्दर चेतना में ढाले।
हर मानव पर पड़े असर, ईश्वर में जाने का अवसर पाने॥

जब सम्पूर्ण गांव वासियों ने, बदले विचार, पुण्य में हरी के लिए।
तभी तो हुई बरसात गांव गांव में, पुष्य के कारण, जीने के लिए॥

जिस प्रकार से, सात्विक मनुष्य अपना भाव, ईश्वर में लगावे।
उसी प्रकार अज्ञानी भी, बरसात ना होती, जब, गांव में पुण्य में भाव लगावे॥

उसी प्रकार यह जगत, ईश्वर में ध्यान लगावे।
करे प्रार्थना ईश्वर से, कि हे ईश्वर, जगत को खुश्हाल बनावे॥

ईश्वर ने बताया है, सन्त के द्वारा खोल कर आधार।
इसमें गुणी अवगुणी भी बदले भाव, तभी जगत बने सुखी आधार॥

हर मानव को पता है, कि जगत कहां जा रहा है।
भटक रहा है, हर मानव, और अपना दर्द, छिपा रहा है॥

ऐसा क्यों हो रहा है दुनिया में, सोच कर देख हे इंसान।
क्यों खोया हुआ है, उस दर्द में, जो नहीं तेरा है, हे इंसान॥

जो कुछ भी दुनिया में है, वह सब कुछ ईश्वर का है।
उसी ने इस पृथ्वी को बनाया, इसी पर तुम्हें बसाया, सब कुछ ईश्वर का है॥

फिर क्यों मानव फिरे भटकता, भ्रम जाल में फंसा रहे।
नाम से तो, तेरे है साथी सभी, पर अन्दर से तू थका रहे॥

थक गया है, मानव अपने अन्दर से, दुख ढो रहा है।
ज्ञान नहीं है मानव को, मेरा तेरा करके सब कुछ खो रहा है।

अपने अन्दर सोचो ऐसी सोच, जिससे दुनिया बसी रहे।
हर मानव की अच्छी सोच से, बढ़े धर्म, और दुनिया बसी रहे॥

करो प्रयत्न, मानव बदलो भेष, अपने अन्दर का देखो रूप।
कैसा है आज रूप अन्दर, मानव का, कैसे बदलेगा यह स्वरूप॥

चेतन्य करो राह अपनी सत्य पथ पर सफर करो।
मन इच्छा, अच्छी करो धारण, नम्र स्वभाव अकिंत करो।

बदलो अपनी पीढ़ी, पहले, आने वाली पीढ़ी में, संस्करण भरो।
आज भी आयेगा, तुम्हारे काम, आने वाली पीढी का, भण्डार करो॥

आज भी है तुम्हारा, हे मानव, कल तुम्हारी पीढ़ी आयेगी।
जिधर देखो, मानव का ही है जगत, तभी तो सत्युगी पीढ़ी, आयेगी॥

जितना मानव ध्यान लगावे, धन कमाने में, इतना ईश्वर में लगावे।
तभी परितर्वन हो सकेगा, दुनिया का, और मानव प्रेम में बहावे॥

तुम खुद सोचो हे मानव, क्या जगत इसी तरह से होता है।
कहीं पर मार रहा है मानव, दूसरे मानव को, और हिंसा कर रहा है॥

क्या ऐसी दशा में, मानव सुखी शांत रह सकेगा।
जब टूटेगी मानव कर्मों की छड़ी, मानव ना बच सकेगा॥

किसी को मौत मिलेगी, और किसी को, धरती पर भुगताना पड़ेगा।
कोई जायेगा नरक भवंर में, कोई कष्ट, धरती पर व्यर्थ लड़ेगा॥

यह तूफान तो आयेगा जरूर, पर आने से पहले, क्या मानव समझ पायेगा।
कष्ट आने से पहले, अगर मानव समझे ज्ञान, तो ऐसा समय रूक जायेगा॥

नहीं तो काटने होते कर्मों के दुख, मानव पीछे सोच पछतायेगा।
कहेगा पुकार कर प्रभु को वहीं बात जो गर्भ में बतायेगा॥

हर मानव आता है धरती पर, माता के गर्भ में, करता है ईश्वर से बात।
कहता है कि हे प्रभु, मुझे अच्छा बनने का, एक मौक दो तात॥

फिर प्रभु देते हैं, मानव को, धरती पर जाने का अवसर।
पर फिर मनुष्य माया मोह में, हो जाता है, लिप्त अवसर॥

इसी तरह से आज अवसर है, मानव के पास, ज्ञान समझने का।
अगर यह भी खो दिया, अगर मानव ने, ना मिलेगा अवसर, समझने का॥

एक दिन ऐसा आयेगा, दुनिया में, जब मानव की गर्भ जैसी, दशा होगी।
और पुकारेगा हर मानव दुनिया का, कि ईश्वर मुझे निकालो, इस भंवर से, ऐसी दशा होगी॥

हे जगत वासी, हे पृथ्वी पर वास करने वाले, मानव, सुन ज्ञान की बात।
तुम्हारा पुत्र अगर गलत है, तो अगर तुम ही ठीक हो, तो ना आयेगी दुख में नींद तुम्हें रात॥

पिता पुत्र से कहे, कि हे पुत्र अपना गलत रास्ता छोड़ दो।
पुत्र कहे पिता से, कि मेरा रास्ता है ठीक, तू अपना रास्ता छोड़ दे॥

पिता को यह शब्द सुनकर, क्या लगेगा दुनिया में।
इसी प्रकार ईश्वर की संतान, बह रही है दुनिया में।।

लोक परलोक सब कुछ, ईश्वर के वश में है।
पर मनुष्य कर्म खुद बनाता है कर्म मानव के वश में है।।

ईश्वर देता है ज्ञान दुनिया में, जीने के लिए।
अज्ञानी पकड़ता है, ज्ञान, दुनिया में रोने के लिए।।

भावार्थः- प्रभु बताते हैं कि मनुष्य का सत्य जीवन का मार्ग ज्ञान जानने का जो मनुष्य ज्ञान समझ लेता है वह कभी दुखी नहीं होता। और जो मनुष्य ज्ञान की बातें नहीं पकड़ता तो समझो वह मनुष्य अपनी सोच अपनी काया की पूर्ति करने वाली वासनाओं में रखता है वह मनुष्य कभी भी सुखी नहीं रह सकता।

श्लोक :- सभ्य संस्कारी मनुष्य का सदैव, ईश्वर रहे हितकारी।
सुबह उठे मनुष्य रात से जागकर, दिन में करे पुण्य सारी।।

भावार्थ :- जो भी मनुष्य सभ्य संस्कारी सात्विक भावों की सोच रखता है ऐसे मनुष्य के साथ हमेशा ईश्वर मदद में रहते हैं। सुबह के समय संस्कारी मनुष्य सोकर उठता है वह आन्नदित होता है उस मानसिक परेशानी नहीं होती। वह अच्छे शब्द सुनना चाहेगा और अच्छे शब्द बोलना चाहेगा और उसका मन चहकते हुए पाक्षियों में भी स्वाभाविक ही लगेगा। ऐसा मनुष्य अपने आप में पुण्य आत्मा का अधिकारी होता है।

दिन में कर्म अच्छे, और मीठे शब्दों से बोले बोल।
अपने अन्दर से शांत रहे, और दूसरों का, ना सुने झूठ बोल।।

भावार्थ :- सात्विक संस्कारी मनुष्य सुबह से लेकर शाम तक अच्छे काम करता है और ऐसे कर्म करता है जो दूसरों को दर्द ना हो। अपने अन्दर शांत रहता है। और दूसरे झूठे मनष्य के अशब्द सुनता तो जरूर है पर उन पर अमल नहीं करता झूठे शब्द उसे अस्थिर नहीं कर सकते। अपने अन्दर से ऐसा मनुष्य अशांत नहीं हो सकता।

देहा :- सहन शक्ति कर उत्पन्न अपने अन्दर, गुण शब्द धार ले।
पुरूषार्थ कर जीवन में अपने, अधर्म को भी सुधार ले।।

भावार्थ :- हे मनुष्य, सहन करना ही जीवन है, सहन करना भी शक्ति पाना होता है सहन करने से मनुष्य का जीवन अनमोल हो जाता है। धन भी सहन करने से बढ़ता है और पुरुषार्थ दूसरों के काम आना जीवन में सर्वोपरि है, ऐसा मनुष्य दूसरे अधर्मी अज्ञानी मनुष्य को भी समझा सकता है और शान्त भाव बनवा सकता है।

दोहा :- हे मनुष्य ऐसा बना जीवन अपना, खुद भी चित्त प्रसन्न रहे।
कुटुम्भ का आदर करे दुनिया, तू भी सदैव आदर करे।।

भावार्थ :- मनुष्य को जीवन सुन्दर ओर चित्त भंग ना होने वाला प्रसन्न चित्त सार से रहना चाहिए जिससे उसका कुटुम्भ भी सुखी शान्त रह सके और दूसरे भी आदर सत्कार कर सके।

तुझसे ही शान्ति बढ़ेगी दुनिया में, रूप अन्दर का निखार।
अन्दर तेरे गुण भरे हुए हैं अनमोल, ईश्वर को लगा गुहार॥

अनंत समय से कर रहा है, तू भ्रमण, जन्म पर जन्म ले रहा है।
इस जन्म में कर तू पूर्ण वह काम, जो तू भूल रहा है॥

कर पहचान हे मानव अपनी, ईश्वर की कलाओ को जान।
तेरा रिश्ता क्या है ईश्वर से, यह सत्य अमर प्रेम मान॥

मान अपने अन्दर सत्य पद है, ईश्वर प्रकृति प्रमाण।
धरती पर देख कैसे खिली हुई है, लगा ईश्वर पर ध्यान॥

निर्भय होकर लगा ध्यान ईश्वर में, अन्दर तुम्हारे दिया जलेगा।
वही प्रकाश खोलेगा तुम्हारे, अन्दर की गुत्थी, ज्ञान तभी तुझे मिलेगा॥

पर खिलेगा, फूल तुम्हारे अन्दर प्रेम से, दिव्य दीप जलेगा।
उसी दिये से, फैले प्रकाश दुनिया में, तभी तो संसार बचेगा॥

जाग हे मनुष्य जात मनुष्य का अतुल्य, निर्माण कर, आस्था।
आस्था विश्वास धर्म है जगत में, विश्व में ना फैला झूठी संस्था॥

झूठी संस्था ना खोल जगत में, धर्म टूट जायेगा।
मनुष्य खेलने लगेगे, धर्म सभ्य से, नर टूट जायेगा॥

प्रयत्न कर मर्यादा में रहकर, धर्म अजय होता है कैसे।
पता है हर नर-नारी को, घटता बढ़ता है कैसे॥

हर नर-नारी को पता है, कि गलत कैसे होता है, और ठीक कैसा होता है।
ईश्वर ने बनाये है, नर नारी, ऐसे ही, कि यह राज छिपा होता है॥

हर नर नारी में दबा हुआ है धर्म, अधर्म में जगत फंसा रहे।
धर्म कहता है, कि, कर ठीक कर्म अपने, पर जगत अधर्म में फंसा रहे॥

काया के भोग के कारण, मन अधर्म को भी, धर्म समझे।
ठीक गलत की ना करे पहचान, और अपना पराया ना समझे॥

सत्य सत्य है दुनिया में, सत्य में धर्म ईश्वर रमते है।
अधर्म है, दुख का दरिया, जगत में, अधर्म मानव जमते है॥

यह है समय सारिणी, जैसा समय होगा, जन्म वैसा ही होगा।
जैसा व्यवहार जगत में, उस समय होगा, वैसा ही पुत्र जन्म होगा॥

जैसे मनुष्य मृत्यु प्राप्त करेगा, जैसे समय में, वैसी स्थिति में फिर जन्म लेगा।
जैसा बोओगे दुनिया में, वैसा ही काटोगे, जो पुत्र जन्मोगे वैसा, पौत्र जन्म लेगा॥

हे जगत वासियों, यह जान, दुख मनुष्य जात को करना है तय।
तुम जीना, अगर चाहते हो सुख से, तो तुम्हें दर्द निश्चय, संकल्प करना है तय॥

तुम खुदी को बदलोगे, और संस्कारी बनकर, जीवन जियोगे।
तभी तो, प्रेम आने वाली पीढ़ी का, सुख उठा सकोगे॥

सुख कारी बनने के लिए, हर नर नारी को, धर्म मय ढलना होगा।
त्याग कर देखो दुराचारी बाते, ना तुम्हें, नरक अग्नि में, जलना होगा॥

अपने अन्दर पुण्य प्रकाश, ऐसा भरो, तुम्हें दिखे, भारत सुख धाम।
अभी तो तुम भारत में देख रहे हो। रोजमर्रा, दुखों का पैगाम॥

कोई मार रहा है भाई भाई को, कहीं पर नारी धर्म हो रहा है, बेजान।
कोई बुजुर्गों को अशब्द बोले, कोई हिंसा से, धन का करे विधान॥

अनगणित मानव ऐसे हो रहे है, दुनिया में, दूसरों को दर्द देते है।
खुद उनका अपना, खून भी रहता दर्द में, और मानव का खून बहाते है॥

यह है कैसा जगत, कौन इसको सहन कर सकेगा।
हर मानव चाहता है, सुख से जीना, कोन रोज मर्रा, अधर्म जहर पियेगा॥

दुनिया है, इतनी बड़ी, जहां भी घटना घटती है, दर्द उन्हें पता है।
दूसरों को सुनने में दुख होता है, पर उन्हें देखो, जिसके साथ घटा है।

अज्ञानियों का है, यह रूप, ज्ञान रूप, मानव को पता नहीं।
अज्ञानी बने ज्ञान वान, खुले आंखें, धर्म ईश्वर भी है कही॥

भटक रहा है मनुष्य अज्ञान में, ज्ञान का उसे अभाव नहीं।
वह तो, इस बुरे कर्म को, जीवन समझे, सत्य की पहचान नहीं॥

नियम बांध ले अपना, सतगुरू में टेर लगा।
निर्मल करले अपना मन, गुण धरके फेर लगा॥

अध्ययन कर ले ईश्वर का तू, सत्य झूठ जान ले।
विश्वास कर पहले ईश्वर पर, नम्र भाव ध्यान ले॥

सब्र कर, सब कुछ, मानव के अन्दर है, ज्ञान चक्षु खोल।
निर्भय होकर, जीवन जी, तू दृढ़ निश्चय करके बोल॥

खोल आनन्द का दरवाजा, जो कई जन्मों से, दबा पड़ा है।
मल दूर कर, अपने अन्दर का, जो पाप कर्मों से, दबा पड़ा है॥

दया, भाव, बना अपने अन्दर, सुधर जायेगी काया तेरी।
सुरभि बैठेगी तेरे अन्दर, विकास करेगी काया तेरी॥

हिम्मत कर, तू तेरी मदद करेगे परमात्मा।
आत्मा में जाने दे प्रकाश को, बन जाये परमात्मा॥

अवगत करा तू अपने आपको, शुद्धी पत्र ले तू।
ईश्वर को जाने, अपना पिता, निर्गुणता में झांक तू॥

निर्गुण निराकार में बैठे हैं परमात्मा, ध्यान लगा देख।
दिया नहीं जलता वहां संसारिक, दिव्य लोक में देख॥

प्रकाश ही प्रकाश फैला है, शक्ति बढ़ा इतनी, तू सूरती लगा देख।
दिव्य लोक का (प्रकाश) इतना तेज है, कि तू आंख बन्द कर देख॥

शाश्वत ब्रह्म है, विश्व के, ब्रह्म देव भगवान।
आधीन है दुनिया ब्रह्म के, वह ही है, देव भगवान॥

धरती माता की सत्ता

धरती है आलौकिक सत्ता, सर्वोपरि विधान।
घुमती है, मनुष्य काया की तरह, यह है ज्ञानियों का ज्ञान॥

अवधि में स्थापित है धरती, रसातल में चली जाती है।
बहती है धारा बनकर, ईश्वर आज्ञा से रहती है॥

कहती है धरती माता, (मनुष्य) जात करो, धर्म की पहचान।
मेरा टिकना सत्य आधार है, सत्य ज्ञान की करो पहचान॥

मैं टिकी हूं मानव धर्म के ऊपर, मानव जात की मैं बनी धाम।
मानव के कारण ही, अधर्म बढ़े मेरे ऊपर, ज्ञानी बतावे ज्ञान॥

ज्ञानी बतावे ज्ञान धर्म का, और मेरा भेद बतावे।
मेरा अस्तित्व है धर्म से, और मानव धर्म निभावे।।

मैं डोलूं अधर्म के कारण, धर्म पर अजर अमर रहूं।
मानव का नहीं है, ज्ञान धर्म का, अधर्म के कारण, मैं रसातल में जाऊं।।

मेरे ऊपर करे सृष्टि निवास, मैं जगत माता कहलाऊं।
उपजे सृष्टि मेरे ऊपर, मैं धर्म की माता कहलाऊं।।

मैं ही सहती हूं, अधर्म मानव का, और ईश्वर से गुहार लगाऊं।
तभी तो पुकार, सुनते हैं ईश्वर, और अवतारों को, मैं ही अपने आंचल में लाऊं।।

मेरे ही कारण ईश्वर आते है, धर्म का झण्डा फहराने।
और चलते हैं चरणों से मेरे ऊपर, उपकार जगत का करने।।

मानव को भेद नहीं सृष्टि का, क्या है गुण मूल।
मानव तो स्वाभाविक जीवन जिये, नहीं पता क्या है गर्भ मूल।।

मानव को ना पता कि (सृष्टि) में क्या क्या जरूरी है।
जिसके कारण टिकी है (पृथ्वी) वह विद्या अधूरी है।।

मानव के अन्दर ज्ञान है, अधूरा, बस काया का, पेट भरता है पूरा।
ना इससे अधिक समझे, हर जन्म में, रहता है अधूरा।।

ना टिकता, मानव अपने नियम पर, अपनी मनमानी करता है।
रहता है, सूर्य के उजाले में, और धरती पर, निवास करता है।

ना ज्ञान करता मानव, कि जिस पर तू ठहरा है।
वह आलौकिक है सत्ता, तू अन्धा भी है, और बहरा है॥

ना तू ज्ञान की बातें सुनता, ना तू दिन देखे, कैसे निकलता है।
कौन है, इस जग का रखवाला, और कौन ब्रह्मण्ड रचाता है॥

सूर्यदेव

सीधा देख हे मानव आंखों से, सूर्यदेव का ताप तू।
देख ज्ञान से, कि तुझे दिया है जीवन, और देख प्रकृति वास तू॥

पृथ्वी के ऊपर सूर्य देव का चमत्कार, और प्रकृति में कैसे होता है, अविष्कार।
पूर्ण पृथ्वी पर किरणें पड़ती, देती जीवो को जीवन दान, और वनस्पति का करती है, अंकुरहार॥

ज्ञानी-ज्ञान सृष्टि का खोले।
अमल करे मानव, ब्रह्मदेव शब्द बोले॥

शब्द उतारे धरती पर, जैसे आकाश से पृथ्वी, पर बूंदे बरसे।
हर बूंद धरती की बुझावे प्यास, और अंकित हो प्रकृति में सारे॥

हर शब्द ब्रह्म भेजे धरती पर, मानव खुशी प्रसन्न से रहे सारे।
जीवन आन्नदित हो मानव का, और सृष्टि में अमल ज्ञान हो निहारे॥

बूंद-बूंद सींचे धरती को, यह उपहार किसने दिया है।
मानव की बुद्धी में, बैठाने का ज्ञान, ब्रह्मम् ने दिया है॥

क्यों चल रहा है, ज्ञान का सागर, चतुर्थ युग की गाथा।
बार-बार धरती पर ज्ञान आता, बार-बार मानव के लिए, ज्ञानी गाता॥

सृष्टि की कला नहीं है छोटी, सृष्टि दिव्य दीपो की शृंखला है।
ना ही इसमें बसा, मानव अपने अन्दर से, छोटा नहीं, इस ब्रह्मण्ड का रखवाला है॥

इसमें ही जीवन जीता है मानव इसी को काट रहा है।
जिस डाली पर बैठा है मानव, उसी डाली को काट रहा है॥

यह अज्ञान का कारण है, जीवन है, सभी जीवो का अनमोल।
चाहे मानव हो अधर्म कर्म, का, पर सब जीव है, ईश्वर की तोल॥

बस मानव को ज्ञान नहीं है, कि तेरा सृष्टि में आना, कितना बड़ा है, काम।
खुद मानव को नहीं पता, सृष्टि चलती है (मानव से) और धर्म बसाना, मानव धाम॥

पर फिर भी हे मानव (तू मेरा अति प्रिय है) तू चाहे अधर्मी हो सारा॥

पर मैं तुझे, प्रेम करूं इतना ज्यादा, कि जैसे धरती पर बहती गंगधारा॥

जैसे बहे जल धारा, और, पवन चलती सरासर।
उत्पत्ति है, दोनों की दिव्य सत्ता, वैसे ही है मानव धार॥

मानव धार भी बनी है, सृष्टि रचना, मिट्टी, पानी, अग्नि पवन, आकाश।
इसी धारा से, तत्वों की हुई गठना, इसी से बना सृष्टि वास॥

महाज्ञानी समझे, रहस्य सृष्टि का, और मानव को समझावे।
मानव रहे श्रेष्ठ धर्म पर, और देवों को पूज्यनीय बतावे॥

अनगिनत रहस्य छिपे है, सृष्टि में, उत्पत्ति का कारण है।
जितनी भी रहस्य है, धरती पर, मानव उसको करता धारण हैं॥

मानव के कारण ही, धरती की हुई उत्पत्ति (शक्ति) से।
मानव ही के कारण, धर्म बढ़े, और सृष्टि चले (शक्ति से)॥

शक्ति, ही वह तत्व बीज है, जो सृष्टि के कण-कण में है।
शक्ति, से ही मानव भरता है, पेट शक्तिबीज जन जन में है॥

शक्ति का अकुंर, मानव चेतना में रहता है, हर दम।
मृत्यु भी हो जाती है, मानव की, फिर भी रहता है हर दम॥

शक्ति बीज होता है, ऐसा, कि कर्मों का लिखे लेख।
मृत्यु के पश्चात भी, कर्मों के द्वारा मानव बदले भेष॥

शक्ति बीज ही करता है, लेखा-जोखा मानव के अन्दर विद्यमान।
मानव करे कर्म जैसा धरती पर, वैसा ही लिखा जाता है परवान॥

कर्मों के अनुसार घट-घट कर, मानव का करे बंटवारा।
जो जैसे जिसने, कर्म किये थे, बार-बार करे बंटवारा॥

कहीं किसी को दुख मिले, किसी को मिले सुख सारा।
किसी को दरिद्रता मिले, किसी की काया को, मिले सुख सारा॥
कोई फिरे दुनिया में भटकता, कोई बने दुराचारा।
कोई किसी पर दया करता, कोई बने हत्यारा॥

रस भी, मानव का है कर्म फल, जिसे ईश्वर करे बंटवारा।
कोई रहे जीवन में निर्भय, और कोई रहे धर्ममय सारा॥

कोई करे विश्वासघात अपनों से, कोई रहता बेगानो में सारा।
कोई किसी से प्रेम करता, और कोई रहता, महखानों में सारा॥

कोई मानव नशे में सोता, और जीवन में दुख ढोता।
कोई ईश्वर भगति में रहता, कोई सुख में सोता॥

कोई रोता फिरता है सारे जीवन, कोई हिंसा करता।
कोई दूसरों के लिए जीता, कोई सिर्फ अपना पेट भरता।।

किसी-किसी मानव की, लाज लुटती, दुनिया में, कोई लाज दूसरे की लूटता।
मानव ही मानव को करे दुखी, और मानव से ही मानव रूठता।।

मानव ही के कारण, दूसरा मानव, सता रहा है दुनिया में।
मानव ही के कारण, दुख भरा है, मानव ही तो है, दुनिया में।।

मानव ही के कारण, आसन भरा है धरती पर उजियारा।
मानव से ही गुण प्रकट होकर निकले, और मानव के बने सहारा।।

मानव के द्वारा होता है पुण्य धरती पर, धर्मजय हो उजियारा।
मानव के द्वार ही पता चले (धर्म) कहां टिका है सारा।।

धर्म मानव भाव अनुकूल है, जगत सोच विचार।
शब्द से वाणी बने, वाणी से बने, जगत अधिकार।।

शब्द वाणी से ब्रह्मण्ड चले, मानव का रचा विधान।
जीवन जीये कैसे मानव, वह लिखा गया है, वेदो में ज्ञान।।

जीवन जीता है, मानव धरती पर, करें सत्य कर्म धाम।
मानव जीव के लिए, लिखा जाता है, ज्ञान का विधान।।

जिसने रची है सृष्टि, वह ही भेजे, सत्व गुण विधान।
रजो में बसती है सृष्टि, और तमों में नहीं मिलता जीवन दान॥

युग ढला है, धर्म विधान के अनुकूल, मानव विधान तोड़ रहा है।
विधान बना रहा है, मानव अपने, और अपने ही कर्म, भोग रहा है॥

जिस युग में मानव करे, अपनी मनमानी, उस युग में रहे, मन में बैचेनी।
मन में लगी रहे उथल-पुथल, और मानव रहे अभिमानी॥

ज्ञान ना हो सके मानव को अपना, ओर ईश्वर को क्या जाने।
पहले अपने आप को पहचाने मानव, फिर ईश्वर को माने॥

अपने आप को जब मानव पहचाने, मानव जीवन है अनमोल।
जन्म लेना इस धरती पर हर (जीव) का अतुल्य है मोल॥

मानव ना समझे मूल्य अपना, संग्रह करने में सदैव लगा रहे।
जब उसे नहीं पता, कि है सब ईश्वर का, फिर भी भ्रम में डूबा रहे॥

हे मानव तू क्यों नहीं समझा, तेरा तो इस दुनिया में कुछ नहीं।
तू क्यों माने, पाने खाने का दुख, जब तू लाया कुछ नहीं॥

तू तो आया था खाली हाथ, पर तुझे ईश्वर ने सब कुछ दिया।
पर तुझे जो कुछ भी दिया, वह अपना समझा, अहंकार में तूने डूबा दिया॥

जब तेरा कुछ नहीं दुनिया में, पर फिर भी तू, अहंकार करता है।
जो भी दिया है, सब ईश्वर का, तू सत्य का साथ, क्यों नहीं देता है।।

ऐसी कैसी है तेरी मजबूरी, कि 'तू' सत्य से सदैव भागता रहा।
किसी भी जन्म में, तूने यह नहीं कहा, मेरा कुछ नहीं, अभिमान में भागता रहा।।

कब तक भागता रहेगा हे मानव तू, थक चुका है, सत्य की राह देख।
सौंप दे अपना जीवन (ईश्वर) के सुपुर्द, और अपनी मुक्ति की राह देख।।

सत्य को स्वीकार कर, इसी कारण तू, पृथ्वी पर है बसा।
तेरा कर्म है सत्य सफर, तू क्यों झूठे भ्रम में फंसा।।

बार-बार तुझे ईश्वर ने, समझाने के लिए, सन्त धरती पर भेजे।
पर तू ना समझ सका, सत्य अमर पद, अपने ही कर्मों की ही भजे।।

कर्म ना निखर पाये है मानव तेरे, हर जन्म नये-नये में रमता रहा।
ना किया स्वीकार तूने सत्य को, काया को, तू सत्य समझता रहा।।

जिसको तूने सत्य समझा, वह बार बार मरता रहा।
और जो तेरे अन्दर है वास, वह खुद ही रमता रहा।।

तुझे ना पता चला कि, क्या चल रहा है, मानव के अन्दर।
तू तो स्वांस समझकर, स्वाभाविक ही जीता रहा, अपने अन्दर॥

पर हे मानव तेरे अन्दर, स्वांस चल रहा है, जीने के लिए।
चला रहे है, ईश्वर, इसे तुझे जीवाने के लिए॥

तू फिर भी नहीं ठहरता, स्थिर होकर, सत्य पर रह दृढ़।
तेरे अन्दर स्वांस भरा है, यह ईश्वर का है, अर्क॥

इसी स्वांस से, तेरा जीवन चले, ना चले तो, तू काया से भरे।
नहीं पहचान होती मानव को, कि स्वांस ईश्वर के द्वारा भरे॥

स्वांस में ही ईश्वर है, बैठे निर्विकार, निरंकार है, उनका रूप।
चेतन अवस्था तेरी है, उनके कारण, और जीने का है, तेरा रूप॥

तुझे तो बस, सत्य जानकर, अमल करना है, ज्योत अमर बन जायेगी।
कभी ना बुझेगी अमर ज्योति (दिव्य आभा) लोक में जायेगी॥

सुमिरण करले हर स्वांस तू, तुझे पृथ्वी पर भेजा है, यह वरदान देकर।
भज ले नाम तू ईश्वर का, सत्य सुमिरण, हर स्वांस लेकर॥

फिर तू नहीं आयेगा, इस पृथ्वी पर, ना मरेगा तेरा शरीर जलकर।
बार-बार वाली, घटना ना घटेगी, तेरा उद्धार होगा, एक बार जलकर॥

बस तुझे तो, सकंल्प दृढ़ करना है, और अपना स्वांस का तार, ईश्वर प्रेम में भरना है।
तभी पकड़ लेगे ईश्वर तूझे, पृथ्वी से ही, और स्वर्ग तेरा दिव्य झरना है॥

पृथ्वी से ही तुझे दिखेगा (स्वर्ग) तू कर दृढ़ नियम बांध।
ज्ञान पर ना कर सन्देह (सत्य जान) और ईश्वर पद अमर मान॥

तुझे धरती पर ही दिखेगा, जहां तुझे जाना है।
नरक भी दिखेगा (तुझे और स्वर्ग भी) कहा तेरा ठिकाना है॥

जो धरती से तूने पाया है, वह ही तुझे मिलेगा।
ऊपर नीचे कुछ नहीं, बस धरती पर ही है सब कुछ मिलेगा॥

जो भी तूने देखा धरती पर, वह ही आसन मिलेगा तूझे।
अपना कर्म देख पहले, और अभी का भी जोड़, मिलेगा तुझे॥

भक्ति कर भगवान की, प्रेम हर स्वांस में बहा देख।
फिर देख धरती पर ही तू जहां जायेगा, वहां का दृश्य देख॥

जो दृश्य दिखे तुझे, अपने कर्मों के अनुसार, वहीं तेरा वास।
उसी ज्योति में मिलेगा, तेरा स्वास जितना रहा, जिसमें, धरती पर तेरा वास॥

हे मानव, तूने कर्म किये जैसे जैसे, मानवों में वैसा ही चित्र खिचेंगा।

वैसी ही योनी मिलेगी तुझे, जितना तेरा पाप पुण्य-कर्म बचेगा।।

हे मानव ना हो निराश तू, ईश्वर का नाम जप ले।

छोड़ वह जंजाल भ्रम-पाप कर्म छोड़, पुण्य-कर्म रख ले।।

यह ही अवस्था है तेरी, धरती पर, यह ही अवस्था, मृत्यु के बाद मिलेगी।

घूमेगा तू इसी प्रकार, जैसे तेरा मन चंचल होकर भटके, ऐसी रूह तुझे मिलेगी।।

यह ही अवस्था है, मानव की, सदैव से चली आई, आदि काल से।

इसी अवस्था में, भटक रहा है मानव, आदि अनंत काल से।।

हे मानव, अपने मन में ठहराव कर, स्थिर रहना सीख ले।

मन की ही दशा है, यह भटकता है, युगों तक, मन की स्थिति जांच ले।।

माया मोह के कारण, मन ही फिरे भटकता, मानव काया के अन्दर।

उसी काया में भेद छिपा है, ईश्वर का भी, और स्वर्ग भी काया के अन्दर।।

हे मानव मोह ना इतना ज्यादा कर, जो मन ना स्थिर रहे।

लोभ लालच हे दुख दरिया मानव, इसमें सदा फंसा रहे।।

मानव क्यों करते हो कर्म ऐसे, जिससे दुख पनपता रहे।
उसी दुख में मानव जीवन बितावे, और मन में ईश्वर नाम ना रहे॥

ऐसा यत्न कर हे मानव, ज्ञान भर अपने अन्दर, जीवन तू सुधार ले।
ज्ञान पाकर सुधरेगा यह जीवन भी, और पिछला भी सुधार ले॥

हे मानव प्रेम कर सबसे तू, प्रेम करने आया है, इस जग में।
प्रेम से मंगल होता है, और प्रेम से (ईश्वर) विराजमान होते है, यज्ञ में॥

प्रेम से जीना भी यज्ञ समान है, ईश्वर प्रसन्न रहते है सदैव।
प्रेम हो निस्वार्थ, तो भी ईश्वर भक्ति मान, और मन प्रसन्न रहे सदैव॥

ना कर तू ईश्वर भक्ति, नाम जप, बस तू मानव प्रेम कर ले।
तेरे कट जायेंगे दुख पाप कर्म भी, और अगला जन्म भी सुधार, कर ले॥

हे मानव, प्रेम कर ऐसा, अपनो से, दूसरो से, स्वार्थ का जर्रा भी ना हो।
तब देख जीवन अपना स्वर्ग, दूसरी जगह नहीं, पृथ्वी लोक पर हो॥

हे मानव, तेरी बात मैं जानूं, तू प्रेम निस्वार्थ क्यों नहीं करता।
तू आरम्भ तो करता है, प्रेम जीवन में, पर खरा नहीं उतरता॥

क्यों कि हे मानव, तू सोचता है कि दूसरा मानव, तेरे जैसा नहीं।
दूसरा, तेरे जैसा मन का नहीं, तो क्या हुआ, तू भी तो, उसके मन जैसा नहीं॥

तुझे तो, अपने मन की सोच बैठानी है, सत्व गुण के अन्दर।
तुझे अपना मन देखना है, अपनी राही बनानी है, सुख तुझे मिलेगा तेरे अन्दर॥

जो जैसा बोयेगा बीज, वैसा ही फल खायेगा, मानव प्यारा।
अपने आप को जंगल से, मंगल में ढाल, तभी लगेगा जीवन प्यारा॥

तेरा, तेरे है वश में, तू निर्भय होकर, जीवन बिता दुनिया में।
तू राह अपनी प्रेम की चुन ले, मंगल मना, इस दुनिया में॥

तेरे साथ अभद्र व्यवहार करे कोई, तू ना अपना व्यवहार उस जैसा बना।
तेरा मन, तेरे साथ, मगल मना रहा है, तू उसके जैसा, मन ना बना॥

मन से ही तू मैला होता है, तू मन को सुन्दर बना।
मन को अमंगल में, ना फंसा स्थिर बना, मन दूसरे मैले, मन में ना मिला॥

सामने वाला भी तेरे जैसा ही है, 'काया का रूप' भी तेरे जैसा।
पर जीवन उसका अलग है, तेरा जीवन खुद ही तेरे जैसा॥

अन्दर से, दूसरा मानव क्या है, तू मत सोच उसकी दशा।
तू खुद बन अन्दर से सुन्दर, दूसरे की तू गलती मत बता॥

हे मानव खुद ही को तुझे बनाना है, अपनी काया का मन्दिर।
जिसमें प्रेम हो इतना, कि जगत भी बसे, और ईश्वर का हो मन्दिर॥

हे मानव, तुझे तो सब कुछ, इस पृथ्वी पर ही मिलेगा।
चाहे कितनी बार जन्म ले ले, पर तुझे स्वर्ग धाम, पृथ्वी पर ही मिलेगा॥

तू तो अज्ञान, अनजान है, तेरा तो मन फिरे भटकता।
तू क्या जाने, ज्ञान है क्या, तू तो ज्ञानी को फिरे, झटकता॥

हे मानव, तू देख नहीं सकता, कि तुझे मृत्यु पश्चात जाना कहां है।
क्योंकि तूने अपनी काया की, कीमत नहीं जानी, इस काया में ईश्वर कहां है॥

ईश्वर को जाना होता, और अपनी काया को पहचाना होता।
तो ना होती तेरी ऐसी दशा, कि तुझे ऐसे लोक से, आता न्योता॥

ऐसे लोक से, मृत्यु पर आता न्योता, जो तुझे पता ना होता।
क्यों तूने पता करने की, कभी ना की चेष्टा, तू तो माया में रमा रहता॥

अगर पापी पाप कमावे, दुनिया, में और वह अचानक, ज्ञानी बन जावे।
तभी पता चले उसे, पिछले जन्मों का, भी खाता, और अगले जन्म में देवलोक जावे॥

और अगर पापी को दिखे, पिछला जन्म, और अगला भी देख घबरावे।
पर ऐसा होता नहीं है, पृथ्वी लोक पर, कि जो पापी को अगला पिछला जन्म दिखावे॥

यह विधान रचा है ईश्वर ने, इसका पार ज्ञानी ही बतावे।
और ज्ञानी को भी, जिस जन्म में ज्ञान हो, उसी जन्म से सार बतावे॥

और अज्ञानी तो, कभी भी पार न पावे, चाहे हजार जन्म गंवावें।
काया को ही सब कुछ समझे, और अहंकार में, अपने को बड़ा बतावे॥

अब बता हे मानव, जब अज्ञानी को, ना पिछला जन्म, ना अगला जन्म बतावे।
तो फिर जन्म लेने का क्या लाभ, व्यर्थ में क्यों, जन्म पर जन्म बितावे॥

सोच हे मानव तुझे, पिछला पता नहीं, अगला जन्म पता नहीं।
तो फिर सोच, तेरी दशा क्या है, अपनी दशा सुधारे, बिना जाना नहीं॥

सकंल्प कर हे मानव, मैं भी ज्ञान सुनूंगा, रखूंगा याद सभी।
और बनाऊगा अपनी पहचान, और ईश्वर के नाम जपूंगा अभी॥

हे मानव तू भूल गया है, कि तुझे मानव का दर्जा, किसने दिया है।
तू तो है बहुत प्रिय ईश्वर का, पर तूने ईश्वर का, नाम नहीं लिया है॥

हे मेरे प्रिय मानव देह धारि, तूने मुझे सत्य में, क्या मान लिया है।
मैं तो तभी समझूं कि, तू ज्ञान भर अपने अन्दर, और सत्य का दीप जला दिया है॥

सत्य का दीप, जब जलेगा तेरे अन्दर, मैं सवारी तेरे अन्दर करूंगा।
और अहसास भी कराऊंगा, तेरे अन्दर, जब चेतन वास करूंगा॥

हे सत्य युग से चलकर, कलयुग में सफर करने वाले इंसान।
तेरा सफर हो गया है, बहुत ज्यादा, तू और सफर ना कर इंसान॥

थक चुका है तू, धरती पर आते आते, तेरा कलयुग जैसा, नहीं निर्माण।
तू तो अन्दर से ऐसा ही है, जैसे सतयुग में रहा सर्वोपरि विधान॥

क्यों कि हे मानव तेरे अन्दर, मैं बसा हुआ हूं, तू खोल अन्दर के किवाड़।
चेतन कर वह गुत्थी अपनी, जिसमें रहता है, सत्य देव भगवान॥

तभी तुझे पता चलेगा, कहां पर है शक्ति, और त्रिलोकी भगवान।
तू तो खोया हुआ है, इच्छाओं के भंवर में, कलयुगी इंसान॥

तेरा तो पतन हो रहा है, हरदम घुट-घुट कर तू मरता है।
कभी भी तूने यह नहीं सोचा, कि मनुष्य जीवन में डरता है॥

डर डर के तू जीवन बितावे, तू क्यों बार बार मरता है।
क्यों नहीं करता, वह कर्म फूल, सत्य का बीज, जिससे भरता है॥

काटता क्यों नहीं, वह दर्द, हर जीवन का, जिससे तू हरदम डरता है।
भय से है तू व्याकुल, और इच्छाओं को तू, हरदम भरता है॥

छोड़ दे, हे मानव इच्छा अपनी, सहज इच्छा धारण कर।
इच्छा है ईश्वर की, तेरा जीवन, सुन्दर शान्त रहे ऐसा कर्म कर॥

इच्छा के आगे मत झुक, इच्छा ही तेरी शत्रु है।
इच्छा तुझे सुख से नहीं जीने देगी, इच्छा ही तेरी मृत्यु है॥

ना दर्द सह धरती पर हे मानव, अपना बनाया ज्ञान छोड़ दे।
सनातन ज्ञान भर अपने अन्दर, ईर्ष्या की मटकी फोड़ दे॥

इच्छा की मटकी भरी पड़ी है, यह तेरी नहीं, सड़ी पड़ी है।
सुगन्ध नहीं है इसके अन्दर, यह तो इच्छाओं से भरी पड़ी है॥

इच्छाओं में तू जीवन गंवावे, इच्छा ही तुझे पाप कर्म समझावे।
इच्छा है हमारी मैली, काया का पेट भरता है इसमें, सन्त ज्ञान बतावे॥

इच्छाओं में ही मरता है मानव, मृत्यु के बाद पिण्ड भरवावे।
क्या लाभ मिलेगा पिन्डो से, जब काया छोड़, मानव को भटकावे॥

इच्छाओं की सोच में मानव, छोड़ प्राण, उसी का लक्ष्य दिखावे।
उसी लक्ष्य में मानव फिर भटकता, फिर पृथ्वी पर वापस भटकने आवे॥

ना छूटता पीछा मानव का, यह काया का कुण्ड भरता नहीं।
इसमें छिपे है असंख्या इच्छा, कैसे इच्छा से छूटे राही॥

हे मानव इच्छा धारी मत बन, जीवन ईश्वर इच्छा पर छोड़ दे।
नर है तू समझ अपनी पहचान, नारायण पर जीवन छोड़ दे।

ना भज तू हरमद, इच्छा पूरी करने का, मंत्र त्याग दे।
भजले तू हे मानव, ईश्वर नाम, काया के नाम पर, पाप कर्म छोड़ दे॥

जिस प्रकार धर्म के नाम पर, धन कमाते फिरे दुनिया में।
उसी प्रकार अपने मन से मनुष्य, काया की पूर्ति करे दुनिया में॥

काया कुछ नहीं कहती, कहता फिरे तुम्हारा मन, इच्छाओं से भरा।
काया तो ईश्वर की है सवारी, तुम्हारा मन इच्छाओं से भरा॥

इच्छा को तुम मन में रखो, इच्छा ही पाप कर्म कमावे।
इच्छाओं से तुम काया को बदलो, यह ही बार बार नीति बनावे॥

इच्छा तो मन में भरी रहती, ना इच्छा मन हरी कहती।
मन की इच्छा भरे काया में, मानव काया स्वस्थ, कभी नहीं रहती॥

मन में उठते है प्रश्न असंख्य, इतना तो, आकाश में, तारा गण भी नहीं।
तोड़ना चाहता है हर मानव, तारा गणों को, यह तो (ईश्वर) विधान में भी नहीं॥

फिर क्यों भटक रहा है मानव, इस काया की खातिर, अशान्त हो रहा है।
काया तो है, मुक्त होने के लिए, मानव मुक्ति के लिए, सो रहा है॥

हे मानव, यह काया ही सर्वोपरि विधान है, धरती से मुक्त होने के लिए।
बनाई है ईश्वर ने इसे, आलौकिक दृष्टि से, मोक्ष प्राप्ति के लिए॥

काया के द्वारा ही मानव, माया भंवर से निकल सकेगा।
काया ही वह सीढ़ी है, जिसके द्वारा मुक्त हो सकेगा॥

काया भोगने की नहीं है वस्तु, यह सर्वोपरि निर्माण।
इस काया में बसे हुए है ईश्वर, यह काया मुक्ति का विधान॥

काया के द्वारा होती है, मुक्त, यह है सत्य विधान।
काया बनती है, धरती पर, काया का गुण मुक्ति धाम॥

निर्भय होकर जियो धरती वासियो, बनाओ धरती पर स्वर्गधाम।
जो दिखे बैठे धरती पर, दिव्य लोक, और स्वर्ग धाम॥

तभी बनेगा मानव ऐसा, जब गठित करे, काया का ज्ञान।
इसी काया में भेदछिपा है, तीनों लोकों का विधान॥

इसी काया में वेद छिपे है, और छिपा है देव भगवान।
इस काया का भेद खोलो अपना, और बनाओ मुक्तिधाम॥

हर मानव कहता है धरती पर रहकर, कहां है नरक, स्वर्ग धाम।
नहीं पता उस ज्ञान का मानव को, यह भेद छिपा हुआ है, काया के अन्दर धाम॥

ज्ञान से जाना जाता है, इस काया की गुत्थी का रहस्य महान।
इसी काया से मिलता है त्रिलोकी, और, स्वर्ग और नरक धाम॥

ज्ञान समझो धारण करो, तो सत्य में सबकुछ है, विद्यमान।
ज्ञान ना समझे तो फिरे मानव, भटकता रहता है अज्ञान॥

अज्ञान के कारण तो मनुष्य काया को, बस भरता रहता है हरदम।
काया की इच्छा के कारण, मन भटकता रहता है हरदम॥

काया का स्वाद समझे मानव, बस इतना ज्ञान मिला है।
काया के अन्दर क्या भरा है, उसे वह अज्ञान मिला है॥

काया तो बनती बिगड़ती रहती है, हर जन्म जात इसकी प्रवृति।
पर इसी काया से सन्त बनते है, धरती पर, यह भी काया की गति॥

काया भोगने का खिलौना, ना समझो, यह पैराणिक सत्ता है।
इसी काया के द्वारा सृष्टि रची है, यह ईश्वर की शक्ति है॥

यह सृष्टि सम्पूर्ण काया में ढली है, स्थूल का है निर्माण।
इसी सृष्टि के स्थूल में, कण कण में हैं, विधाता महान॥

इसी प्रकार काया धारी मानव को, सृष्टि का भार सोंपा है।
मानव ही सृष्टि बनावे, मानव ही पालन करे, क्यों, मानव के अन्दर ईश्वर का भरोसा है॥

मानव के द्वारा स्थूल रचा, और मानव के अन्दर भय रचा।
मानव के अन्दर है ईश्वर वास, ईश्वर ही मानव को करवाये राज॥

सोच से पाप घटता है सोच से ही पुण्य बढ़ता है।

जो भी घट रहा है दुनिया में, सब कुछ, मानव की सोच के कारण है।
मानव की सोच में बैठे है असुर, सुर बैठे दूषित दोष के कारण में है॥

मानव की सोच में हो रहा है, असुरों का पहरा।
सोच में नहीं रहा मानव के, सुरो का पहरा॥

सोच से ही मानव के अन्दर, धर्म स्थिर होता है।
मानव सोच के कारण ही, विश्व स्थित होता है॥

मानव सोच में ही धर्म बढ़ता है, और घटता ही दुनिया में।
मानव के अन्दर ही ईश्वर वास, अज्ञान के कारण मानव नहीं पहचाने दुनिया में॥

मानव के अन्दर ही वह, सात्विक सोच, की उर्जा ही दिव्य देव।
उसी उर्जा से धर्म बढ़े, और प्रेम बढ़े, वहीं है ईश्वर आदेश॥

उसी सोच से बने उर्जा धरती पर, शुभ प्रेम का पैगाम लावे।
उसी सोच से धर्म बढ़े दुनिया में, उसी सोच से मानव प्रेम बढ़ावे॥

और यदि सोच नहीं है मानव की शुद्ध, तो असुर आ जाते है, काया में।
और यदि शुद्ध मानव की सोच हो तो, सुर आ जाते हैं काया में॥

काया के अन्दर माया रची है, मन करता है इसकी रचना।
मन में ही सोच हो उत्पन्न, और शब्दों की करता है बचना॥

शब्दों से चले सृष्टि, शब्द ही ब्रह्मं से आवे।
शब्द से ही ज्ञान फैले दुनिया में, शब्द ही ज्ञान बढ़ावे॥

शब्द सूर ताल है, शब्द ही कड़वा बाण, शब्द से नर बने नारायण।
शब्द गुण धार बने, मानव शब्द से धुन्ध, फैले, शब्द से हो निर्माण॥

शब्द से ही मनुष्य फंसे मोह जाल में, शब्दों से ही करे जुल्म।
शब्द से ही दण्ड मिले मनुष्य को, शब्द से ही दिया जावे हुक्म॥

शब्द ही सार है सृष्टि में, शब्द गुण धार, धर्म जय करावे।
शब्द से सोच चले मानव की, शब्द से ही ईश्वर मिलन करावे॥

शब्द से नर भजे ईश्वर नाम, नाम में ही सभी धाम।
नाम शब्द है ईश्वर का, भजो दिन रात बने सभी काम॥

हे मानव सोच में अपनी बैठा ऐसे, शब्द जिनकी गुणगुनाहट हर ईश्वर तक जावे॥

सोच शब्दों में कल्याण दुनिया का कर, हे मानव, तू अमर फल पावे॥

सोच में ही धर्म टिका है, मानव सोच परे है, ईश्वर से।
मानव सोच ही धर्म बनावे, और मानव सोच, प्रेम बढ़ावे, ईश्वर से॥

सोच ही मानव की हो सात्विक, कोई भी द्वंद ना आवे।
सोच के अन्दर हो पूर्ण धर्म, खोट जर्रे की भी ना आवे॥

सात्विक सोच से ही दुनिया, कठिनाइयों से बच सकेगी।
नाकरात्मक सोच से दुनिया, इस धरती पर, टिक नहीं सकेगी॥

मानव सोच के अन्दर ही, जहर भरा है, वह फूटेगा एक दिन।
मानव को नहीं है ज्ञान धर्म, कहां से आया, यह ज्ञान भी फुटेगा एक दिन॥

विश्व में मानव सोच के कारण, घटनाएं अनेको घटेगी।
नहीं बच पायेगा मानव कठिनाइयों से, मानव से नहीं रुकेगी॥

सत्य सफर करो धरती वासियो, धर्म बढ़ जायेगा दुनिया में।
सोच में कल्याण चाहे। (विश्व का) सब कछ बच जायेगा दुनिया में॥

हर मानव ना सोच ईर्ष्या द्वेष ना सोच बड़ा छोटा, सबका कल्याण सोच।
और सत्य सोच पर सफर करे, जीवन में उपकार करने की सोच॥

ना करे सोच से वार, दुसरे मानव पर, बस धर्म सार करे।
सत्य प्रेम करे दुनिया से, और ईश्वर से नमस्कार करे॥

मन रखे बुरी सोच से अलग, अच्छा अच्छा सोचे।
गुण बिठावे अपने अन्दर, और कुटुम्ब का भला सोचे॥

जितना भी मानव सकारात्मक सोचे, सोच उनकी रक्षा करे त्रिलोक।
और जिनकी सोच नकारात्मक है, जग में उनका वास नरक लोक॥

हे धरती पर वास करने वाले नर नारियों, सुनो दिव्य लोक का पैगाम।
वहीं मानव बचेगा धरती पर, जो रखे ईश्वर का विधान॥

सच्ची सोच से ही उर्जा फैले, ईश्वर की जग मंगलमय होय।
झूठी सोच से असुरों का फैले पहरा, जगत लोप में होय॥

अशुद्ध मन

झूठी सोच नाकरात्मक उर्जा है, शक्ति ईश्वर की नहीं मिलती।
तभी तो मानव आधी मृत्यु पर मरते हैं, उन्हें ईश्वर शक्ति नहीं मिलती॥

सात्विक सोच जगत का हर क्षण, कल्याण चाहने वाला, दुख नहीं ढोता।
उसे तो हर क्षण मिलती है शक्ति, वह अर्ध मृत्यु के बीज, नहीं बोता॥

तुझे ईश्वर ने सब कुछ दिया है, गुण धार बिठा ले।
तेरे अन्दर, भक्ति गुण आन्नद भाव भरा है, अपने मन में धार ले॥

ईश्वर है निराकार निगुर्ण त्रिगुणमयी, अपना सत्य भाव उतार ले।
खाली पड़ा है, तेरे अन्दर वह आसन, उसमें ईश्वर को उतार ले॥

काया को मन्दिर बना सत्य में, काया एक मन्दिर है।
ईश्वर की है सवारी काया, यह भाव मन में सोच, ज्ञान में मंदिर है॥

अगर तू सत्य में, बदले अपना मन, तो तेरी काया पुण्य से भरी है।
पुण्य में ही तेरा जन्म हुआ, और हर अंग तेरी, आनन्द से भरी है॥

अर्पण कर हे मानव, तेरे अन्दर, वह दिव्य ज्ञान भरा है।
खोल वह गुत्थी जहां पर, तेरी काया में दबा पड़ा है॥

हे मानव सोच तू अपनी दशा, कितना अन्दर से तू है घायल।
खुद ही बना है तू ऐसा, दशा सुधार अपनी, तू क्यों है घायल॥

ईश्वर अपनी तरफ से मानव पर दया करते हैं

हे मानव में दुखी हूं तेरी दशा पर, दया आती है, तुझ पर मुझे।
ज्ञान समझ सुर बिठा अपना, मीठा शुद्ध शब्द, दुनिया में आदान-प्रदान करना है तुझे॥

ईश्वर का बनाया है एक फूल, धरती के आंगन में, लगाया है तुझे।
खिल कर रह, हे मानव दुनिया में, अपनों में ही सजा कर बैठाया है तुझे॥

धरती भी ईश्वर की है परम्परा, और तुझे इस पर बसाया है।
और एक दूसरे मानव को देख, दुख-सुख सभी को दिया है॥

हे मानव तू जिन मानवों में रहता है, उन्हीं से करे तू धोखा।
जो मानव तेरे रहते हैं आस-पास, उन्हीं के कारण बनती है तेरे जीवन भी शाखा॥

नर नारायण प्रेम

हे मानव मैं तुझे बहुत प्रेम करता हूं, तू मुझे अपने अन्दर ढूंढ।
अपनी सोच की, धारा बना सात्विक, जो तू मुझे अपने अंदर सके ढूंढ॥

हे मानव तुझे मेरा परिचय नहीं मालूम, मैं तेरा पिता परमेश्वर हूं।
तूने मुझे, अपने अन्दर नहीं ढूंढा, यह तेरी है भूल, मैं तेरे अन्दर एक ईश्वर हूं॥

मैं अज्ञानी को कैसे दूं ज्ञान, कि मैं कहां पर रहता हूं।
हे मानव तू कर अपनी पहचान, मैं तो तेरे अन्दर ही रहता हूं॥

हे मानव तूने अपनी आंखों में, वह नूर नहीं भरा, जिससे तू मुझे देख सके।
तेरे अन्दर कर्मों की मोटी काई लगी है, जो बना ज्ञान के, धोई ना जा सके॥

हे मानव तेरे अन्दर दोष भरे हैं ज्यादा, फिर मैं कैसे दिखूंगा।
तेरे अन्दर मैल भरा है इतना, कि तू जन्म पर जन्म लेता रहेगा, तब भी मैं तुझे नहीं मिलूंगा॥

मैं मिलूंगा तो जरूर तुझे, तू अपनी सोच में मुझे बिठाले।
कर सत्य सफर अपने मन को, और धर्म पर चित्त अपना बिठाले॥

हे मानव तू तो आदि काल से, धरती पर बसता आया, और मैं आदि ब्रह्म हूं।
मेरा तो आना जाना नहीं होता, मैं अमर अजर, और ज्ञान हूं॥

क्यों कि हर जन्म रहता मेरे से अनभिज्ञ, तू मेरी पहचान नहीं बनाता।
मैं हर जन्म तेरे अन्दर करता हूं वास, फिर भी अनजान बना रहता॥

अनजान बना रहता ज्ञान के बिना, और जन्म पर जन्म लेता रहता।
जो मानव ज्ञान से मुझमें मिल जाता, उसका कभी जन्म नहीं होता॥

हे मानव मैं तुझे बार-बार धरती पर जन्म, ज्ञान पाने के लिए देता।
मानव बार बार उसी भवंर में, तू खुद ही लिपटा रहता॥

हे मानव, तू तो सिर्फ काया की, इच्छा पूर्ण करने के आता।
तुझे नहीं ज्ञान के बिना पता चलता, तू क्यों आया धरती पर और (ईश्वर) मेरे से तेरा क्या नाता॥

तू तो अपनी ही मनमानी में, जीवन गंवावे, और अन्त में रोता।
हे मानव, व्यर्थ में जीवन तेरा सारा जाता, पर कुछ भी तू ना पाता॥

हे मानव, जिस दिन तू अपनी भूल करेगा स्वीकार तुझे होगी अपनी पहचान।
और मेरी भी पहचान होगी कि मैं तेरे अन्दर हूं, मैंने ही तेरे, जीने का किया इंतजाम॥

हे मेरे प्रिय मानव देहधारी, ज्ञान सुर में बिठा अपने, अन्दर गुण धार ले।
सतयुग द्वापर त्रेता, सभी युग तेरे अन्दर, तू कलयुग में अपना जन्म सुधार ले॥

सुधार ले जीवन अपना, सुध ले सब कुछ, तेरे अन्दर भरा है।
सन्त अन्दर से बनकर, खोल कर देख, स्वर्ग धाम, और मोक्ष भी, तेरे अन्दर जड़ा है॥

काया में रहकर पृथ्वी से दिव्य धाम दिखना

इसी काया में रहकर सन्त बनकर, धरती पर तू देखेगा, दिव्य धाम।

उसी समय समझो तूझे ज्ञान हो गया, और अन्दर से सन्त बना, तभी तू बना पुरुष महान॥

हे मानव जब तुम धरती से, दिव्य पुरुष बनकर, दिव्य धाम देखोगे।

उसी समय समझो, कि तुझे दिव्य आसन, मिल गया सत्य समझोगे॥

तेरी रूह जब धरती से दिव्य, लोक में जायेगी।

उसी समय तेरी हाजिरी (प्रत्यक्ष) लग जायेगी॥

हे मानव तुझे यह कमाई, धरती के उपर रहकर, ही करनी है।

इसी, लिए तेरी काया बनी है, इसी काया से तुझे, अपनी मुक्ति करनी है॥

बार बार तू धरती पर आता रहा। व्यर्थ में गया तेरा जीवन-दर्द से रहा तू मरता।

तुझे कभी नहीं दिखा, धरती से दूसरा लोक, तू व्यर्थ में मरता रहा॥

गुणधार ले मानव, सन्त बन अन्दर से, मन्थन कर, सत्य सार है जीवन।

सत्य से ही जीवन होता मंगल, सत्य अमल करे तो, निखरता है जीवन॥

हे मानव ज्ञान सन्त जुबान से सुन अमल कर, अन्दर उतार ले।
समय बीता जा रहा है, इस जीवन का, तू सत्य संगति धार ले॥

पुण्य कर, हे मानव धरती पर, शुक्ल पक्ष बन, माया मोह अन्धेरे में फंसा है तू।
ना मन मैला कर, दुनिया में निर्भय हो, सत्य ज्ञान अपना बार-बार, आने का कर्ज उतार ले॥

कर्म कर ऐसे, जैसे कमल का फूल, खिले कीचड़ में।
रहे तू, माया मोह के अन्दर, और रहे अनंत भवन में॥

हे मानव तेरा जीवन दुखों से भरा है, माया मोह होता ही ऐसा।
जीना पड़ता है, मानव को, सभी कठिनाइयों में, यह जीवन ही है ऐसा॥

तेरे अन्दर काया में, सम्पूर्ण जीवन, ईश्वर करते है वास।
बस तू जान नहीं पाता, नहीं होती, तुझे ईश्वर की जांच॥

जिस दिन तू, सत्य जान लेगा, परमहंस होगी तेरी काया।
निर्भय होकर, जियेगा तू और दावेदार होगी, संसारिक माया॥

हे मानव, मोह माया को जीतेगा, तू सुधी धार ले।
परमेश्वर है एक, कर भरोसा जीवन के, बाकि बचे दिन, सुधार ले॥

एक क्षण भी ना जाने दे खाली, ईश्वर का नाम पुकार ले।
उसी नाम से तुझे मिले दिव्य लोक, अपनी करनी सुधार ले।।

तू जितना भी ईश्वर को भजेगा, ईश्वर उतना ही फल देगें तुझे।
फल इतना मीठा सुन्दर दिव्य देंगे, प्रत्यक्ष रंग भर कर देंगे तुझे।।

हे मानव, तू है मेरा बसाया हुआ, सृष्टि में तेरी हर खबर रखता हूं।
मेर अंश सर्म्पूण लोकों में कण कण में, हर जीवन की खबर रखता हूं।।

हे मानव तू ना समझे ज्ञान की बाते, भेद ना तू अपना समझे।
भेष बदल कर तू जीवन जीता, तू भूल अपनी ना समझे।।

मैं तुझे समझाऊं, सन्त के द्वारा, तू स्वीकार सत्य का कर ले।
सन्त रोता है तेरे दुख से, तू सन्त की बात स्वीकार ले।।

महावीर खड़ा है अकेला, धरती पर मांगे सबकी खैर।
धुन्ध में फंसी है दुनिया, आपस में ना रखो बैर।।

बैर ना रखो आपस में, दुनिया कठिनाइयों में फंसने वाली है।
हे मानव - तेरे जितने भी दिन बचे है, जीवन के, ज्ञान की पुंज जलानी है।।

गुरू बना ज्ञानी को, पंडित से चाहे वेद पढ़, पर कुछ यत्न कर।
कुछ ही समय के अन्दर, है बदलना तुझे, तू ऐसा कर्म कर।।

याद कर वे दिन, जब तू बालक पन में, खेलता था धरती पर।
ना तुझे दुख होता था, और न तू भोगों को, भोगता था, धरती पर॥

जब तुझे सब कुछ मिलने लगा, तभी से तू बन गया है दोषी।
तू अगर बालक बनकर भाव भरता, जीवन में, तुझे आशीर्वाद मिलता कोटि-कोटि॥

तू तो जन्म लेने के बाद अपना, बचपन भाव भी भूल गया।
फंसा माया में इतना, कि अपनी पहचान, और ईश्वर को भूल गया॥

हे मानव तूने तो, अपने बचपन का भाव, पुत्र को भी नहीं दिया।
तू तो समय के वेग में इतना फंसा, कि तूने पुत्र को सत्य का संस्कार भी ना दिया॥

संस्कार, मुक्ति का न दिया तूने, अपने पुत्र को, बुढ़ापे में तुझे रोना पड़ा।
तू ही उसका दोषी है, तू ही भूल गया, तभी तो, तुझे अशब्दों का बोझ ढोना पड़ा॥

हे मेरे अंशी मानव सब कुछ तेरे अन्दर है, तू भूल गया है।
पैगम्बर भी बार बार आये धरती पर, उन्होंने भी दर्द सहा, उसे भी तू भूल गया है॥

ना तू अपने, बुजुर्गों की राह पर चला, जीवन में, ना तूने पैगम्बरों का ज्ञान लिया।
तू तो झूठे सफर में जिया, और अपना दर्द बढ़ाया ना ईश्वर का नाम लिया॥

हे मानव, तू तो अधूरा है, धरती का वासी, ना तूने देखी पूर्णमासी।
चन्द्रमा खिले पूर्ण आकाश में, और धरती पर करे प्रकासी॥

यह भी सत्य तूने नहीं लिया, जो हर माह झलकता है।
वह भी है दिव्य सत्ता, युगों-युगों से चमकता है॥

चमकता है हर माह मैं, मानव को ज्ञान देता, और चेतन्य करता है।
और कहता है मैं शीतल कोमल हूं, और सत्य सफर करता हूं, और मानव का मन शीतल करता हूं॥

मानव ना माने, यह दिव्य कला, आदि काल पुरानी।
देखे ना ज्ञान से ईश्वर की बनाई हुई, दिव्य वाणी॥

भज ले मानव ईश्वर का नाम, समय बदल रहा है।
जीवन का समय है तेरे पास, युग परिवर्तन हो रहा है॥

इस युग में तू भी सत्य में मिल, पुण्य का सार बन।
सत्य को सत्य मान, और ईश्वर को स्वीकार कर॥

सत्य को सत्य मान, ज्ञान को स्वीकार कर तू।
तेरे लिए ही सृष्टि रचाई है, इसमें सत्य बहा, उपकार कर तू॥

तुझे सन्त समझावे, तू ना माने सन्त की बात।
सन्त रोये तेरे दर्द में, तू ना सुने ईश्वर की बात॥

सन्त को मैं दूं ज्ञान औषधि, वह दुनिया में फैलावे।
मेरा काम है सन्त तक पहुंचाना, संत मानव तक पहुंचावे॥

जो सुनेगा इस युग में, सन्त की बात, वह ही दुनिया में समावे।
जो नहीं सुनेगा संत की बात, वह नरक लोक में जावे॥

वह जावे ऐसे लोक में, जिस लोक में स्थान ना पावे।
फिर समय होने पर, पृथ्वी पर जब भी आवे, जब ऐसा घोर युग आवे॥

हे मानव, तू ऐसे युग में घूम रहा है, जिसका सत्य आधार नहीं।
ऐसा युग पृथ्वी पर कभी नहीं आया, फिर भी तुझे यह सत्य स्वीकार नहीं॥

हे मानव, तू क्या समझे, तेरे, अन्दर का तो तुझे पता है।
दूसरे का दोष ना देख, अपने अन्दर का सबको पता है॥

सबको पता है, इस युग में, क्या क्या घट रहा है।
क्यों घटता है इस बात को ना जाने मानव धुन्ध में बसता है॥

हर मानव देखें अपने अन्दर, दोष कितने भरे है।
गुण कितने है, मानव के अन्दर, दया भाव कितने भरे है॥

हे मानव क्यों करता है ऐसा, जिससे अधर्म का बीज फैले।
दुनिया में हिंसा बढ़े, और मानव में जहर फैले॥

जहर भरा है मानव के अन्दर, दूसरे मानव पर असर डाले।
मानव के अन्दर सोच ही प्रदूषण है, दुनिया में असर डाले॥

युग है ब्रह्म की खेती, उपजाऊ बनाने के लिए।
मानव है सत्य का पौधा, सृष्टि चलाने के लिए॥

मानव पौधा है सृष्टि का, सोच में जहर पल रहा है।
युग चरमरा रहा है, धरती को हिला रहा है॥

मानव तो अपना-अपना देखे स्वार्थ सृष्टि को ना देखे।
हर मानव सृष्टि हिस्सा है एक, बस अपनी आवश्यकताओं को देखे॥

यदि, हर मानव अपना-अपना स्वार्थ देखेगा, सृष्टि भटक जायेगी।
कौन सुनेगा धर्मात्माओं की, सृष्टि एक दिन, पाताल में खिसक जायेगी॥

हर मानव में है ईश्वर का वास, हर मानव करता है, मन की बात।
अपनी-अपनी करनी करता है मानव, ना देखे सत्य ईश्वर का वास॥

हर मानव का घड़ा है, ईश्वर ने चेहरा, सबको नया दिया।
कर्मों के अनुसार जीवन दिया, और धरती का सहारा दिया॥

धरती पर रहने का वास दिया, और जीने के लिए अन्न दिया।
धरती के अन्दर जल की उत्पत्ति की, और ऊपर से बहता, नदियों का जल दिया॥

गुण दिया कर्मों के अनुसार, ज्ञान जीने के लिए दिया।
सोचने के लिए मन दिया, बुद्धि में सत्य अमृत दिया॥

सोच दी ईश्वर में बहने के लिए, निर्माण सृष्टि का किया।
मानव के द्वारा मानव उत्पत्ति कराई, पालन करने का ज्ञान दिया॥

हे मानव, तुझे फिर भी सब्र नहीं, उस परम पिता को भूल गया है तू।
जिस सोच में ईश्वर को बिठाना था, उस सोच में वासनायें बिठा रहा है तू॥

हे मानव, मत कर अपने मन की, रात का अन्धेरा होने वाला है।
रात होती है अन्धेरी सबको पता है, युग गर्दिशों में जाने वाला है॥

हे मानव, रास्ता बदल अपने मन का, सत्य का अंकुर जगा।
सोच सत्य की, नदी बहा अपने मन में, सृष्टि में सत्य का दीप जला॥

सत्य संगति कर, बैर ना किसी से कर, बच जायेगी दुनिया।
फूटेगी अधर्म की नदी, प्रवाह वेग से, टूट जायेगी दुनिया॥

निर्दोष गुणगान प्रेमी निस्वार्थ भाव से, रह दुनिया में, मानव से प्रीत करना सीख ले।
अपने अन्दर, प्रीत बढ़ा ईश्वर की, सृष्टि को, कठिनाइयों से बचाना सीख ले॥

हे मानव, तेरा भी है योगदान, अधर्म फैलाने में।
प्रेम से घर में भी नहीं रहता, हर मानव की सोच रही है, दूसरे को दर्द पहुंचाने में॥

हे मानव तेरे अन्दर भी वास है ईश्वर का, ओर सभी मानव तेरे जैसे।
तू क्यों नहीं सोचता, कि हर खबर अच्छी बुरी जाती है, ईश्वर को क्यों हर मानव तेरे जैसा॥

ईश्वर तो हर जीव में है, पर हर जीव का, जीवन एक जैसा नहीं होता।
जीवन होता है कर्मों का, जीवन में बोझा, जो मानव ढोता ही रहता है॥

जितना बोझा जिसे मिला है, उसे वहीं ढोना है, जीवन में।
जिसका जितना लिखा है, जीवन, उतना ही स्वांस चलता है जीवन में॥

एक-एक स्वांस पर नाम लिखा है, ईश्वर का धाम लिखा है।
एक एक स्वांस पर, भज ले ईश्वर नाम, यह ही सत्य जीवन लिखा है॥

सब कुछ अंग मन बुद्धि ज्ञान वेराग्य भक्ति, सब ईश्वर ने दिया है।
इसी ज्ञान को भूल गया है मानव, ईश्वर ने बार बार याद किया है॥

सम्पूर्ण सृष्टि में वास है, ईश्वर का, हर जीव है चेतन।
हर जीव में बह रहा है, वह स्वांस, जिससे रहता आनन्द॥

हे मानव तुझे, ईश्वर ने, सन्तों के द्वारा, हर युग में समझाया।
गद्य पद, पुराण, रामायण, गीता, 'कुरान' बाईबल, ईसा भी,
पैगम्बर बन कर आया है॥

मानव बार बार करता है, गलती, भूल स्वीकार नहीं करता।
कीचड़ में रहता है, जीवन भर, कमल कभी नहीं खिलता॥

अपने अहंकार वेग में, जीवन तपाता है।
ना करता प्रेम दया जीवन में, कठिनाइयों में बिताता है॥

फिरता है भटकता मानव, अपनी इच्छा भावानाओं में।
सोचता रहता है हर दम, कुछ पाने की, स्वप्न भावनाओं में।

सत्य में कुछ भी नहीं पाता, अपनी निगाहों में।
आंख खुले मानव की, खाली रहता है जीवन में।

ना सुर भरता प्रेम के, मानव में, ना प्रीत करता ईश्वर में।
सदैव बहता रहता, स्वप्न भावनाओं में।

उम्र घटती रहती मानव की, चाहने की इच्छाओं में।
पर कुछ ना कमाता मानव, ईश्वर की निगाहों में।

ना याद करता ईश्वर को, सदैव रहता भूली गुफाओं में।
अन्धेरे में उम्र कटती है मानव की, पर सोचता रहता चांदनियों में।

सोचता रहता मानव अपने अन्दर की गुफाओं में, कि मुझे सब कुछ मिल गया।

पर कुछ नहीं मिला मानव को, वह तो जीता रहा भावनाओं में।

जो मिलना था वह तो भूल जाता है, मानव कमाता है पाप कर्मों से।

भूल से ही कर्म पाप के हो जाते हैं और ईश्वर को भी भूल के कारण, जन्म पर जन्म हो जाते हैं।

नकारात्मक
सोच
सकारात्मक
सोच
महाकाल